Ramayana and Modern Management
रामायण और आधुनिक प्रबंधन

Editor
Omprakash Gupta
Managing Editor
Shivprakash Agrawal

Ramayana and Modern Management

रामायण और आधुनिक प्रबंधन

Editor

Omprakash Gupta

Managing Editor

Shivprakash Agrawal

श्री राम चरित भवन, ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

प्रकाशक
श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
Publisher
Shri Ram Charit Bhavan
Houston, USA

प्रथम संस्करण 2024
First Edition 2024

ISBN: 978-1-960627-04-9

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल की विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

Introduction

Goswami Tulsidas told us in the beginning of Balkand itself that God is infinite; his stories are also infinite; Saints listen and narrate these stories in diverse ways. This statement, first given nearly five hundred years ago, is as meaningful, appropriate, and relevant today. The story of Lord Rama has been told in various forms for thousands of years. Sage Valmiki first wrote the story of Rama, *The Ramayana*, in poetic form; this has been read with great reverence for thousands of years. Since Ramayana was the world's first poetic composition, its author, Sage Valmiki, became the world's first poet.

Inspired by this, countless writers and poets worldwide have translated Ramayana into different languages. 'Shri Ramcharitmanas' written by Goswami Tulsidas in the 16th century became very popular, first in India and then worldwide. Even today, Shri Ramcharitmanas is studied and recited in every corner of the world. The story provides solutions to numerous problems of life, including those faced in modern management.

Inspired by Sage Valmiki, Goswami Tulsidas and hundreds of other saints, 'Shri Ram Charit Bhavan' was born in Houston, America in 2008: to learn, understand and propagate the story of Lord Rama and learnings from Ramayana. One of the initial activities of the organization was conducting a 'Shri Ram Charit Manthan', which gradually took form of an annual seminar. Shri Ram Charit Bhavan started organizing international conferences to promote the research of Ramayana. The first international conference was held in Bangalore in 2015, the last and sixth in Jaipur in 2024.

In these conferences, many scholars from all over the world presented their analytical views on the character of Shri Rama and messages of Ramayana. The research approach and spiritual concept of the inter-stories of Ramkatha were also presented. New ideas of eminent thinkers were highly appreciated by Ramayana lovers and researchers. The immense success of these conferences aroused a desire to compile their excellent ideas, so that other well-meaning people could also be benefitted. As a result, this book has been composed. It contains 51 articles presented in the sixth conference; 38 are in Hindi and 13 are in English.

In conclusion, I pay my respects to the lotus feet of my parents and gurus, without whose blessings nothing would have been possible in my life. I sincerely hope readers will enjoy reading this book as much as I have enjoyed not only reading, but also editing this book.

Jai Siya Ram!

Omprakash Gupta
Editor
Houston, USA

प्रस्तावना

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।। (मानस 1.140. C5)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकांड के आरंभ में ही हमें बताया कि परमात्मा अनंत हैं, उनकी कथाएँ भी अनंत हैं; संत जन उन कथाओं को विविध प्रकार से कहते हैं, सुनते हैं। लगभग 500 वर्ष पूर्व कही गई यह बात आज भी उतनी ही सार्थक, उचित और प्रासंगिक है, जितनी वह तब थी। भगवान राम की कथा विविध प्रकार से हजारों वर्षों से कही जा रही है। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम राम कथा को काव्य रूप में लिखा जो रामायण के नाम से हजारों सालों बाद भी बड़े आदर से पढ़ी जाती है। चूँकि रामायण विश्व की प्रथम काव्य रचना थी, इसके रचयिता वाल्मीकि ऋषि विश्व के आदिकवि बने और रामायण आदिकाव्य।

रामायण से प्रेरित होकर अनगिनत लेखकों और कवियों ने अपनी-अपनी मति के अनुसार विविध भाषाओं में भगवान राम की कथा का वर्णन किया है। जनभाषा अवधी में लिखी गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्री रामचरितमानस' पहले भारत में, फिर समस्त विश्व में अत्यधिक प्रचलित हुई। आज भी विश्व के कोने-कोने में श्री रामचरितमानस का अध्ययन व पाठ होता है।

महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास व अन्य सैंकड़ों संतों से प्रेरित होकर भगवान राम की कथा को जानने, समझने और उसका प्रचार-प्रसार के लिए 2008 में ह्यूस्टन, अमेरिका में 'श्री राम चरित भवन' संस्था ने जन्म लिया। संस्था की विविध गतिविधियों में एक थी 'श्री राम चरित मंथन', जिसने शनै: शनै: वार्षिक गोष्ठी का रूप लिया। श्री राम चरित भवन ने रामायण में शोध-कार्य को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन आरंभ किया। पहला अधिवेशन बैंगलोर में 2015 में हुआ, छटवाँ 2024 में जयपुर में हुआ।

इन अधिवेशनों में देश-विदेश के अनेक विद्वगण ने श्री राम के चरित्र तथा राम-कथा पर अपने-अपने विश्लेषणात्मक विचार प्रस्तुत किए। रामकथा की अंतर्कथाओं का शोधात्मक दृष्टिकोण व आध्यात्मिक अवधारणा भी प्रस्तुत की गई। गणमान्य विचारकों के सर्वथा नवीन विचारों को रामप्रेमियों व श्रद्धालुओं द्वारा अत्यधिक सराहना मिली। इन अधिवेशनों की अपार सफलता से यह भाव जागृत हुआ कि इन में प्रस्तुत किए गए उत्कृष्ट विचारों का एक पुस्तक रूप में संकलन हो जिससे अन्य सुधीजन भी इससे लाभान्वित हो सकें। फलस्वरूप, इस पुस्तक की रचना हुई, जिसमें छटवें अधिवेशन में प्रस्तुत 51 आलेख हैं। इन में 38 आलेख हिन्दी में और 13 अंग्रेजी में हैं।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरण कमलों को सादर प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें, तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गईं हों उनके लिए मैं अकेला दोषी हूँ, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। जय सिया राम।

सादर,
ओमप्रकाश गुप्ता
सम्पादक
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

अनुक्रमणिका (Contents)

1	'राम' आध्यात्ममक प्रेरणा के स्रोत - *उषा गौड़*	1
2	भक्त और भगवान का सम्बन्ध - *मनसाराम गौड़*	5
3	पद्मचारित में विद्या प्रबंधन - *नीलम जैन*	9
4	श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता एक तुलनात्मक अध्ययन - *आशा श्रीवास्तव*	11
5	रामायणकालीन अर्थ व्यवस्था - *ममता जैन*	15
6	विदेशों में रामकथा की यात्रा - *करुणा पाण्डे*	18
7	विविधता, समावेशन और सर्वव्यापी राम - *अलका प्रमोद*	24
8	वाल्मीकि के नायक राम से 'मानस' के आराध्य राम: विहंगम दृष्टि - *मधु चतुर्वेदी*	28
9	श्री रामचरितमानस में आध्यात्म और विज्ञान - *अपराजिता शर्मा*	31
10	राष्ट्र की अवधारणा और रामराज्य - *श्रवण कुमार उपाध्याय*	36
11	Growing Relevance of Ramayana in the Contemporary World - *Rajesh Kumar Mishra*	41
12	मानस मे मातृशक्ति - *अलका श्रीवास्तव*	45
13	सुंदरकांड से मानव प्रबंधन के चार सूत्र – कैलाश चंद्र शर्मा	47
14	Srimad Ramayana of Valmiki and its Relevance in Present Management - *Mita Mohan Shenoy*	50
15	सृष्टि रहस्य - काकभुशुण्डि के अमृत वचन – चूंडूरी *कामेश्वरी*	53
16	मानस में विवाह - *विनीता मिश्रा*	62
17	आदर्श जीवन की सरिता: रामायण - *स्मिता लाधावाला*	65
18	रामत्व की प्राप्ति - *स्मिता मिश्रा*	68
19	मानस में वेदांश: मंगलाचरण, बालकाण्ड - *पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'*	70
20	श्री वाल्मीकि रामायण और श्री रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन - *राकेश चौबे*	78
21	विवाह का मंडप और जीव की चार अवस्थाएँ - *संजना मिश्रा*	89
22	रामचरितमानस के मंगलाचरण और पुष्पिका :कथावस्तु निर्देश और शैली प्रबंधन की अद्भुत दृष्टि - *राजरानी शर्मा, उर्मिला त्रिपाठी*	91
23	लोकजीवन में राम - *उषा श्रीवास्तव*	95
24	माता सीता में सशक्त और आदर्श नारीत्व के दर्शन - *वीणापाणि*	98
25	Teaching of Ramayana in Practical Life - *Ujjwal Sardar*	102
26	Evolution of Linguistic Adaptation in Mythological Narratives of Ramayana - *Debashis Paul*	105

27	रामकथा में रावण और राक्षस समाज का चरित्र - *राम मल्लिक, सरस्वती मल्लिक*	109
28	रामकथा में जगज्जननी सीता के संवाद - *सरस्वती मल्लिक, राम मल्लिक*	113
29	तुलसी-काव्य में काव्य-सौंदर्य - *ओम नीरव*	116
30	मानस में सम्प्रेषण की कला - *रूपा पारीक*	126
31	पिता हो तो जनक जैसा - *नम्रता शर्मा*	129
32	Impact of Ramayana on Contemporary Leadership: An Empirical Evidence - *Suraj Shah, Dimple Bijani, Priyanka Pathak*	131
33	तुलसी का समन्वय वाद - *सरिता श्रीवास्तव*	141
34	Crisis Management and Resilience: Lessons from the Valmiki Ramayana – *Vijaykrishnan S., Sriraman Chandramouli*	146
35	आज के युवाओं के लिए रामायण - *भाविका माहेश्वरी*	150
36	रामकथा की प्रमुख नारी-पात्र: सीता - *आशा राठोर*	152
37	Scientific Significance of Ramayana - *Sapna Jain*	155
38	Psychological Health and Holistic Wellbeing: Ramayana through a Psychological Lense - *Tulsee Giri Goswami*	157
39	रामायणके स्त्री पात्र- मीनाक्षी *भाईलाल सोनी*	165
40	Unraveling Ramayana: Rethinking Ramanujan's theory of Diverse Retellings- *Puspita Mondal*	168
41	रामायण तंत्र से आधुनिक आतंकवाद का अंत- *वृषाली नरेंद्र वावदे*	174
42	The Process of Organizational Change through the Lens of the Ramcharitmanas - *Sukanya Sangar*	177
43	वाल्मीकि रामायण में रस-विमर्श - *रिधम दिलीपभाई पंड्या*	181
44	गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में नारी के विविध रूप – *डॉली गुप्ता*	185
45	वर्तमान युग मे रामचरितमानस की उपादेयता - *स्मिता श्रीवास्तव*	191
46	Dharmic Business Management: Direct Preachings by Lord Shri Rama - *Charu Sharma, Hemant Gupta*	193
47	रामायण आधारित आधुनिक महाकाव्य साकेतसौरभम्: एक अध्ययन - *जयश्री गामीत*	197
48	Bharatha: The Effective Leader - *Sriraman Chandramouli, Vijaykrishnan S.*	200
49	सत्य को उजागर करना: रामचरित मानस में उद्धरित पाताल लोक की खोज - *भरत राज सिंह, धर्मेंद्र सिंह, हेमन्त कुमार सिंह*	203
50	Śri Rāma in Chinese Dai Rāmāyaṇa: Origins of Certain Major Interpolations in the Epic Compared to Vālmīki Rāmāyaṇa - *Irfan Ahmad*	208
51	वेद-तत्व श्रीराम - *संतोष कुमार मिश्र 'असाधु'*	211

'राम' आध्यात्मिक प्रेरणा के स्रोत

उषा गौड़
(ushagaur262@gmail.com)

रामभक्ति को लोग भावोन्माद भर में सीमित कर लेते हैं और सोचते हैं कि कल्पना की उड़ानें और क्रिया -कांडों की कल्पनाएं करते रहने से भक्ति का उद्देश्य पूरा हो जाएगा और उसके वर्णित महात्म्य का लाभ सहज ही मिल जाएगा। बाल -बुद्धि वाले इसके लिए 'राम' शब्द का जप, उच्चारण, कीर्तन, आदि पर्याप्त मान लेते हैं और सोचते हैं कि यह सरल बाल -क्रीड़ा, किए हुए पापों का दंड समाप्त करने के लिए बहुत है। जिह्वा द्वारा किया हुआ जप अथवा भगवान की लीला -पुस्तक का पाठ-परायण ईश्वर को प्रसन्न करने का,उनका अनुग्रह उपलब्ध करा देने का अति सरल उपाय है। पर वस्तुत: ऐसा है नहीं। राम -भक्ति गुण -कर्म प्रधान है। उसमें चिन्तन हीं नहीं चरित्र भी उच्चकोटि का बनाने की बात अविच्छिन्न रुप से जुड़ी है।

1. प्रस्तावना

उत्कृष्ट चिन्तन द्वारा व्यक्ति को सर्वतोमुखी विकास, परिष्कार की ओर अग्रसर करना और अपनी क्षमता, योग्यता एवं संपदा को स्वार्थ प्रयोजनों में निर्वाह मात्र के लिए न्यूनतम मात्रा में लगाकर शेष को लोक- मंगल के लिए परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित करना, यह सच्ची भक्ति के सुनिश्चित लक्षण है। जिसने जीभ की नोंक से की गई बक-झक और हाथों के सहारे वस्तुओं की हेरा-फेरी वाले क्रिया -कांड से आगे बढ़ कर अंत:करण में भगवत् भक्ति की स्थापना की होगी उसे अपने गुण -कर्म स्वभाव की उत्कृष्टता के रूप में उस स्थिति का परिचय देना होगा अपने दोष-दुर्गुण को ढूंँढने और उन्हें चुन-चुन कर बाहर फेंकने का साहस करना पड़ेगा। साथ ही सद्गुणों की देवी संपदा से अपने मन मन्दिर का श्रृंगार और व्यावहारिक जीवन में होने वाले क्रिया -कलापों का परिष्कार करना पड़ेगा।

ऐसा समर्थ और प्रखर अध्यात्म ही रामायण को अभीष्ट है। राम -कथा के माध्यम से जिस रामभक्ति का प्रतिपादन किया गया है वह वस्तुत:आत्म चिंतन,आत्म सुधार,आत्म निर्माण और आत्म परिष्कार की प्रेरणा से ही ओत-प्रोत है।इसी श्रुति सम्मत और आप्तपुरुषों द्वारा कार्यरुप से लाई गई आध्यात्मिकता को अपनाने की प्रकाश -प्रेरणा रामायण के प्रत्येक अक्षर में भरी पड़ी है। राम का अवतार और उनका तथा उनके अनुयायियों का समस्त चिंतन एवं चरित्र इसी धूरी पर घूमता है। सच्ची आध्यात्मिकता को जन साधारण के गले उतारना और सज्जनोचित मानवतावादी रीति- नीति व्यवहार में समाविष्ट करना - यही रामायण का उद्देश्य है। बिडम्बनाओं में उलझनों की अपेक्षा हमें इन्हीं सत्प्रेरणाओं को अपनाकर रामायण के एकमात्र उद्देश्य को पूरा करना उचित है।

2. विस्तार

तुलसीदास जी ने भगवान राम के गुणों को स्मरण करके उनसे अपने जीवन को सम्पन्न और सार्थक बनाने का आग्रह बार-बार किया है।उनकी महिमा भी कही है।

जग मंगल गुन ग्राम राम के।
दानि मुकुल धन धर्म धाम के ।।

"भगवान के गुण समूह संसार में सब प्रकार से मंगल देने वाले है। उनसे मुक्ति,धन, धर्म और सद्गति प्राप्त हो सकती है।" स्पष्ट है कि भगवान के जीवन में जिन गुणों का बाहुल्य है, उन्हें उपासक अपने जीवन में भी विकसित करें तो लौकिक और पारलौकिक सभी प्रकार की सफलताएँ पा सकते हैं। इन गुणों के महत्व में आगे कहा है -

सद्गुरु ग्यान विराग जोग के।
बिबुध वैद भव भोग रोग के।।
जननि जनक सिय-राम प्रेम के।
बीज सकल ब्रत धरम नेम के।।
समन पाप संताप सोक के।
प्रिय पालक परलोक लोक के।।
सचिव सुभट भूपति विचार के।
कुंभज लोभ उदधि अपार के।।

"यह गुन, ज्ञान, वैराग्य और योग के लिए गुरु और भवरोग के लिए देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार कुमार सिद्ध होते हैं। भगवान के प्रति प्रेम पैदा करने में सद् गुण माता-पिता तथा धर्म -नियमादि बीज रुप है। पाप,कष्ट और दु:ख का शमन करने वाले तथा परलोक और लोक को नष्ट न होने देने वाले संरक्षक हैं। विचार (ज्ञान) रुपी राजा को मंत्री और योद्धा तथा लोभ आदि को सीखने में कुंभज ऋषि की तरह समर्थ यही गुण है।"

काम कोह कलिमल करिगन के।
केहरि सावक जन मन बन के।।
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के।।

यह सदगुण मनुष्य के मन रुपी मन्दिर में जंगल में फिरने वाले काम -क्रोध और कलियुग के दोषों को मारने के लिए सिंहशावक है। भगवान शिव को यह अतिथि की तरह प्रिय है और दरिद्रता रुपी अग्नि को बुझाने के लिए इच्छानुसार बरसने वाले मेघ हैं।

मंत्र महामनि विषय ब्याल के।
मेंटल कठिन कुअंक भाल के।।
हरन मोह तम दिनकर कर से।
सेवक सालि पाल जलधर से।।

विषय रुपी सर्प के ज़हर को दूर करने के लिए श्रेष्ठ मार्ग यही सद् गुण है और यही भाग्य के कारण ही अशुभ कर्म होते हैं जिनके प्रभाव से भाग्य बिगड़ता है। सद् गुणों को बढ़ाकर श्रेष्ठ कार्यो में प्रवृत्त होने से दोष स्वत: प्रभावहीन हो जाते हैं। मोहरुपी अंधकार को वे सूर्य किरणों की तरह मिटा देते हैं। सेवा करने वाले को ये उसी तरह पालते हैं जैसा मेघ धान को पालते हैं।

जगहित निरुपधि साधु लोग से।..............

इसी श्रृंखला में इन गुणों को भी कहा है - संसार के हित के लिए छल रहित सच्चे संत और पवित्र करने के लिए गंगा की तरंगों के समान हैं। अंत में कहा है -

कुपथ कुतरक कुचालि कलि,
कपट दंभ पाखंड।
दहन राम गुनग्राम जिमि,
ईंधन अनल प्रचंड।।

भगवान राम के गुण कुमार्ग, कुतर्क,गलत गतिविधियों कलियुग में कपट, घमंड तथा पाखंड को जलाने के लिए वैसे ही है जैसे ईंधन को जलाने के लिए अग्नि।

'रामचरितमानस' की उपमा सरोवर से दी है, उसी सन्दर्भ में श्री रामचन्द्र जी के यश गुणों को सुन्दर जल बताया है। तथा उसी प्रसंग में कहा है -

सो जल सुकृत सालि हित होई।
राम भगत जगजीवन सोई।।
मेधा महि गत सो जल पावन।
सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन।।
भरेउ सुमानस सुथल थिराना।
सुखद सीत रुचि चारु चिराना।।

भगवान के शुभ चरित्र रुपी जल सत्कर्म रुपी धान के लिए हितकारक है। रामभक्तों के लिए तो जीवन रुप ही है। अर्थात इससे सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है और भक्त उसी के अनुसार अपना जीवन चलाते हैं।

यह जल मेधा रुपी भूमि ने सोख लिया तथा कानों के मार्ग से एकत्रित होकर अंत:करण में भर गया। वहाँ स्थिर होकर निर्मल हुआ और सुन्दर,शीतल, सुखद हो गया।

3. निष्कर्ष

तात्पर्य यह है कि भगवान के गुणों की यशगाथा बुद्धि में धारण की जाय, कानों द्वारा उसे एकत्रित किया जाता है, उसका उपयोग तो अंत:करण में स्थिर होने से होता है। यह ज्ञान -सरोवर विवेक चछुओं से देखा जाता है और तभी मन इसे स्वीकार कर लेता है।

"ग्यान नयन निर्गत मनमाना।"

भगवान की अनेक महानताओं में कुछ विशिष्ट महानताएँ है उनकी बलशीलता, बुद्धिमता, तेजस्विता, धर्मपरायणता और सद्गुण सम्पन्नता। यह विशेषताएँ राम के अनुयायियों को भी अपने भीतर बढ़ानी चाहिए। जामवंत कहते हैं -

सुनु सर्वग्य सकल उर वासी।
बुद्धिबल तेज धर्म गुन रासी।।

वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को सर्वगुण सम्पन्न कहा है -

"सम्पूर्ण गुणों से युक्त वे श्रीराम जी अपनी माता कौशल्या के आनन्द को बढ़ाने वाले हैं गम्भीरता से समुद्र और धैर्य में हिमालय के समान हैं।"

स च सर्व गुणो पेत: कौशल्यानन्द वर्धता।
समुद्र इव गाम्भीर्य धैर्येग हिमवानिव।।

बाल्मीकि रामायण में विभिन्न स्थानों, पर श्री राम के लिए जिन गुणवाचक संबोधनों का प्रयोग किया गया है, वे श्रेष्ठ आध्यात्मिक व्यक्तित्व के परिचायक हैं -

1. **नियतात्मा -** नियतात्मा माने नियत स्वभाव है। अर्थात श्रीराम निर्विकार हैं उनका मन अपने वश में है, वे मन के वश में नहीं हैं।
2. **महावीर्य -** 'वीर्य' शब्द का अर्थ है शक्ति। अतः: महावीर्य का अर्थ होगा -'अचिन्त्य -विविध -शक्तिशाली' विविध प्रकार की विविध महाशक्तियों से सम्पन्न है।
3. **द्युतिमान -** 'द्युति' शब्द का अर्थ ' प्रकाश' है। अतः 'द्युतिमान' का अर्थ प्रकाशमान होता है। परन्तु प्रकाश सब पदार्थों में है, इसलिए श्री राम स्वाभाविक प्रकाश से युक्त हैं।
4. **वशी -** का अर्थ है 'जितेन्द्रीय' है, अर्थात श्रीराम अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हैं।
5. **बुद्धिमान** 'बुद्धिमान' का अर्थ है सर्वज्ञ, सब वस्तुओं के ज्ञाता श्री राम हैं। महेश्वरतीर्थ के मत में 'बुद्धिमान' का अर्थ प्रशस्त बुद्धि सम्पन्न है। अर्थात श्रीराम सद् बुद्धि सम्पन्न हैं।
6. 'नीति' शब्द का अर्थ है मर्यादा। नीतिवान अर्थात मर्यादावान, मर्यादापालक हैं।
7. **वाग्मी -** इसका अर्थ है -'प्रशस्त वाक् अस्य अस्तीति वाग्मी'। प्रशस्त- पवित्र। अर्थात श्रीराम पवित्र वाणी (वेद) के प्रवर्तक हैं और वाणी का श्रेष्ठ प्रयोग करने में कुशल हैं।
8. **श्रीमान् -** श्री शब्द का अर्थ विभूतिवान है। अर्थात लौकिक एवं पारलौकिक विभूतियों के वे स्वामी हैं।
9. **शत्रुनिबर्हण:-**मर्यादा के प्रतिकूल चलने वालों को वे नष्ट करने में समर्थ हैं।

भगवान राम शील स्वभाव के अवयवों को तुलसीदास जी ने 'विनयपत्रिका' में इस तरह गिनाया है।

" सुनि सीतापति सील सुभाष "

ये अवयव इस प्रकार हैं -

"अक्रोध (कभी किसी ने राम के चन्द्रमुख पर रिस की रेखा नहीं देखी), सौहार्द (खेल में जीतकर भी हार मान लेना), कृत को विस्मृत कर तनिक भी अविनय पर पश्चाताप करना (चरण के स्पर्श से अहिल्या का उद्धार), क्षमा और सहिष्णुता (परशुराम प्रसंग में)। औदार्य (कैकयी के विषय में), कृतज्ञता (हनुमान के प्रति), अदोषदर्शन एवं गुण -ग्राहकता (सुग्रीव और विभीषण के प्रसंग में), यशोलिप्सा में अनासक्ति तथा निरहंकारिता (भक्तोद्वार की प्रशंसा से मुँह छिपाना और सकृत प्रणाम की बार-बार चर्चा)।"

मानस कथा प्रसंग में श्री राम के गुणों से सभी प्रभावित होते पाये जाते हैं। दशरथ जी गुरु वशिष्ठ जी से कहते हैं कि राम जिस प्रकार मुझको प्रिय हैं वैसे ही समस्त सेवकों, मंत्रियों, नागरिकों और हमारे मित्र शत्रु सभी को प्रिय हैं।मानो आपका (वशिष्ठ जी का) आशीर्वाद शरीर धारण करके सुशोभित हो रहा है। महापुरुषों का सच्चा आशीर्वाद जिन्हें मिलता है वे लोकप्रिय एवं यशस्वी बनाने वाले सत्कर्मों में निरत रहते हैं।

सेवक सचिव सकल पुरवासी।
जे हमार अरि मित्र उदासी।।
सबहिं रामु प्रिय जेहि विधि मोही।
प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही।।

भगवान राम स्वयं तो गुणवान हैं ही, अपने स्वजनों को भी उसी मार्ग से परमानंद प्राप्ति का विधान सुझाते हैं। राजतिलक के बाद उन्होंने सभी प्रजाजनों को इसी मार्ग का अवलंबन लेने के लिए कहा।

परानंद -ब्रह्मानन्द और कुछ नहीं आंतरिक परिष्कार की वह स्थिति है जिसमें मनुष्य अपने अंतरंग दोषों और अहिरंग से मुक्ति पाकर उत्कृष्ट आदर्शवादी सत्प्रवृत्तियों से अपने व्यक्तित्व को ओत-प्रोत कर लेता है। इसके लिए उसे किन दोषों का त्याग करना और किन गुणों को अपनाना आवश्यक है इसकी चर्चा रामायण में की गई है और उसी परिष्कृत स्थिति को 'परानंद-संदोह' बताया गया है।

त्यागने योग्य दुर्गुण इस प्रकार हैं - (१)-बैर (२)-झगड़ना (३)- एषणाएँ (४)-भीरुता -कायरता (५)-लिप्सा, तृष्णा, अभीष्ट उपलब्धि में आतुरता,(६)-स्वामित्व एवं प्रभुता का अहंकार, (७)- भाव शून्य निष्ठुर मन स्थिति, (८)-पाप कर्मों में अभिरुचि, (९)-आवेशग्रस्त उत्तेजित एवं क्रोधी प्रकृति,(१०)-आलस्य,(११)- अदूरदर्शिता, (१२)-कुसंग, (१३)- विषयाशक्ति, (१४)- प्रेम भावना का अभाव, (१५)- अवांछनीय सम्भाषण, (१६)- ईश्वर विमुखता, (१७) मद्, (१८)- सम्बन्धित व्यक्तियों का अनावश्यक मोह, (१९)- उपलब्ध वस्तुओं का कृपणतापूर्ण लोभ, (२०)-दुराग्रह, (२१)-कुतर्कनाएँ।

इन दोषों का त्याग और इनके प्रतिपक्षी सदुणों का धारण, यही वास्तविक ईश्वर भक्ति और आत्म कल्याण का, परमानंद का राजमार्ग है। अस्तु हमें प्रभुप्रिय बनना चाहिए, उनके गुणों का अनुसरण करके उनके बताये अनुशासन का पालन करना चाहिए। आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ मार्ग है।

4. सन्दर्भ ग्रन्थ

रामचरितमानस से प्रगतिशील प्रेरणा।

लेखक: पं. श्रीराम शर्मा आचार्य।

भक्त और भगवान का सम्बन्ध

मनसाराम गौड़
(mrgaur789@gmail.com)

1. प्रस्तावना

ईश्वर भक्त को ईश्वर सदृश्य श्रेष्ठ आदर्शयुक्त होना चाहिए, मानो दूसरा भगवान ही हो। राम और भरत की जोड़ी ऐसी लगती थी मानों दोनों एक ही साँचे में ढले हों। चित्रकूट निवासियों ने राम और भरत की एकरूपता, समस्वरता को देखा और आश्चर्यचकित रह गए।दोनों की आकृति और आत्मीयता अनिर्वचनीय प्रतीत होती थी।

भरत राम ही की अनुहारी । सहसा लखि न सकहिं नर नारी॥

प्रेम एक पक्षीय होना चाहिए, उसमें दूसरे पक्ष द्वारा तदनुरूप बदला देने की कामना नहीं होनी चाहिए।भरत सोचते हैं कि जो भगवान द्वारा दिया जा रहा है वह पर्याप्त है। यदि त्याग दिया गया हो तो वह भी उचित है क्योंकि मेरी मलीनता इसी योग्य थी।यदि वे मेरा सम्मान करते हैं तो यह भी उचित है क्योंकि वे सुस्वामी हैं। उन्हें अपने अनन्य सेवक का ध्यान रखना चाहिए। भक्त को ना कोई उलाहना देना पड़ता है और ना शिकायत करनी पड़ती है कि भगवान ने यह नहीं किया वह नहीं की दिया। वह तो मात्र अपनी भावना और कार्य पद्धति को उत्कृष्ट बनाए रहने में ही भक्ति की पूर्णता मान लेता है और इतने में ही पूर्ण संतुष्ट रहता है। भरत की अभिव्यक्ति इसी प्रकार की है।

भरत जी श्री राम के पास चित्रकूट जाने के लिए तैयार हुये पर बदले में वे किसी सम्मान के आशा नहीं करते, मान-अपमान दोनों उन्हें स्वीकार है-

जौं परिहरिहि मलिन मन जानी।
जो सनमआनहइं सेवक जानी॥
मोरे सरन राम की पनहीं।
राम सुस्वामि दोसु सब जनहीं॥

यहीं भाव तीर्थराज प्रयाग में उन्होंने व्यक्त किया है। वे तीर्थराज से माँगते हैं कि मुझे चाहे राम सहित सारा विश्व बुरा कहे, पर मेरे मन में से प्रभु भक्ति कम न हो।

राम कुटिल कर जानहिं मोहि।
लोग कहहिं गुरु साहब द्रोही॥
सीताराम चरन रति मोरे।
अनुदिन बढ़हिं अनुग्रह तोरे॥

उन्हें संसार से लेकर मोक्ष तक की कोई कामना प्रभु प्रेम से विचलित नहीं कर सकती।

चित्रकूट में राजा जाना के भरत की निष्काम भक्ति की सराहना करते हुए देवी सुनयना से कहते हैं-

परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत ना सपनेहुँ मनहुँ निहारे॥

इसी भावना का प्रतिफल था भगवान भरत का सतत स्मरण करते थे।भारद्वाज जी इस तथ्य को प्रकट करते हुए भरत जी से कहते हैं-

जानेऊ मरम नहात प्रयागा ।
मगन होत तुम्हरे अनुरागा ॥
राम लखन सीतहि मन प्रीती ।
निशि सब तुम्हहिं सराहत बीती ॥

यही प्रेम लक्ष्य करके मानकर टिप्पणी है-

भरत सरिस को राम सनेही।
जग जप राम जप जेहि॥

यही नहीं भरत को वे राम से भी अधिक महत्व देते हुए कहते हैं -

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं।
उदासीन तापस वन रहही ॥

सब सुकृतन कर सुफल सुहावा।
राम लखन सिय दर्शन पावा।।
तेही फल करि फल दरस तुम्हारा।
सहित प्रयाग सुभाग हमारा।।

भरत की यह उक्तियाँ और ऋषि द्वारा उनका मूल्यांकन केवल कथन ही नहीं थे। भरत के अयोध्यावास के प्रसंग में उनका प्रत्यक्ष प्रमाण सबको मिला। राम जिस प्रकार रहते हैं भरत भी उसी प्रकार का संयम और जीवनक्रम अपनाते हैं, भगवान की उदात्त रीति- नीति ही भक्त को अपनानी पड़ती है-

भरत को संसार का आकर्षण नहीं रहता। उसे तो सारे रिश्ते भगवान में ही दिखते हैं। और इसी नाते वह संसार के प्रति अपने कर्तव्य भी पूरे करते हैं। परिवार के मुंह में फँसकर वह प्रभु से दूर या विमुख नहीं होते। लक्ष्मण जी राम वन गमन के समय भगवान के साथ चलने का आग्रह करते हुए यही भाव व्यक्त करते हैं-

गुरु पितु मातु न जानौं काहू। कहौं सुभाउ नाथ पतिआहू।।
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।।
मोरे सबइ एक तुम स्वामी। दीनबन्धु उर अन्तरजामी।।

लक्ष्मण जी जैसी भावना हर भक्त के लिए स्वाभाविक है। अयोध्यावासी नर-नारी भी अपने भोग-वैभव छोड़कर राम के साथ वन जाने को निकल पड़े। तब तुलसी दास जी भाव व्यक्त करते हैं कि-

राम चरन पंकज प्रिय जिनहीं। विषय भोग बस करहिं कि तिनहीं।।

भक्त को राग और क्रोध जीत का नीति मार्ग पर चलना आवश्यक है। इस संबंध में तुलसीदास की दोहावली में लिखते हैं-

राम भगति पथ नीति मग, चलिय राग रिस जीति।
तुलसी संतन के मते, यही भगति कै रीति।।

'रामचरितमानस' में ऐसे भक्तों के उदाहरण स्थान -स्थान पर मिलते हैं। भक्त सुतीक्ष्ण ईश्वर से कभी कोई वरदान नहीं माँगता क्योंकि उसे पता नहीं कि उसके लिए क्या उपयोगी है और क्या अनुपयोगी। क्या सच और क्या झूठ। ऋषि सारभंग अपनी सारी साधना को प्रभु -प्रेम के लिए उनके चरणों पर चढ़ा देते हैं। ऋषि अगस्त्य जी भी यही मर्म जानते हैं और भगवान से सांसारिक वस्तुएँ न माँगकर उनके प्रति अपने अन्त:करण में अविरल भक्ति चाहते हैं। भक्तराज हनुमान भी जानते हैं कि सांसारिक पदार्थ तो दु:खमूल है, वह पुरुषार्थ से मिल सकते हैं। भगवान की भक्ति और उनका प्रेम ही दुर्लभ है।

भगवान जटायु को उसके बलिदान के बदले कुछ माँगने को कहते हैं तो वह यही कहता है कि प्रभु ! आपके प्रेम के लिए ही मैंने जो कुछ बन पड़ा, किया अब यह भाव सदा मेरे अन्त:करण में बना रहे -

अविरल भगति माँगि वर, गीध गयउ निज धाम।

भगवान की भक्ति पाकर मनुष्य आप्तकाम हो जाता है, उसकी अवांछनीय कामनाएँ नष्ट हो जाती है और जो उचित है, वे कर्तव्य से सम्बंधित होने के कारण सहज ही पूरी होती रहती है। केवट भगवान का अनुग्रह पाने के उपरान्त ऐसा ही अनुभव करता है -

नाथ आज मैं काह न पाबा। मिटे दोष दुख दरिद नसाबा।।

तुलसीदास जी तो और भी एक कदम आगे बढ़ जाते हैं। वे भक्ति भी नहीं माँगते, केवल ऐसी प्रेरणा माँगते हैं जिसके आधार पर श्रेष्ठ जीवन क्रम अपना कर भक्ति के अधिकारी बन सकें। 'विनय- पत्रिका' में वे कहते हैं -

"कभी भगवान की कृपा से मैं संत स्वभाव ग्रहण करूँगा । जो कुछ मिल जाए उसी में संतोष, कभी किसी से कुछ नहीं मांगना सदैव मन,वाणी, और कर्म से परोपकार में लगे रहना, यम नियमों का पालन, कठोर वाणी सुनकर भी क्रोधित न होना, अभिमान रहित, सबमें समत्व बुद्धि, शांत मन, दूसरों के दोष न देखकर गुण देखना, शरीर संबंधी चिंता छोड़कर सुख और दु:ख को सहना आदि संतों के गुणों को धारण करके ही मैं अविचल हरि भक्ति पा सकता हूँ।"

भक्त भगवान का संबंध अनोखा है। भक्त के मन में विकार भी है तो वह प्रभु को बता देता है और भगवान भी भक्त की दुष्प्रवृत्तियों का निवारण करते हैं।गलत चाहों को पूरा नहीं करते। कामनाओं की पूर्ति नहीं उनका शोधन ही प्रभु- अनुग्रह का सच्चा प्रमाण है। नारद -मोह प्रसंग में यह स्पष्ट है-

नारद जी को अपने द्वारा काम-विजय का अहंकार हो गया।भगवान ने इसे जाना तो विचार किया-

भगवान ने माया के प्रभाव से उन्हें मोहित किया। वे विश्व मोहिनी को पाने के लिए आतुर हो उठे। किंतु भगवान के प्रति विश्वास बना रहा। वे सोचने लगे-

मोर हित हरि सम नहि कोऊ । ऐहि अवसर सहाय सोई होऊ।।

भगवान से अपनी इच्छा व्यक्त की परंतु निर्णय उन्हीं के हाथों में सौंप दिया।

जेहि विधि होइ नाथ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।।

भगवान ने भी उनकी निष्ठा देखी।उनके विकारों के ही शमन का निश्चय किया और कहा-

जैव विधि होइ परम हित, नारद सुनहु तुम्हार।
सोई हम करब न आन कछु, वचन न मृषा हमार।।

और स्पष्ट कह भी दिया कि रोगी कुपथ्य मांगे तो भी वैद्य नहीं देता, वैसे ही तुम्हारा हित मैं करूँगा ।

उन्होंने माँगा था सुंदर रूप किंतु भगवान ने उन्हें कुरूप कर दिया। उनकी रुचि नहीं हित की रक्षा की।

मुनि हित कारन कृपा निधाना। दीन्ह कुरुप न जाड़ बखाना।।

स्वयंवर में अपमानित होकर नारद क्रोध भी हुए तो प्रभु ने बुरा ना माना। नारद जी ने बाद में (अरण्यकांड में) प्रभु से उनके विवाह में विघ्न डालने का कारण पूछा तो उन्होंने समझाया कि वह भक्त की रखवाली माता की तरह करते हैं। माँ बच्चे को साँप अथवा अग्नि की तरफ जाने से रुकती ही है।

भगवान ने नारद को बतलाया कि नारी को प्रमदा- कामिनी रूप में देखना अहितकारी है, अतः उन्हें उससे दूर रखा है -
भगवान के इस स्वभाव और प्रभाव को समझ कर तुलसीदास जी 'विनय पत्रिका' में यही प्रार्थना करते हैं कि हमारे भी दोष हर लीजिए ।

कबहुँ रघुवंश मनि सो कृपा करहुगे। मोह मद मान कामादि खल मंडली।
सकुल निरमूल करि दुसह दुख हरहुगे।।

इतना ही नहीं प्रभु ने सचमुच अपनाया या नहीं इसकी कसौटी वे नहीं मानते हैं कि मन म कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग पर चल पड़े ।

भगवान और भक्त का संबंध ऐसा ही निश्चल है। निर्मल मन से ही सच्ची भक्ति हो सकती है ।सत्कर्म पारायण भक्त ही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। प्रभु अनुग्रह का प्रतिफल उज्ज्वल चरित्र के रूप में देखा जा सकता है। यह तथ्य भगवान स्वयं सखा विभीषण को बतलाते हैं।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

इसी विश्वास के सहारे विभीषण शत्रु पक्ष में होते हुए भी भगवान के पास निर्भय होकर जा सके। उन्हें विश्वास था कि -

मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई।
भजत कृपा करहहइं रघुराई।।

विभीषण ने लंका का राज्य मिलने पर भी अपने इस निष्ठा का परिचय दिया। भगवान के चरणों में सभी संपत्ति सौंपते हुए कहा-हे प्रभु!इसे स्वीकार करें और वानरों के अर्थात् सदुद्देश्य के लिए इसे खर्च कर डालें।

नवधा भक्ति के प्रसंग में नौवीं भक्ति का रूप बताते हुए कहा गया की छल रहित सादगी और हर्षोन्माद भरे अहंकार तथा हानि पराजय की दीनता को छोड़कर जो संतुलित मन: स्थिति बनती है वही सच्ची भक्ति का रूप है।

नवम सरल सब सन छल हीना।
मम भरोस हिय हरष न दीना ।।

इसलिए तुलसीदास जी 'विनय पत्रिका' में प्रभु के प्रति पत्नी जैसे समर्पण भाव व्यक्त करते हैं-

मानसकार मन से छल-कपट को निकाल देने की विद्वता और शौर्य का प्रमाण मानते हैं। काकभुशुंडि जी गरुड़ से कहते हैं-

सोई कवि कोविद सोई रनधीरा।
जो छल छाँड़ि भजइ रघुवीरा।।

ऐसे भक्तों को भगवान अपना परम प्रिय मानते हैं। भगवान का निवास किस स्तर के भक्तों के मन में होता है उसकी चर्चा रामायण में इस प्रकार आती है, अरणकांड में भगवान लक्ष्मण जी से कहते हैं-

काम आदि मद दंभ न जाके।
तात निरंतर बस में ताके ।।

भक्त के हृदय में पाप नहीं रहते अथवा पापी के से भक्ति नहीं हो सकती। दोनों बातें एक ही है। भक्ति से मन की मलीनता धुल जाती है अथवा निर्मल मन से ही भक्ति संभव है। ये दोनों तथ्य अन्यओन्यआश्रइत है।मन की मालीनता का हटना दोष- दुर्गुणों से मुक्ति मिलना,भक्ति के हृदय में प्रवेश करने का एकमात्र प्रमाण है।

विभीषण प्रभु की शरण गया तब सुग्रीव ने उसकी सद्भवना पर शक करते हुए कहा था-'जानि ना जाए निशाचर माया'। काम रूप केहि कारण आया।। तब भगवान निराकरण करते हुए कहते है-

जो पै दुष्ट हृदय सोई होई।
मोर सन्मुख आव कि सोई ।।

कारण यह है कि मन में दुर्भावना होने से भक्ति की निर्मलता पैदा हो ही नहीं सकती।

तुलसीदास जी के अन्य पदों में भी यही अभिरुचि झलकती है कि जब तक दोष दुर्गुण मन में भरे रहते हैं तब तक भगवान किसी को अपनाते नहीं।

जो दोष-दुर्गणों से भरे हुए हैं और पूजा-पाठ के आधार पर ही राम-भक्त होने का दावा करते हैं, उन पर व्यंग्य करते हुए तुलसीदास जी ने कथा के प्रारंभ में ही कहा है-

बंचक भगत कहाइ राम के।
किंकर कंचन कोह कम के ।।

अन्य पद में आत्म-पश्चाताप करते हुए प्रभु ने से विनय करते हैं कि चाहे आप मुझे सुधार लें अथवा मार डालें, मैं आपकी और अपनी मर्यादा का ध्यान रखकर बार-बार आग्रह नहीं करूँगा।

सच्चे भक्त अपनी तथा प्रभु की इस मर्यादा और गौरव को समझते हैं।अपने अंतर की मलिनता से उन्हें लज्जा आती है। तुलसीदास जी 'विनय पत्रिका' में यही भाव व्यक्त करते हैं-

"हे प्रभु ! मुझे आपका दास (भक्त) कहलाने में लाज क्यों नहीं आती ? मैं आपको अपने हृदय सरोवर में बसाना चाहता हूँ। आप हंस के समान निर्मल हैं।मेरा हृदय मालिनताओं से भरा हुआ है। ऐसा समझकर मैं बड़े असमंजस में हूँ। क्योंकि जिस सरोवर में कौवा, गीध, बगुला, सूअर आदि भारे हों वहाँ हंस कैसे आ सकता है? भाव यह है कि दुर्गणों से भरे हुए हृदय में भगवान का निवास नहीं हो सकता।

2. सन्दर्भ ग्रन्थ

रामचरितमानस से प्रगतिशील प्रेरणा।
लेखक -पं०श्रीराम शर्मा आचार्य।

पद्मचारित में विद्या प्रबंधन

नीलम जैन
(drneelamjain26@gmail.com)

पद्मचरित में विद्या एक व्यापक शब्द है इसमें न केवल धर्म और दर्शन का समावेश होता है अपितु इतिहास, कला, पुरातत्व ,साहित्य समाज और संस्कृति सभी कुछ समाहित है। विद्या पुस्तक ज्ञान का पर्यायवाची तथा जीविकोपार्जन का साधन न होकर उस प्रकाश का प्रतीक थी जो व्यक्ति को अपना बहुमुखी विकास करने, उत्तम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता करती थी।

वस्तुतः विद्या से जो ज्ञान प्राप्त होता था वह उसके दूसरे जीवन के समान था क्योंकि विद्या के माध्यम से ही भव सागर से निकलकर मोक्ष का मार्ग खोज लेता था।बुद्धि और चरित्र दोनों के विकास को विद्या का फलित माना गया है।

आचार्य ने कहा है कि शिक्षा दो प्रकार की होती है एक ग्रहण शिक्षा जिसमें शास्त्रों का ज्ञान शास्त्रों का शुद्ध उच्चारण पठन अर्थ देश काल के संदर्भों के शब्दों के मर्म का ज्ञान प्राप्त हो वह ग्रहण शिक्षा है

व्रत का आचरण, नियमों का सम्यक पालन तथा सभी प्रकार के दोषों का परिमार्जन करते हुए अपने चरित्र को निर्मल रखना आसवन शिक्षा है। विद्या प्राप्ति के लिए स्थित चित्त होना आवश्यक माना जाता था यदि शिष्य शक्ति से युक्त होता था तो वह गुरु के लिए प्रसन्नता का विषय होता था जिस प्रकार सूर्य के द्वारा नेत्रवान अर्थात नेत्रयुक्त पुरुष को समस्त पदार्थ साफ दिखाई देते हैं नेत्रहीन पुरुष को सूर्य का प्रकाश होने पर भी कुछ नहीं दिखाई देता इस प्रकार शक्ति रहित अथवा अल्प शक्ति वाले शिष्य को भी विद्या प्राप्ति में कठिनाई होती है।

गुरु का उस समय अधिक महत्व था शिष्य कितना भी निपुण क्यों ना हो वह आचार्य की मर्यादा का सदा ध्यान रखता था।शिष्यऔर गुरु का आत्मिक संबंध होता है अपनी विशेष बातों को गुरु से निवेदन कर शिष्य छूट जाते हैं।सामान्य शिष्य से लेकर राज पुत्र तक गुरु की सेवा में तत्पर रहते थे। गुरु के समक्ष लि या व्रत भंग करना बहुत दिखाकर माना जाता था।

राम से परित्यक्ता सीता कहती है कि निश्चित मैंने गुरू के समक्ष व्रत भंग किया होगा, जिसका यह फल हुआ।

शिष्य के अभिभावक भी गुरु का यथा योग्य सम्मान करते थे। विद्या प्राप्ति कुछ लोग गुरु के घर पर करते थे कहीं कहीं विशिष्ट विद्वानों को राजा लोग अपने घर पर रख लिया करते थे उस समय के आश्रम भी विद्या प्राप्ति के उत्तम साधन थे। विद्या प्रदाता की श्रेणी में गुरु, उपाध्याय, विद्वान, यति आचार्य ,मुनि आते थे।

गुरु और शिष्य की विशेषताओं का वर्णन भी ग्रंथों में किया गया है।गुरु पृथ्वी के समान सहनशील, पर्वत की भांति अकंपित धर्म में स्थित चंद्रमा की तरह सौम्य कांति वाले समुद्र के समान गंभीर तथा देश काल के जानकार होने चाहिए और शिष्य नाना प्रकार के परिषह को सहने वाले लाभ हानि में सुख दुख रहित रहने वाले, अत्यल्प में संतुष्ट होने वाले रिद्धि की अभिमान से रहित सभी प्रकार की सेवा में संलग्न, गुरु की प्रशंसा करने वाले होते हैं तथा शिष्य में और गुण न अ भी हो लेकिन विनय गुण अवश्य होना चाहिए।

विद्या के उद्देश्य-

- व्यक्तित्व का विकास
- चरित्र का निर्माण
- सामाजिक कुशलता
- सांस्कृतिक का संरक्षण
- धार्मिकता का समावेश
- ज्ञान व अनुभूति का विकास
- आध्यात्मिक समाज की स्थापना करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए

गुरु और शिष्य के संबंध अति प्रेमपूर्ण होते थे गुरु अपने शिष्य को पुत्रवत प्रेम करते थे।

उत्तर कांड में काकभुशुडी अपने गुरु की विशेषताओं का उल्लेख एवं गुरु द्रोह से हानि का विस्तृत वर्णन करते हुए कहते हैं

*अति *दयाल* गुरु स्वल्प न क्रोधा*

पुनि पुनि मोह सिखाएं सुबोधा

कहा गया है जो गुरु की सेवा नहीं करते गुरु से ईर्ष्या करते हैं वे मूर्ख रौरव नरक में पड़े रहते हैं और वहां से निकलकर त्रियच योनि धारण कर दुख प्राप्त करते रहते हैं।

विद्या में पात्रता विद्यार्थी की प्रतिभा पर निर्भर थी श्री राम ने अल्पकाल में ही सब विद्या ग्रहण कर ली थी *गुरु गृह गए पढन रघुराइ

अल्प काल सब विद्या पाई

अपनी क्षमता के प्रभाव से ही विद्यार्थी विद्या की सिद्धि करते थे किसी को 10 वर्ष ,किसी को एक माह, किसी को एक क्षण में ही विद्या सिद्ध हो जाती थी यह सब विद्यार्थी के क्षयोपशम पर निर्भर था

पद्मचारित से व्याकरण, गणित शास्त्र ,धनुर्वेद, अस्त्र-शस्त्र विद्या, आरण्यक शास्त्र, ज्योतिष विद्या, जैन बौद्ध दर्शन वेद वेदांत ,निमित्त विद्या ,आरोग्य शास्त्र, कामशास्त्र संस्कृत ,प्राकृत शोर सैनी भाषाएं लोकज्ञता, संगीत विद्या ,नृत्य विद्या अर्थशास्त्र ,नीति शास्त्र ,नाट्यशास्त्र आदि विधाओं के संकेत मिलते हैं लक्ष्मी और बल की प्राप्ति के लिए मंत्र शक्ति से भी अनेक विधाओं को सिद्ध किया जाता था इनमें से अनेक युद्ध कर्म में सहायक होती थी मंत्र जपने के बाद या दृढ़ निश्चय के कारण उससे पहले ही यह विद्याएं उपस्थित हो जाती थी तथा समय पडने पर अपने स्वामी के स्मरण मात्र से अपनी शक्ति के अनुसार यथेष्ट कार्य करती थी विभीषण ने भक्ति आराधना साधना से सिद्धार्थनी एवं आकाशगामिनी आदि विद्या प्राप्त कर ली थी।

रावण ने भीम नामक महावन में भूख प्यास तथा महा उपसर्ग सहकर अल्पकाल में ही हजारों विद्या सिद्ध की बहुरूपी विद्या की सिद्धि के लिए सहसदल कमलों से साधना की थी रावण द्वारा सैकड़ो विद्याओं की सिद्धि का उल्लेख है

युद्ध में युद्ध में विजय प्राप्ति के उद्देश्य से राम और लक्ष्मण ने महलोचन देव का स्मरण किया था जिसने संतुष्ट होकर उसने राम को सिंहवाहिनी विद्या एवं लक्ष्मण को गरुड़ वाहिनी विद्या दी थी

विभीषण कुंभकरण और रावण ने 100000 मंत्रो से प्राप्त होने वाली अक्षरा विद्या सिद्धि और सर्व काम नाम की विद्या आधे दिन में ही प्राप्त कर ली रत्नश्रवा के द्वारा प्राप्त की गई मां सुंदरी नामक महाविद्या ने अपना रूप बल वीर्य एवं महत्व प्रकट किया था विद्या के प्रभाव से ही रत्नश्रवा ने उत्तम भवनों से व्याप्त एक उत्तम दिव्य महानगर स्थापित किया था इस प्रकार की विद्या को धारण करने वाले विद्याधर कहलाते थे

गुरु पुरुषों को 72कला और महिलाओं को 64 कला का प्रशिक्षण देकर भौतिक क्षेत्र में सभी को समर्थ बनाते थे इतना ही नहीं गुरु कलाओं को धर्म कलाओं से नियंत्रित करके उन्हे आध्यात्मिक मार्ग की ओर अक्सर अग्रसर करते थे

पद्मचारित में विद्या का रूप स्वरूप इस प्रकार प्रकट किया गया है जो ऐसे वातावरण का सृजन करता है जिसमें बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो और वह जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता एक तुलनात्मक अध्ययन

आशा श्रीवास्तव
(asha.srivastava24@gmail.com)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्
लक्ष्मीकांत कमलनयनं योगभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरूतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्याSन्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।।

श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता ये दोनों ही ग्रन्थ भारतवर्ष की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर हैं। श्रीरामचरितमानस जहाँ एक सम्पूर्ण काव्य है, वहीं श्रीमद्भावद्गीता विश्व के सबसे बड़े महाकाव्य 'महाभारत' का एक छोटा सा अंश मात्र है। इनके रचनाकाल में भी लगभग 5000 वर्षों का अन्तर है।फिर भी इन दोनों ग्रन्थों में अनेकों प्रकार की समानताएँ हैं। यहाँ पर हम इनकी समानताओं और विषमताओं की विस्तृत विवेचना करने का प्रयास करेंगे।

श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता में समानताएँ--

भगवान विष्णु के अवतार-

श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भावद्गीता ,इन दोनों ग्रन्थों के नायक भगवान श्रीराम और भगवान योगेश्वर श्रीकृष्ण दोनो को ही भगवान विष्णु का अवतार माना गया है।

परिस्थितियों में समानता-मनोविज्ञान और समाजशास्त्र का अद्भुत समावेश

इन दोनों महाकाव्यों के रचनाकाल और स्थान भले ही अलग हों, परिस्थितियों में अद्भुत समानताऐं हैं।

इन दोनों के वाचक गोस्वामी तुलसीदास और भगवान श्रीकृष्ण महान मनोवैज्ञानिक और समाजशात्री थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस विक्रम संवत 1631 में रामनवमी के दिन अयोध्या में लिखनी आरम्भ की थी और 966 दिनों में पूरी हुई थी। उस समय मुग़लों का साम्राज्य था। वे अकबर के समकालीन थे,किन्तु उन्होंने मुग़लों द्वारा हिन्दुओं पर किये गए अत्याचारों को देखा था। उन्होंने 'तुलसी शतक' में 100 दोहों में किस प्रकार मुग़लों ने हिन्दू धर्मग्रन्थों को जलाया, मन्दिरों को ध्वस्त किया,हिंदुओं की नृशंस हत्याएं कीं, उन्हें जबरन धर्मपरिवर्तन के लिये विवश किया। जो नहीं बने उनका कैसे विभिन्न प्रकार से मानमर्दन किया गया, इन सबका उल्लेख किया है । सनातन धर्मी और हिन्दू निराश,हताश, विषादग्रस्त थे। ऐसे में उनके मानसिक उद्वेगों को शान्त करने हेतु गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस की रचना की। वे एक मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री थे। तभी वे रामकथा ,जो महर्षि वाल्मीकि ने 6500 वर्षों पूर्व त्रेतायुग में रामायण में लिखी थी, उसे कलयुग में जनमानस की भाषा अवधी में गेय रूप में लिखना प्रारम्भ किया। यह कथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के उस चरित्र की थी,जिसने समाज को 'जोड़ना' सिखाया था। जिनका जीवन समाज के हर वर्ग, हर वर्ण के लोगों , न केवल मनुष्यों, बल्कि वानर,रीछ भालुओं के उद्धार में समर्पित रहा। गोस्वामी जी समाज की दशा से बहुत आहत थे। वे जनमानस में मनोवैज्ञानिक तरीके से उत्साह और आत्मविश्वास जगाना चाहते थे। सम्भवतः इसीलिये वे रामचरितमानस के सँस्कृत श्लोकों,अवधी ,जो जनमानस की बोली थी,उसमें दोहों, चौपाइयों, सोरठों, छंदों को गाकर लिखते गए और लिख कर गाते गए। उन्हें सुनकर उनके अनुयायियों ने भी उनका अनुसरण किया और इस प्रकार धीरे 'मानस' जनमानस के हृदय में बसती चली गई। यह गाथा केवल अयोध्या में ही नहीं लिखी गई, बल्कि चित्रकूट और काशी में घूम कर गाकर लिखी गई ।साहित्य और सङ्गीत की इस जोड़ी को जनसाधारण की भाषा मिलने से बहुत सराहा गया और सभी को इस कथा में अपने राम मिलने लगे। रामकथा, जो कभी ऋषि याज्ञवल्क्य, कभी शिव और कभी काकभुशुण्डि और स्वयं गोस्वामी तुलसीदास के माध्यम से सुनाई गई,उसमे "राम नाम अवलम्ब" के मंत्र ने राम के प्रति असीम विश्वास जगाने का कार्य किया और दबे-कुचले हिन्दू रामनाम का आश्रय लेकर स्वयं को सुरक्षित महसूस करने लगे। श्रीरामचरितमानस कभी 'पढ़ी' नहीं गई, सदैव 'गाई'

ही गई और जनमानस को इस पुस्तक में भगवान राम दिखाई देने लगे। कालांतर में यह पुस्तक हर घर के मन्दिर में पाई जाने लगी और क्यों न हो, आख़िर 'भगवान' का स्थान तो मन्दिर में ही होता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक गोस्वामी तुलसीदास जी का मन्तव्य पूरा हुआ। वे त्रेतायुग को कलयुग में प्रतिस्थापित कर समाज मे जनजागृति लाने में सफल हुए। उनकी रचना "स्वान्तः सुखाय" से ऊपर "जन हिताय,जन जन सुखाय" बन गई।

अब श्रीमद्भगवद्गीता की ओर चलते हैं।

महर्षि वेदव्यास रचित विशाल महाकाव्य ' महाभारत' जिसमे एक लाख श्लोक हैं, उसके 'भीष्म पर्व' का एक छोटा सा अंश है। कहा जाता है कि जगत मे जो भी कुछ है वह ' महाभारत' में है, जो महाभारत में नहीं है,वह सम्पूर्ण जगत मे कहीं नहीं है। इसमे कुल 700 श्लोक हैं ।वह द्वापरयुग था। जहाँ सामाजिक मूल्यों का विघटन होने लगा था। कौरवों ने पाण्डवों के अधिकारों को छीना, उनका घोर अपमान किया, उनकी हत्या की भी कई चेष्टाएँ कीं। जब भगवान श्रीकृष्ण के अनुरोध पर भी दुर्योधन पाण्डवों को पांच गांव नहीं दे सका,तो उनके अधिकारों की प्राप्ति के लिए युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। कुरुक्षेत्र में युद्धस्थल में अर्जुन के कहने पर योगेश्वर श्रीकृष्ण, जो उसके सारथी थे, उसके रथ को दोनों सेनाओं के मध्य ले गए। वहाँ पहुँच शत्रु पक्ष में अपने पितामह, गुरुओं ,बन्धु बांधवों को देख अर्जुन मोहग्रस्त और विषादग्रस्त हो गए और एक प्रकार से युद्ध से पूर्व ही पराजय स्वीकार करने को उद्यत हो गए। यहाँ पर श्रीकृष्ण की चिन्ता भी यही थी कि किस प्रकार अर्जुन का मनोबल ऊँचाकर उसको युद्ध करने के लिए प्रेरित किया जाए। वे भलीभाँति जानते थे कि यदि भलमनसाहत में अर्जुन युद्ध से विमुख हो गया,तो पाण्डव अपने अधिकार से सदा के लिए वंचित रह जाएंगे। तब निःशस्त्र और निरस्त्र रहने की प्रतिज्ञा करने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण का 'वाणी अस्त्र' चला और समय को रोककर उन्होंने उसे जो उपदेश दिए,वही 'श्रीमद्भगवद्गीता' है। उन्होंने अर्जुन को उसके क्षात्र धर्म की याद दिलाई और उससे राग-द्वेष, विजय-पराजय की परवाह किया बिना युद्ध हेतु प्रेरित किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने उसे सांख्य योग, ज्ञान विज्ञान योग, कर्मसन्यास योग, भक्तियोग, गुण त्रय विभाग योग,अक्षरब्रह्म योग, मोक्षसन्यास योग आदि के माध्यम से जीवन दर्शन की शिक्षा दी। उन्होंने ही उसे निर्लिप्त भाव से केवल अपने कर्तव्यकर्म करने को कहा। ऐसा सम्भवतः वे इसलिए कह सके,क्योंकि उनका स्वयं का जीवन भी तो निर्लिप्तता से भरा था। 14 वर्षों तक वे गोकुल में जिन मातापिता, ग्वालों, राधा , सखियों और सबसे अधिक प्रिय वँशी के साथ रहे। जहाँ उन्होंने कालिया नाग, पूतना और अन्य राक्षसों का वध किया , तमाम लीलाएं कीं उसे छोड़ कर कंस के बुलाने पर जब वे मथुरा गए,तो फिर कभी गोकुल आये ही नहीं। ऐसी निर्लिप्तता की शायद किसी को आशा ही नहीं रही होगी। वे सचमुच योगी और वैरागी थे, तभी 'योगेश्वर' कहलाये। अन्त में वे अपने उद्देश्य में सफल रहे। अर्जुन ने युद्ध करना स्वीकारा और पाण्डवों की विजय हुई।

श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता में अभिव्यक्ति की समानता-

ये दोनों महाकाव्य भले ही दो अलग युग में लिखे गए,किन्तु अभिव्यक्ति में बहुत अधिक समानता देखने को मिलती है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-
द्वापरयुग में योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-

चतुर्विधा भजन्ते माम् जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ।।(7/17)

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एक भक्तिर्विशिष्यते। प्रियो हि ज्ञानिनोत्यर्थमहं स च मम प्रियः।।(7/18)

कलियुग में गोस्वामीजी कहते हैं-

जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।

राम भगत जग चारि प्रकारा।सुकृती चारिउ अनघ उदारा।

चहू चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहिं बिशेष पियारा।(बालकाण्ड दोहा 21)

दोनों में ही चार प्रकार के भक्तों-आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी बताये हैं और दोनों में ही भगवान को ज्ञानी प्रिय हैं। किन्तु उत्तरकाण्ड में तुलसीदास जी ने भक्त को ईश्वर का परमप्रिय बताया और ऐसा ही।गीता में भी कहा गया है।

गीता- यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।(4/7)

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।(4/8)

मानस- जब होय धरम की हानी। बाढ़इ असुर अधम अभिमानी।

तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं सदा भव सज्जन पीरा।(बालकाण्ड दोहा120)

गीता के श्लोक और मानस की चौपाई का अर्थ एक ही है।

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्म नित्या विनिवृत्तकामाः

द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।(15/5)

मानस-

नहिं राग न लोभ न मान मदा।
तिन्ह के सम बैभव वा विपदा।।
एहि ते सब सेवक होत मुदा।
मुनि त्यागत जोग भरोस सदा।।
करि प्रेम निरन्तर नेम लियें।
पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ।।
सम मानि निरादर आदरहीं ।
सब सन्त सुखी बिचरन्ति मही।।(उत्तरकाण्ड दोहा 13)

कर्म को प्रधानता दी गई है। जहाँ गीता में भगवान अर्जुन से कहते हैं-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोत्स्वकर्मणि।।
वही। मानस में बाबा तुलसीदास कहते हैं
कर्मप्रधान बिस्व रचि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा।

श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भावद्गीता में विभिन्नताएँ-

देश/काल का भेद/सामाजिक मूल्यों का भेद-

रामचरितमानस में प्रभु श्रीराम के जीवन की कथा का अवलम्ब लिया गया है, जो त्रेतायुग में हुए थे।वे मर्यादापुरुषोत्तम थे। उस काल में सामाजिक मूल्य अपने चर्मोत्कर्ष पर थे। केवल राम ही नहीं,अपितु प्रत्येक चरित्र आदर्श था। यद्यपि वाल्मीकि रामायण में चरित्रचित्रण भिन्न प्रकार से किया गया था। किंतु गोस्वामी तुलसीदास जी ने केवल अच्छी बातों को ही ग्रहण कर अपने पात्रों का चरित्रचित्रण किया। यह आवश्यक भी था।

गीता द्वापर युग की कथा कहती है। महाभारत काल वह काल था, जिस समय सामाजिक मूल्यों का विघटन हो चुका था। न तो भाइयों में साहचर्य था, न बड़ों का सम्मान ही था। गीता कथानक नहीं दिखाती।

यहाँ कथानक के नाम पर प्रथम अध्याय 'अर्जुन विषाद योग' में दुर्योधन के द्वारा बोले गए सम्वादों के माध्यम से ही मन का कलुष और अर्जुन के सम्वादों के माध्यम से उसके हृदय की विशालता का परिचय मिलता है।

यहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ही अपनी वाणी के द्वारा उपदेश दिए थे,क्योंकि वह एक सामान्य योद्धा नहीं था,अपितु वह पाण्डवों की सेना का प्रतिनिधित्व करता था।

भाषा-शैली-

श्रीमद्भावद्गीता की भाषा सँस्कृत है, क्योंकि यही उस समय बोली जाने वाली भाषा थी। सँस्कृत हज़ारों वर्षों तक भारतवर्ष की बोलचाल की भाषा रही। इसी कारण न केवल गीता, बल्कि बाक़ी साहित्य भी सँस्कृत में ही उपलब्ध है। वाल्मीकि रामायण की भाषा भी सँस्कृत ही रही। श्रीमद्भावद्गीता की शैली अत्यन्त सुलभ ,गूढ़ और आलंकारिक सौंदर्य को प्रतिपादित करती है। जिस प्रकार महर्षि वाल्मीकि श्रीराम के समकालीन थे, उसी प्रकार महर्षि वेदव्यास श्रीकृष्ण के समकालीन थे।

मानस की भाषा अवधी है। क्योंकि यही उस क्षेत्र यानी अवध की भाषा थी और इसी के माध्यम से जनमानस तक पहुंचा जा सकता था। मानस की शैली भी बहुत सुन्दर, गूढ़ और आलंकारिक है।

कथात्मकता-रामचरितमानस भगवान श्रीराम के जीवन की सम्पूर्ण कथा है और वैसा ही चित्रण किया गया।

गीता किसी भी एक व्यक्ति विशेष की कथा नहीं कहती। यद्यपि यह महाभारत की कथा से सम्बद्ध है,तथापि यह कथा नहीं है। इसमें विशुद्ध ज्ञान है- भगवान श्रीकृष्ण द्वारा विभिन्न योगों यथा

सांख्य योग, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, गुण त्रय, मोक्षसन्यास इत्यादि का ज्ञान दिया गया है। इसी ज्ञानधारा के निरन्तर प्रवाह के कारण भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर कहलाये।

आज के युग में इनकी प्रासंगिकता-विष्णु भगवान के ये दोनों अवतार- मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण सदा सर्वदा वन्दनीय और अनुकरणीय हैं। किन्तु आज समाज में जो अराजकता व्याप्त है,उससे लड़ने के लिए हमें राम की तरह मर्यादित रहकर कार्य करना होगा और ज़रूरत

पड़ने पर श्रीकृष्ण की नीतियों का पालन भी करना पड़ेगा। क्योंकि आज हमारे शत्रु रावण के जैसे विद्वान नहीं हैं। आज चतुर्दिश दुर्योधन दुःशासन भरे पड़े हैं। उनसे निपटने के लिए श्रीकृष्ण की नीतियाँ अधिक कारगर सिद्ध होंगी। "शठे शाठ्यम् समाचरेत्" की नीति अपनाई जानी चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हताश निराश जनमानस में नूतन प्राण फूंकने का जो कार्य गोस्वामी तुलसीदास जी की वाणी ने 'श्रीरामचरितमानस' के माध्यम से किया था और निराश हताश अर्जुन के उत्साहवर्धन का कार्य योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण जी की वाणी ने 'श्रीमद्भगवद्गीता' के माध्यम से किया था।

यही हमारे इन दोनों ग्रंथों की विलक्षणता है और इसीलिए ये दोनों ग्रन्थ न केवल हमारे देश में बल्कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, पठनीय हैं और अनुकरणीय हैं।

रामायणकालीन अर्थ व्यवस्था

ममता जैन
(mamta13in@gmail.com)

भारतीय चिन्तकों ने मानव जीवन की सुख-समृद्धि, कुशलक्षेम और पारलौकिक कल्याण के लिए सांगोपांग चिन्तन किया और उसके लिए चार और पारलौकिक कल्याण पुरुषार्थ निर्धारित किए। ये पुरुषार्थ है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अर्थ किसी भी परिवार का ही वरन् समाज और राष्ट्र का चालक और विकास का मूल होता है। इसलिए अर्थ को समुचित महत्व देकर चतुष्टय में रखा गया। रामायण अनुशीलन से अत्यंत सुनियोजित एवं विकसित अर्थ व्यवस्था का अभिज्ञान होता है। उस समय अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र के निकट था, जिसमें नैतिकता थी, आचरण था। जीवन प्रबंधन की तरह अर्थ प्रबंधन में सब अपने कर्तव्य, दायित्वों व मूल्यों को सर्वोपरि रखते थे।

"**चलहि स्वधर्म निरत श्रुतनीति**" (सब नीति में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते थे।)

रामयुगीन युग आर्थिक दृष्टि से इतना समुन्नत था, गोस्वामी जी ने लिखा है -

" बाजार रुचिर न बनइ, बसत वस्तु विन गथ पाइए
जह भूप रमानिवास तह की संपदा किमी गाइए ॥"

रामचरित मानस में राजा के आर्थिक (वित्तीय) अधिकार, आर्थिक नीतियां ,अर्थ प्रबंधन, प्रजा के प्रति कर्त्तव्यों और राज्य की सुव्यवस्था के लिए पूरी पूरी स्पष्ट व्याख्या है। बाल्मीकि रामायण में श्रीराम को अर्थविभागविद् भी कहा गया है "वैहारिकाणां शिल्पानां विज्ञातार्थविभागवित्। (बा.रा.- अयोध्या कांड)

इस काल में अर्थ के अन्तर्गत सिक्के या मुद्रा ही नहीं थे अपितु अन्न पशु, गृह, भूमि, गाय, हाथी, घोडे, कुशल शिल्पी एवम सैन्य शक्ति भी समाहित थे। अर्थ का व्यापक अर्थ श्रीराम से मिलने आए भरत से पूछे गए प्रश्न से स्पष्ट होता है, "क्या तुम्हारे सभी दुर्ग, धन-धान्य, अन्न, शस्त्र जलयन्त्र, शिल्पी तथा धनुर्धर सैनिकों से भरे-पूरे रहते है ?

इस युग में अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही था। कृषि की समृद्धि से राज्य की सुख-शान्ति समृद्धि स्थायी रहती थी। कृषि समुन्नति के कारण सिंचाई की समुचित व्यवस्था थी। फसले प्रायः दो बार प्राप्त की जाती थी, एक शरद में बोयी जाती थी और कार्तिक मास में काटी जाती थी इसमें धान, उडद, तिल आदि मुख्य थे। दूसरी फसल जो हेमन्त ऋतु की फसल थी, यह फाल्गुन मास में काटी जाती थी। इसमें गेहूं, जौ, चना, दलहन, धान आदि पैना होता था। (रा.3/16/17) कृषि वर्षा पर आधारित थी। वर्षा के अभाव में केवल किसान की खेती नहीं बल्कि व्यापारी का व्यापार चौपट व नौकरियों तक का अभाव रहता था। गो.स्वामी के मतानुसार गरीबी शोषण जनित नहीं, वर्षा केंद्रित थी।

ग्रामीण क्षेत्रो में पशुपालन भी प्रमुख व्यवसाय था। समाज का एक वर्ग पशुओं की देखरेख तथा उनकी सेवा-सुश्रुषा कर जीविका चलाता था। इसमे गाय प्रमुख थी, इसके अतिरिक्त हाथी, घोड़ा, ऊंट, खच्चर, कुत्ता, गधा आदि भी पाले जाते थे।(रा०-2/100/50, 2/45/14, 3/64/ 41-47) अयोध्या में कोई ऐसा नहीं थी जिसके पास पशुधन का अभाव हो। राजा भी अपने संरक्षण में पशु-पालन किया करते थे। चित्रकूट में मिलने आए भरत से राम ने संरक्षित पशुओं का भी समाचार पूछा था।

अयोध्या में उच्च कोटि के शिल्पी व कारीगर थे, इस कारण उद्योग व्यसाय उन्नत कोटि का था। हर हाथ को काम, हर कला का सम्मान वहां था। तत्कालीन समाज में सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र का व्यापार, सोने, चांदी, रत्नों के आभूषण गढने वाले विशेष शिल्पी व परखने वाले जौहरी थे। स्त्री पुरुष ही नहीं पशु (हाथी, घोडे, रथ) भी आभूषणों से सज्जित होते थे। अयोध्या में सभी स्त्रियाँ ही नहीं अपितु पुरुष भी बाजूबन्द, हाथ में कड़ा आदि आभूषण धारण किए ही दृष्टिपथ में आते थे। हाथी दाँत से बनी वेदियाँ, सिंहासन, विभिन्न प्रकार की मूर्तियां, खंभे, खिडकियों का उल्लेख मानस में मिलता है। तत्कालीन अर्थव्यवस्था माँग के अनुरूप उत्पादन पर आधारित थी। वास्तुकार कुंभकार, मल्लाह, तन्तुवाय, रजक, याजक, श्रमजीवी, सुधारक, गन्धोवजीवी , यन्त्रक, वणिक, खनक, वादिक आदि का आर्थिक विकास एवं राज्य की श्रीवृद्धि में प्रशंसनीय योगदान रहता था। रामायण में अनेक स्थलों पर विभिन्न श्रमिकों का उल्लेख आया है। समान उद्योगों में लगे शिल्पियों के अपने अपने संघ थे, जो अपने व्यवसाय के अन्तर्गत कर्मकरों के हितचिंतन के प्रति उत्तरदायी थे। इन संघ संगठनों को महर्षि वाल्मीकि ने "नैगम" की संज्ञा दी। इनका नागरिक व राजकीय क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण स्थान था। (रा. 2/14/40-41) राम के राज्याभिषेक में नैगमो के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। (रा. 6/28/62) इस व्यवस्था में विशिष्टता यह थी कि श्रम के क्षेत्र में अयोग्य प्रतिस्पर्धा का स्थान नहीं था। जन्मते ही बालक को अपनी जाति / धर्म का काम मिलता था अर्थात् कार्य-निर्धारण स्पष्टता के कारण सभी आत्मविश्वास के साथ परंपरागत कार्य में शीघ्रता से निपुणता हासिल कर लेते थे। उद्योग

श्रम मूल्य प्राप्ति के लिए ही नहीं वरन्, सेवा व परोपकार के लिए भी होता था। सभी अपने श्रम की कमाई से संतुष्ट थे और अपने कर्म को पालन निष्ठापूर्वक करते थे। परस्पर प्रेम और सामंजस्य होने के कारण वर्ग विभेद, जाति-विद्वेष नहीं था, जिससे आर्थिक उन्नति सहज व स्वाभाविक थी।

उत्पादित वस्तुओं का वितरण व विनियोग अर्थशास्त्र का महत्त्वपूर्ण घटक है। अयोध्या में क्रय-विक्रय के लिए बाजार सजते थे। कुबेर के समान श्रेष्ठ धनिको व्यापारी को देख लगता था मानों सब ब्रह्मा ने बनाया हो

"-चारु बाजारु विचित्र अंबारी। मनिमय विधि जनु स्वकर संवारी।

धनिक बनिक वर धनद समाना। बैठे सकल वस्तु लै नाना ।।

अयोध्या के बाजारों में व्यापारी बजाजा आदि एक साथ बैठते थे। स्त्री, पुरुष, बच्चे और बूढे जो भी उन दुकानों पर बैठते थे, सभी सुखी, सदाचारी और सुंदर थे। महिलाओं को व्यापार करने की स्वीकृति थी। मानस में लिखा है-

"बैठे बजाज सराफ वनिक अनेक माहु कुबेर ते। सब सुखी सब सच्चार सुंदर नारि सिसु जरठ जै ।"

मानस में लक्ष्मण का यह कथन "जिसकी सम्मति से राम बन गये, वह लाह, मधु, मांस, लोला विष आदि निषिद्ध बेचकर अपना भरण-पोषण करे। यह सिद्ध करता है कि ये वस्तुएं विक्रय के लिए निषिद्ध मानी जाती होगी। (रा. 2/75/38) अयोध्या व्यापार का प्रमुख केंद्र माना जाता था।

किसी भी राष्ट्र की आर्थिक उन्नति और व्यापार यातायात के संसाधनों पर निर्भर करता है। रामायण में आवागमन हेतु स्थल, जल व वायु मार्ग के यातायात के साधनों का उल्लेख मिलता है। सर्वाधिक स्थल मार्ग पर चलने वाले रथ, शकट, शिविका (डोली) आदि प्रमुख थे। रामायण में अनेक प्रकार के रथों का उल्लेख मिला है। जिसमें औपबाह्य (सवारी रथ), सांग्रामिक रथ (युद्ध के समय), पुष्प रथ (विशेष अवसर पर) का उल्लेख मिलता है। जल यातायात में नौकाओं का प्रचलन था। राम वन गमन के अवसर पर नौका द्वारा ही गंगा पार हुए थे। रामायण में आकाशमार्ग से ही रावण सीता का हरण करके ले गये थे। इसी प्रकार सीता की खोज करने अंगद, हनुमान आदि बानर आकाश मार्ग से ही किष्किन्धा पहुँचे थे। इन सभी यातायात के माध्यम से व्यापार होता था। व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में अच्छी श्रेणी के चन्दन, अगरु (धूप), अलसी या सन के बने कपडे, रेशमी वस्त्र, मोती, स्फटिक, रत्न आदि विविध वस्तुएँ थी। (भट्ट,डॉ. जगदीश चन्द - रा० पृ०-48)

रामायण में यत्र-तत्र बिखरे उदाहरण मिलते हैं जिनसे पता चलता है अयोध्या में व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका था। अयोध्या से नित्य प्रति नाना देश के व्यापारी पण्य बस्तुएं लेकर आते जाते रहते थे।(रा. 1/ 5/14) उत्तर काण्ड में मधुपुरी लवणासुर के अत्याचार से मुक्त होने पर नाना देश के व्यापारियो से समृदुध हो गई थी। (रा०-7/71/14) मानस में ऐसे व्यापारियों का भी वर्णन है जो समुद्र पार देश से व्यापार करने आते थे और अयोध्या सम्राट को कर देते थे। बालकांड में कंबोज, वाहनिक , सिंधुनद के घोड़े से अयोध्या को समृद्ध बताया गया (रा.-7/7/19)। उस समय प्रमुख व्यापारिक नगरों में दूसरे देश से आगत व्यापारियों के ठहरने के लिए विश्राम स्थल बने हुए।थे। (रा.- 1/15/14)

रामायण काल में गौ को विनियम का प्रमुख माध्यम व मूल्य का मापदण्ड माना जाता था। कालान्तर में व्यापारिक गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न से मुद्रा का प्रचलन हुआ।अयोध्या में "निष्क" और "जम्बूनद" आदि प्रसिद्ध प्रचलित स्वर्ण मुद्राएं थी। अयोध्या आते समय कैकेय राज ने भरत को दो हजार निष्क भेंट किए थे। (रा०-2/70/21) बनगमन के समय राम ने सुयस को एक हजार निष्क प्रदान किया था। (रा.2/32/10) सोने के अतिरिक्त चांदी के भी सिक्के का प्रचलन था। अश्वमेध के अनन्तर महाराज दशरथ ने जाम्बूनद के साथ रजत सिक्के भी दान के दिए थे। रामायण में माप तौल के प्रमाण भी मिलते है। "द्रोण" तरल पदार्थो के लिए, "योजन" दूरी मापने का एक मापदण्ड था। इसके अतिरिक्त अंगुल, धनुष, हाथ आदि भी मानक भी थे।

अर्थ का राष्ट्र के स्वामित्व से ही संबंध नहीं होता, अपितु उसका अस्तित्व भी इसी पर निर्भर करता है। आय के स्रोत और वित्तीय व्यवस्था को सुदृढ़ मजबूत करना किसी भी राजा का सर्वप्रथम कर्तव्य था। इसीलिए प्राचीन काल में कोष को राज्य का आवश्यक अंग माना और उसके संवर्धन , संचालन एवं सदुपयोग हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। किष्किन्धा काण्ड में उल्लेख मिलता है कि जिस राजा का कोष, दण्ड, मित्र एवं अपना शरीर सबके सब उसके नियंत्रण में रहते है, वही राजा विशाल राज्य का पालन एवं उपभोग कर सकता है। (रा०-4/29/11) प्रत्येक युग की आम जनता कर के बोझ से त्रस्त रही है , किन्तु रामायणकालीन समाज में आर्थिक व्यवस्था को सशक्त बनाने हेतु कर वसूली तो होती थी परंतु राजा धर्म व शास्त्र सम्मत विधि से करता था। प्रजा पर करों की उतनी ही मात्रा रखी जाती थी जितनी राजकोष के संवर्द्धन की दृष्टि से आवश्यक हो। रामायण में भूमिकर (जो सामान्य रूप से उपज का छठा भाग होता था), जलकर (संभव है यह राजा द्वारा नहरों जलाशयों, कुओं , बांध निर्माण करवाने के एवज में लिया जाता हो) रामायण में सिंचित / असिंचित दो प्रकार की भूमियों का उल्लेख है। कर की मात्रा भूमिनुसार तय थी), कृषिकर (पशुओ से कुटीर उद्योग चलाये जाते है अच्छी नस्ल के घोड़े हाथी जो दूसरे देश से मंगवा जाते थे उन पर भी क्रय विक्रय कर लगता था) खानों पर कर चित्रकूट मलय उदय आदि पर्वतों को धातुमंडित बताया गया है जहां से लाल रक्त, मंजीठ ,कमलावत श्वेत वर्ण की विशुद्ध धातु प्राप्त होती थी क्योंकि इन पर राजा का स्वामित्व होता था इसलिए व्यापारी कर चुकाते थे। इस काल में फल ,शाक, फूल, गंध औषधि तथा रसायन आदि पर भी कर लिया जाता था। ये भी आय के स्रोत थे। उद्योग/ बिक्री कर चुंगी रूप में प्राप्त होता था। यात्रा कर, भेंट से प्राप्त आय, दंड /जुर्माना से प्राप्त आय भी राजकोष वृद्धि के स्रोत थे।विशेष स्थान परिस्थितियों में राजा निर्धारित करो में जनता को छूट देता था यथा यदि कोई बंजर भूमि को कृषि योग्य बना दे तो उसे भू राजस्व में छूट दी जाती थी। अयोध्या वर्णन में राजा को कर देने वाले व्यापारियों से घिरे हुए बताया गया है(रा.1/70/14)

महत्वपूर्ण तथ्य उस काल में यह था प्रजा राजा को जो भी कर देती थी, उसके बदले में राजा प्रजा का पालन करता था, देश की रक्षा करता था , तथा विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करता था। यह सब न करने वाला शासक पाप का भागी बनता था। अरण्य कांड में राक्षसों के अत्याचार से पीडित

ऋषि मुनि राम से प्रार्थना करते है "जो राजा प्रजा से उसकी आय का छठवाँ भाग प्राप्त कर पुत्र के समान रक्षा नहीं करता उसे महान अधर्म का भागी होना पड़ता है। राजा मात्र भौतिक संपति का अर्जन करना अपना लक्ष्य नहीं रखता था अपितु प्रजा के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए समस्त सुविधाएं उपलब्ध करवाता था। तभी गोस्वामी कहते है- "**दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहि काहुहि व्यापा ।।**

रामायण कालीन अर्थव्यवस्था केवल मुद्रा मूल्यों से नहीं, जीवन मूल्यों से नैतिक मूल्यों से संबंधित थी। इसलिए सभी मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्या, बहुश्रुत, निर्लोभी, सत्यवादी और अपने-अपने धन से संतुष्ट रहने वाले थे। ऐसे में दरिद्रता कैसे निवास कर सकती है। **'नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना।'** यह रामराज्य की आदर्श उत्कृष्टता का प्रमाण है। शायद इसलिए आज भी सभी सुशासन के लिए रामराज का ही आदर्श सम्मुख रखते हैं।

विदेशों में रामकथा की यात्रा

करुणा पाण्डे
(karunapande15@gmail.com)

रामकथा सिर्फ एक कथा नहीं हैं एक संस्कार है, एक दर्शन है और जीवन जीने की एक मार्गदर्शिका है | इसलिए इसका विस्तार सिर्फ एक भूखंड तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व में अपनी सुगंध को फैलाती हुए अनेक रूपों में फैलती रही है | यद्यपि इन विदेशी कथाओं में बीच-बीच में रोचक आख्यानों के माध्यम से नाटकीयता लाने का प्रयास किया गया है परन्तु अंतत्त: वे सभी मूलधारा में महर्षि बाल्मिकी की ज्ञान गंगोत्री से ही प्रवाहित हुयी हैं |

भारत राम को केवल एक ऐतिहासिक पुरुष ही नहीं मानता, उन्हें एक पुनीत परंपरा का प्रकाशक मान जन-जन में रमने वाले उनके शास्वत तत्व की उपासना करता है | इसीलिये अनेक ऐतिहासिक पुरुषों की स्मृतियाँ यदि पुस्तकों के पन्नों में सिमट कर उन्हीं के साथ धूमिल हो गयी हैं तो वहीं राम जन मन रंजन बन प्रत्येक युग को प्रेरित और प्रकाशित करते रहे और आज भी कर रहे हैं | पुरातत्व के द्वारा वह परखे और निरखे नहीं जा सकते क्योंकि उनका निवास भूगर्भ में नहीं हर जन के हृदय में है | उनकी प्राप्ति, पूजन और वंदन-पूजा और भक्ति से ही संभव है, कोरे उत्खनन, अध्ययन, और अनुशीलन से नहीं | वे इतिहास और भूगोल से परे ऐसी दिव्य विभूति हैं जो अपनी पहचान और परख के लिए तिथि और संवत के मुखापेक्षी नहीं हैं | इसके विपरीत दासता काल में कतिपय अंग्रेज लेखकों ने रामकथा की महत्ता को स्वीकार किया | ए. के. वेबर का मत है कि राक्षस लंका के बौध्द थे| मोनियर विलियम कहते हैं कि दक्षिण में आर्य संस्कृति के प्रचार हेतु राम ने लंका तक धावा बोला था | एटकिन्स और रूसी विद्वानों ने अनुवाद करते समय बहुत सावधानी रखते हुए रामचरितमानस का अनुवाद किया| अंग्रेज महाकवियों में होमर, शेक्सपियर, आदि की रचनाओं में रामकथा की प्रतिष्ठा पाई जाती है | सन 1980 में पादरी हवेलिंग ने अपनी पुस्तक “दि राइज आफ रिलिजस सिंग्नीफिकेंस आफ दि राम” में स्वीकार किया है कि यूरोप में राम का महत्त्व आज बढ़ता जा रहा है| जापान में भी रामायण का जिक्र मिलता है | अकबर जहाँगीर और औरंगजेब जैसे मुग़ल शासकों ने भी रामायण का उर्दू में अनुवाद कराया था | रामायण ही एक ऐसी कथा है जो अलग-अलग रूपों और भाषा में पढी जाती है | फादर कामिल बुल्के की रामकथा में ये अंतर है कि ये रामकथा के कुछ विषयों की एतिहासिकता की पुष्टि करते हैं |

राम की वैश्विकता पूरे विश्व में प्रमाणिकता के साथ है | सांस्कृतिक राम या राम की संस्कृति इतनी व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण है कि उसका अभी लेशमात्र ही प्रकाश में आ सका है |

“मंगल करनि कलिमल हरन, तुलसी कथा रघुनाथ की ||”

पूरे विश्व को एक इकाई मानकर यदि इसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाय तो इस प्रकार कुछ चरण और क्षेत्र मिलते हैं –

1. दक्षिण-पूर्व एशिया – थाइलैन्दे, वियतनाम, इंडोनेशिया, कम्बोडिया आदि |
2. कैरेबियन देश – वेस्टइंडीज, सूरीनाम, मॉरिशस आदि |
3. मध्य पूर्व – ईराक सीरिया मिस्र आदि |
4. यूरोप – इंग्लैंड बेल्जियम आदि |
5. मध्य अमेरिका – होन्डूरास आदि |

विदेशों में रामकथा अति प्राचीन काल से प्रचलित है जिसके अनुशीलन से पता चलता है कि रामायण अथवा राम कथा से अधिक लोकप्रिय कोई अन्य कथानक अथवा आख्यान नहीं है | रामकथा का प्रसार दक्षिण पूर्वी एशिया से अमेरिका तक ईसा शती से पूर्व ही हो चूका था | जिससे प्रभावित होकर इन देशों ने अपनी रामायणें लिख डाली जिन की कथा पर आज भी रामलीला का मंचन अनवरत होता है | बौध्द धर्म से पूर्व ही उत्तर में तिब्बत तथा दक्षिण पूर्व एशिया में हिन्देशिया, थाईलैंड, हिन्दचीन, कम्पुजिया, जावा, सुमात्रा, बाली में रामकथा का व्यापक प्रचार हुआ | छठी शती में हिन्द चीन में भारतीय चम्पा राज्य फला-फूला | जिसके एक सामंत ने विद्रोह कर कम्पूचिया (कम्बोडिया) में अपना अलग राज्य स्थापित किया, जिसकी राजधानी ‘अंगकोरवाट’ में बने विश्व के सबसे बड़े विशाल और भव्य मंदिर में पूरी रामकथा उत्कीर्ण और मूर्ति मंडित की गयी | इस मंदिर में लगी पत्थर की बड़ी-बड़ी चट्टानें, जिन्हें न हाथी खींच सकते थे और जो न क्रेन से उठाई जा सकती हैं, उसको मनुष्य खींचकर लाये थे | रामायण काकाविन, हिकायत सेरीराम, हिकायत महाराज रावण, रामकियेन, राम के लिंग, पातानी रामायण, खोतानी रामायण आदि राम कथाएं आज भी एशियाई, तुर्किस्तानी और तिब्बती प्रज्ञा को प्रकाशित कर रही है | एशियाई देशों की रामकथाएं बाल्मीकि रामायण से प्रभावित हैं जबकि तिब्बती रामायण पर बौध्द धर्म का प्रभाव स्पष्ट है | सबसे पहले रामायण का प्रचार तिब्बत में हुआ फिर खोतानी अर्थात पूर्वी तुर्किस्तान में रामायण की प्रस्तुति की गयी | तीसरी और पांचवीं शती के बीच यद्यपि चीन में दशरथ कथानकम के अनुवाद से यह कथा अनामकम -जातकम के नाम से भी प्रचलित की गयी |

दक्षिणी पूर्वी एशियाई क्षेत्र थाईलैंड राम की भावभूमि है, अयोध्या है, संजीवनी बूटी का क्षेत्र है, कालनेमि का स्थान है | थाईलैंड के रॉयल पैलेस

की भीतरी दीवारों पर सम्पूर्ण रामकियेन रामायण का अंकन है| वहां सभी राजा राम के नाम से जाने जाते हैं | इसके महल में विश्व की सबसे लम्बी रामायण की पेंटिंग है| यहाँ राम के नाम से सड़कों और पुलों के नाम रखे हुए हैं | यहाँ रामायण की पारंपरिक चित्रकला की अक्सर कार्यशाला होती है| की रामायण "रामकियेन" में रोचक आख्यान प्रस्तुत किये गए हैं, किन्तु यह आदि कवि बाल्मिकी के आदि कवित्व से परे नहीं हैं | जैसे हनुमान की लंका यात्रा का प्रसंग प्रस्तुत करते समय कुछ और प्रकरण भी हम इस कथा में पाते हैं | जिसमें हनुमान को अंगूठी एवं अन्य चिन्ह देने के अतिरिक्त राम ने जनकपुर में सीता के दिव्य दर्शन का प्रसंग भी सुना दिया और हनुमान से कहा –'जाओ ! जब तुम इसे सीता को सुनाओगे तब वह तुम पर विशवास कर लेंगी | क्योंकि सीता इन चिन्हों को देखकर भी शायद हनुमान पर विशवास नहीं करती क्योंकि यह चिन्ह तो राक्षस कपट से भी प्राप्त कर सकते थे| पर मिथिला में राम सीता की भेंट केवल राम और सीता ही जानते थे, कोई और नहीं |

इसी तरह रामकियेन की कथा आगे बढ़ती है | यह वानर दूत उड़कर यमननगर में आये | वहां एक शापग्रस्त अप्सरा पुष्पमाली शापग्रस्त होकर जीवन काट रही थी | उसे अपने शाप से मुक्त होने के लिए राम के दूत का इंतज़ार करना था | जब हनुमान ने बताया कि मैं ही राम का दूत हूँ, और उन्होंने अपने विराट रूप को दिखाया तो पुष्पमाली को विशवास हुआ और उसने हनुमान को लंका का मार्ग बता दिया | राम के प्रभाव से पुष्पमाली शापमुक्त हो गयी | आगे मार्ग में हनुमान को एक वेगवती नदी मिली जिसको पार करके ही हनुमान आगे जा सकते थे | हनुमान ने अपनी पूंछ फैला दी, उसी पर चढ़कर सारे वानर पार हो गए | आगे समुद्र मिला | वह पारावार विहीन था | हनुमान बोले शतायु के समान यशस्वी मृत्यु मुझे प्रिय है | परन्तु यह स्वीकार नहीं कि समुद्र से हार मान लूँ | शतायु का नाम आते ही एक जादू हो गया | पास की पहाडी से एक समवादी नाम का एक पक्षी निकला जो शतायु का भाई था | उसके पर कटे हुए थे | जब शतायु अनजान बालक था तब उसने उषाकाल में खिड़की से सूर्य को देखा तो उसने उसे कोई सुन्दर फल समझा और उसे लेने के लिए उड़ा | भाई को विपत्ति से बचाने के लिए समवादी ने उसे अपने परों में छुपा लिया और सूर्य भगवान का सारा क्रोध अपने ऊपर ले लिया, जिससे उसके सारे पंख जल गए | सूर्यनारायण ने कहा कि उसके नए पंख तभी आयेंगे जब राम का दूत तीन बार स्वागत ध्वनि करेगा | समवादी के नए पंख आ गए | कृतज्ञ पक्षी ने कहा कि मेरी पीठ पर बैठ जाओ | मैं तुमको गंध शिखर पर ले चलूँगा, जो हेमतीरन और लंका के बीच में है | जब समवादी ने हनुमान को नीलांचल पर्वत दिखाया जिसकी चोटी ऊँची थी तो हनुमान ने एक छलांग मारी और उस स्थान पर पहुँच गए | मार्ग में उनको एक भयानक राक्षसी मिली, जिसको दशकंठ ने समुद्र की रक्षा करने के लिए रखा था | हनुमान उसके मुख में घुस गए और उसकी आंते निकाल ली तो वह मर गयी | वहां से आगे बढे तो सोलह पर्वत पार पहुँच गए | वहां नारद मुनि रहते थे | हनुमान ने एक रात रहने की अनुमति माँगी तो नारद ने एक झोंपड़ी बता दी | हनुमान जी ने नारद की महत्ता देखने के लिए अपना शरीर इतना बढाया कि वह झोपडी छोटी हो गयी और हनुमान उसमें नहीं समाये | तब नारद जी ने ऐसी वर्षा करी जिससे हनुमान जी ठिठुर कर छोटे हो गए | नारद जी को एक शरारत सूझी | वह एक तालाब में घुस गए और उन्होंने एक लकड़ी को जोंक बना दिया | जब हनुमान जी प्रात स्नान को तालाब में गए तो वह जोक उनकी दाढ़ी में चिपक गयी और नहीं छूटी | हनुमान जी समझ गए ये नारद जी की महिमा है, वह मुनि के पास गए तब उस जोक से छुटकारा पाया |

रामकियेन में लंका दहन का वर्णन भी कुछ इस प्रकार से किया है – हनुमान लंका पहुँच गए | उनके संरक्षक चतुर्भुजी और अष्टभुजी थे | उनको मारकर हनुमान जी राक्षस के रूप में लंका में प्रविष्ट हुए | अंधेरी रात थी | हनुमान ने माया के जोर पर सबको सुला दिया और दशकंठ के महल में प्रवेश कर गए परन्तु उन्होंने सीता माँ को वहां नहीं पाया | तब उन्होंने नारद से परामर्श किया और उनके परामर्श के बाद छोटे वानर का रूप धरकर वह अशोक वाटिका में घुसे | वहां सीता जी ऐसे छिपी थी जैसे बादलों में चंद्रमा | सुबह रावण आया और उसने सीता को मनाने की कोशिश की परन्तु सीताजी ने उसकी एक बात नहीं सुनी | रावण निराश होकर लौट गया | सीता ने दुखी होकर फांसी लगानी चाही | यह देख हनुमान चौंक गए और उन्होंने वृक्ष पर चढ़कर रस्सी काट दी | तब उन्होंने सीता को अपना परिचय दिया | हनुमान को देखकर सीताजी के आँखों से आंसू बहने लेगे | हनुमान सीता को अपनी हथेली पर बैठाकर राम के पास ले जाना चाहते थे, पर सीता माँ इसके लिए राजी नहीं हुई | इसके बाद लंका दहन कुछ मानस के समान ही है | राम अपने तीरों से बार-बार रावण के सिरों और भुजाओं को छिन्न-भिन्न कर देते किन्तु वे फिर जुड़ जाते थे |

रामकियेन में इसी कथा में रावण की आत्मा को पंजरे के अन्दर कैद किया हुआ बताया है | विभीषण बताते हैं कि रावण की आत्मा तो उसके गुरु गोपुत्र के पास पिंजरे में बंद है जहाँ तक कोई नहीं पहुँच सकता | दशकंधर को तभी मारा जा सकता है जब उसकी आत्मा को मार दिया जाय | और तब हनुमान जी रावन को दिग्भ्रमित करके वह पिंजरा अंगद को दे देते हैं | राम एक तरफ ब्रह्मास्त्र छोड़कर रावन पर वार करते हैं दूसरी तरफ हनुमान पिंजरे को तोड़ देते हैं और रावण का वध होता है |

लंका के विषय में रामकियेन में अनेक कथाएं दी गयी हैं | आरम्भ में इसका नाम रंगको अर्थात कौए का घोसला बताया जाता था जो बिगड़कर लंका हो गया | इस तरह बहुत से प्रसंग हैं जो कुछ अलग हैं पर उन सबका आधार बाल्मिकी रामायण ही है |

इसी तरह लाओस जो एक कम्युनिस्ट देश है, वहां प्रतिदिन रामलीला का मंचन होता है | चौदहवीं शताब्दी में जब वर्मा द्वारा थाईलैंड की प्राचीन राजधानी अयुध्या पर आक्रमण कर ध्वस्त किया जा रहा था तब बहुत लोग भागकर वर्तमान नगर बैंकाक पहुंचे और नया शहर बनाया | कुछ लोग लाओस के दुर्गम स्थान लुअंग प्रबंग पहुंचे और बौद्ध संस्कृति के साथ रामायण मंदिर भी बनाया | यहाँ ताड़ के पत्र पर रामायण मिलती है | यहाँ राजमहल के अन्दर भगवान बुध्द की मूर्ति व अन्दर की बाहरी दीवारों पर पूरी रामायण क्रमशः दीवारों पर इस तरह से रामायण अंकन केरल के कोची में मट्टनचेरी चर्च व कम्बोडिया की राजधानी के राजमहल में मिलते हैं| खास बात यह है कि तीनों जगह चित्रांकन राजमहल में ही हुए हैं|

अंकोरवाट से लगभग 100 किलोमीटर दूर थाईलैंड की सीमा से लगा हुआ सातवीं आठवीं सदी का एक महत्वपूर्ण स्थल है | वर्तमान में यह बहुत भग्न अवस्था में हैं, परन्तु पूरे दक्षिण पूर्व एशिया की सभ्यता का केंद्र हैं | बाल्मीकि रामायण क्रौंच पक्षी की करुणा से प्रारम्भ हुआ और यह प्रसंग इस दृश्य से सजीव हो उठा है, बाल्मीकि और रामायण से सम्बंधित विश्व का यह सबसे प्राचीन स्थल है |

मिस्र में 1500 वर्ष पूर्व राजाओं के नाम तथा कहानियाँ 'राम' की भांति ही हैं | मिस्र में राम को "अमुन" देवता का अवतार मानते हैं | कर्णक मंदिर 2,000 से 4,000 साल पहले बनाया गया है और यह प्रचीन सूर्य देवता "अमुन -रा" को समर्पित किया गया है | कुछ समय पहले मिस्र के कर्णक मंदिर में राम सर वाली मूर्तियाँ मिली थी, जिसने सभी को हैरानी में डाल दिया था |

मास्को में राम की उपस्थिति वहां पर होने वाली रामलीलाओं में हमें देखने को मिलती है | 'राम'गेन्नादी मिखाईलोविव पिचनिकोय मास्को में रामलीला का प्रशिक्षण देते थे | उनको भारत सरकार ने 'पद्मश्री' सम्मान से सम्मानित किया था | आज वह हमारे बीच नहीं हैं | 2018 में उनका देहांत हो गया | उस संत की तपस्या और राम के प्रति उनकी भक्ति के रूप में वह आज भी वहां मौजूद हैं |

प्राचीन इटली की एट्रस्कैन सभ्यता कला, जिसका फैलाव सातवीं शताब्दी ई-पूर्व से प्रारम्भ होकर चौथी शताब्दी तक मध्य इटली रोम से पश्चिम तक टस्कनी आदि राज्यों तक रहा, इस सभ्यता की समानता रामायण संस्कृति से बहुत मिलती है | जैसे –
चित्रों में राम लक्ष्मण सीता का वन गमन, सीता हरण, लव -कुश का घोड़ा पकड़ना, हनुमान का संजीवनी लाना आदि | प्राचीन इटली में 'रावन्ना' क्षेत्र मिलता है, जो रावण की कथा के समान है | यहाँ कुछ लोकाकृतियाँ प्राप्त हुयी हैं जिनमें स्वर्ण हिरन, मारीच, सीताहरण की कथा, आकाशमार्ग से उड़ते हुए घोड़ो के साथ चित्र में जटायु का प्रसंग भी अंकित है |

वियतमान प्राचीन चम्पा नगरी है, जहाँ चतुर्थ शताब्दी से भारतीय संस्कृति के चित्र मिलते हैं | सातवीं शताब्दी की रावणानुग्रह मूर्ति तथा मत्स्य युग्म हमें यहाँ मिलती है |

इंडोनेशिया का धर्म इस्लाम है और संस्कृति रामायण है | धर्म और संस्कृति में यह विश्व का आदर्श है | इंडोनेशिया के बाली द्वीप के देनपासर मुख्य शहर में राम व लक्ष्मण के नाम से मार्ग बने हैं | जावा के प्रसिध्द प्रवबंन मंदिर, जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत घोषित किया हुआ है, उसी मंदिर के बगल में हर पूर्णिमा को भव्य रामलीला होती है | पुराविशाता जोगजा पर रामायण कथा पर बैले जैसी पौराणिक कला के द्वरा अपनी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए इस कथा को लगातार प्रस्तुत किया जाता है |

मलेशिया मुस्लिम आबादी वाला देश होने पर भी संस्कृति के रूप में रामायण को ही मान्य मानता है | यहाँ सुन्दर वेशभूषा के साथ रामलीलाएं मानचित होती रहती हैं | यहाँ अद्भुत प्रस्तुतियां पद्मश्री रामली इब्राहिम जी द्वारा कराई जाती हैं |

फिलीपींस में रामायण को "महारादिया लावना" कहा जाता है, जिसका अर्थ है "राजा रावण" | इन्डियोलौजिस्ट जुआन आर फ्रांसिस्को और जोसेफिन एकोस्टा पास्रीच कहते हैं कि नवी या दसवीं शताब्दी ईस्वी के आसपास फिलीपींस में हिन्दू संस्कृति का प्रभाव और लोकगीत आना दिखाई देता है | फिलीपींस से सिंगकिल का प्रसिध्द नृत्य फिलीपींस के रामायण से प्रेरित है | यह द्वीप नृत्य राष्ट्र के झील लानाओं के मारानाओं लोगों का लोकनृत्य है |

31वें आसियान शिखर सम्मलेन के उदघाटन समारोह में मनीला में 'महाराडियालाना' के आधार पर एक बैले,'रामहरी' का प्रदर्शन किया गया था, जिसमें हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी के अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, चीनी प्रीमियर ली केकियांग और जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे शामिल हुए थे और इन सभी ने इसे बहुत पसंद किया था |

कैरेबियन देश ट्रिनिडाड एवम् टोबैगो मूलतः अंगरेजी भाषी देश है | पर यहाँ की समृध्द रामलीला की परम्परा मन को रोमांचित करती है | यहाँ रामलीला की 52 मंडलियाँ हैं और 2012 में सरकार द्वारा रामलीला को एक्ट के रूप में मान्यता दी है | यहाँ दो सौ वर्ष पुराना मिट्टी का मंदी, राम-लक्ष्मण -हनुमान जी के साथ, भरत जी के तीर पर हनुमान जी और गाय की आकृति अभी भी संरक्षित है | वहां पंडित परशुराम जी के पूर्वजों ने इसे संरक्षित करके अपनी नयी पीढ़ी को सौंपा है | यह विश्व विरासत है | मिट्टी के घरों को प्रति दूसरे वर्ष अनुरक्षण करवाना पड़ता है जबकि ईंट का घर महंगा जरुर होता है पर इसका अनुरक्षण नहीं करवाना पड़ता है| भारत की यह परम्परा अब विलुप्त होती जा रही है| 2018 में अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग -उत्तर प्रदेश सरकार ने नेशनल काउन्सिल फॉर इण्डिया कल्चर (एन.सी.आई.सी.) और टोबैको की नेशनल रामलीला काउंसिल के सहयोग से ट्रिनिडाड में सांस्कृतिक दौरा किया और तीन दिन तक रामलीला का सफल प्रदर्शन किया |
कैरेबियन देश : सूरीनाम (श्रीराम देश) ब्राजील से पूर्व दक्षिण अमेरिका में आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व भारतीयों ने श्रीराम के नाम से एक द्वीप ही बसा दिया –"सूरीनाम", जो अपभ्रंश अथवा बिगड़ा हुआ रूप है | वहां प्रवास के समय उन लोगों ने बताया कि जब हमारे पूर्वज शर्तबंदी के अनुसार गन्ने की खेती करने के लिए दक्षिण -अमेरिका के उस समय के अनजाने अनामी द्वीप देश में ले जाने लगे तो लोग जब उनसे पूछते कि कहाँ जा रहे हो ? तो वे डबडबाई आँखों से ऊपर हाथ उठाकर उत्तर देते "श्रीराम" के देश में | श्रीराम नाम की आस्था से जुड़े अथक परिश्रम ने यहाँ से भेजे गए बंधुआ मजदूरों को इतना ऊंचा बना दिया कि श्री रामफल नामक एक श्रीरामी अथवा सूरीनामी व्यक्ति संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव जैसे उच्च पद तक पहुंचा| यहाँ रामलीला की समृध्द परंपरा विद्यमान है | सूरीनाम में जहाँ सबसे प्राचीन रामलीला प्रारम्भ हुयी थी, वहां तुलसीदास जी की अद्भुत प्रतिमा स्थापित

की है और तुलसी जयन्ती पर अनेक कार्यक्रम होते हैं | तुलसी बाबा कैरेबियन्स के दिलों में बसते हैं | सूरीनाम को श्रीराम का डच अपभ्रंश मानते हैं | परामिरिवो सूरीनाम और जार्जटाउन गुयाना से 250 किलोमीटर दूर नैकेरी में सूरीनाम का प्रसिध्द गंगा मंदिर है|

मॉरिशस नामक एक और द्वीप है जिसने तुलसी कृत रामचरित गाते-गाते रामभक्त डॉ. रामगुलाम के नेतृत्वमें वर्ष 1968 में स्वतंत्रता प्राप्त की | यहाँ की राजधानी पोर्ट लुई में स्थित "रामायण केंद्र" एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संगठन है | 2001 में मॉरिशस गणराज्य की नेशनल असेम्बली में पारित एक अधिनियम द्वारा हिन्दू महाकाव्य रामायण और उससे सम्बंधित सभी आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रचार और प्रसार के लिए इसे स्थापित किया गया था | इससे पहले किसी भी देश की संसद ने रामायण के प्रचार और उसकी सार्वभौमिकता के लिए इस तरह का विधेयक या इस तरह की संस्था की स्थापना नहीं की थी | इस विधेयक को 22 मई 2001 को सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया और 14 जून 2001 को गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा एक अधिनियम के रूप में घोषित किया | इस संस्था के सबसे पहले अध्यक्ष रामायण के विद्वान पंडित राजेन्द्र अरुण जी थे पर अब वह काया शरीर को त्याग चुके है पर यश शरीर से आज भी विद्यमान हैं|

दो बार के मॉरिशस प्रवास के दौरान आदरणीय अरुण जी से मिलने का सौभाग्य मिला और उनसे रामकथा उर उससे जुडी बहुत सी बातें मालुम हुई| श्री अरुण जी ने राम नाम के प्रताप का उदघाटन इन शब्दों में किया –"हिन्द महासागर में स्थित यह द्वीप देश एशिया और अफ्रीका की दह्लीच है | जब हमारे पूर्वज यहाँ आये तो उनके पास अथक परिश्रम करने वाले दो हाथ,निर्दयी गोर मालिकों की चाबुक खाने वाली पत्थर जैसी पीठ और दुर्निवार से बचाने वाली रामचरितमानस की संजीवनी आस्था थी | इसी रामकथा के कालजयी आदर्शों ने हमारे पूर्वजों को नारकीय यातना सहने की शक्ति दी|"मॉरिशस में मदिरापान का आरम्भ तक रामनाम से कैसे किया जाता है इसका रोचक प्रसंग श्री अरुण जी ने बताया जो इस प्रकार है – "व्यवहारिक जीवन में राम की महिमा अपार है, यह तो सब जानते हैं, किन्तु मॉरिशस ने इसे एक नया आयाम दिया है | यहाँ मदिरालयों में लोग शाम को जब थकान मिटाने के लिए जाम के साथ झूमते हुए अटूट मित्रता की कसम खाते हैं तो भी श्रीराम को नहीं भूलते हैं | लोग मदिरापान का श्रीगणेश करते समय "चीयर्स" नहीं कहते | ये लोग "जयराम" कहकर चीयर्स करते हैं | इसका प्रसंग उन्होंने बताया – किसी गुरु के दो शिष्य थे | दोनों शराबी थे | एक शिष्य ने गुरु से पूछा –"रामनाम जपते समय शराब पी सकता हूँ | गुरु ने डाँटते हुए कहा –" क्या बकते हो ?"

दूसरे शिष्य ने सवाल को नए ढंग से पूछा –"गुरूजी शराब पीते समय रामनाम जप सकता हूँ ?" गुरु बहुत प्रसन्न हुए | उन्होंने शिष्य को समझाते हुए कहा कि रामनाम अमृत है, इसका जप हर स्थिति में करना तुम्हारा धर्म है | हमारे पूर्वज दूसरे शिष्य की तरह थे | उन्होंने किसी भी स्थिति में राम नाम को अपने से अलग नहीं होने दिया | (रामायण ट्रेडिशन कल्चर्स इन एशिया)

मॉरिशस में गॉव-गॉव में रामायण मंडली के नाम से संस्थाएं हैं जो समाज को नित्य रामकथा से जोडती हैं | तथा वहां की स्थानीय भाषा क्रियोल में भी राम कथा पर रचनाएं मिलती हैं | वहां रामकथा पर चित्र प्रतियोगिता करवाकर बच्चों को प्रारम्भ से ही राममय बनाया जाता है | रामायण सेंटर में रामलीला का मंचन छात्रों द्वारा ही किया जाता है| वहां राम केवल एक नाम नही बल्कि जीवन पध्दति हैं |

फीजी आस्ट्रेलिया महाद्वीप से भी आगे छोटे-छोटे द्वीपों का देश है जिसे 20,000 किलोमीटर दूर लघु भारत भी कहा जाता है | हमारे देश से 1879 -1916 के बीच लगभग साथ हज़ार नागरिक, अंग्रेज सरकार ने पानी के जहाज से गन्ने की खेती के लिए फीजी भेजे थे | रोजगार के लोभ में छः माह की कठिन यात्रा करते हुए ये लोग वहां पहुंचे | घर से चलते समय यह अपने साथ रामचरितमानस की प्रति लेकर चले थे जिसने इनको इस कठिन समय में सहारा दिया | यहाँ अब यह तुलसी रामायण नाम से विख्यात है | यहाँ लगभग सौ वर्ष पूर्व रामलीला का मंदिर बनाया गया है | फीजी में मैदानी रामलीलाओं की समृध्द परम्परा विद्यमान है | बुलिलेका लबासा में श्री सनातन धर्म रामलीला मंदिर 1902 में स्थापित किया गया था | अक्तूबर 2016 में पहला अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मलेन फीजी में हुआ | फीजी में लोगों के पूजाघर में रामचरितमानस जरुर होती है और उनके पारस्परिक वार्तालाप में उसकी चौपैयाँ उद्धृत होती रहती हैं | हालांकि अब मूल फीजिवासियों की भाषा में कुछ बदलाव आ गया है परन्तु अवधि और भोजपुरी के शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई देते हैं | बच्चों को स्कूलों में मानस पढ़ाई जाती है | मानस पर आधारित भाषण, अभने आदि की प्रतियोगिताएं होती रहती हैं | बहुत सी रामलीला मंडलियाँ हैं जो रामलीला का मंचन करती हैं |

बेल्जियम में राम को प्रतिष्ठित करके राम की गाथाओं को गाने वाले वहां के मूल निवासी फादर कामिल बुल्के थे | फादर कामिल बुल्के बेल्जियम निवासी थे जो 1935 में भारत आने के बाद राममय हो गए थे | उनके द्वारा 1960 में लिखी गयी "रामकथा"बेल्जियम में राम पर किया गया आज तक का श्रेष्ठतम कार्य है | इस ग्रन्थ को लिखने में फादर ने बहुत परिश्रम किया | यह पुस्तक चार भागों में विभक्त है प्रथम भाग में 'प्राचीन रामकथा साहित्य' का विवेचन है | इसके अंतर्गत पांच अध्यायों में वैदिक साहित्य और रामकथा, बाल्मीकि कृत रामायण, महाभारत की रामकथा, बौध्द रामकथा तथा जैन रामकथा संबंधी सामग्री की पुरी विवेचना की है | द्वीतीय भाग का सम्बन्ध रामकथा की उत्पत्ति से है | तीसरे में अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिंहावलोकन और चौथे में विश्व के अन्य देशों में प्राप्त रामकथा का सार दिया गया है |

'**दक्षिण अमेरिका के देश गुयाना** में राम और कृष्ण के अनेक मंदिर हैं | गुयाना में हिन्दू धार्मिक सभा है, रामलीला केंद्र है, जहाँ रामलीला का मंचन होता है | गुयाना के बर्बिस शहर में श्रीराम का एक भव्य मंदिर है जिसमें श्री राम दरबार के अलावा अन्य देवताओं की भी पूजा की जाती है | इस देश में 30 प्रतिशत से अधिक हिन्दू निवास करते हैं | यहाँ सीताराम तुलसी विध गणेश मंदिर, केन्द्रीय वैदिक मंदिर, आदि स्थान राम और कृष्ण लीलाओं के आख्यान के लिए प्रसिध्द हैं | जब ईसाई मिशनरियों ने दासता अवधि के दौरान पूर्वी भारतीयों का धर्मान्तरण करने का प्रयास किया तो

ब्राह्मणों ने जाती की परवाह किये बिना सभी हिन्दुओं को धार्मिक संस्कार देना शुरू कर दिया और आर्य समाज तेजी से स्थापित होने लगा | परन्तु रामभक्ति में कोई अंतर नहीं आया | रामलीला और रामकथा हमेशा की तरह चलती रही |

होंडुरास की सीमा पश्चिम में ग्वाटेमाला से,दक्षिण पश्चिम में अल साल्वाडोर से, दक्षिण पूर्व में निकारागुआ से, दक्षिण में फोनसेका की खाड़ी में प्रशांत महासागर से और उत्तर में होंडुरास की खाड़ी से लगती है,जो एक बड़ा प्रवेश द्वार है | इसकी राजधानी और सबसे बड़ा शहर तेगुसिगाल्पा है | यह मध्य अमेरिका का देश है,जहाँ हनुमान जी की प्रतिमा व विशाल शहर घने जंगलों में मिला है | इस खोज को किये जाने से मध्य अमेरिका महाद्वीप के सांस्कृतिक संबंधों को नयी दिशा मिलेगी |

श्रीलंका में 50 से अधिक रामायण आधारित मंदिर मिलते हैं | तमिल क्षेत्र में 100 से अधिक गॉवों में मैदानी रामलीला होती हैं जिन्हें “कुन्तु” के नाम से जाना जाता है | श्रीलंका के त्रिकोमाली में विभीषण का मंदिर बहुत प्रसिध्द है | प्राकृतिक कोबरा हुड गुफा श्रीलंका के सिगिरिया में है | इस गुफा की छत पर असुरों द्वारा कैद की गयी माँ सीता की कई तस्वीरें हैं |कहा जाता है कि रावन ने माँ सीता को इसी गुफा में रखा था | लंका में मौजूद अशोक वाटिका झील के किनारे आज भी हनुमान के विशाल पैरों के निशान देख सकते हैं | पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाड़ी के बीच जिस पुल का आज अस्तित्व हम देख रहे हैं और जो भारत और श्रीलंका के बीच एक कड़ी या सेतु का काम करता है उसे रामसेतु या एडम्स ब्रिज कहा जाता है |

राबगोडा-- श्रीलंका के ऊपरी मध्य क्षेत्र कैंडी में भक्त हनुमान जी का विशाल मंदिर है | 40 फीट ऊंची प्रतिमा,चाय की बागानों के बीच बहुत भव्यता से स्थापित है | यहाँ हनुमान जयंती पर बहुर से अच्छे कार्यक्रम होते हैं | मान्यता है कि सीता माता की खोज में आने पर हनुमान जी ने यहीं विश्राम किया था | अशोक वाटिका भी यहीं है और सीता माता जी के “आंसुओं का तालाब” भी इसी के पास है |सिंहली लोगों द्वारा रामायण को आधार बनाकर श्रीलंका की सिंहली और तमिल कुत्तू रामलीला को आधार बनाकर उत्कृष्ट रामलीलाओं का मंचन होता है|

नेपाल में चार रामायणें हैं | जसमें भानुभक्त कृत रामायण बहुत प्रचलन में है | नेपाल के लोग इसे अपनी आदिरामायण मानते हैं | नेपाल में रामकथा का विकास बाल्मीकि और आध्यात्म रामायण के आधार पर हुआ | इसमें उसी तरह सात काण्ड हैं – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, युध्द्कांड और उत्तरकाण्ड | इस रामायण में कुल 1317 पद हैं और यह सीधे शिव-पार्वती संवाद से शुरू होती है | भानुभक्त कृत रामायण में आध्यात्म रामायण की तरह रामगीता को सम्मिलित नहीं किया गया है क्योंकि इस रामायण के अंतिम काण्ड को पूरा करते समय भानुभक्त मृत्यु शय्या पर पड़े थे, वे स्वयं लिख नहीं सकते थे | उनके मित्र पंडित धर्मदत्त ग्यावली के अनुरोध पर उनके पुत्र रामकंठ ने महाकवि द्वारा अभिव्यक्त ‘रामगीता’ को लिपिबध्द किया | इस प्रकार यह नेपाली भाषा की महान रचना पूरी हुयी|

जानकी मंदिर नेपाल के जनकपुर के केंद्र में स्थित एक हिन्दू मंदिर एवम् ऐतिहासिक स्थल है | यह स्थान माँ सीता को समर्पित है | मंदिर की वास्तु हिन्दू-राजपूत वास्तुकला है | यह नेपाल में सबसे महत्त्वपूर्ण राजपूत स्थापत्य शैली का उदाहरण है और जनकपुर धाम भी कहलाता है | नेपाल को माँ सीता का मायका कहा जाता है|

पाकिस्तान तो हमारे देश का ही हिस्सा है, इसलिए वहां राम उसी तरह व्याप्त रहे हैं जैसे हिन्दुस्तान में हैं | पर राजनीतिक स्वार्थ के कारण अब वहां बहुत बदलाव आ गया है | जब तुलसीदास जी ने रामचरितमानस लिखा तो विभाजन नहीं हुआ था इसलिए इसका प्रभाव सब जगह समान रूप से व्याप्त था | कराची में जिस स्थान पर रामलीलाओं का मंचन स्वतंत्रता संग्राम के पूर्व होता था उसे “रामबाग” कहा जाता था | पर बाद में इसे परिवर्तित कर “आरामबाग” के रूप में कई आधुनिक बिल्डिंग बना दी गयी | मान्यता है कि हिंगलाज शक्तिपीठ का दर्शन करने राम जी ने माता जानकी के साथ जाते हुए रामबाग में एक रात्रि विश्राम किया था | पाकिस्तान के इस्लामाबाद में प्राचीन वक्त में तीन मंदिर थे | एक सैयदपुर गॉव, दूसरा रावल धाम और तीसरा गोलरा के फेमस दारगढ़ के पास था | यहाँ रामकुण्ड,सीताकुण्ड और लक्ष्मण कुंड नाम से तीन सरोवर भी थे | यह सोलहवीं सदी में बने थे जहाँ हर साल रामनवमी पर मेला लगता था | पर अब यह परम्परा बंद हो गयी है और मूर्तियाँ वहां से हटा दी गयी हैं | इसका जिक्र गजेटियर में भी है |

मध्य-पूर्व : ईराक मध्य एशिया में राम के लगभग 4000 वर्ष प्राचीन गुफा चित्र प्राप्त हुए है | यह चित्र ईरान-ईराक की सीमा पर बेलुला के पास प्राप्त हुयी चट्टानों पर हैं जो अत्यंत स्पष्ट हैं | यह मध्यपूर्व में श्रीराम की उपस्थिति परम,आणित करते हैं | सुलयमानिया यूनिवर्सिटी के श्री उस्मान तोफीक, जो कालेज आफ आर्कियोलोजि में सहायक व्याख्याता है उन्होंने इन पर काम किया और प्रस्तुत किया |

रूस

रामकथा ने बहुत दूर दूर तक की यात्रा की है और यही एक ऐसा चरित्र है जिसे हर देश ने अपनी भाषा में लिपिबध्द किया है | कुछ लोग राम को भगवान मानते हैं, कुछ उनको महापुरुष मानते हैं परमतत्व भगवान् नहीं | बाल्मीकि के प्रश्न के उत्तर में नारद मुनि राम के जिन सद्गुणों का प्रख्यापन करते हैं, वे गुण किसी भी व्यक्ति में आ जाए तो वह राम हो सकता है –“रमयति सर्वान गुणे -इति राम:”| अयोध्या के विद्वान **संत लक्ष्मण किलाधीश स्वामी सीताराम शरण** अपने अपने ग्रन्थ **“बाल्मीकि रामायण -एक मीमांसा”** में लिखते हैं कि महर्षि बाल्मीकि ने अपनी रामायण में राघवेन्द्र के जिन गुणों का विषद वर्णन किया है उसमें सभी राम भक्तों एवं अभक्तों का सामान आकर्षण देखा जा सकता है | यूरोप में ‘हरे राम हरे कृष्ण’ के जिस भक्ति आन्दोलन का कुछ वर्ष पूर्व बीजारोपण किया था आज वह पल्लवित और पुष्पित हो रहा है | वास्तव में राम अपने सद्गुणों के कारण बाल्मीकि के शब्दों में धर्म मूर्ति बन गए और इसीलिये वे अनुकरणीय और पूज्य भी हो गए हैं | ईश्वर की इस मानवीकरण प्रक्रिया ने भौतिकवादी रूस तक को

आकर्षित कर लिया, वारान्निकोव की भूमिका जिसका प्रमाण है | राम के अवतरण की यह पुनीत प्रक्रिया अनेक विघ्न बाधाओं को पार करती हुयी इतिहास को पीछे छोड़ मंगलमयी रामकथा को आगे करती आयी है –

तुलसी जाके मुखन ते, धोखे निकसे राम |
ताके पग की पानही, मेरे तन को चाम ||

विविधता, समावेशन और सर्वव्यापी राम

अलका प्रमोद
(pandeyalka@rediffmail.com)

विविधता, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सार्वभौमिक यथार्थ है और यह प्राकृतिक है, अवश्यंभावी है। विविधता यदि अपरिहार्य है तो इन विविधताओं का परस्पर सामंजस्य और समावेशन सृष्टि का मूल आधार। मानव समाज सृष्टि का ही एक अंग है अतः इसका अपवाद नहीं है। काल, स्थान, परिवेश के दृष्टिगत विविधताएँ भी विविध प्रकार की हैं परन्तु यह अलौकिक है, अदभुत है कि श्री राम सबमें समाये हैं। 5114 ई0पू0 धरती पर अवतरित राम तब से वर्तमान तक सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, लैंगिक, भाषाई एवं क्षमता की विविधताओं से परे सबके ह्दय में वास करते हैं। श्री राम ने धर्म और गुण के मध्य सेतु बनाकर विविधता का समावेशन किया जिसने उनके प्रति आस्था को सतत जीवित रखा और वह आज भी सर्वव्यापी हैं।

1. प्रस्तावना

विविधता एक प्राकृतिक सच है और आवश्यक भी, यदि विविधता न हो तो सृष्टि का अस्तित्व ही न हो। रामचरित मानस में भी लिखा है -
‘छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।।’

परन्तु विविध तत्वों का संतुलित समावेश और परस्पर निर्भरता ही सृष्टि का आधार है। यह सच मात्र प्रकृति के लिए नहीं प्रकृति में उपस्थित सभी जीव-जन्तुओं के लिए भी है। मानव समाज में भी विविधताएँ हैं। यथा सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक परंपराएँ, भाषाई विविधता, लैंगिक भेद, आर्थिक भिन्नता, स्थानीय भिन्नता आदि। स्वाभाविक है कि मानव के विचारों में, बौद्धिक स्तर में, क्षमता में, व्यवहार में भी विविधता है। परन्तु सभी अनेकताओं के मध्य एक अद्भुत साम्य है कि समय की सीमाएँ लांघ कर सभी अनेकताओं से परे श्री राम को सभी अपना राम मानते हैं वह सबके ह्दय में विराजते हैं।

‘‘रमणे कणे-कणे इति रामः’’

कहते हैं यह वैज्ञानिक तथ्य है कि जो अनुपयोगी है वह समय के काल चक्र में स्वमेव विलुप्त हो जाता है परन्तु श्री राम लगभग साढ़े सात हजार वर्षों के अन्तराल के बाद भी वैश्विक पटल पर विद्यमान ही नहीं हैं सबके आराध्य हैं, प्रिय है। इसका सशक्त उद्धरण अभी श्री राम की अयोध्या मंदिर में हुई प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर देखा जा सकता है। मात्र अयोध्या नहीं, मात्र भारत नहीं, विश्व राममय हो गया। यही नहीं पूर्व में भी लंका इंडोनेशिया कम्बोडिया लाओस आदि एशिया से बाहर मारीशस त्रिनिनाड टोबैगो गुयाना सूरीनाम फिजी आदि में राम स्तुत्य हैं। 300 से अधिक भाषाओं में रामायण लिखी गयी।

ऐसा क्यों हैं? इसका उत्तर बाल्मीकि की रामायण के अरण्य काण्ड के सूत्र ‘‘रामो विग्रहवान् धर्मः’’ में निहित है। राम धर्म के विग्रह हैं। रामनाम से धर्म स्पंदित होता है। यह सूत्र राम को संपूर्णता में परिभाषित करता है। हेमंत शर्मा के अनुसार यह एक वाक्य समग्र कालखंड धर्मशास्त्र ऋषि वचनों पर भारी पड़ता है। यह सूत्र इतने कालातीत अर्थों के साथ ध्वनित होता है कि इसमें समूची विश्व संस्कृति के रामतत्व की अनंत व्याख्याएँ व्यक्त होती हैं। हमारी मानवीय जातीय लोकगम ऐतिहासिक वैदिक पौराणिक चेतना में जो भी सर्वश्रेष्ठ है, सर्वानुकूल है, सर्वयुगीन है] सर्वधर्म है वह सब राम तत्व में समाता है। विश्व संस्कृति में फैले रामतत्व तक मनुष्य के लिए जो भी सर्वोत्तम है वह राम है।

श्री राम ने धर्म और गुण का सेतु बनाया। धर्म में गुण की अपनी महत्ता है। धर्म गुण को बताता है और उन गुणों को अपने अन्दर आत्मसात करके कर्म करना, उसके अनुसार जीवन की राह पर चलना ही धर्म का पालन है। उन्होंने अपने आचरण में उन सभी गुणों को स्थान दिया जो धर्म में अपेक्षित हैं। उन्होंने विविधताओं के समावेशन के लिए वांछित सभी बिन्दुओं को जीवन में आत्मसात किया जिस कारण प्रत्येक वर्ग के प्रत्येक जन को राम स्वयं के ह्दय के समीप लगे, अपने लगे।

2. विस्तार

भारतीय संस्कृति के मूल्य, उदात्त भाव श्री राम में पूर्णतः समाहित हैं। श्री राम विविधताओं में समावेशन कर कैसे सबके अपने नायक बन पाये इसका उत्तर श्री राम के गुणों में है। अवधारणा है कि 16 गुण होते हैं और मात्र श्री राम ही हैं जिन में 16 गुण विद्यमान हैं इसीलिए उनको मर्यादापुरुषोत्तम कहा जाता है।

1. श्री राम गुणवान हैं अर्थात उनके अंदर गुणों का सागर है।
2. वीर्यवान हैं वह अपने अलौकिक अस्त्रों से सबको वश में रखने की क्षमता रखते हैं।

3. धर्मज्ञ है, उनको धर्म का ज्ञान है|
4. कृतज्ञ हैं, दूसरों के उपकारों का स्मरण करते हैं किसी के द्वारा दिये कष्टों का नहीं।
5. सत्यनिष्ठ हैं, सत्य पर अडिग रहते हैं।
6. दृढव्रत हैं, अपने प्रण पर स्थिर रहते हैं।
7. कारित्रेणायुक्त हैं, कभी परिवार की परंपरा, संस्कारों, आचार का अतिक्रमण नहीं करते।
8. सर्वभूताहिता, प्रत्येक का हित करने वाले हैं भले ही वह उनका अपना हो या पराया यहाँ तक कि यदि व्यक्ति अनुचित राह का पथिक हो तो उसके भी वह हितैषी हैं।
9. विद्वान हैं।
10. अपने कर्तव्यों के पालन हेतु समर्थ हैं।
11. एकाप्रियदर्शना, उनके दर्शन सबको प्रिय है।
12. आत्मवन हैं अर्थात आत्मसंयमी, दृढ़ निश्चयी और स्वयं के प्रति सत्यनिष्ठ हैं।
13. जिटाक्रोध है, जिनको अपने क्रोध पर वश है।
14. द्युतिमान हैं, प्रकाशवान हैं।
15. अनासुयक-ईर्ष्यामुक्त हैं सबके गुणों का सम्मान करते हैं तथा स्वयं नेतृत्व करते हुए भी दूसरों के गुणों की प्रशंसा करते हैं।
16. कास्य विभ्याति देवाः हैं, जिनके प्रभाव से देवता भी अपने कर्तव्यों तथा नियमों का पालन करते हैं।

इस प्रकार श्री राम ने अपने आचरण से मानव में अन्तर्निहित उसके गुणों और धर्म के सेतु का उद्धरण प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रत्येक संबंध का आदर्श स्थापित किया। यही कारण है कि श्री राम को प्रत्येक व्यक्ति अपनी दृष्टि से देखता है, स्वयं से जुड़ा पाता है।

विद्वान डा डी0के0 हरि जी ने श्री राम द्वारा प्रशस्त धर्म और गुण के सेतु को धर्म चक्र के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। जिसमें चक्र को जीवन यात्रा का प्रतीक मान कर 24 तीलियों के माध्यम से जीवन में क्या करना वांछित है इसकी व्याख्या की है। उन्होंने 24 तीलियों को जीवन के 24 सूत्र माने जो हैं- प्रेम, साहस, धैर्य, शान्ति, दया, अच्छाई, निष्ठा, सौम्यता, स्वविवेक, निस्वार्थ, त्याग, सत्य, उचित, न्याय, क्षमा, कृपा, विनम्रता, समझदारी, सहानुभूति, ज्ञान, विद्वता, नैतिकता, सर्वहिताय, देवत्व व प्रकृति की अच्छाई में विश्वास।

श्रीराम के द्वारा प्रशस्त आदर्श सबके लिए प्रतिमान कैसे बना यह विचारणीय है। मानव समाज में विविधता और समावेशन के लिए कुछ अपेक्षाएँ हैं यथा-समाज में जिम्मेदारियों को साझा करना, एक दूसरे का सहयोग करना, निर्बल की सहायता, परिवार और समाज को ले कर चलना, सदा सीखना और स्वयं का विकास करना और सबसे महत्वपूर्ण है कि सबका समर्थन ले कर चलना। जो उपरोक्त गुणों को अपना कर ही हो सकता है और श्रीराम ने अपने आचरण में उन गुणों को अपनाकर विविधता में समावेशन किया और सामाजिक समरसता के नायक बन गये।

श्री राम ने वैभव तज कर वैराग्य अपनाया, साधन नहीं साधना को महत्व दिया, वह त्याग को अपनाते हैं, परिग्रह के विपरीत अपरिग्रह के साथ खड़े होते हैं। श्रीराम विविधता के मध्य समावेशन का अद्भुत उद्धरण हैं क्योंकि वह सबके राम है जो भले ही उनकी चेतना में विविध हों पर उनकी एक समानता समावेशन को प्रश्रय देती है और वह है राम की उदात्त चेतना।

1. श्रीराम ने समाज में जिम्मेदाारियों को साझा किया वह धर्मज्ञ है और समर्थ हैं अतः उन्होंने सामाजिक ऊँच-नीच की विविधता को समाप्त किया इसका शबरी से उपयुक्त उद्धरण और क्या हो सकता है. श्री राम ने वनगमन में भील जाति की स्त्री शबरी ने जब श्रीराम की भक्ति में विह्वल होकर उनको अपने जूठे बेर खिलाये तो उन्होंने उसकी श्रद्धा का मान रखा और बिना किसी संकोच के उन्हें ग्रहण करके स्त्री के प्रेम और श्रद्धा को सम्मान दिया और जाति-पांति के भेद से परे स्त्री के सम्मान के लोकाचार का संदेश दिया। यही नहीं उन्होंने शबरी को नवधा भक्ति का ज्ञान दे कर यह सिद्ध किया कि कोई जाति, धर्म या निर्धन होने से शिक्षा से वंचित नहीं किया जाना चाहिए जो इसके योग्य है उसे वह सम्मान और शिक्षा मिलनी ही चाहिए।
2. सर्वभूतःहिता श्रीराम ने सदा निर्बल की सहायता की। अहल्या का उद्धार करके निर्बल का उद्धार के साथ ही लैंगिक समानता भी स्थापित किया। तुलसीदास ने कहा कि प्रभु श्री राम ऐसे दीन बंधु और बिना कारण ही दया करने वाले हैं। तुलसीदास कहते हैं-'हे शठ तू कपट-जंजाल छोड़कर उन्हीं का भजन कर।'
3. कृतज्ञ श्रीराम ने सबके सहयोग में विश्वास किया तथा निषाद से मित्रता कर, केवट को गले लगा कर आर्थिक विविधता को दूर करने का संदेश दिया। ।
4. वीर्यवान राम ने समाज में दायित्वों का निर्वहन किया। श्री राम ने ताड़का रावण आदि के वध से पृथ्वी को असुरों से मुक्ति दिलाया, विभीषण सुग्रीव को राजा बना कर समाज में न्याय स्थापित करने के दायित्व का वहन किया। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने धरती विजित करने के लिए युद्ध नहीं किए वरन असुरों का नाश किया और सुग्रीव, विभीषण आदि को राजा बना कर आगे बढ़ गये।

5. वह कारित्रेणायुक्त थे, धर्मज्ञ थे और परिवार और समाज की महत्ता को समझते हुए सदा उनके साथ चले। जब उनके राज्याभिषेक की घोषणा हुई तो श्रीराम को यह सुन कर विषाद हुआ कि सब भाइयों को छोड़कर बड़े भाई, मेरा ही राजतिलक क्यों हो रहा है। माता कैकेयी ने राजा दशरथ से भरत के लिए राज्य और राम के लिए वनवास माँगा तब माता कैकेयी की आज्ञा और पिता की मौन सम्मति पाकर वह सोच मिट गया।

प्रत्येक संबंध के आदर्श मापदंड को स्थापित करने वाले राम ने एक आदर्श पुत्र, भाई, पिता, पति एवं राजा के रूप में परिवार में प्रेम और सौहार्द के भाव को अक्षुण्ण रखा। भाइयों के प्रति स्नेह ही है कि जब भरत उनके वन-गमन का समाचार मिलने पर अयोध्या लेने आते हैं और सबके मन में उनके प्रति संशय होता है तब श्री राम कहते हैं।-सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना।' अर्थात भरत के समान पवित्र और उत्तम भाई संसार में नहीं है।

पत्नी की इच्छा पूर्ति हेतु स्वर्ण मृग लेने जाना तथा सीताजी का हरण होने पर लंका से युद्ध कर उन्होंने पत्नी की आकांक्षा और सम्मान की रक्षा की।

मात्र परिवार नहीं वह समाज को भी साथ ले कर चले । प्रजा के असंतुष्ट होने पर पत्नी वियोग सहा, संतान के सुख आनंद से दूर रहे। यदि गंभीरता से विचार करें तो राम ने अपनी श्वास अपनी धड़कन को तज कर परहित में जीवन समर्पित कर दिया।

6. काकभुशुण्डी तथा जटायु के प्रति उनका स्नेह, सम्मान पशु-पक्षियों के प्रति स्नेह तथा वन-गमन के समय जहाँ जाना वहाँ पौधे रोपित करना उनके जीव मात्र के प्रति सदाशयता के भाव को प्रदर्शित करता है।
7. भले वह अवतार थे परन्तु जब मानव रूप में अवतरित हुए तो वनवास में संघर्षों से अनुभवों से अपने व्यक्तित्व का विकास किया तथा जैसे-जैसे सफलता मिली विनम्रता को धारण किया।
8. सामुदायिक समर्थन तो सबसे महत्वपूर्ण होता है विविधताओं के समावेशन के लिए और राम ने पग-पग पर सामुदायिक समर्थन प्राप्त किया। चाहे वह वानर सेना का समर्थन हो, चाहे जटायु का। श्री राम ने अपनी सात्विक नीतियों के कारण ही लंकाधिपति रावण के भाई विभीषण तक का समर्थन प्राप्त किया। यहाँ तक कि जब उनको लंका जाने के लिए पुल बनाने की आवश्यकता पड़ी तो नल, नील और वानर सेना ने तो सहायता की ही नन्ही गिलहरी ने भी अपना सहयोग दे कर श्री राम के प्रति समर्थन व्यक्त किया।

बात केवल लंका से युद्ध में समर्थन प्राप्त करने की नहीं थी राजा बनने के बाद भी श्री राम ने अपने तीनों भाइयों के सहयोग, सहमति और समर्थन से ही ऐसा राज्य स्थापित किया जो सदा के लिए राम-राज्य के नाम से प्रसिद्ध हो गया। श्री राम ने अपनी प्रजा को संतुष्ट करने के हर संभव प्रयास किये।

मानस में लिखा है 'राजघाट सबु विधि सुंदर वर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।'

रामराज्य में कोई दरिद्र नहीं था, छुआछूत का भेदभाव नहीं था। सरयू के राजघाट पर चारों वर्णों के लोग साथ-साथ स्नान करते थे।

3. निष्कर्ष

श्रीराम जीवन का परम सत्य और मानवता के लिए आदर्श हैं। उनके चरित्र का संतुलन उनकी सर्वव्यापकता का कारण है। न वह अति तापदग्ध है, न अति क्षमाशील, न आक्रामक हैं, न निष्क्रिय। उनके चरित्र में संवेदना, सक्रियता और सद्विचार अंतर्गुंफित हैं। मानव की निराशा संघर्ष में राम विश्वास हैं। राम अंतर-आलोक हैं। उनका नाम सकारात्मक बोध देता है, चाहे साधु हो, चिंतक, दार्शनिक, कलाकार, साधक या साधारण जन उनकी उपासना से अपने-अपने ढंग से सभी सकारात्मक आश्वस्ति प्राप्त करते हैं। उनके चरित्र को आत्मसात कर समस्त नकारात्मक पीड़ाओं से मुक्ति मिलती है सारांश यह है कि संवेदनशील विवेकी श्री राम के गुणों और आचरण ने उनको मर्यादा पुरषोत्तम बनाया। उन्होंने असीम विविधताओं का समावेशन कर एक आदर्श स्थापित किया, यही कारण है कि वह सबके राम हैं प्रत्येक व्यक्ति उनको अपनी दृष्टि से देखता है और उन्हें अपना मानता है। कल्पना चाहे एक पिता की हो, पुत्र की, पति की, भाई की, राजा की या रक्षक की हर रूप में हम राम जैसी छवि ही चाहते हैं। विविधताओं में एक राम हैं जो सबमें समाहित हैं ।इसीलिए तो - ''हरि व्यापक सर्वत्र समाना''

4. संदर्भ

1. बाल्मीकि रामायण
2. राम चरित मानस
3. 'भारथम' वेबसाइट पर डा डी के हरि के लेख
4. अवधारणा नोट-श्री अवनीश अवस्थी
5. प्रेस रीडर डाट काम
6. सचिन एकेडमी डाट इन
7. श्री रामायण-एम राजस्वे

8. हेमंत शर्मा का लेख
9. डा रविनंदन सिंह का लेख

वाल्मीकि के नायक राम से 'मानस' के आराध्य राम: विहंगम दृष्टि

मधु चतुर्वेदी
(madhuchaturvedi1@gmail.com)

श्री राम हजारों वर्षो से हमारी आस्था-धर्म-संस्कृति के प्रतीक हैंI श्री राम को न काल में बांधा जा सकता है, न स्वरूप मेंI वे अपने अवतारी रूप में युगों-युगों से हमारे बीच हैंI वेद जिस परम तत्त्व का वर्णन करते हैं, वही श्रीमन्नारायण-तत्त्व श्रीमद्रामायण में श्रीराम रूप से निरूपित हैं I माना ये भी गया कि दशरथ नंदन श्रीराम के रूप में अवतीर्ण होने पर साक्षात वेद ही श्री वाल्मीकि के मुख से रामायण के रूप में प्रकट हुएI

प्रचलित कथाओं में वाल्मीकि मुनि का जीवन तो स्वयं ही राम कृपा का प्रमाण है, हत्या और लूट से अपनी जीविका कमाने वाला एक रत्नाकर डाकू को जंगल में गुजरते ऋषि से पाप से छूटने के लिए 'राम' के नाम का मन्त्र मिलता हैI वो राम का नाम तो विस्मृति में चला जाता है, मरा-मरा, -मरा -मरा का जाप करने लगता है, मरना-मारना ही तो जानता हैI कैसी लीला है, उलटा नाम जपने से ही उन्हें राम की भक्ति मिल जाती हैI उनके अन्दर सब कुछ बदलने लगता हैI वे गहनतम तपस्या में लीन हो जाते हैंI

एक दिन सहसा तमसा तट पर स्नान करते हुए काम में रत युगल क्रौंच में से एक का वध देखकर, उनके मुख से सहसा संस्कृत का श्लोक निकल जाता है,

"माँ निषाद प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वती समाः ।
यत्क्रौंच मिथुनादेकं अवधी काम मोहितम ॥ "
संस्कृत के पहले श्लोक की रचना हो जाती है।

वो कहाँ रुकने वाले हैं, सब कुछ अकस्मात हो गया, कोई करा रहा है, कौन? भगवान् को वो क्या जानें ! वो तो मात्र राम का नाम जानते हैं, ये काम राम ही तो करा रहे हैं I उनके लिए तो ज्ञान, ध्यान, शिक्षा,सब बस राम का नाम हैI श्री राम, जाति-धर्म-संस्कार की श्रेष्ठता, कुछ भी तो नहीं देखते हैं, बस उतनी सी भक्ति से महाकाव्य लिखने का उद्वेलन वाल्मीकि को दे रहे हैं, राम वाल्मीकि को बना रहे हैं और वाल्मीकि राम के चरित्र को गढ़ रहे हैंI यानि काव्य अन्दर से स्फुरण हो रहा है, उन्हें काव्य लिखना है, महाकाव्य लिखना हैI

वे भक्ति नहीं अपने महाकाव्य के लिए नायक ढूँढ़ रहे हैंI वे नारद जी से पूछते हैंI बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में बहुत रोचक नारद जी और वाल्मीकि की वार्ता है कि उन्हें अपने महाकाव्य के लिए एक नायक चाहियेI नायक भी कैसा

"संसार में गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला सत्य वक्ता और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है"[१/१/२]
सदाचार से युक्त ,समस्त प्राणियों का हित साधक, विद्वान, सामर्थ्यशाली, एकमात्र प्रिय दर्शन, कौन [१/१/३]
मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कान्तिमान, किसी की निंदा नहीं करने वाला, जिसके क्रोध से देवता भी डरते हों,कौन [१/१/४]

नारद जी उनका परिचय ऐसे चरित्र वाले अदृश्य राम से करा देते हैं I राम से मिले बिना भी वे राम के जीवन चरित्र को देख सकेंगे, उस दैवीय शक्ति से भी ऋषि का परिचय करा देते हैं I नारदजी कई पृष्ठों में ऐसे गुणशाली राम का वर्णन करते हैंI वाल्मीकि के राम अवतार ले रहे हैं I बड़े रोचक प्रसंग हैं, राम ही नहीं, राम के साथ ,ब्रह्मा सभी देवताओं से, किन्नरियों- अप्सराओं-नागकन्याओं-चारण-भालू-रीछ-लंगूर जाती को अनेकानेक वीर योद्धा जन्म देने को कहाI इंद्र ने बाली को, सूर्य ने सुग्रीव को,बृहस्पति ने वानर सरदार तार, कुबेर ने गन्धमादन, विश्वकर्मा ने नल,अग्निदेव ने नील, अश्विनीकुमार ने मैन्द और द्विविद, वरुण ने सुषेण,वायु ने हनुमान, कहते हैं ब्रह्मा के मुख से जम्हाई लेते जाम्बवान जन्मे, इसीलिए उनका ये नाम पड़ा, सच ये है कि बालकाण्ड में ही युद्धकाण्ड की योजना बन रही है I

भगवान् राम उनके महाकाव्य के नायक बन जाते हैं I और महाकाव्य की अवधारणा के अनुरूप वो घटनाप्रधान है, नौ रसों के साथ उसमें कथा का विस्तार है, २४००० श्लोकों में जिसमे सात काण्ड, ५०० सर्गों में कथा का विभाजन, छंद अलंकारों और भाषा के सौन्दर्य के अनुरूप महाकाव्य की रचना हो जाती हैI सच ये है की पूरे महाकाव्य में राम के उन्हीं गुणों का विस्तार है I

जिस काल में रामायण लिखी गई, जिस काल-परिस्थिति–सामाजिक-पारिवारिक पृष्ठ भूमि से वाल्मीकि ऋषि आते हैं, रामायण में वो प्रभाव बहुत मुखर दिखाई देता हैI उनके सभी पात्र वही भाषा बोलते हैं, जो उस काल की भाषा है,उसे अश्लील न भी कहें लेकिन मर्यादा की व्याख्याएँ अलग हैंI वाल्मीकि रामायण घटना प्रधान-वर्णनात्मक महाकाव्य हैI व्यक्तिचरित्र हो या प्रकृति वर्णन, उनके लम्बे-लम्बे प्रसंग हैंI

वाल्मीकि भक्त कवि नहीं थे और उनका काल भक्ति का काल नहीं थाI वाल्मीकि की राम के प्रति भक्ति निर्विवाद हैI समस्त रामकथा का यदि अवलोकन करें तो श्री राम के राज्याभिषेक की तैयारी से लेकर वन प्रस्थान के प्रसंग में, उनके चरित्र का चरम उत्कर्ष है, जहाँ चुनौतियाँ हैं, चारों तरफ से भावों का सर्वाधिक उद्रेक है और सुमन्त्र की साथ चलने की जिद पर उन्हें विदा देते समय यह कहना कि

"एष में प्रथमः कल्पोयदम्बा में यवीयसी I भरतारक्षितं स्फीतं पुत्रराज्यमवाप्स्यते II

"नगरीं त्वांगतं दृष्ट्वा जननी में यवीयसी I कैकेयी प्रत्ययं गच्छेदिति रामो वनं गतः II

मेरा उद्देश्य है कि मेरी छोटी माता कैकेयी भरत के लिए सुरक्षित समृद्धशाली राज्य को, बिना किसी बाधा के हस्तगत कर लें I हम लोग वन को चले गए हैं, वापस लौटा ले जाने का उनका भय निर्मूल होI उसके लिए आपका जाना अपरिहार्य हैI

एक श्लोक में वर्णन ही राम के चरित्र के उन सारे गुणों को उद्धासित करता है ,जैसा नायक वाल्मीकि खोज रहे थेI यहाँ उनका वाणी में संयम, भावों पर नियंत्रण, अविचलित, निर्लिप्त,क्रोध पर नियंत्रण, राज्य और प्रजा के हित की चिंता, है,मन में कोई विकार, कोई उग्रता, व्यग्रता, ईर्ष्या, द्वेष,या आने वाली चुनौतियों का भय नहीं है I

बहुत कथाएँ हैं, उनके विस्तार में नही जा सकते, वाल्मीकि को राम का समकालीन भी मानते है, माँ सीता ने वाल्मीकि आश्रम में लंबा समय बिताया है, वाल्मीकि की राम के प्रति जितनी आस्था है, उससे कहीं अधिक श्री राम की वाल्मीकि में है, जिन्होंने अपनी प्राणप्रिया गर्भवती पत्नी को उन्हीं के आश्रम में रखा और उनके पुत्र लव-कुश उसी आश्रम में जन्म लेते हैं, आश्रम में ही पूरी शिक्षा करते हैं, और समय आने पर उन्हें पिता राम को सौंप देते हैं I

सच ये है कि विश्व भर में राम कथा के रूप में जो भी उपलब्ध है, आज विश्व में जितनी भी रामायण हैं उनका मूल वाल्मीकि रामायण है, या अनुवाद होकर देश-प्रदेश में पहुंची है, लेकिन यहाँ एक बात आती है कि वाल्मीकि के नायक राम 'मानस के आराध्य राम कैसे हो गए, तब हमें ये स्वीकारना पड़ता है कि विश्व भर में, आराध्य के रूप में भगवान् राम की जो सर्वग्राह्यता आज है, जिस रूप में वे जन-जन के राम हैं वो तुलसी दासजी की राम चरित मानस है I

तुलसीदास जी का आविर्भाव जिस काल-परिस्थिति में होता है, वो मुगलकालीन काल था, मुस्लिम शासकों की सदियों की बर्बरता ने त्रस्त जनमानस के मनोबल को तोड़ दिया था, कहीं कोई उम्मीद की किरण दिखाई नहीं दे रही थी त्रस्त जनमानस को आशा और विशवास दे सके, और ये काम अलग अलग सम्प्रदायों के साथ संत कवि-योगी कर रहे थे इसीलिए इसे साहित्य का भक्ति काल कहा गयाI तुलसी बाबा संस्कृत के प्रकांड पंडित राम भक्त कवि थे और वाल्मीकि की रामायण में वर्णित भगवान् के जीवन चरित्र में उन्हें ये भरोसा मिला कि भगवान् राम की भक्ति और आस्था ही आर्त जनमानस का संबल बन सकता हैI

मानस में तुलसीबाबा ने वाल्मीकि की कथा यों कहें की उसकी ऐतिहासिकता-घटना-प्रामाणिकता, कथा-कहानी को खोये बिना २४००० श्लोकों और ५०० सर्गों में निबद्ध महाकाव्य से एक चौथाई, कुल ६००० छन्द-दोहे-सोरठे में [४६८८ चौपाई,१०७४ दोहों २०७ सोरठों और ८६ श्लोकों] जनमानस की ही भाषा में 'मानस' की रचना की, उन्होंने घटनाओं को उतना ही लिया जितना वो राम के चरित्र को उत्कर्ष देती हैं, और जनमानस उसे सहज भाव से समझ सके, उनके स्वरूप के साथ अपने को जोड़ सके, सीता-राम में वे ऐसा आराध्य देते हैं जो जनजीवन के लिए सुलभ आदर्श चरित्र बन जाएI

"एक भरोसे एक बल एक राम बिस्वास "

उदाहरण के लिए वाल्मीकि के बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड में अहिल्या-इन्द्र के प्रसंग जिस पर वाल्मीकि ने पचास श्लोक लिख दिए, मानस में तुलसी ने अहिल्या के पूरे प्रसंग को चार छन्दों और दो चौपाई में समाप्त कर दिया, वे उन्हें शाप मुक्त करके ऋषि गौतम से मिलवाते हैं,उनके निष्पाप होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या है उसमें भी वे बस राम की स्तुति करतीं हैं और अपने धाम को चली जाती हैं I इंद्र के प्रसंग को उन्होंने छुआ भी नहीं I अहिल्या उतना ही आतीं हैं जिसमें वे राम के चरित्र को उत्कर्ष देती हैं I

सबसे छोटे कांड सुन्दर काण्ड में जिस कथा को वाल्मीकि ६८सर्गो में ३००० श्लोकों में वर्णन के साथ लिखते हैं, तुलसी बाबा उस कथा को ६० दोहों में समाप्त कर देते हैं I

वाल्मीकि की रामायण महाकाव्य के रंगमंचीय लगते पात्र, मानस में आकर अराध्य राम के प्रति भक्ति के प्रतीक, जनमानस के संबल बन जाते हैं I वाल्मीकि रामायण में सीता से भेंट करके वापस आए हनुमान के प्रति कृतकृत्य हैं, लेकिन मानस के राम में तो हनुमान को " तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई " का भाव है ,प्रेम में ऋणी होने का प्रश्न ही क्या है I

सुन्दरकाण्ड में रावण के महल के वर्णन में वाल्मीकि ने जगह-जगह महल भवन आदि शब्दों का प्रयोग किया है, मानस के हनुमान भी महल भवन के साथ कहीं कहीं उसे मंदिर भी कहते हैं, राक्षस राज्य लंका मानस के वर्णित हनुमान की आस्था कहती है, जहाँ सीता है, वो महल-भवन उनके लिए मंदिर है I

"मंदिर-मंदिर प्रतिकरी सोधा I देखे जहँ तहँ अगनित जोधा II"

"भुवन एक पुनि दीख सुहावा I हरिमंदिर तहँ भिन्न बतावा II"

लंका से वापस लौटने पर सीता की पीड़ा की स्थिति का बयान करते हुए वाल्मीकि के हनुमान अशोकवाटिका को अन्तःपुर कहते हैं, कवि की कल्पना है कि रावण की उपस्थिति से भयभीत सीता को डराती-धमकाती राक्षसियों से घिरी अशोकवाटिका में अन्तःपुर का सा कष्ट मिल रहा हैI

"रावणान्त:पुरे रुद्धा: राक्षिसभिः सुरक्षिता I" वर्णन की नाटकीयता भी कहा जा सकता है I

वाल्मीकि की तारा बाली-वध पर लम्बे संवाद श्रृंखला में राम से पूरे समय बाली की प्रशंसा करते हुए उनके प्रति अन्याय मानते हुए तर्क करती है लेकिन मानस की तारा विलाप करते हुए दोषारोपण तो करती है, राम धर्म-मर्यादा और न्याय की व्याख्या करके समझाते हैं और तारा उनकी स्तुति करते हुए वापस चली जाती हैंI विलाप करते हुए मंदोदरी रावण के गुणों का बखान करते हुए उन्हें देव-यक्ष-यमराज, के लिए अजेय और शेष-कच्छप के लिए भी भारी बताकर यही कहती है कि एक नाम श्री राम के बिमुख होने से ऐसी गति हुई है ,कि गति हुई है कि आज कुल में कोई रोने वाला भी नहीं रह गया I

" राम बिमुख यह हाल तुम्हारा I रहा न कोउ कुल रोवनिहारा II "

लंका से निर्वासित विभीषण से प्रथम भेंट के साथ ही उन्हें लंकेश कहकर संबोधित करते हैं, उनका राज्याभिषेक भी कर देते हैं

"कहू लंकेस सहित परिवारा I कुसल कुठाहर बास तुम्हारा "

सुन लंकेस सकल गुण तोरें I तातें तुम अति सिय प्रिय मोरें II

शरणागत विभीषण के मुख से ये कहलवाकर कि जिस पर आप अनुकूल होते हैं, उसे कोई भी भाव शूल नहीं व्यापते [आध्यात्मिक,आधिदैविक,आधीभौतिक]

" तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला I ताहि न ब्याप त्रिबिध भाव सूला I

जो विभीषण रावण के आगे आँख उठाकर नहीं देख सकते थे, राम के प्रभाव से सीधे युद्ध में भीड़ जाते हैं

"उमा विभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ I सो अब भिरत काल ज्यों श्रीरघुबीर प्रभाउII "

तुलसी बाबा अपने आराध्य राम के भक्तों को पूरा भरोसा दिला देते हैं की श्री राम की शरण में ही उनके सभी कष्टों मुक्ति है I

उनके आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम हैंI और मानस ने चाहे घटनाएँ हों या कथ्य-तथ्य और भाषा में उस मर्यादा को बनाए रखाI उन्हें आराध्य मिल जाते हैं, जनमानस भक्ति में आकण्ठ डूब जाता हैI उसमें दशरथ और राम के रिश्तों की मर्यादा का आदर है, अपने अन्दर की इच्छाओं और स्वार्थों को मारकर निर्पेक्ष भाव से धर्म का आचरण है, संयुक्त परिवार में निज से उठकर पर के लिए सर्वस्व बलिदान की प्रेरणा हैI अभाव में स्वभाव दिखता है, राम तो सर्वशक्तिमान हैं, उनके के पास शक्ति है, रावण विद्वान, ज्ञानी, ब्राह्मण, सर्वशक्तियों से युक्त है लेकिन असंख्य वरदानों के बाद भी उसका अभिमान, दूसरों के प्रति अत्याचार, आतताई स्वभाव, पाप कर्म पूरे राज्य की पराजय और कुल के नाश का कारण बनते हैंI इसे जनमानस ने भीतर तक छू लियाI उन्हें विश्वास हो जाता है कि आततायियों का विनाश होगा ,धर्म की विजय होगी, यही मानस की भक्ति का अभिप्रेत था I वाल्मीकि मुनि ने भी यही काम कियाI

वाल्मीकि मुनि ने महाकाव्य के रूप में भक्ति की जिस राम कथा के इतिहासवृत्त को आने वाली पीढ़ियों के लिए रचा, तुलसी बाबा के मानस के माध्यम से, आराध्य के रूप में वे जनमानस के हृदय में बस गए, और भक्ति की रसधारा में बहकर विश्वव्यापी हो गयेI

श्री रामचरितमानस में आध्यात्म और विज्ञान

अपराजिता शर्मा

(apravinaysharma@gmail.com)

श्री रामचरितमानस एक अद्वितीय ग्रंथ है जिसमें इस जगत के कल्याण के लिए भक्ति विज्ञान और आध्यात्म को जन मानस सभी को समझने के लिए बहुत सरल भाषा में लिखा गया।
जिसमें भौतिक शक्ति और परभौतिक समझने के लिए भगवान का सहारा लिया गया है।
पांच भूतों भूमि गगन वायु अग्नि और नीर इसे बना है
हमारा शरीर यानि भगवान बाह्य जगत में भगवान इस छोटे शरीर रूपी भगवानों को कैसे नियंत्रित करते हैं। इसका वर्णन देखें।
बाह्य रूप निर्गुण और अंत: जगत रूप सगुण होता है।
इन पांच तत्वों में उसका कुछ इस तरह से वर्णन है _____अंत: पुरुष रूपेण काल रूपेण यो बहि :।
समन्वेत्वेष सत्वानं भगवानत्ममायया।।
यानी पराभौतिक और भौतिक अध्यात्मिक सगुन स्वरूप प्रभाव, पराभौतिक जैसे सूर्य का प्रकाश और आध्यात्मिक यानी संत द्वारा आघात सहन करना।
रामचरितमानस से वर्षों पूर्व आध्यात्मिक रामायण का उल्लेख मिलता है।
जिसमें पूरा रामचरितमानस ही आधारपीथिका है।
जिसे स्वयं भगवान शंकर ने आदिशक्ति जगदंबा भवानी पार्वती जी को सुनाया था।
जिसमें राम चरित्र भक्ति ज्ञान वैराग्य उपासना सदाचार की प्रधानता है।
क्योंकि वाल्मीकि रामायण जो वर्णन है वह तो रामचंद्र जी के जन्म के वर्षों पूर्व लिख दिया गया था।
और उससे भी कई सदी पूर्व यह आध्यात्मिक रामायण का उल्लेख ऐतिहासिक तथ्यों में हमें मिलता है।
अब आते हैं रामचरितमानस के सात कांड के बारे मे जो कि अध्यात्म और विज्ञान को सब प्रमाणित तथ्य सहित बताते हैं।
यहां यह जानना जो बहुत जरूरी है कि अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है यानी दोनों जीवन में हमारे अस्तित्व ब्रह्मांड और वास्तविकता पर ही हमारा ध्यान केंद्रित करते हैं।
अब रामायण रामचरितमानस के पहले कांड से शुरू करती हूं।
रामायण का अर्थ है राम + आयान
अर्थात राम का घर।
यानी मनुष्य, स्वयं राम को जाने।
मनुष्य जन्म लेने पर वह ईश्वर तक कैसे पहुंच सकते हैं।
मनुष्य शरीर आयान है और राम तक हमें पहुंचना है।
व्यापक रूप भगवाना तेही धरी देह चरित्र कृत नाना।
पहला अध्याय है=

बालकांड

जिसमें गोस्वामी तुलसीदास जी ने मनुष्य को एक बालक के रूप में भगवान की भक्ति करने को कहा है।
भगवान को निष्कपट और निर्दोष व्यक्ति अच्छे लगते हैं यानी आप भगवान की भक्ति में चतुराई चालाकी और कपट दिल से निकाल कर भक्ति करेंगे तो आप भगवान के उसे रूप को पा सकते हैं बालक बनाकर आप अपने आध्यात्मिक इस को पा सकते हैं।

दूसरा अयोध्या कांड

अवध कहां जहां रामनिवास जहां भानु प्रकाश हो।

अर्थात् अयोध्या बन जाएगा आपका शरीर।
अयोध्या से अर्थ यहां पर उत्तर प्रदेश वाले अयोध्या से नहीं है।

अयोध्या का अर्थ है आपका शरीर आपका शरीर या तन अयोध्या बन जाएगा।

जब उसमें ब्रह्मा का प्रकाश परिलक्षित हो जाएगा यानी आपका शरीर मंदिर का रूप होगा।

आत्मा ब्रह्म के प्रकाश से प्रकाशित हो जाएगी तो आपको प्रभु मिल जाएंगे।

तीसरा है अरण्यकांड

जब तन अयोध्या रूपी मंदिर हो जाएगा तो उस भक्त को संसार वन रूप नजर आएगा। यानी उसमें जो व्याप्त मोह माया है वह आपको आसक्त नहीं कर सकेगी।

आपके भीतर के तत्व रूप में प्रभु आपको आपसे मिलने के लिए स्वयं आयेंगे और आप अपने जीवन की वास्तविक यात्रा पूर्ण करके ईश्वर लीन होंगे।

पांचवा अध्याय है सुंदरकांड

सुंदरकांड एक ऐसा कांड है जहां पर भगवान के तीनों भक्त एक साथ मिलते हैं।

यानी स्वयं भगवान उनके परम भक्त हनुमान और ब्रह्म की शक्ति के रूप में माता सीता।

जिसने इन तीनों को पा लिया वह ईश्वर को पा लेगा और उसका जीवन सुंदर हो जाएगा।

यह सुंदरकांड का आध्यात्मिक अर्थ है।

इसके बाद आते हैं लंका कांड

लंका कांड का आध्यात्मिक अर्थ इस रूप में लिया जाता है जहां आप अपने विकारों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

मनुष्य अपने जीवन के युद्ध को जीत जाता है यानी रावण को विकार के रूप में कहा गया है। और रामचंद्र जी जब युद्ध जीत कर अयोध्या में आते हैं, तो अयोध्यावासी उनके स्वागत के लिए जो दीप प्रज्वलित करते हैं वह इस बात के घोतक हैं , कि भीतरी तम को मारकर अब प्रकाश की ओर आगे बढ़ना।

रामचरितमानस का अंतिम कांड है

उत्तर कांड

यह पूरे रामचरितमानस का निचोड़ है यानी जिस मनुष्य ने उपरोक्त 6 यात्राओं को पूर्ण कर लिया है उसको अपने जीवन के हर प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।

अब आते हैं रामचरितमानस में विज्ञान कहां-कहां और किस रूप में वर्णित है। जो इन सब सातों कांड के अंतर्गत हमें पढ़ने को मिलता है।

रामायण काल में कई वैज्ञानिक थे ,जैसे नल नील, विश्वकर्मा, अग्निवेश, और विश्वामित्र।

अनेकों आश्चर्यजनक अविष्कार हुये।

ब्रह्मांड में मौजूद पांच तत्वों का भी आंकलन कर गणना, जो वेद पुराण में वर्णित हैं यहां

जन सामान्य को समझने सरल भाषा में लिखी गई।

एक उदाहरण देखिए

सुंदरकांड के

25 वें दोहे में

तुलसीदास ने बताया

जब हनुमानजी ने लंका मे आग लगाई थी।

वह देखे-

हरि प्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि, बढ़ि लाग अकास।।25।।

अर्थात

जब हनुमानजी ने लंका में आग लगाई तो

भगवान की प्रेरणा से उन्चासों पवन चलने लगे।

हनुमान जी अट्टहास करके गर्जे

और आकार बढ़ाकर आकाश से जा लगे।

इन उन्चास मरुत का क्या अर्थ है ?

यह तुलसीदास जी ने भावार्थ में नहीं लिखा।
पर आप गूढ़ अर्थ खोजिए
समय निकालकर 49 प्रकार की वायु
के बारे में जानकारी का अध्ययन करने पर आपको
सनातन धर्म पर अत्यंत गर्व होगा।

तुलसीदासजी के वायु ज्ञान को समझने के लिए हमारे वेद और पुराण को जानना होगा।

अभी हाल ही में भारत के सफल चंद्रयान मिशन की प्रेस कॉन्फ्रेंस में चंद्रयान मिशन के मुख्य वैज्ञानिक ने बताया था कि उन्होंने कई सफल कैलकुलेशन वेदों में निहित ज्ञान से किए यानि हमारे वैदिक काल में विज्ञान कितनी उन्नत अवस्था में था।

ऐसा ही गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में भी लिखा।
वेदों में वायु की 7 शाखाओं के बारे में
विस्तार से वर्णन मिलता है।
अधिकतर लोग यही समझते हैं कि वायु तो एक ही प्रकार की होती है, लेकिन उसका रूप बदलता रहता है, जैसे कि ठंडी वायु, गर्म वायु और समान वायु
लेकिन ऐसा नहीं है।

दरअसल, जल के भीतर जो वायु है उसका वेद-पुराणों में अलग नाम दिया गया है और आकाश में स्थित जो वायु है उसका नाम अलग है।

अंतरिक्ष में जो वायु है उसका नाम अलग और पाताल में स्थित वायु का नाम अलग है।

नाम अलग होने का मतलब यह कि, उसका गुण और व्यवहार भी अलग ही होता है।
इस तरह वेदों में
7 प्रकार की वायु का वर्णन मिलता है।
ये 7 प्रकार हैं-
1.प्रवह, 2.आवह, 3.उद्वह, 4.संवह,
5.विवह, 6.परिवह और 7.परावह।

1. **प्रवह:**

पृथ्वी को लांघकर मेघमंडलपर्यंत जो वायु स्थित है,
उसका नाम प्रवह है।
इस प्रवह के भी प्रकार हैं।
यह वायु अत्यंत शक्तिमान है
और वही बादलों को इधर-उधर उड़ाकर ले जाती है।
धूप तथा गर्मी से उत्पन्न होने वाले मेघों को
यह प्रवह वायु ही समुद्र जल से परिपूर्ण करती है
जिससे ये मेघ काली घटा के रूप में परिणत हो जाते हैं
और अतिशय वर्षा करने वाले होते हैं।

2. **आवह**

आवह सूर्यमंडल में बंधी हुई है।
उसी के द्वारा ध्रुव से आबद्ध होकर
सूर्यमंडल घुमाया जाता है।

3. **उद्वह**

वायु की तीसरी शाखा का नाम उद्वह है,
जो चन्द्रलोक में प्रतिष्ठित है।
इसी के द्वारा ध्रुव से संबद्ध होकर
यह चन्द्र मंडल घुमाया जाता है।

4. संवह

वायु की चौथी शाखा का नाम संवह है,
जो नक्षत्र मंडल में स्थित है।
उसी से ध्रुव से आबद्ध होकर
संपूर्ण नक्षत्र मंडल घूमता रहता है।

5. विवह

पांचवीं शाखा का नाम विवह है
और यह ग्रह मंडल में स्थित है।
उसके ही द्वारा यह ग्रह चक्र
ध्रुव से संबद्ध होकर घूमता रहता है।

6. परिवह

वायु की छठी शाखा का नाम परिवह है,
जो सप्तर्षिमंडल में स्थित है।
इसी के द्वारा ध्रुव से संबद्ध हो
सप्तर्षि आकाश में भ्रमण करते हैं।

7. परावह

वायु के सातवें स्कंध का नाम परावह है,
जो ध्रुव में आबद्ध है।
इसी के द्वारा ध्रुव चक्र तथा
अन्यान्य मंडल एक स्थान पर स्थापित रहते हैं।
इन सातो वायु के सात सात गण हैं
जो निम्न जगह में विचरण करते हैं
ब्रह्मलोक,
इंद्रलोक,
अंतरिक्ष,
भूलोक की पूर्व दिशा,
भूलोक की पश्चिम दिशा,
भूलोक की उत्तर दिशा और
भूलोक कि दक्षिण दिशा।
इस तरह
7 x 7 = 49
कुल 49 मरुत हो जाते हैं
जो देव रूप में विचरण करते रहते हैं।
यानि हम सबके आसपास।
ऐसे ही समय काल, और प्रकाश आदि के भी तथ्य मिले हैं।
अब एक नजर उस समय की इंजीनियरिंग और वैमानिक शास्त्र पर सब जानते हैं
रामसेतु है। जिसे पार कर श्री राम लंका पंहुचे थे।
नासा ने भी प्रमाणित किया है।
स्वयं आप धनुषकोटि जाएं और आंख से देख लीजिए।
अब आगे देखे विमान और अस्त्र शस्त्र के वर्णन।

जिस पुष्पक विमान का वर्णन हैं वह उच्च तकनीक से बना मंत्र संचालित रिमोट कंट्रोल सिस्टम से चलता था, वैसे यह विमान और श्री लंका दोनों को रावण ने कुबेर को परास्त कर छीन लिया था।

इसके अलावा उसके पास 4 विमान और थे।

एयरपोर्ट के प्रमाण, नौ साल की खोज के बाद श्री लंका के वैज्ञानिकों को मिले। जिन चार शहरों में मिले वहां इनके अवशेष आज भी मौजूद हैं। ये चार शहर है

1. उसानगोडा
2. गुरुलोपोथा
3. तोतुपोलाकंदा
4. वारियापोला

अब देखे शस्त्र कौन कौन से थे जो राम रावण युद्ध में इस्तेमाल किए गए थे।

आग्नेय बाण

सिद्ध अस्त्र शस्त्रों के अलावा सैनिकों ने बंदूक जैसे शस्त्र से भी युद्ध लड़ा था जिन्हें भूशूण्डियां कहा गया।

ऐसे अस्त्र जिन्हें ट्रिगर दबा कर भयंकर विस्फोट किए जाते थे।

सारांश यह है कि रामचरित मानस जीवन का वृतांत ही नहीं बल्कि कौटुंबिक सांसारिकता का भी इसमें पूरा वर्णन है। माता पिता , भाई सखा, भक्त और भार्या सभी के साथ मर्यादित रिश्ते।

राष्ट्रीयता क्या होती है शासन कैसे किया जाता है।

समाज संचालन के कूट सूत्र क्या होते हैं।

इसकी जानकारी के साथ-साथ भूगोल वनस्पति और जीव जगत सभी की जानकारी से भरपूर है यह भौतिकवाद अर्थात विज्ञान और आध्यात्मिक यानी ईश्वर के अंदर राम के स्वरूप के दर्शन कैसे करें इसकी कालजयी रचना है जो प्रमाणिक भी है।

इन्हीं शब्दों के साथ में अब अपने आलेख को ही विराम देती हूं।

1. संदर्भ

1. रामचरित मानस में अध्यात्म और विज्ञान

लेखक श्री एस पी गौतम

प्राकथन से अब्स्ट्रैक्ट लिखा

2. वेब दुनियां.....

अनिरुद्ध जोशी के लेख पेज 1,2

3. Quora प्रश्न उत्तर

से शस्त्र और विमान और एअरपोर्ट की जानकारी ली है।

सभी का अध्ययन कर अपने मौलिक विचार को शामिल कर लिखा गया है।

राष्ट्र की अवधारणा और रामराज्य

श्रवण कुमार उपाध्याय
अल्फा एडवांस विद्यालय, जोधपुर
(shrawanuppadhyay@gmail.com)

भारत एक प्राचीन राष्ट्र हैं। राष्ट्र की अवधारणा हमें वेदों से मिलती हैं। "राष्ट्र " शब्द ऋग्वेद में आया है।

1. "ममद्विता राष्ट्र क्षत्रियस्य" (4/42/1)

ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया गया है। राष्ट्र शब्द "राज्"धातु से "ष्ट्रन"प्रत्यय लगने से बनता है। व्युत्पत्ति के आधार पर "राष्ट्र "शब्द दीप्त्यर्थक (दीप्तौ) धातु से उणादि "ष्ट्रन" लगकर बनता है। अमर कोषकार के अनुसार राष्ट्र "राजहितव" से बना है। अभिधान कोष में राष्ट्र को "जनपद" कहा हैं। वामनशिवराम आप्टे ने संस्कृत हिन्दी कोष में राष्ट्र का अर्थ राज्य, देश, साम्राज्य कहा हैं। अथर्ववेद (12/1/8) में पृथ्वी को माता कहा गया है तथा उससे प्रार्थना की गई है कि वह राष्ट्र को बल व तेज प्रदान करें। अथर्ववेद में राष्ट्र के निर्माण के सात तत्वों का वर्णन किया है।

1. सत्य
2. ऋत
3. उग्र
4. दीक्षा
5. तप
6. ब्रह्म
7. यज्ञ (अथर्ववेद 12/12/1)

राष्ट्र शब्द को भारतीय ज्ञान परम्परा में इस प्रकार से परिभाषित किया गया है।

"राजते,दीप्यते ,प्रकाशते , शोभते इति राष्टम्"

अर्थात जो स्वयं दैदीप्यमान होने वाला है वह राष्ट्र कहलाता है। अर्थात विविध वैभवों से सुशोभित होने वाला देश राष्ट्र कहलाता है। अथर्ववेद के राष्ट्राभिवर्ध्दनम् सुक्त में राष्ट्र के महत्व बताते हुए वशिष्ठ मुनि ने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने प्रतिपक्षियों को समूल नष्ट करने तथा राष्ट्र के कल्याण की बात इस प्रकार की हैं।

अभीवर्ते अभिनवः सपत्नक्षयणो मणिः ।
राष्ट्राय मह्यं बध्यतां सपत्नेभ्य पराभुवे। ॥

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त के रचियता अथर्वण ऋषि ने पृथ्वी को समस्त पार्थिव प्रदार्थो की माता कहा हैं।

यत्ते मध्यं पृथिवियच्च नभ्यं।
यास्त उर्जस्तन्वः सम्बभूवेः ।।
तासु नो धेह्यभिनः पवस्वा।
माता भूमिःपुत्रो अहं पृथिव्याः।।

प्राचीन ग्रंथों में इस प्रकार के अनेक वाक्य मिलते हैं जिसमें उन्नत राष्ट्र की परिकल्पना है। जैसे "वयं राष्ट्रे जाग्रयाय पुरोहिताः" वाल्मीकि रामायण में यह श्लोक राष्ट्रीयता के लिए हजारों वर्षो से दोहराया जा रहा है।

अपि स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

श्रीमद्भगवत पुराण में

"अहो भुवः सप्त समुद्रवत्या द्वीपेशु वर्षेवधि पुर्णभेदतः"

राम चरित मानस में तुलसीदास जी लिखते हैं "सीया राम मय सब जग जानी " ओर घट-घट के राम में राष्ट्र की परिकल्पना दृष्टि गोचर होती है।

"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् "

सारा विश्व एक घोसला है इसमें उत्तम राष्ट्र की परिकल्पना छिपी हुई है। यजुर्वेद में राष्ट्र के लिए तीन गुणों की बात कही गई है वे है राष्ट्र स्वतंत्र हो,वह जनहितकारी हो और विश्व कल्याण के लिए प्रयत्नशील हो। राष्ट्र का निर्माण जन और जन की संस्कृति के योग से होता है। भूमि,जन और जन

की संस्कृति राष्ट्र के विशेष अंग होते हैं। राष्ट्र जनपद का वाचक है। वह भू-भाग जो सत्ता सम्पन्न होने के साथ अपने अर्जित यश से आलोकित होता है वह स्मृध्द राष्ट्र कहलाता है। नालन्दा शब्द कोश के अनुसार राष्ट्र शब्द का अर्थ निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले लोग जिनकी एक भाषा एक से रीतिरिवाज तथा एक ही विचार धारा होती है। राष्ट्रीयता शब्द राष्ट्र शब्द की भाववाचक संज्ञा है जिसका अर्थ है जनसमुदाय की समूह चेतना। राष्ट्रीय भावना का शब्दिक अर्थ है "राष्ट्र की एकता सम्बन्धी कामना" अर्थात "राष्ट्रप्रेम " । राष्ट्रीय भावना हम उसे कहेगें जिसमें अपने राष्ट्र की भूमि, जनसमूह,सस्कृति, सभ्यता, इतिहास, धर्म, साहित्य, कला,राजनीति, और जीवन दर्शन के प्रति व्यक्तियों के मन में गरिमा एवं महिमा का जो नैसर्गिक स्वाभिमान होता है उसे हम राष्ट्रीय भावना कहते हैं। अथर्ववेद में एक विशाल व दिव्य कल्याणकारी राष्ट्र की परिकल्पना की है।

आयातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्त्रियाभिः।
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निबृहद्राष्टं संवेश्य दधातु।।

इस ऋचा का भाव यह है कि सत्य,बृहत्(विकास),ऋत (निश्चित नियम) ,उग्रता (दुर्धर्षशक्ति),दीक्षा (दक्षता और अनुशासन), तप (कठोर श्रम),ब्रह्म (ज्ञान) ,यज्ञ (श्रेष्ठतम कर्म),के द्वारा राष्ट्र की सुरक्षा की जा सकती है। इन गुणों से ही राष्ट्र की भावना का विकास होता है। यजुर्वेद में पराक्रम और वीरता को राष्ट्रीय भावना के लिए आवश्यक बताया।

"आ राष्टे राजन्यः शूरः इषन्योऽतिन्याधी महारथो जायताम्"

प्राचीन ग्रंथों में ऐसा वर्णन मिलता है कि राज्य के सभी अंगों का उद्भव राष्ट्र से होता है। राजा को अपने प्रयत्न के द्वारा राष्ट्र का विकास करना चाहिए। राजा को अपने प्रशासन संचालन ऐसे स्थान से करना चाहिए जहाँ पर पानी हो,उपद्रव न हो,जहाँ पेड़-पौधे व सुन्दर पर्यावरण हो,अच्छी मिट्टी हो, उपजाऊ भूमि, पशु-पक्षि,व्यापार, सुन्दर जंगल, परिवहन के साधन व मार्ग आदि। देश, राज्य, राष्ट्र हमें समानार्थक शब्द लगते हैं पर इनमें अन्तर है। देश सीमाओं से बन्धे निश्चित भू-भाग को कहते हैं। सीमाओं में बन्धे भू-भाग में सभी सुविधाओं को पुर्ण करते है उस शासन को राज्य कहा जाता है। उस देश व राज्य के प्रति हमारी संवेदना ओर गौरव हो उसे राष्ट्र की संज्ञा दी जाती है। राज्य व देश के संचालन के लिए एक प्रशासन होता है वैदिक काल में ऋषि मुनियों के लिए "प्रशास्ता" शब्द काम में लिया जाता था। यह शब्द धीरे - धीरे राजाओं के शासन के लिए काम में आने लगा। वैदिक काल में राजा राष्ट्र की रक्षा करके अपनी प्रजा को सुखपूर्वक रहने का अवसर देता था । न्याय करके समाज में एकता व समरसता को बढ़ाता था। प्रजा के लिए सभी सुख सुविधाओं की व्यवस्था करता था। वेदों में अनेक मन्त्र मिलते हैं जिसमें राजा के कर्तव्य की बात कही गई है। यजुर्वेद का एक मन्त्र:-

अग्ने अच्छा विदेह नः प्रति नः सुमना भव।
प्र नो कच्छ सहस्रजिंत् त्व हि धनदाऽअग्नि स्वाहा। ।

अर्थात राजा के लिए ईश्वर उपदेश करता है कि राजा अपनी प्रजा और सैनिक से सदा प्रिय वचन कहें। उनकी सुविधाओं का ध्यान रखें और आवश्यकतानुसार उनको धन दे तथा कर के रूप में उनसे वापस धन प्राप्त करे। राजा ऐसा करके शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाकर नित्य शत्रुओं को जीत कर धर्म से प्रजा का पालन व रक्षण करें।भारत में प्राचीन काल में जिस प्रकार आदर्श राजा होते थे। उसी प्रकार यहाँ का जन अत्यंत सभ्य, सुशिक्षित, सद्चरित्र, नैतिक बल से सुसम्पन था। जिस प्रकार जन को राजा पर गर्व होता था उस प्रकार राजा को भी अपनी प्रजा पर गर्व था।

न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मरयपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्धन्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ।।

राष्ट्र का वातावरण मंगलमय, जन का मस्तिष्क परम विकसित ओर आदर्श लोक जीवन था। रामायण, महाभारत व मनुस्मृति जैसे हिन्दू ग्रंथों में प्रशासन के बारें में विस्तृत चिन्तन किया गया है। कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में प्रशासनिक व्यवस्था के बारें में विचार विमर्श किया गया है।वे रामराज्य की अवधारणा से ही लिये गये हैं। कौटिल्य ने राज्य के सात अंग माने हैं।

1. स्वामी
2. अमात्य
3. जनपद या राष्ट्र
4. दुर्ग
5. कोश
6. दण्ड
7. मित्र।

महात्मा गांधी ने सुदृढ़, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित सुशासन के लिए राम राज्य की परिकल्पना की। गाधी ने कहा कि किसी को राम राज्य शब्द से विरोध है तो मैं उस धर्म राज्य कहना पसंद करूगा। राम राज्य का अर्थ हम आदर्श राज्य मान सकते हैं। सयुंक्त राष्ट्र संघ ने सुशासन की जो आठ विशेषताएं बताई । यह विशेषताएं तो भारतीय प्रशासन में हजारों सालों से विद्यामान है। ये विशेषताएं निम्न हैं:-

1. विधि का शासन

2. समानता एवं समावेशन
3. भागीदारी
4. संवेदनशीलता
5. बहुमत
6. प्रभावशीलता एवं दक्षता
7. पारदर्शिता
8. जबाबदेही।

किसी भी राज्य के शासन में यह बातें आ जाय तो वह सुशासन होगा। गौस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में ने सुशासन की परिकल्पना की हैं। "नाहि दरिद्र सम दुख जग माही" अकाल,गरीबी, महामारी पर राजाओं का ध्यान आकर्षित किया। महात्मा गांधी का स्वालंबन, विनोबा भावे का सर्वोदय, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आत्मनिर्भर भारत सुशासन की आधार शिला हैं। इनकी विचार धारा से सुशासन की स्थापना की जा सकती है। रामराज्य दीनानाथ, अनाथनाथ की भावना के साथ है।

"दीनदयाल बिरिदु संभरी, हरहु नाथ संकट भारी"

रामराज्य की सत्ता समतावदी है उनके राज्य में धनवान, निर्धन, जाति, लिंग में कोई भेद नहीं है। वे राजा दशरथ की आज्ञा पालन करते है, मल्लाह राज निषाद घर जाते है तो शबरी को मा कह कर सम्बोधन करते हैं वे जटायु की सेवा भी करते हैं। राष्ट्र की अवधारणा पर विचार करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुंचतें है कि रामराज्य ही राष्ट्र की अवधारणा को आलोकित करता है। जब राष्ट्र को अग्रेंजी शब्द के नेशन के सन्दर्भ में देखते हैं तो यह राष्ट्र की अधुरी परिभाषा है। रामराज्य में लोक में सुव्यवस्था, मर्यादा, सबको न्याय, सभी प्रकार की समस्याओं से समाज को मुक्ति, प्राणी मात्र का कल्याण, मनुष्य की श्रेष्ठतम भूमिका की स्थापना।

राम और राष्ट्र को अलग- अलग नही किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद ने 1846 ई कहा था "भारत राष्ट्र ही एक मात्र जीवित देवता है।जो भारत,राम ओर राष्ट्र को अलग करके देखता है वह भारत को नही समझ सकता है।" भारतीय संस्कृति का उत्कृष्ट ही रामराज्य है। राम राज्य भी है राम राष्ट्र भी है। रामराज्य में त्याग होता है।रामचरितमानस में एक चौपाई है जिसमें राम अयोध्यावासियों से कह रहे हैं कि:-

जो अनीति कछु भाषौं माही।
तो मोहि बरजहु भय बिसराई॥

राम स्वयं कहते थे कि यदि मैं कुछ गलत करू तो मुझे अवश्य बताये। रामराज्य की अवधारणा में केवल राजा की जिम्मेदारी ही नही है। बल्कि प्रजा के कर्तव्य भी है। दोनों में समन्वय ही रामराज्य की कुंजी है। हमें अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी दृढ़ता से पालन करना होगा। रामराज्य में शक्ति, शील,सौन्दर्य है।रामराज्य निरंतर नूतन हैं। रामराज्य शाश्वत और सनातन है। रामराज्य से ही साम्राज्यवाद व शोषण को खत्म कर करूणा,अंहिसा, शान्ति स्थापित कर सकेंगे। रामराज्य की परिकल्पना तुलसी ने वाल्मीकि रामायण से ली है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य की अवधारणा को परिमार्जित किया है। उन्होंने रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में दोहा 20 से लेकर 29 तक में रामराज्य को परिभाषित किया है।

बरनाश्रम निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहि नहिं भय सोक व रोग ॥
राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं ॥
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ॥
बिधु महि पूर मयुखन्हि रबि तप जेतनेहि काज ।
मागें बारिद देहिं जल रामचन्द्र कें राज ॥
जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।
राम पदारबिंद रति करति सुभावहि खोई ॥
ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।
सोइ सच्चिदानन्द घन कर नर चरित उदार ॥
अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥
चारु चित्रसाला गृह प्रति लिखे बनाइ ।

राम चरित जे निरख मुनि ते मन देहिं चोराइ ।।
उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गम्भीर।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ।।
रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ ।
अनिमानिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ ।। (रामचरितमानस उत्तरकाण्ड दोहा 20 से 29)

रामराज्य में मर्यादा, नैतिकता, सौहार्द, सद्भाव, भाईचारा, भाईचारा, प्रेम एवं मानवीय संवेदना होती है। तुलसी ने रामराज्य के माध्यम से शौर्य, धैर्य, दया,दान, अंहिसा,दम, विवेक क्षमा,बुद्धि, उच्च जीवन मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया। राम ने सभी का त्याग किया परन्तु शौर्य का त्याग नही किया राम ने कभी भी कोदण्ड का त्याग नही किया। तुलसी ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के पालन को आवश्यक बताया। कर्तव्य पालन से रामराज्य की स्थापना सम्भव है। आज हम स्वतंत्रता की बात करते हैं ।जैसे विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर स्वतंत्रता के साथ सीमा का निर्धारण करना होगा। रामराज्य में आदर्श शासक के साथ कर्तव्य पालन करने वाली प्रजा भी हो। हमें अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी दृढ़ता से पालन करना होगा तभी शक्ति, शील, सौन्दर्य युक्त रामराज्य होगा। रामराज्य निरंतर नूतन हैं, शाश्वत और सनातन है। राम राजा से ही रामराज्य है। रामराज्य से ही साम्राज्यवाद व शोषण नष्ट होगा। संसार से शोषण का अन्त करुणा, अंहिसा, शान्ति रामराज्य की अवधारणा से ही होगी। रामराज्य की परिकल्पना से ही समतामूलक समाज का निर्माण किया जा सकता है। रामराज्य सभी प्रकार के भेदों को समाप्त करने का अवसर हैं। रामराज्य में समझदारी, समन्वय, संतुलन, सन्तुष्टि, सहजता,व समय बद्धता के साथ जहाँ भर की आवश्यकता हो उसका भी प्रयोग किया जाना चाहिए। राम के हाथ में धनुष इसी बात का प्रतीक हैं। रामराज्य में तीनों तप नही थें।

दैहिक देविक भौतिक तापा।
रामराज्य नहिं काहुहि ब्यापा ।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति ।।

हमारे चारों और सभी बाधाएं, समस्याएं और व्यथाएं के यह तीन कारण ही है।

1. **आधिदैविक:-** उन अदृश्य दैवीय या प्राकृतिक शक्तियों के कारण उत्पन्न बाधा या पीड़ा जिन पल हमारा नियन्त्रण या तो सीमित है या नही होता है। जैसे भूकम्प, बाढ़ ज्वालामुखी।
2. **आधिभौतिक:-** हमारे आस-पास के कुछ ज्ञात कारणों से जैसे दुर्घटना, मानवीय सम्पर्क, प्रदुषण,अपराध, निरन्तर गर्म होती पृथ्वी आदि से उत्पन्न क्लेश व पीड़ा।
3. **आध्यात्मिक:-** यानी हमारी शारीरिक और मानसिक समस्याओं जैसे रोग,क्रोध,अवसाद से उत्पन्न पीड़ा।

आज शारीरिक ताप के साथ मानसिक ताप बढ़ रहा जिसके कारण स्कुल के बच्चें तक आत्महत्या कर रहे है। हमारे भारतीय ज्ञान परम्परा में तो राष्ट्र की भावना का विशाल भण्डार मिलता है। पिछले एक हजार वर्षो से राष्ट्रीय भावना में कमी आई। इसकी परिणति यह हुई कि हमारे भारत वर्ष पर 672 वर्षो तक मुगलों ने शासन किया और यहाँ की सस्कृति व सभ्यता को खत्म करने का प्रयास किया। भारतीय संस्कृति के मूल यहाँ के मन्दिर थे। मुगलों ने भारत के 43000 मन्दिरों को हानि पहुचाई। मुगलों के पश्चात भारत पर लगभग 210 वर्ष तक अग्रेंजो ने शासन किया। वे मुट्ठी भर थे। पर यहाँ के राजाओं व जन में राष्ट्रीय भावना का अभाव होने के कारण अपना अधिपत्य जमा लिया।

राष्ट के शासक को सतर्क रहना चाहिए। पर दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत वर्ष में आजादी के बाद बनी सरकारें राष्ट्र के प्रति सतर्क नही थी। भारतीय संस्कृति को समाप्त करने में आजादी के बाद की सरकारों ने बहुत प्रयत्न किया। किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उस देश की संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक स्वरूप होता है। वह राष्ट्र उसी स्वरूप के आधार पर अपनी नीतियों तय करता है। यूरोप की राष्ट्रीयता अहं भाव से ग्रसित है। क्योंकि इसने अनेकों का विनाश करके अपना स्वरूप बनाया। जैसे पाकिस्तान का राष्ट्रीय चरित्र कट्टरता,धर्मान्धता व आतंकवाद है। वहीं भारत का राष्ट्रीय चरित्र "वसुधैव कुटुंबकम्" हैं। राष्ट्र की समृध्दि के लिए उच्च नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है। आज हम देखते हैं कि हमारे देश में मूल्यों की कमी हो रही है। जिसके कारण राष्ट्र की जड़ें कमजोर हो रही है। हमारी वैदिक परम्परा में कहा गया है कि सशक्त राष्ट्र वह भू-भाग है जहाँ नारी जाति के साथ कुकृत्य नही होते हैं।

भारत में राष्ट्र की अवधारणा में संस्कृति एक मजबूत पहलू है। इस बात को ध्यान में रखते हुए मोदी सरकार ने जी-20 की 200 से अधिक बैठकें देश के विभिन्न शहरों में रखी। इसका मूल कारण विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों को शहरों के जरिए भारत की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत की जानकारी देना हैं। जी-20 समिट वसुधैव कुटुंबकम् एक धरती,एक परिवार, एक भविष्य के आधार की मूल भावना भारतीय संस्कृति ही है। 22 जनवरी 2024 को राम विग्रह राम जन्मभूमि अयोध्या में स्थापित हुआ। राम का विग्रह कृष्णशिला का बना है। राम दलितों, वचिंतो के देवता है। राम शबरी, और जटायु के साथ वानर सेना के आराध्य हैं। राम बहुजन हिताय बहुजन सुखाय हैं। राम मन्दिर हमें पुनः रामराज्य की और जाने का संकेत दे रहा है।

राम एक राष्ट्रीय नायक है जो सीमाओं में नही बांधें नही जा सकते। राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाषण दिया उसमें रामराज्य की भावना दृष्टिगोचर होती है। "राम भारत की चेतना है,राम भारत का चिन्तन है,राम भारत की प्रतिष्ठा है,राम भारत का प्रताप है, राम प्रवाह है,राम प्रभाव है। राम नेति भी है। राम नित्यता भी है। राम निरन्तरता भी है। राम विभु है, राम विशाद है। राम व्यापक है, विश्व है, विश्वात्मा है। रामराज्य जन का मानस है। यही राष्ट्र निर्माण की अवधारणा है।

राम आग नही है,राम उर्जा है।
राम विवाद नही,राम समाधान है।
राम केवल हमारे नही, राम तो सबके है।
राम वर्तमान ही नही, राम अनन्त काल है।

2. सन्दर्भ ग्रंथ सूचि

1. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, शोध संकलन, संस्कृत विभाग कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल एवं हरियाणाल ग्रन्थ अकादमी, हरियाणा वर्ष 2017
2. अभिव्यक्ति "संस्कृति कूटनीति का हिस्सा है" जी 20 की बैठकें, लेखक शाम्बी शार्प, दैनिक भास्कर, जोधपुर दिनांक 9 मार्च 2023
3. भारत के बदलते परिदृश्य सम्पादक बल्लु राम मीणा प्रकाशक बाबा पब्लिकेशन्स हाऊस जयपुर संस्करण प्रथम सन 2022
4. भारतीय ज्ञान परम्परा ओर विचारक लेखक रजनीश कुमार शुक्ल, प्रकाशक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा संस्करण प्रथम सन 2021
5. International Journal Of Research In Social Sciences, VOL-9,ISSUE 2, FEB 2019
6. श्री रामचरितमानस, गौस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2075 संस्करण एक सौ चालीसवाँ।

Growing Relevance of Ramayana in the Contemporary World

Rajesh Kumar Mishra
(Rmishra11@gmail.com)

The contemporary world is witnessing the emergence of newer technologies, revolutionising almost all areas of our lives but simultaneously, our lives are witnessing increased complexities, challenges, trials and tribulations. Ramayana carries many incidents depicting challenges, complexities, trials and tribulations and definite parallels can be drawn to fetch valuable insights from them. This paper reveals how such learnings can significantly help the present era. It also highlights how the resilience demonstrated by Mata Sita and Lord Rama during such circumstances, demonstrates the transformative power of devotion and unwavering commitment. The paper concludes that there is growing relevance of Ramayana in the contemporary world.

1. Introduction

The contemporary world is witnessing revolutionary changes, practically in all areas of life. Newer technologies based on Artificial Intelligence (AI) are changing the shape of life in unimaginable ways. For example, before the emergence of ChatGPT, it was hard for parents to believe that a revolutionary tool like this could be of great help to their kids' studies and be of help even in solving their assignment problems. Similarly, with the growing penetration of AI-based models in every arena of the profession, it has become easy for organisations to keep track of any malpractice or mismanagement being done by any of its entities. The newer technologies are helping professionals to do routine work faster and to focus on creative and innovative aspects of their work. This is because much of their routine work can now be handled by an AI-based co-pilot. Businesses are finding it easy to cut marketing costs and time by providing better glimpses of their products with the help of augmented reality (AR) and virtual reality (VR) based models. On the brighter side, these technologies primarily intend to make life easy and targeting to enhance the ease of doing business.

On the other end, despite deploying the best vigilance system and reporting, the faces of cybercrimes are also changing faster with raised complexities like one of the recent concerns in the form of deepfakes. As per a tech giant, cybercrime is the dominant threat to the digital space to the extent that as per one of the estimates, may cost economies to the tune of USD 10 trillion by 2025. This raises alarm for literacy related to fading morals and ethics, self-discipline, mutual respect, compassion and justice. This literacy is needed at all levels as humanity has now become a stakeholder of the interconnected digital space worldwide and may be seen as a victim of growing complexities and challenges associated with the newer technologies. Through my research study, I found that all these precious values and ethics are integral parts of the teachings of Ramayana. Detailing on some of these aspects, this paper highlights how the relevance of Ramayana is growing daily in the contemporary world.

2. Growing Complexities and Challenges

With growing and in most cases, with the inevitable use of newer technologies, newer challenges are emerging. The Internet has become an integral operational element for all these newer technologies. There are growing complexities in fostering security aspects in the online environment. In India, the recent report of the National Crime Records Bureau (NCRB) shows a concerning rise in cybercrime reported cases. The data reveals a significant increase in several such cases from the previous year. Worldwide, the data concerning cyberattacks and online frauds show that they are increasing on an alarming scale, with more and more victims falling prey to them. This is happening despite the best statutory provisions against online fraud and related awareness efforts being made by financial institutes and the governments of the respective countries. Most of the victims facing cyber-related trials and tribunals are youngsters and senior citizens; some time or other, they are affected by identity theft, phishing, hacking or other online frauds. In addition, cyberbullying, trolling and other targeted negative comments are also impacting the mental health and self-esteem of the users and specifically, of the youngsters. A survey showed that most of the victims of cyberbullying emphasised the urgent need for a more respectful and inclusive digital online space. In this regard, UNICEF guidelines suggest blocking the bully and formal reporting of their behaviour on the respective online platform itself. Although all these measures are needed and efforts being put in the direction are appreciable, until the core requirement of instilling values and ethics in human society is addressed, these may not be proven effective.

3. Ramayana is Full of Challenges and Complexities

In Ramayana, major challenges and complexities start unfolding with Lord Rama's exile for 14 years. There are many embedded lessons in these unfolded sequences of events:

- **Tranquillity of Ayodhya Challenged:** Queen Kaikeyi's mind gets manipulated by her maid Manthara and she demands fulfilment of her two boons which were promised to her long back by King Dashratha. Her first boon was the exile of Lord Rama to the forest for 14 years and the second one was to crown her son Bharata, Lord Rama's half-brother as the king of the Ayodhya. The citizens of Ayodhya, at once, plunged into shock and sorrow.
- **Lord Rama's Apathetic Acceptance:** In such a shocking and complex situation, Lord Rama's response was exemplary. His reaction was neither of rebellion nor resentment, but he responded to the Kaikeyi's demand with apathetic

acceptance. He gracefully accepted the exile thus, putting the welfare of the kingdom above personal benefits. This shows His commitment to Dharma.

- **Mata Sita's Devotion Won over Complexities:** Mata Sita despite under pressure in the challenging situation won over the complexities on the strength of her unwavering devotion to Lord Rama. It may be noted that Mata Sita's decision to go with Lord Rama during the exile period was not motivated by duty towards Her Husband, but it sprung forth from the depth of Her Love and Devotion towards Lord Rama. The trials that unfolded in the forest and Her fortitude during such periods are the testimony of the inner strength of Her devotion.
- **Challenges for Laxmana and His Sacrifices:** There were challenges for Laxmana that he could win over due to his unwavering loyalty and commitment towards Lord Rama's cause. This was manifested in Laxmana's decision in favour of standing by Lord Rama's side by keeping aside the comforts of the palace. Laxmana's sacrifice is not only a symbol of fraternal love but also demonstrates strength arising out of it.
- **A Series of Trials and Tribunals in the Forest:** The 14 years of exile in the forest were marked by a series of trials and tribunals. Lord Rama, Mata Sita and Laxmana, the trio encounter many powerful demons. However, during this exile period, they also encountered many great saints including Mata Sabari, a selfless devotee of Lord Rama whose simplicity in offerings depicts purity of heart, in totality.
- **Sita's Abduction and Alliance with Monkey King Sugriva:** In the face of Mata Sita's abduction, Lord Rama's commitment to dharma becomes more distinct. The pursuit of justice to rescue Mata Sita led him to seek an alliance with the monkey king Sugriva.
- **Hanuman's Devotion and Loyalty became Pivotal:** Hanuman's courage, devotion and loyalty towards Lord Rama became the pivotal portion of the struggle of the Trio in the forest specifically, after the abduction of Mata Sita. Hanuman's reaching to Lanka and discovering the whereabouts of Mata Sita becomes the crucial turning point amidst the complexities and challenges of the search operation.
- **Fourteen Years of Trials and Tribulations and Victory of Good over Evil as Finale:** The exile period of 14 years was full of trials and tribulations. It ended in the ultimate triumph of good over evil with the killing of Ravana. On return, the trios' triumphant entry back to Ayodhya and reunion with the citizens, finally led to the happy ending of the exile period.

4. Learning by Drawing Parallels

In the contemporary world, practically everybody is exposed to the complex issues of favouritism, trials and tribulations demanding to go beyond the call of duty, challenges of protection of intellectual capital and specifically, of data protection against cyber attackers, challenges of navigating through unfavourable circumstances and complexities and challenges of teamwork. Ramayana also deals with many similar situations. In this work, an effort has been made to draw parallels to fetch valuable insights which would be of help to deal with such challenging complex issues of the contemporary world.

- **Workplace Biases and Favouritism:** Queen Kaikeyi's encashing promised two boons from King Dasharatha in the form of (i) exile for Lord Rama and (ii) crowning of her son Bharata as the King and that too, at a time when whole Ayodhya was preparing for the crowning of Lord Rama as their new king, is a clear indication of biases and favouritism. Many times, at workplaces or sometimes in families or societies also, we witness such biases and favouritism. Such acts may lead to discontent and sometimes gross injustice to the eligible employee and many others may also get demotivated witnessing such injustice from superiors. In Ramayana, we find that Dashratha was bound by his words given to Kaikeyi. Kaikeyi's mind was corrupted by her maid Manthara. However, today's bosses or superiors should not indulge in such favouritism and biasing and avoid trusting manipulative persons in their contact, to ensure a healthy and fair workplace, society and family environment.
- **Hanuman's Act Exemplify Going Beyond Call of Duty:** When during the fight between armies of Ram and Ravana, Lakshman got wounded badly to the extent that if required herbs, could not have been brought from the Himalayas before sunrise he would have died. Hanuman travelled across to the Himalayas, but it took longer time for him first to search for the specific Medicine Mountain. Finally, when Hanuman found that the mountain was covered with various kinds of herbs, it was difficult for him to identify the specifically mentioned magic herb. Hence, keeping in mind the deadline of return with herb before sunrise, he lifted the mountain itself onto the palm of his hand and flew back to Lanka. Hanuman's behaviour mirrors that of resolute personnel who are ready to go beyond their call of duty to help co-workers and to contribute to the betterment of the organisation, society, state and country. The contemporary world requires more of such dedicated personnel and Hanuman's example is a true inspiration to go beyond the call of duty and to complete assigned tasks well within the speculated time frame.
- **Laxmana Rekha and Intellectual Capital Protection:** About Ramayana, there is a widely popular story of Laxmana Rekha which had been drawn by Laxmana to protect his sister-in-law Sita from any demons in the forest during the absence of both brothers from the hut they were residing. However, Ravana came in the form of a Brahmana to ask for alms and Sita Mata unsuspectedly crossed that Laxman Rekha and got into major trouble when Ravana abducted her and took her to Lanka. In the present business or workplace context, Laxmana Rekha symbolises the security layers we put in for the safety of intellectual capital. The increasing cyberattacks and growing privacy risks associated with social media have become both national and international concerns. Day-by-day growing digital space is resulting in increased vulnerability concerning data privacy. It is a visible fact that worldwide, a lot of efforts are going on, both at national and

international levels, of which, UN efforts to come out with rules and regulations against cyber security is the most current example. However, it is very important to draw benefits out of such great efforts and not to get trapped by such cyber miscreants; all stakeholders; every country, within that individual organisation and further within that, individual employee and business stakeholders should become more aware of data security aspects and to comply with these related protocols. Thus, it is important that on the issue of data protection, no one should cross the 'Lakshmana Rekha'.

- **Ram Setu – a Perfect Example of Teamwork:** As per Ramayana, to enable Lord Shri Rama and His army to cross over the sea, which was required to reach Lanka, the Ram Setu was built by Vanara Sena. For doing so when Vanara Sena reached the seashore they were not finding any clue about the way to crossover sea. It was Lord Rama who motivated his Vanara Sena to have self-belief which can make impossible possible. He also told them to work as a team which resulted in the entire Vanara Sena started working in a planned manner and finally finding a solution in the form of building Ram Setu. In the contemporary world, most organisations are facing challenges with teamwork, the exemplification of the importance of teamwork by Lord's army under his leadership gives a very important lesson. Any organisation valuing teamwork has a greater chance of survival under any challenging situation. It is good teamwork which empowers the team to bring out the best of the mind, thoughts, ideas and workforce under any complex circumstances and to implement them.
- **Agnipariksha-Exemplify how to Effectively Navigate Unfavourable Conditions:** One of the controversial portions of the Ramayana for common people is Agnipariksha. But without going into the nitty-gritty of the topic, I find that it also exemplifies how to survive under unfavourable conditions in life or in the organisation. Like Mata Sita – an epitome of everything good in this world, sometimes, we find that the best-performing and well-behaved employee gets trapped in office politics and faces the music due to unfavourable external situations which often are beyond his or her control. An undeserving employee may be promoted to a higher position ignoring the well-deserving best employee. To avoid such demoralising situations for employees, organisation processes need to be transparent, fair and balanced.

5. Resilience demonstrated by Mata Sita and Lord Rama

American Psychological Association in its Dictionary of Psychology defines resilience as the process and outcome of successfully adapting to challenging life experiences, especially through mental, emotional, and behavioural flexibility and adjustment to external and internal demands. Reflecting on the real-life situations of the contemporary world, we may find that there may be several contributing factors to how well different people adapt to challenging situations. These contributing factors may include the way an individual perceives and engages in this world, the quality of social resources available, and specific coping strategies of the individual. The positive news is that Psychological Research shows that resilience-related skills and resources can be cultivated and practised.

Now the question arises that if resilience-related skills and resources can be cultivated and practised, from whom or from whose life can we get real-life learning of such skills-in-practice? Based on my research, I find that the best role model for this purpose one can find in the form of Lord Rama and Mata Sita. Both kept facing unparalleled hurdles and challenges, but their life on earth exemplifies how one can successfully cross over any challenges and win over any hurdle in life or while running an organisation. A few of the situations are discussed below where Lord Rama and Mata Sita demonstrated perfect examples of the practice of resilience.

- In Ramayana, one may find valuable insights for managing stress in the contemporary world. Lord Rama's ability to remain composed during any challenging situation and ability to make thoughtful decisions, serve as a perfect example for stress management. Lord Rama's commitment to Dharma (righteousness) and mindfulness surely inspire a seeker to approach life's challenges with a balanced mindset and in turn, promotes, mental well-being and resilience in the contemporary world.
- Mata Sita in Ramayana on the other end, provides valuable insights into mental well-being through her resilience. How she dealt with various challenges, her story becomes a source of inspiration for those facing life's challenges. Mata Sita's enduring patience in challenging times depicts the strength relationships gain from resilience and understanding. The ability to maintain self-reliance and empowerment, even in captivity, emphasises the importance of dignity and recognizing strength during challenges; all these qualities of Mata Sita positively influence the mental self-image. Mata Sita's emotional intelligence depicted while handling complex feelings, encourages self-awareness for better mental well-being which otherwise, has become another major challenge in the contemporary world.
- Lord Rama under various challenging situations exemplifies adept management, meticulous planning and unwavering motivation. Throughout Ramayana, He demonstrates unparalleled patience, humility and resilience showcasing mental and physical stability. With humility and avoidance of ego, Lord Rama throughout demonstrates a commitment to righteousness through the judicious use of power. Lord Rama fearlessly battled adharma by garnering support through greatness. As Maryada Purshottama, Lord Rama never wavered from his duties and embraced them as a supreme responsibility thus, He exemplifies an ideal human being.
- Mata Sita's handling of separation from Lord Rama stresses the use of healthy coping mechanisms during any loss. Secondly, it also highlights the importance of mental well-being during challenges in life. Her depiction of empathy and compassion bringing a positive impact on relationships by creating an emotionally supportive environment, is quite inspiring. Mata Sita's character can be taken as a guide for the cultivation of inner strength, mindful decision-making,

and dignity. Her character also urges individuals to prioritise mental health and navigate life's challenges with grace and resilience.

6. Conclusions

In the contemporary world where complexities and challenges are increasing day by day, this paper illustrates that Ramayana offers great insights which may not only show the path to successfully overcome them but also help in ensuring mental and emotional well-being, which is emerging as another major challenge in the contemporary world. In addition, there are precious values and ethics integrated into the teachings of Ramayana as they are demonstrated by Lord Rama and Mata Sita, and unwaveringly practiced them under extreme challenges and complexities. Additionally, Ramayana also gives stern messages to those who work with ill-intention and commit crimes including cyber-thefts that they are bound to get defeated despite them temporarily putting the world under trials and tribunals. The resilience displayed by Lord Rama and Mata Sita becomes a timeless exemplification of the transformative power of virtue, devotion, and unwavering commitment to dharma. Lord Rama and Mata Sita's virtues offer roadmaps for fostering mental strength which is very much a need of the day for the entire humanity. Based on these outcomes of the present study, this paper concludes that there is growing relevance of Ramayana in the contemporary world.

7. References

1. Goswami Tulsidas (2014), "Shri Ram Charitmanas", Gita Press, Gorakhpur, 1 January 2014
2. Valmiki (2019), "Srimad Valmiki Ramayana (Satik), Part -1 & 2", Gita Press, Gorakhpur, 1 January 2019
3. APA, "Resilience", American Psychological Association, https://www.apa.org/topics/resilience
4. Hurley, K. (2024), "What Is Resilience? Your Guide to Facing Life's Challenges, Adversities, and Crises", 17 Feb 2024, https://www.everydayhealth.com/wellness/resilience/

मानस मे मातृशक्ति

अलका श्रीवास्तव
(alkash1960@gmail.com)

1. प्रस्तावना

जीवन सृष्टि की रचना और संरचना जिस आदिशक्ति महामाया द्वारा संपन्न होती है उसे विधाता भी कहते हैं और माता भी।यदि नारी के रूप में माता अपना समय-समय पर अनुग्रह ना बरसाती तो मनुष्य ब्रह्मांड में राज ना करता, यही कारण है कि माता का जीवन दायिनी, ब्रह्मा चेतना के रूप में अभिनंदन होता है।

श्रेष्ठ और वरिष्ठ उसे ही समझा गया है, जिसमें भाव संवेदना धर्म धारण और सेवा को साधना के रूप में देखा जाता है। तुलसी रामायण में हम जहां जीवन जीने की कला सीखते हैं, आदर्श प्रेम का मतलब समझते हैं उसे मातृशक्ति स्वरूप को ध्यान रखते हुए देखें तो ज्ञात होता है। उसी शक्ति स्वरूपा आदि शक्ति का महत्व उसकी शक्ति ,उसका समर्पण, तपोवन के द्वारा जो ग्रहण करती है इसी विशिष्टता के कारण उन्हें शत-शत नमन कर पूज्य समझा जाता है। वही माता कठिन से कठिन परिस्थिति में अपने मात्र रूप को सर्वस्व रूप में समर्पित कर पालन पोषण कर सुरक्षा के साथ-साथ वात्सल्य भाव बिखेर देती है। वह वेद माता गायत्री हो देव माता कौशल्या हो या विश्व माता हो उन्हें मातृशक्ति ही कहा जाता है। सृजन शक्ति के रूप में इस संसार में जो भी सशक्त संपन्न और सुंदर है उसकी उत्पत्ति में मातृशक्ति की ही अहम भूमिका है। मानस में मां सरस्वती मां सीता जो माया के रूप में समझी जाती है पार्वती जो शक्ति स्वरूपा है कौशल्या माता जो तपस्या का प्रतीक है अनुसूया माता ,शबरी ,अहिल्या ,और कैकई है जिनका मानस में बहुत ही सुंदर विस्तृत वर्णन है, उनकी शक्तियों का उनके मातृत्वभाव का उनके स्नेहा का तुलसीदास जी ने मानस में कहा है की, भक्ति की विशेषता कल्याण स्वरूप मे ही समाहित है।

2. विस्तार

गोस्वामी जी कहते हैं, आत्मा के कौशल से शरीर का निर्वाह चलता है, और शरीर के सहयोग से आत्मा अपना लक्ष्य पूरा कर पाती है। यह संभव तभी होता है जब दोनों के बीच उच्च स्तरीय सहयोग बना रहे, वे कहते हैं भक्ति रूपेण कल्याण स्वरूप ने महारानी कौशल्या के यहां चार भाइयों के रूप में मोक्ष के चार फल उत्पन्न हुए हैं।

1. **कौशल्या माता** : भगवान जब कौशल्या माता के सामने चतुर्भुज रूप में प्रकट होते हैं, तब माता हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करती हैं और कहती हैं आप तो ब्रह्म हैं आप माया से रचित हैं आप तो मेरे गर्भ में थे। यह सुनते ही उन्होंने अपना बाल रूप माता के सामने मुस्कुरा कर प्रकट किया और मां ने बड़े स्नेह से कहा कृपया बाल लीला करें बाल रूप हो भगवान ने रोना शुरू किया जिससे उन्हें वात्सल्य प्रेम की प्राप्ति हो सके, मां ने प्रसन्नता से उन्हे हृदय से लगा लिया । माता में यह शक्ति इतनी प्रबल होती है जो तप और ज्ञान से उत्पन्न हो ईश्वर को जन्म से लेकर लीलाएं करने के लिए प्रेरित करती है । और सिर्फ प्रेरणा ही नहीं अपने वात्सल्य प्रेम के द्वारा माता ईश्वर को भी वह जो रूप चाहती है ईश्वर प्रेम पूर्वक इस स्वरूप को धारण कर लेते है। यह एक मां ही कर सकती है जहा ईश्वर भी प्रेमभाव के आधीन हो जाते है।
2. **सरस्वती जी** : अक्षरों अर्थो और समूहो, रसो, छंदो और मंगलो की करने वाली है सरस्वती माता जो विद्या की देवी हैं मानस में उनका देवताओं ने मति भ्रम करने के लिए कई जगह सहयोग लिया है वह उनके लिए पूजनीय है और यह कार्य वही कर सकती हैं।
3. **माता पार्वती** : जगत जननी जो शक्ति स्वरुप है, मानस में देवता मुनी असुर और मनुष्य सभी उनकी स्तुति करते हैं, जो जड स्वरूपिनी कहलाती है। वे आध्यात्मिक आदि भौमिक व आदि दैविक तप रूपी हो अंधकार का नाश करने के लिए विकराल रूप धारण करती हैं, शक्ति स्वरूप माता जो हमारे ब्रह्मांड में समाहित है जिनसे हम शक्ति और सुरक्षा प्राप्त करते हैं वही मां स्त्रियोचित रूप भी रखती हैं, जो जल की तरह निर्मल और वज्र की तरह कठोर भी होता है। उन्होंने तपस्या से हर जन्म में शिव को यानी सत्य रूप को प्राप्त किया है वही जगदंबा भवानी मानस में शिव के साथ राम के प्रसंग को सुनकर समझने का प्रयास करती है। और माता जानकी को सुयोग्य वर पाने का वरदान भी देती है।
4. **माता सीता** : गोस्वामी जी मानस के पांचवें श्लोक में बालकांड में कहते हैं, उत्पत्ति स्थिति और क्लेशों को हरने वाली संपूर्ण कल्याणकारी राम जी की पत्नी को मैं सादर प्रणाम करता हूं जिनकी माया से सारा जग वशीभूत है ब्रह्मा देवता असुर सारा जगत, सत्य प्रतीत होता है विनय पत्रिका में गोस्वामी जी कहते हैं "जयति सर्वेश्वरी राम जय जाया जयति वैदेही शक्ति रूपेण ब्रह्मांड की ईशी सदा जय करें।" सीताजी जिन्होंने व्यक्त और अव्यक्त रूप से जन्म लिया और राम के साथ विवाह के बाद अयोध्या में निवास किया कुछ समय बाद उन्हें श्री राम को जब वनवास दिया गया तो मां सीता उनके साथ वन को गई वहां उन्होंने तरह-तरह के कष्ट उठाए रावण द्वारा उनका जब हरण होता है और वह लंका जाकर रहती हैं तो भी वह हिम्मत नहीं हारती और निडरता पूर्वक सभी कष्टों को धैर्य पूर्वक सहन करती हैं श्री राम जब रावण को मार कर सीता को वापस अयोध्या

ले जाते हैं और राज्याभिषेक के बाद में महल में रहने लगते हैं कुछ समय बाद जब वे गर्भावस्था में आती हैं तब उन्हें पुनः कुछ सामाजिक कारणो से महलों को छोड़ फिर से वन में जाना होता है वहां जाकर सीता माता वाल्मीकि आश्रम में रहती हैं अकेले ही वे आश्रम में अपने पुत्रों लव और कुश को जन्म देती है और उनका पालन पोषण कर उन्हें एक सफल योद्धा बनाती हैं। उन्होंने कभी भी हिम्मत नहीं हारी और अपनी साधना तप के बल से अपने लक्ष्य तक पहुंचती है समाज की हर नारी के लिए एक नारी शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

5. **अनुसूइया माता** : अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूया माता ने अपने तपोबल से मंदाकिनी नदी को स्वर्ग से धरती पर अवतरित किया जो तपोवन में आज भी शीतलता प्रदान करती करती है ।माता ने अपने कठिन तपस्या से ईश्वर को ब्रह्मा विष्णु और महेश के रूप में प्राप्त किया भगवान के इसी रूप को दत्तात्रेय के रूप में पूजा जाता है इस प्रकार उनका सत्य रूप में दर्शन होता है वे माता के रूप में पूजनीय है।
6. **शबरी** : ईश्वर भक्ती से प्रभु राम उन तक पहुंचे और दर्शन देकर उन्हें धन्य धन्य किया, भगवान राम उनकी कुटिया तक गए और आशीर्वाद दे नवधा भक्ति का ज्ञान दिया, यह सिद्ध है ईश्वर सदैव साधना से तुम तक स्वयं आते हैं।
7. **कैकई** : मानस में कैकई एक श्रेष्ठ माता से अपने पद से विचलित हो, स्वार्थ से वशीभूत हो, अपने आचरण को संकुचित कर लेती हैं। जिससे प्रभावित हो राजा दशरथ राम को वनवास देते हैं और कैकई कलंक को धारण करती हैं। लेकिन कई मानस प्रेमी को यह गलती उनकी दूर दृष्टि का कहकर सराहना भी करते हैं,कहते है राम को यदि वनवास ना मिलता तो राम यशस्वी ना होते वे रावण को ना मारते, उनके यशस्वी चरण अयोध्या से रामेश्वरम तक न पहुंचते, वनवासियों को अमृत कौन पिलाता, अत्याचारी रावण के अन्यायों को कौन मिटाता, जन-जन के हृदय में राम की कीर्ति कौन बैठाता, श्री राम के हृदय में माता कैकई के लिए वही सम्मान दिखा जो पहले था , उन्होंने किसी भी तरह से मां कैकई को प्रसन्न मुद्रा में देखना चाहा है उन्होंने कभी माता में भेद नहीं किया।

3. निष्कर्ष

ब्रह्मांड में भला बुरा और देव के साथ असुर का भी अस्तित्व है शास्त्रों में सप्त मर्यादाओं में सत्य को दूसरे नंबर पर रखा है सत्य ही हमेशा जीतता है, व्यक्तिगत जीवन में मानस में दांपत्य जीवन की दूरदर्शिता को वह सहकारिता को हर जगह सराहा गया हैं, सानिध्य और सहयोग का सौभाग्य तभी बनता है जब उसके पीछे दूरदर्शिता विवेकशीलता हो और हित साधना युक्त अनुशासन भी हो ज्ञान की गरिमा आत्मज्ञान के रखने में जानी जाती है। मात्र रूपी शक्ति में वह तेज और स्नेह और दृढ़ संकल्प ,शक्ति हिम्मत के रूप में सदा ही दिखाई देती है इसी कारण मां परवरिश के समय कभी विचलित नहीं होती और अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सफल होती है। मातृशक्ति ही वह शक्ती है जो जीवन का पालन-पोषण करती है यदी पृथ्वी पर उसकी कृपा ना होती तो जीव का ब्रह्मांड मे कोई अस्तित्व नही होता। संसार की प्रत्येक नारी शक्ति को शत-शत नमन करते हुए मैं अपने प्रपत्र को विराम देती हूं।

4. संदर्भ ग्रन्थ

1. वाल्मीकि रामायण ISBN No. 13, 978-0143441144
2. राम चरित मानस ISBN 81,293,0123,7
3. विनय पत्रिका, तुलसीदास ISBN 10,8129306360 ISBN 13 ,8129306364
4. मनुष्य मे देवत्व का विकास, आचार्य श्रीराम शर्मा

सुंदरकांड से मानव प्रबंधन के चार सूत्र

कैलाश चन्द्र शर्मा

(sharmakailash1958@gmail.com)

श्री रामचरित मानस में आज के मानव प्रबंधन की दृष्टि से अनेकानेक जीवनोपयोगी सूत्र है जो पठनीय, मननीय और अनुकरणीय है। इस प्रपत्र में चार सूत्र प्रस्तुत किए गए है जो श्री रामचरित मानस के सुंदर कांड से लिए गए है। इनमे क्रमशः वक्ता के गुण; सचिव, वैद्य और गुरु के धर्म; काम, क्रोध, मद लोभ जैसे मनोविकारों से हानि; और सद्बुद्धि के सदुपयोग से उन्नत जीवन की प्राप्ति और दुर्बुद्धि के फलस्वरूप होने वाली हानि को समझाया गया है।

1. प्रस्तावना

प्रायः यह प्रश्न उठता है कि हमारे प्राचीन आध्यात्मिक ग्रन्थों में वर्तमान के जीयन के लिए कुछ उपयोगी सूत्र है भी कि नहीं? इसका स्पष्ट उत्तर है कि हैं। वास्तविकता इस बात कि है कि हम स्वयं इन ग्रन्थों का अध्ययन करें अथवा योग्य जनों से उनकी व्याख्या सुनें। तभी हमको यह प्रतीत होगा कि इन ग्रन्थों में व्यावहारिक ज्ञान भरा पड़ा है। आवश्यकता इस बात कि है कि हमारा ध्यान इस ओर जाए और हम इन ग्रन्थों का अध्ययन करे, मनन करे और फिर जीवन में उतारें।

इस प्रपत्र में श्री राम चरित मानस के सुंदर कांड से चार प्रसंग लिए गए है और इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है। समय के मर्यादा को ध्यान में रखते हुये केवल चार ही प्रसंग लिए गए है। प्रपत्र की रूपरेखा इस प्रकार है। इस प्रारम्भिक प्रस्तावना अंश के बाद, द्वितीय भाग में प्रबंधन की सामान्य समझ को व्यक्त किया गया है और मानव प्रबंधन में मानवीय मूल्यों के महत्व को स्पष्ट किया गया है। तृतीय भाग में श्री राम चरित मानस के सुंदर कांड से चार प्रसंग (दो चौपाई और दो दोहे) लिए गये है जो मानव प्रबंधन की दृष्टि से उपयोगी है। प्रसंग तो अनेक है लेकिन समय की मर्यादा है, अतः चार ही प्रसंगो की सक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है। चतुर्थ अंश में प्रपत्र का सार प्रस्तुत करने का क्रम रखा है।

2. प्रबंधन में मानवीय मूल्यों का महत्व

वर्तमान विश्व में प्रबंधन एक विधा के रूप में लगभग 100 वर्ष पुराना माना जा सकता है। प्रबंधन का महत्व तो हमेशा ही रहा लेकिन इसका महत्व विशेष तौर पर आपात कल जैसी परिस्थितियों में अधिक महसूस किया गया जैसे कि युद्ध, अकाल, अतिवृष्टि, भूकंप, महामारी, आदि। फिर जब संस्थागत विकास का क्रम चला तो प्रबंधन का महत्व और भी बढ़ गया क्योकि संस्थागत विकास के लिए सभी स्थानो में कुशल प्रबंधन की आवश्यकता महसूस होने लगी चाहे सार्वजनिक संस्था हो, व्यापारिक संस्था हो, या स्वयं सेवी संस्था हो या अन्य कोई प्रकार की संस्था हो।

प्रबंधन में मुख्य रूप से नियोजन, कार्यान्वयन और समीक्षा का क्रम निरंतर चलता रहता है। इसमे नेतृत्व की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। प्रबंधन के सभी आयाम महत्व के है जैसे मानवीय प्रबंधन, वित्तीय प्रबंधन, विपणन प्रबंधन, संसाधन प्रबंधन, प्राक्रतिक सम्पदा प्रबंधन, आदि। अर्थशास्त्र में उत्पादन के चार मुख्य अंग बताए गए हैं: प्राक्रतिक सम्पदा (जमीन, जंगल, जल, आदि); श्रम; धन; और प्रबंधन या संगठन। इनमें सभी महत्व के हैं लेकिन प्रबंधन के द्वारा ही सभी का उचित नियोजन, कार्यान्वयन और समीक्षा होती है। और उत्पादन का कार्य साकार रूप लेता है। अतः प्रबंधन की विशेष महत्ता कही जा सकती है।

वैसे तो प्रबंधन एक विशाल विषय क्षेत्र है और वर्तमान में काफी अध्ययन के बाद हम प्रबंधन की शिक्षा पूरी करते हैं। जीवन का अनुभव भी यह बताता है कि प्रबंधन एक प्रासंगिक और जीवनोपयोगी विषय है। यह व्यक्तिगत और संस्थागत जीवन दोनों के लिए ही बहुत उपयोगी है। प्रबंधन की भूमिका में व्यक्ति का बड़ा महत्व है। व्यक्ति ही समाज और संस्थाओं की इकाई है और वही विभिन्न भूमिकाओं में कार्य करता है जैसे कि नागरिक, नेता, कार्यकर्ता, श्रोता, वक्ता, गृहस्थ, प्रबन्धक, सेवाकर्मी, आदि।

वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में विभिन्न विषयों जैसे गणित, कम्प्युटर, अर्थशास्त्र, भाषा, इतिहास, भूगोल, प्रबंधन, आदि की जानकारी तो पर्याप्त मात्र में दी जाती है। लेकिन मानवीय जीवन के लिए उपयुक्त मानवीय मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भावना, नैतिकता, आदि को उतना महत्व नहीं दिया जाता है जितना कि दिया जाना चाहिए। इस कारण से आज हमारे पास शिक्षित लोगों कि संख्या तो पर्याप्त है लेकिन भले ईमानदार, परिश्रमी, विवेकी, और सद्भावना से कार्य करने वाले लोगों की कमी सर्वत्र महसूस की जाती है।

अब प्रश्न उठता है की इन सकारात्मक मानवीय मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भावना, नैतिकता, आदि की शिक्षा हमें कहाँ से प्राप्त हो? अवश्य ही हमारे आध्यात्मिक ग्रंथ इन सब से भरपूर हैं। और भी दो मुख्य स्रोत हैं: योग्य महापुरुषों का जीवन दर्शन और मार्ग दर्शन; और आत्मप्रेरणा। क्योकि महापुरुषों का पथ प्रदर्शन और आत्मप्रेरणा उतना सुलभ नहीं है जितना कि आध्यात्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय जैसे कि श्री राम चरित मानस, श्रीमद भगवतगीता, पतंजलि योगसूत्र, अष्टावक्र गीता, योग वशिष्ट, आदि।

इसी विचार के साथ इस प्रपत्र में श्री राम चरित मानस के सुंदर कांड से दो चौपाई और दो दोहे लेकर उनका वर्तमान के संन्दर्भ में प्रबंधन की दृष्टि से उपयोग बताने का प्रयास किया गया है।

3. सुंदर कांड से चार सूत्र

जैसा कि हम जानते हैं श्री राम चरित मानस हिन्दी राम साहित्य मैं सबसे महत्वपूर्ण और राम भक्ति के विकास में श्री राम चरित मानस का अद्वितीय योगदान है (कुल्वे, 2015)। यह अधिवेशन भी रामायण पर आधारित है अतः श्री राम चरित मानस से प्रसंग उठाए गए हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थों में भी इस तरह का आज के संन्दर्भ के लिए उपयोगी ज्ञान उपलब्ध है। सशक्त उदाहरण के तौर पर श्री राम चरित मानस के सुंदर कांड से चार प्रसंग प्रस्तुत किए जा रहे हैं जो निम्न में प्रस्तुत किए गए हैं।

(i) प्रथम प्रसंग अशोक वाटिका में सीता माता और त्रिजटा के संबाद का है।

त्रिजटा नाम राक्षसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥
सबन्हों बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
सुंदर कांड / दोहा 10 / चौपाई 1

इस प्रसंग में त्रिजटा जी वक्ता की भूमिका में है जो अन्य राक्षशियों को अपने सपने के बारे में बताती हैं। एक अच्छे वक्ता में तीन गुण आवश्यक हैं: भगवान राम के चरणों में भक्ति, निपुणता और विवेक। हम सभी कभी न कभी वक्ता की भूमिका में होते हैं। अतः यह सूत्र अनुकरणीय है। यदि ये तीन गुण हममे हैं तो हम अच्छे वक्ता साबित होंगे।

(ii) दूसरे प्रसंग में गोस्वामी तुलसी दास जी महाराज एक सार्वभोंमिक सत्य की ओर इंगित करते हैं।

सचिव वैद गुर तीन जौं प्रिय बोलहि भय आस ॥
राज धर्म तन तीनि कर होहि बेगिही नास ॥
सुंदर कांड / दोहा 37

यदि सचिव, वैद्य और गुरु भय के कारण क्रमशः अपने राजा, रोगी और शिष्य की प्रसंसा करते हैं तो शीघ्र ही राजा, रोगी के शरीर और धर्म का नाश हो जाता है। अतः राजा, रोगी, शिष्य, सचिव, वैद्य और गुरु शभी के लिए शिक्षा है। हमें भय के कारण झूठी प्रशशा नहीं करनी चाहिए।

(iii) तीसरे प्रसंग में श्री विभीषण जी अपने बड़े भाई श्री रावण जी को समझाते हुए कहते हैं कि काम, क्रोध, मद और लोभ ये सब नरक के द्वार हैं अर्थात हमको अनिष्ट की ओर ले जाने वाले हैं।

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहि जेहि संत ॥
सुंदर कांड / दोहा 38

अतः इन मार्गो को छोड़ कर हमें श्री राम जी की भक्ति में लगना चाहिए जिनको संत लोग भजते हैं। यही उपदेश श्री भगवान श्री अर्जुन जी को श्रीमदभगवत गीता (अध्याय 16 / श्लोक 21) में देते हैं:

त्रिविधं नरकेस्येदं द्वारम नाशनमात्मन: ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तमादेत त्रयम त्यजेत ॥
श्रीमदभगवत गीता / अध्याय 16 / श्लोक 21

श्री भगवान कहते हैं कि नर्क के तीन द्वार हैं- काम, क्रोध और लोभ जो आत्मा का नाश करने वाले हैं। अतः इन तीनों का त्याग करना चाहिए। अतः काम, क्रोध, मद और लोभ के मनोविकारों के प्रति हमें सावधान रहना चाहिए और इस बात को ध्यान में लाना चाहिए की इनसे हानि ही हानि है।

(iv) चौथे प्रसंग में, पूर्व में कहे गए दोहे के आगे के क्रम में ही श्री विभीषण जी श्री रावण जी को समझाते हुए एक महत्वपूर्ण सत्य को उजागर करते हैं। सत्य यह हें कि अच्छी और बुरी बुद्धि हर व्यक्ति के हृदय में निवास करती है।

सुमति कुमति सब के उर रहई। नाथ पुराण निगम अस कहही ॥
जहां सुमति तह संम्पति नाना । जहां कुमति तह विपति निदाना ॥
सुंदर कांड / दोहा 39 ख / चौपाई 3

जो सद्बुद्धि का उपयोग करते हैं वे संम्पति और वैभव से भरपूर हो जाते हैं। जो कुबुद्धि का सहारा लेते हैं वे विपत्तियों को आमंत्रित करते हैं। अतः हम स्वयं ही अपने जीवन का निर्माण करते हैं। यह बहुत ही उपयोगी सूत्र है। पठनीय, मननीय और अनुकरणीय सूत्र है। सीख यह है कि हम सद्बुद्धि का उपयोग कर अपने जीवन को उत्क्रष्ट बनाएँ।

4. उपसंहार

हमारे आध्यात्मिक ग्रंथ जैसे कि श्री राम चरित मानस में अनेकानेक जीवनपयोगी वर्तमान के प्रबंधन की दृष्टि से पठनीय, मननीय और अनुकरणीय सूत्र हैं। इस प्रपत्र में चार सूत्र प्रस्तुत किए गए हैं जो कि श्री रामचरित मानस के सुंदर कांड से लिए गए हैं। समय की मर्यादा को सम्मान देते हुए व्याख्या को सरल और सीमित रखा गया है। प्रस्तुत सूत्रों में क्रमशः वक्ता के गुण; सचिव, वैद्य और गुरु के धर्म; काम, क्रोध, मद और लोभ जैसे मनोविकारों से हानि; और सद्बुद्धि के सदुपयोग से उत्क्रष्ट जीवन की प्राप्ति को समझाया गया है।

5. संदर्भ साहित्य

1. श्रीरामचरित मानस (2014), गीता प्रैस, गोरखपुर, टीकाकार श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार।
2. बुल्के, कामिल फादर (2015), राम कथा उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिशद प्रकाशन, इलाहाबाद (प्रयागराज), छठा संशोधित संष्करण, प॰197॰
3. श्रीमदभगवत गीता 92013), गीता प्रैस, गोरखपुर, अध्याय 16, श्लोक 21, (पद्छेद, अन्वय, और साधारण टीका सहित)।

Srimad Ramayana of Valmiki and its Relevance in Present Management

Mita M. Shenoy
(prof.mashenoy@gmail.com)

1. Introduction

Shrimad Valmiki Ramayan is the oldest epic in a poetic form hence called Adi-Kavya. It was composed by sage Valmiki in "Treta Yuga" in Sanskrit Language.

The celestial Sage Narada narrated to Rsi Valmiki the story of "Maryada Purushottam Shri Ram" in a nut shell. It is in the seed form of Ramayana is called "Moola Ramayana". Sage Valmiki, adikavi, composed this Ramayana into 24000 verses, containing seven sections and 500 Chapters. There are many Ramayanas and its Commentaries thereafter. But the Ramayana of Valmiki is the oldest and one of the most authentic and read widely by devotees all over the world.

It has seven sections (Kand) namely

1. Bal Kanda
2. Ayodhya Kand
3. Aranyakanda
4. Kishkinda Kand
5. Sundarkanda
6. Yuddha Kand
7. Uttarakand

Its main character is "Shri Ram" son of King Dasharath of IKSHVAKU lineage. Other Characters are Sita wife of Rama, Lakshmana, Bharata, Shatrugna his brothers. Dasharatha's 3 Wives Shri Hanuman, Sugriva, Vishwamitra & Vashishta etc.

In this paper we are going to explore life and Business Management lessons that can be learnt from Ramayana, the great Epic. Discussion about two great Characters of Ramayana are taken into consideration. First is Sri Rama and Second Hanuman.

In Management of a Business or even in life Management following things are of utmost importance for its success or achieving goal.

1. Planning and fixation of a goal
2. Leadership Skills
3. Ethics & commitment
4. Co-ordination and Collaboration
5. Team Work
6. Time Management
7. Execution and Success

1. Planning and Fixation of a Goal

Firstly a Goal should be set up for any business or for life. It requires proper planning in Advance. Goal can be divided into small achievable targets depending upon time and skill. It should also take into account, resources as well as manpower.

Shri Ram's goal after the abduction of his wife Sita by Ravana, was to rescue her from captivity of Ravana. He plans to reach Lanka through help of Sugriva, Hanuman, Jamvan and others. He enters into pact with Sugriva and fulfills it.

2. Leadership Skills

A man behind a project or Business is considered Leader and the success depends upon his or her Leadership Skills.

In the first section of Ramayana i.e. Balakanda Rsi Valmiki asks sage Narada "O Venerable Rishi"! Please tell me whether there is a perfect man in this world who is a once virtuous, brave, dutiful, truthful, noble, firm in vow, Man of knowledge (Learned) powerful engaged in welfare of all beings, with loving appearance, calm and composed mind, is without malice and kind to all beings". Narada replied, there is such a one a prince of Ikshvaku line his name is Rama. He has all the above qualities. In addition to that he is an obedient son, a kind brother, loving husband, a faithful friend, an ideal king, lover of all beings, merciful, even to enemy. He is adored by all. He is pious, generous, shrewd, Noble has equal regard for all. He has pleasing Appearance and proportionate limbs. He is full of excellent Attributes and enhances delight of his mother Kaushalya. He is profound like ocean. Firm like Himalaya. In prowess he is like Vishnu and he has pleasant Appearance like Moon. His anger is like Firm. But his forgiveness is like Earth. He is like Dharma in truthfulness.

Valmiki Ramayan (Balkand I.1.19)

As Rama has all the virtues and noble qualities, prowess and interested in welfare of the people. King Dasharatha wanted to install Rama his heir apparent to of his Kingdom Ayodhya.

(R. V. Bal. I. 1.21)

3. Ethics and Commitments

Shri Ram is the embodiment of Dharam

रामो विग्रहवान धर्म साधु सत्यपराक्रम:
राजा सर्वस्य लोकस्य देवनामिव वासव:

(V. R. Aranyakand III 37.13)
Ram is the incarnation of virtue, pious and truth. He is lord of men as Indra is the ruler of Gods.
He sacrifices the Royal Throne, its pleasures and goes to 14 years exile in the forest to fulfill the promise of his father Dashrath. He kills demons to protect sages who were in forests doing sacrifices and penance. He helps Ahilya wife of Gautam Rsi to come out of his curse. He helps ascetic Shabari in getting liberation. After killing Ravana in battle, Rama instructs Vibhishana to Perform last rites and gives him liberation although, Ravana was his enemy. Then Ram consoles Mandodari, Ravan's wife. He installs Vibhishana as the King of Lanka.

4. Coordination Collaboration and Team Work
Shri Rama and Lakshmana make an alliance with Sugriva, a Chief of Monkeys having extra ordinary prowess, might valour and knowledge of Geography. Sugriva's wife was snatched by his elder brother Vali along with his Kingdom of Kishkinda. Rama promises him to get his Kingdom and wife back from Vali, as per Sugriva's request. In return Sugriva gives assurance to Shri Rama to help him in finding out whereabouts of Sita and helps him in his battle with Ravana. As per the above pact Shri Rama kills Vali and gives the Kingdom of Kishkinda to Sugriva along with his Wife.

Sugriva calls his army of countless monkeys from all over the globe. He sends them in teams to Four quarters, (East, West, North and South) in search of Sita. After knowing whereabouts of Sita, Sugriva gives his army of Monkeys to help Rama in his battle against Ravana.

5. Reaching the Goal / Success
Shri Rama's ultimate Goal was welfare of all beings, through Good Governance Righteousness; in that truthfulness, kindness and all noble virtues has highest place. But during his 14 years exile his wife Sita was abducted by demon Ravana, hence it become necessary to give priority to rescue Sita from Ravana's Captivity. He reached that short term Goal by proper planning, vision, his leadership qualities, excellent team work, taking in confidence to subordinates; his skill in Archery. After winning the battle of Lanka. Shri Rama returns to Ayodhya.

In Uttara Kand Valmiki Rsi describes Ram-Rajya i.e. Kingdom of God which is an ideal Governance. It is mentioned that after Sita enters the netherworld Sri Rama did not take any wife, having made golden image of Sita performs many sacrifices for thousands of years. He acted righteously in governing his Kingdom performing pious acts for a long time. Bears, Monkey's, Raksasas and Kings paid tributes to him. Due to proper rainfall there was enough Food and Prosperity. People were happy and healthy. No one dies prematurely. No Physical ailments or calamities took place during the regime of Sri Rama. He donated precious things, wealth to Brahmins and performed most difficult sacrifices and added glory to his ancestors and God. Thus he spent many years of happiness doing course of Dharma.

2. Shri Hanuman

Sri Hanuman, (an incarnation of Shiva) is the highest devotee and dedicated disciple of Shri Ram. His excellences are described in "Sunder Kanda of Ramayan". Younger generations or juniors in any field of Managament or profession can learn a lot from him.
Goswami Tulsidas describes him as

पवन तनय बल पवन समाना।
बुद्धी बिबेक विग्यान निधाना।।

Hanuman was the most intelligent among his vanara clan. He being son of lord vayu (Pavan) he had Exceptional bodily strength. He was a store house of wisdom discriminatory power and knowledge. As per Jamvan there is no task which cannot be done by Hanuman. Despite all these attributes, Hanuman was polite and humble to all.

Along with other monkeys Hanuman was assigned the work of exploring southern direction of globe to search Sita. He was accompanied by Nila, Angad and others. Jamvan motivates Hanuman to leap across the sea. He reminds him of his capacity to leap equal to wind God (as Hunuman was his son.) No one other than Hanuman had strength wisdom, energy, capacity and courage to leap the sea beyond 100 yojana. Accordingly Hanuman was ready to do the adventure. After reaching Lanka Sri Hanuman with great difficulty finds Sita in Ashokvan. He feels very sad, seeing Sita very weak, tired and lamenting for Shri Ram. He consoles her and gives the ring, sent by Sri Ram to Sita as a token of his message. He tells full story of Shri Ram with his great communication skills. He asks her to disclose her identity, Sita in turn tells her story. He kills many Rakshasas and Prince Aksa in Lanka. He warns Ravana to return Sita or face the worst consequences. When he was punished by Ravana by burning his tail, Hanuman assumes giant form and burns Lanka. He creates stir in Lanka causes agony to Ravan. Then he again meets Sita and gives her assurance with consolation in reasonable Truthful and beautifully worded language. सम्यक सत्यं सुभाषितं

He even offers to carry Sita on his back to the place of Rama, but Sita refuses to go with him and request Hanuman to bring Rama to her. Hanuman again ensures her that Ram will definitely rescue her from the captivity of Ravana.

Endowed with extra ordinary power Hanuman again leaps the sea and reaches his team where Angad and all were waiting. Angad calls him their life saver. They then reach the forest where Ram and Lakshman and others were waiting. He gives necessary news and other information of whereabouts of Sita in Ashokvan in Lanka. He returns to Rama the jewel given by Sita. Ram praises Hanuman with word "A Great work rare on the earth has been done by Hanuman which could not be accomplished even in thought by any other person".

(Yuddha Kand VI 1.2.)

Later on Hanuman also helps Ram in the battle. He brings the entire mountain peak to get the required herb to save life of Lakshmana who becomes unconsciousness in war. Due to that herb lakshmana regains consciousness. After winning of war by Sri Rama (with Ravana) they all return to Ayodhya with Sita. Thus Shri Hanuman plays an instrumental role in Ram's Battle with Ravana. He completes his mission successfully by his dedication, devotion, hard work, wisdom, adventure, strength and also communication skills.

3. Conclusion

- Rsi Valmiki, through his great epic "Ramayana" gives lessons of how to live an ideal life.
- This great poetic epic has a universal Appeal. It is a perfect guide to all at all times.

4. References

1. Srimad Valmiki Ramayana Part I and Part II revised edition published by Gorakhpur, India Seventeeth reprint 2023.
2. Ramayana of Valmiki Sanskrit Text with English translation Vol I to IV. English translation by M. N. Dutt edited and revised by Ravi Prakash Arya. Parimal Publications, Delhi third reprint edition 2022.
3. Sri Ramacarita Manasa with Hindi Text and English Translation. Second Edition 2003 published by Gita Press Gorakhpur, India.
4. Moolramayana Marathi of Valmiki Ramayana Prathama sanskaran स. 2062, published by Gita Press Gorakhpur, India
5. Sunder Kand of Ramacharit Manas sanskaran स. 2075, published by Gita Press Gorakhpur, India.

सृष्टि रहस्य - काकभुशुण्डि के अमृत वचन

चुंडूरी कामेश्वरी
भवन्स विवेकानन्द महाविद्यालय, सिकन्द्राबाद
(Kameswari.sahitya@gmail.com)

सृष्टि, प्रकृति-पुरुष, आत्मा-परमात्मा, पंचमहाभूत, मानव को लिए जिज्ञासा का विषय हुए हैं। मानव, प्रकृति से अनेक वस्तुओं का सहारा लेता है परंतु, उनके उद्भव को लेकर शंकित होता है। माना जाता है कि इस सृष्टि की रचना ब्रह्मा ने की है, यदि ब्रह्मा इस सृष्टि के रचयिता हैं तो फिर मानव का उद्भव कब, क्यों, कैसे हुआ? अपनी आस्था से वह यह मानता है कि इस संपूर्ण सृष्टि के ऊपर कोई एक सत्ता है जो हमें दिखाई नहीं देती है, परन्तु उसकी शक्ति अपरिमित होती है, निर्गुण और सगुण ब्रह्म के आधार पर, मनुष्य दैनिक भक्ति करता है। उसका मानना है कि ब्रह्म की प्रार्थना करने पर वे मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। सृष्टि का रहस्य क्या है, उसके पीछे की कहानी क्या है, क्या इसका कोई ओर-छोर है, आदि-अंत है? प्राप्त प्रमाण, उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करने पर, अनेक बिन्दुएँ हमारे सामने आती हैं, जिन्हें जोड़ने पर इसका समाधान पाते हैं। श्री रामचरितमानस हमारे सामने सबसे बडा प्रमाण है, काकभुंशुण्डि-पक्षीराज गरुड़ को दशरथ पुत्र राम की समस्त कहानी का बखान करते हैं, जिन बातों से हम कुछ समझ पाते हैं, उनको मैंने इस प्रपत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मुख्य बिंदु: सृष्टि, प्रकृति-पुरुष, आत्मा-परमात्मा, पंचमहाभूत, आस्था-विश्वास, निर्गुण और सगुण ब्रह्म।

1. प्रस्तावना

रामचरित मानस हम भारतीयों के लिए एक प्रमुख ग्रन्थ है जिस के आधार पर वह अपने जीवन से संबंधित अनेक विषयों का समाधान प्राप्त कर सकता है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक पहलुओं पर विस्तार के साथ अनेक बिंदुओं पर चर्चा की गई है। समाज की मुख्य इकाई – लोग, बिना किसी भेदभाव के इस के आधार पर अपने जीवन को सन्मार्ग पर ला सकते हैं। इस के गहन अध्ययन से एक ओर हम ज्ञान- विज्ञान, दूसरी ओर आध्यात्मिक, सृष्टि, प्रकृति के विविध अंशों पर भी अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

2. विस्तार

तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता। तपबल बिष्नु सकल जग त्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा। तपबल सेषु धरइ महिभारा॥
बालकांड 72, चौ. 2

तप के बल से ब्रह्मा संसार को रचते हैं और तप के बल से विष्णु सारे जगत का पालन करते हैं, तप के बल से ही शम्भु, रुद्र रूप से जगत का संहार करते हैं और तप के बल से ही शेष जी पृथ्वी का भार धारण करते हैं। ब्रह्मा द्वारा दृश्य जगत् – प्रपंच बनाया गया।

बिपति बिरंचि प्रपंच बियोगी।
बालकांड दो. 21, चौ. 1

भारतीय दर्शन के अनुसार, पञ्चभूत (पंचतत्व या पंचमहाभूत) सभी पदार्थों के मूल माने गए हैं। आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी - पंचमहाभूत माने गए हैं जिनसे सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ बना है। लेकिन इनसे बने पदार्थ जड़ अर्थात् निर्जीव होते हैं, सजीव बनने के लिए इनको आत्मा चाहिए। वैदिक साहित्य में आत्मा को पुरुष कहा जाता है, प्रकृति इन्हीं पंचभूतों से बनी मानी गई है। प्रकृति-पुरुष से मानव की उत्पत्ति हुई। ये सभी विषय मानव के लिए विस्मय के साथ-साथ जिज्ञासा का विषय रहे हैं।

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥ उत्तरकांड दो. 12, छं. 5

माना जाता है कि संसार वृक्ष स्वरूप है, उसके बारे में वेद-शास्त्रों ने कहा है कि इस का मूल अव्यक्त अर्थात् प्रकृति है, जो अनादि है, जिसकी चार त्वचाएँ, छ: तने, पच्चीस शाखाएँ, अनेक पत्ते और फूलों से युक्त है, इसमें कड़वे और मीठे दो प्रकार के फल लगे हैं, इस पर एक ही बेल है, जिसमें नित्य नये पत्ते और फूल निकलते रहते हैं।

3. रामचरितमानस – अनन्त कथा

देव कृपा, गुरु कृपा प्राप्त गोस्वामी तुलसीदास ने अत्यंत भक्ति-श्रद्धा से युक्त होकर जग प्रसिद्ध 'रामचरितमानस' की रचना की। इसमें अनेक रहस्य सहित राम चरित्र के बखान के चार संवाद हैं – शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य-भरद्वाज मुनि, काकभुशुण्डि-गरुड, तुलसीदास-संत। इनमें काकभुशुण्डि-गरुड संवाद प्रमुख माना जाता है, काकभुशुण्डि एक काक है, एक कौआ है जो अनेक वर्षों, अनेक वर्णों-वर्गों के प्राणियों को नित्य-प्रति राम-कथा सुनाते थे, सात कांडों में रचित इस ग्रन्थ में बालकांड के आरम्भ में राम जन्म से पूर्व की वह कथा है जो हमारे लिए आश्चर्य का विषय है, मनु-शतरूपा के तप और वरदान, पृथ्वी और देवताओं की करुण पुकार, राम के अवतार की कथा, भगवान के निर्गुण-सगुण रूप का विस्तृत वर्णन आदि मिलते हैं, तदोपरान्त अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड में राम के जीवन से जुडे अनेक प्रसंगों का अत्यंत विस्तार के साथ बखान हुआ है। राम-रावण युद्ध के समय मंदोदरी का राम के अवतार लेने का हेतु बताना, पति को युद्ध करने से रोकना ध्यान देने योग्य प्रसंग है। उत्तरकांड में राम का अयोध्या लौटने के पश्चात् काकभुशुण्डि का राम-महिमा बखान, उनके पूर्वजन्म की कथा, गरुड जी के सात प्रश्न, काकभुशुण्डि के उत्तर, रामायण के महात्म्य, तुलसी-विनय, फलस्तुति से समाप्त होता है। समग्र रूप से कहा जाए तो इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर अन्त तक का अध्ययन समस्याओं के समाधान रूप में व्यक्त है।

4. काकभुशुण्डि: एक परिचय

एक कौआ, जिनको भगवान का वरदान प्राप्त था कि कल्प के अन्त तक उनका अन्त नहीं होगा, उनके राम कथा के बखान की रीति इतनी विशिष्ट थी कि उससे मनुष्य सीख प्राप्त करते हैं और साथ-साथ, सृष्टि रहस्य की अनेक बातों से अवगत होते हैं।

एक बार पार्वती जी ने शिव जी से राम-कथा सुनने की इच्छा व्यक्त की तो वे उन्हें एकान्त में ले गए और राम-कथा विस्तार से सुनाने लगे। वहीं एक पेड पर बैठे एक काक ने उस कथा को सुन लिया और उसे राम के सभी रहस्यों का ज्ञान हो गया। वही कौआ काकभुशुण्डि के रूप में जन्मा। वह राम-भक्ति में रम गया और नित्य प्रति राम कथा का वाचन करने लगा, जिसे सुनने के लिए दूर-दूर से ऋषि-मुनि आते थे। उनके वाचन में एक आकर्षण था जिसके कारण एक बार महादेव स्वयं राम कथा सुनने हंस के रूप में आ गए, कथा सुनकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने उन्हें 'इच्छा मृत्यु' का वरदान दिया, ताकि वे युगों-युगों तक राम-कथा का वाचन करते रहें।

ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म अयोध्या में श्रीराम के जन्म से एक कल्प पहले, एक शूद्र जाति में हुआ था। वे महादेव के अनन्य भक्त थे और इस का उन्हें अभिमान भी था, इस कारण वे अन्य देवताओं की निन्दा करते रहते थे। एक बार वे उज्जैन गए और एक ब्राह्मण की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने लगे। वह ब्राह्मण भी महादेव के अनन्य भक्त थे परन्तु भूलकर भी नारायण की निन्दा नहीं करते थे। एक बार उस काक ने नारायण की तुलना महादेव से करते हुए हरि की निन्दा की जिसे सुनकर महादेव क्रुध हो गए और उन्होंने शाप दिया कि वे एक हज़ार अधम योनियों में जन्म लेंगे और भटकते रहेंगे। महादेव का शाप सुनकर ब्राह्मण विचलित हो गए और उसे मुक्त करने की प्रार्थना की, पर महादेव ने कहा कि शाप निष्फल तो नहीं हो सकता पर निश्चित रूप से उनको एक हजार वर्ष जन्म लेने होंगे और आशीर्वाद देते हैं कि मृत्यु के समय का कष्ट उन्हें नहीं होगा, सभी जन्मों की बातें उन्हें याद रहेंगी और उसका ज्ञान कभी क्षीण नहीं होगा और अन्तिम जन्म में श्रीराम की अनन्य भक्ति प्राप्त होगी। उसी के परिणाम स्वरूप उनका पहला जन्म सर्प योनि में हुआ, हजारवाँ जन्म ब्राह्मण के रूप में हुआ। उस जन्म में आत्म ज्ञान पाने के लिए वे लोमश ऋषि के पास गए। जब वे ज्ञान की बातें बताते थे तो काक बात-बात पर ऋषि को टोकने लगते थे, इससे रुष्ट होकर ऋषि ने कहा – 'रे मूर्ख, तू कौए की भाँति काँव-काँव क्यों करता है, तू मनुष्य होने के योग्य नहीं है, तू कौए का ही जीवन व्यतीत कर', उनके शापवश वे फिर काक बन गए। तब लोमश महर्षि व्यथित हो गए तो काक ने कहा - 'आप दुःखी न हो, आपका शाप भी मेरे लिए वरदान स्वरूप है, इस रूप में भी मेरा भला ही होगा'। यह कहकर काक ने ऋषि को राम कथा सुनाई। कथा सुनकर प्रसन्न ऋषि से 'राम मन्त्र' प्राप्त किया। इस कारण उनको अपने काक रूप से प्रेम हो गया और वे राम कथा का वाचन करने लगे। हिन्दू धर्म में काकभुशुण्डि सबसे अधिक आयु वाले प्राणी माने जाते हैं।

काकभुशुण्डि के अमृत-वचन

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहग नायक गरुड़॥
बालकांड120(ख)

माँ पार्वती जब शिव जी से राम-कथा सुनने की इच्छा व्यक्त करती हैं तो शिव जी कहते हैं कि निर्मल रामचरितमानस की वह मंगलमयी कथा सुनो जिसे काकभुशुण्डि ने विस्तार से कहा और पक्षियों के राजा गरुड़ जी ने सुना था॥

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

बालकांड 121, चौ. 3-4

जब-जब धर्म का ह्रास होता है और नीच अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं, उनके अन्याय से ब्राह्मण, गौ, देवता और पृथ्वी कष्ट पाते हैं, तब-तब कृपानिधान प्रभु भाँति-भाँति के शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं। असुरों को मारकर, देवताओं को स्थापित करते हैं, वेदों की रक्षा करते हैं और जगत में अपना निर्मल यश फैलाते हैं। श्रीरामचन्द्रजी के अवतार का यही कारण है।

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें । किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥

बालकांड 22, चौ. 1

ब्रह्म के दो स्वरूप हैं - निर्गुण और सगुण। जब प्रश्न यह आता है कि इस में से किस रूप को महत्त्व दिया जाना चाहिए? तब तुलसीदास कहते हैं कि ब्रह्म अकथनीय, अथाह, अनादि और अनुपम है, परन्तु वे नाम को इन दोनों से बड़ा मानते हैं, जिस के बल से दोनों वश में आ जाते हैं ॥१॥

प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एकु दारुगत देखिअ एकू । पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी । सत चेतन घन आनँद रासी ॥

बालकांड 22, चौ. 2-3

निर्गुण और सगुण दोनों प्रकार के ब्रह्म का ज्ञान अग्नि के समान है। निर्गुण अप्रकट अग्नि के समान है जो काठ के अंदर है, जो दिखता नहीं और सगुण प्रकट अग्नि के समान है जो प्रत्यक्ष दिखता है। तत्त्वत: दोनों एक ही हैं, प्रकट-अप्रकट के भेद से वे भिन्न मालूम होते हैं। वे जानने में बड़े कठिन हैं, परन्तु नाम से दोनों सुगम हो जाते हैं। ब्रह्म व्यापक है, एक है, अविनाशी है, सत्ता, चैतन्य और आनन्द की घनराशि है। इस कारण शिवजी ने अपने हृदय में 'राम' नाम को ग्रहण किया। राम के चरण कमल ब्रह्मा जी और शिव जी के द्वारा वंदित हैं।

मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल बंदित अज संकर ॥

उत्तरकांड 34, चौ. 4

मानव के मन में सदा एक प्रश्न कुलबुलाता रहता है कि, ब्रह्म को कैसे पाया जा सकता है? इसके लिए कहा गया है कि,

ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजें । द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥
कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥

सत्य युग में ध्यान से, त्रेता युग में यज्ञ से और द्वापर में पूजन से भगवान प्रसन्न होते हैं, परंतु कलियुग पाप की खान है, ध्यान, यज्ञ और पूजन बात से नहीं बनती। 'राम नाम अवलंबन एकू' – कहकर उसका स्मरण करने को कहा है।

भगवान कहीं भी, कभी भी अपने भक्तों पर कृपा करने के लिए उपस्थित हो जाते हैं, कब कैसे अपने शत्रु का नाश करते हैं, इसका पता किसी को भी नहीं हो पाता, परन्तु प्रकृति में कुछ ऐसी घटनाएँ होने लगती हैं जिसे देख कर व्यक्ति सहज ही भयभीत हो जाता है, इसका एक उदाहरण हम लंका कांड में देख सकते हैं -

कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा ॥
सोचहिं सब निज हृदय मझारी । असगुन भयउ भयंकर भारी ॥

लंकाकांड.13, चौ. 1

न भूकम्प हुआ, न बहुत जोर की हवा चली, न कोई अस्त्र-शस्त्र ही नेत्रों से दिखे, पर बड़ा भयङ्कर अपशकुन हुआ। राम रावण युद्ध के समय जब सभी उपाय विफल हो रहे थे तब एक शकुन ऐसा हुआ जिससे रावण का मुकुट और मंदोदरी के कर्णफूल कट कर गिर गए, तब मंदोदरी अपने पति रावण को हर तरह से समझाने का प्रयास करती हुए कहती है -

बिस्वरूप रघुबंस मनि करहु बचन बिस्वासु ।
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥

लंकाकांड.14

'मेरे वचनों पर विश्वास कीजिये - रघुकुल शिरोमणि श्रीरामचन्द्र जी विश्वरूप हैं - वेद इन के अंग-अंग में लोकों की कल्पना करते हैं।

पद पाताल सीस अज धामा। अपर लोक अँग अँग बिश्रामा।
भृकुटि बिलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच घन माला।

लंकाकांड.14, चौ. 1

पाताल इन के चरण हैं, ब्रह्म लोक सिर है, अन्य लोक अन्य भिन्न-भिन्न अङ्ग हैं। भयङ्कर काल इन की भृकुटि संचाल है, सूर्य नेत्र है, बादलों का समूह बाल हैं,

जासु घ्रान अस्विनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपारा।

श्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी।

लंकाकांड.14, चौ. 2

अश्विनीकुमार इन की नासिका है, रात और दिन इन के अपार निमेष और खोलना है। दसों दिशाएँ कान हैं, वेद ऐसा कहते हैं। वायु श्वास है और वेद इन की अपनी वाणी है।

अधर लोभ जम दसन कराला । माया हास बाहु दिगपाला

आनन अनल अंबुपति जीहा । उतपति पालन प्रलय समीहा।।

लंकाकांड.14, चौ. 3

लोभ अधर हैं, यमराज भयानक दाँत हैं, माया हँसी है, दिक्पाल भुजाएँ हैं अग्नि मुख है, वरुण जीभ है, उत्पत्ति, पालन और प्रलय इन की चेष्टा, क्रियाएँ हैं।

रोम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नस जारा ॥

उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु का बहु कलपना ॥

लंकाकांड.14, चौ. 4

अठारह प्रकार की असंख्य वनस्पतियाँ इनकी रोमावली हैं, पर्वत अस्थियाँ, नदियाँ नसों का जाल, समुद्र पेट और नरक इन के नीचे की इन्द्रियाँ हैं। इस प्रकार प्रभु विश्वमय हैं।

अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।

मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ॥ १५ (क)।

शिव जिन का अहंकार है, ब्रह्मा बुद्धि है, चन्द्रमा मन है और विष्णु ही चित्त है। उन्हीं चराचर रूप भगवान् श्रीराम जी ने मनुष्य रूप में निवास किया है ॥ सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिबिध ताप भव भय दावनी ॥

उत्तर काण्ड दो.14 ख, चौ.1

काकभुशुण्डि गरुड़जी को राम कथा का बखान करते हुए, उसे पवित्र करनेवाली, दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का नाश करने वाली बताते हैं और कहते हैं कि निरञ्जन, मायारहित, अनन्त राम की भक्ति से मनुष्य परम धाम पा सकते हैं।

उत्तरकांड में स्वयं राम कहते हैं – 'बड़े भाग मानुष तनु पावा', अर्थात् बड़े भाग्य से मनुष्य शरीर मिलता है, इस शरीर से वह अनेक अच्छे बुरे कर्म करता है, माया की प्रेरणा से वह इधर-उधर भटकता रहता है, इस भवसागर से तरने के लिए मेरी कृपा का होना आवश्यक है । यह अविनाशी जीव - अण्डज, स्वेदज, जरायुज और उद्भिज्ज, चार खानों और चौरासी लाख योनियों में चक्कर लगाता रहता है। (दोहा 43, चौ. 2)

जब पार्वती शंकित होकर शिवजी से काकभुशुण्डि के जन्म, वैराग्य, ज्ञान-विज्ञान में दृढ़ता, कौए का शरीर किस कारण पाया, काक रूप में श्रीराम की दुर्लभ भक्ति कैसे पाया, आदि प्रश्न करती हैं-

बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह ।

बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥

उत्तरकांड दो. 53

नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सरीर ॥

उत्तरकांड दो. 54

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग कहँ पावा।।

उत्तरकांड दो. 54, चौ. 1

वे यह भी पूछती हैं कि,

गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । हरि सेवक अति निकट निवासी ॥

तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ॥

उत्तरकांड 54, चौ. 2

गरुड़जी तो महान् ज्ञानी, सद्गुणों की राशि, श्री हरि के सेवक और उन के अत्यन्त निकट रहनेवाले हैं। उन्होंने मुनियों के समूह को छोड़कर, कौए से

जाकर हरि कथा किस कारण सुनी? काकभुशुण्डि और गरुड़ इन दोनों हरि भक्तों की बातचीत किस प्रकार हुई? तब शिव-पार्वती को भव से छुड़ानेवाले वे प्रसंग सुनाते हैं, जब पार्वती जी का पहला अवतार दक्ष के घर हुआ था, तब उनका नाम सती था, दक्ष के यज्ञ में उनका अपमान, क्रोध से उनका प्राण त्यागना, शिव जी के सेवकों का यज्ञ विध्वंस करना, सती के वियोग में शिव जी का दुखी होना, विरक्त भाव से सुन्दर वन, पर्वत, नदी और तालाबों को देखते फिरना, आदि बताते हैं।

गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी। नील सैल एक सुंदर भूरी ॥
तासु कनकमय सिखर सुहाए। चारि चारु मोरे मन भाए ॥
उत्तर काण्ड 55 (ख), चौ. 4

चलते-चलते जब वे सुमेरु पर्वत की उत्तर दिशा में पहुँचे, वहाँ एक सुन्दर नील पर्वत को देखा, जिनके चार स्वर्णमय शिखर उन को भा गए। उन पर बरगद, पीपल, पाकर और आम के विशाल वृक्ष थे, एक सुन्दर तालाब थी जिस की मणियों की सीढ़ियाँ देखकर उनका मन मोहित हो गया, उसका शीतल, निर्मल और मीठा जल, रंग-बिरंगे खिले कमल, मधुर स्वर में बोलते हंस और सुन्दर गुंजार करते भौंरे उनको अच्छे लगे।

तेहिं गिरि रुचिर बसइ खग सोई। तासु नास कल्पांत न होई ॥
माया कृत गुन दोष अनेका। मोह मनोज आदि अबिबेका ॥
उत्तरकांड 56, चौ.1

उस सुन्दर पर्वत पर वही पक्षी काकभुशुण्डि बसता था जिस का नाश कल्प के अन्त में भी नहीं होता। जगत में निहित माया रचित गुण-दोष, मोह, काम आदि अविवेक, उस पर्वत के पास नहीं फटकते थे, वहाँ काक हरि को भजता था, जिसका बखान करना कठिन है।

पीपर तरु तर ध्यान सो धरई। जाप जग्य पाकरि तर करई।
आँब छाँह कर मानस पूजा। तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥
उत्तरकांड 56, चौ.3

वह पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान धरता था, पाकर के नीचे जपयज्ञ करता था, आम की छाया में मानसिक पूजा करता था, श्रीहरि के भजन को छोड़कर उसे दूसरा कोई काम नहीं था।

बर तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥
राम चरित बिचित्र बिधि नाना। प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
उत्तरकांड 56, चौ.4

बरगद के नीचे वह श्रीहरि की कथाओं के प्रसंग कहता था, प्रेम सहित और आदर पूर्वक उनका गान करता था। पक्षी आकर कथा सुनते थे। एक दिन निर्मल बुद्धिवाले हंस उस रामचरित्र को सुन रहे थे, शिवजी के मन में उस दृश्य को देखकर विशेष आनन्द हुआ और उन्होंने हंस-शरीर धारण कर कुछ समय वहाँ निवास किया और श्रीरघुनाथजी के गुणों को सुनकर फिर कैलास लौट गए। पक्षिकुल के ध्वजा गरुड़जी उस काक के पास क्यों गए, इस के पीछे की कहानी यह है कि,

जब रघुनाथ कीन्हि रन क्रीड़ा। समुझत चरित होति मोहि ब्रीड़ा ॥
इंद्रजीत कर आपु बँधायो। तब नारद मुनि गरुड़ पठायो॥
उत्तरकांड 57, चौ.2

श्रीरघुनाथ जी ने रणलीला की और मेघनाद के हाथों अपने को बँधा लिया-तब नारद मुनि ने गरुड़ को भेजा ॥ २॥

बंधन काटि गयो उरगादा। उपजा हृदयं प्रचंड बिषादा ॥
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती। करत बिचार उरग आराती ॥
उत्तरकांड 57, चौ. 3

गरुड़जी ने बन्धन काट लिया पर उन के हृदय में विषाद हुआ, उनको यह समझ में नहीं आया कि भवसागर से तारने वाले राम नागपाश में क्यों बँध गए? उनको प्रभु के प्रभाव को देखने की इच्छा हुई -

नाना भाँति मनहि समुझावा। प्रगट न ग्यान हृदय भ्रम छावा ॥
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई। भयउ मोहबस तुम्हरिहिं नाई ॥
उत्तरकांड 58, चौ. 1

अपने मन को समझाया, समझ में नहीं आया, हृदय में भ्रम हुआ, सन्देह हुआ, दुःख हुआ, मन में कुतर्क बढ़ा तो -

ब्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं। उत्तरकांड 58, चौ.2

व्याकुल होकर वे देवर्षि नारदजी के पास गये और मन के सन्देह को व्यक्त किया तो उन्होंने श्रीराम की माया को बलवती बताया और यह भी बताया कि मनुष्य बडी सरलता से इसके वशीभूत हो जाता है। ब्रह्माजी के पास जाने को सुझाव दिया, जब पक्षिराज गरुड़ ब्रह्माजी के पास गये तो उन्होंने उनके प्रताप को समझकर बताया और कहा कि इस संसार में जो भी ज्ञानी, तपस्वी, शूरवीर, कवि, विद्वान् हैं, वे भी लोभ के वश होते हैं। श्री के मद से उनकी चाल टेढ़ी होती है, प्रभुता के कारण वे बहरे हो जाते हैं, रज, तम गुणों से प्रेरित होते हैं, मत्सर से कलंकित होते हैं, भगवान राम उनका उद्धार करते हैं। उन्होंने यह स्पष्ट करते हुए कहा कि व्यक्ति मात्र योग, तप, वैराग्य से राम को पा नहीं सकते, उसके लिए सत्संग चाहिए। उत्तर दिशा की ओर, सुंदर नील पर्वत पर काकभुशुण्डि के वास की बात कहकर उनसे मिलने को कहते हैं। काकभुशुण्डि अनेक चरित्रों का बखान करते हुए उस चरित्र का भी बखान करते हैं, जब वे बालक राम के हाथों पुआ लेकर भागते हैं तो, वे जहाँ-जहाँ तक गए, वहाँ-वहाँ तक राम को दो अंगुल की दूरी पर पाया।

जिमि जिमि दूरि उडाउँ अकासा। तहँ भुज हरि देखउँ निज पासा॥

उत्तरकांड 58, चौ.4

ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उड़ात।

जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात॥

उत्तरकांड 59 (क)

सप्ताबरन भेद करि जहाँ लगें गति मोरि।

गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भयउँ बहोरि॥

उत्तरकांड 59 (ख)

सातों आवरणों को भेदकर जहाँ तक उनकी गति थी वहाँ तक वे गये, पर वहाँ भी प्रभु की भुजा को अपने पीछे देखकर वे व्याकुल हो गये।

मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ। पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ॥

मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं। बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं॥

उत्तरकांड 59, चौ. 1

उन्होंने भयभीत होकर आँखें मूद लीं, आँखें खोलकर देखा तो अपने को अवधपुरी में पाया। उन्हें देखकर श्रीरामजी मुस्कुराने लगे तो काकभुशुण्डि उन के मुख में चले गये।

उदर माझ सुनु अंडज राया। देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया॥

अति बिचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका॥

उत्तरकांड 59, चौ. 2

उन के पेट में अनेकों विचित्र ब्रह्माण्डों के समूह देखे, जिनकी रचना एक से बढ़कर एक थी। अद्भुत सृष्टि देखी, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, जो कल्पना से परे था।

कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। अगनित उडगन रबि रजनीसा॥

अगनित लोकपाल जम काला। अगनित भूधर भूमि बिसाला॥

सागर सरि सर बिपिन अपारा। नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा॥

सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर। चारि प्रकार जीव सचराचर॥

उत्तरकांड 59, चौ. 3, 4

करोड़ों ब्रह्माजी, शिवजी, अनगिनत तारागण, सूर्य, चन्द्रमा, अनगिनत लोकपाल, यम, काल, अनगिनत विशाल पर्वत, भूमि, असंख्य समुद्र, नदी, तालाब, वन, देवता, मुनि, सिद्ध, नाग, मनुष्य, किन्नर तथा चारों प्रकार के जड़ और चेतन जीव देखे।

एक एक ब्रह्मांड महुँ रहउँ बरष सत एक।

एहि बिधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक॥ उत्तरकांड 80 (ख)

काकभुशुण्डि एक-एक ब्रह्माण्ड में एक-एक सौ वर्ष तक देखते-फिरते रहे।

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता। भिन्न बिष्नु सिव मनु दिसित्राता॥

नर गंधर्ब भूत बेताला। किंनर निसिचर पसु खग ब्याला॥

देव दनुज गन नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहि भाँती॥

महि सरि सागर सर गिरि नाना। सब प्रपंच तहँ आनइ आना॥

उत्तरकांड 80, चौ. 1, 2

प्रत्येक लोक में भिन्न-भिन्न ब्रह्मा, भिन्न-भिन्न विष्णु, शिव, मनु, दिक्पाल, मनुष्य, गन्धर्व, भूत, वैताल, किन्नर, राक्षस, पशु, पक्षी, सर्प, नाना जाति के देवता, दैत्यगण, दूसरे ही प्रकार के जीव देखे, अनेक पृथ्वी, नदी, समुद्र, तालाब, पर्वत देखे।

अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
उत्तरकांड 80, चौ. 3

प्रत्येक ब्रह्माण्ड में उन्होंने अपना रूप देखा, अनुपम वस्तुएँ देखीं, प्रत्येक भुवन में न्यारी अवधपुरी, भिन्न सरयू जी और भिन्न प्रकार के नर-नारी देखे।

दसरथ कौसल्या सुनु ताता । बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ।
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा। देखउँ बालबिनोद अपारा॥
उत्तरकांड 80, चौ. 4

प्रति ब्रह्मांड में राम, दशरथजी, कौसल्याजी, भरतजी आदि भाई भी भिन्न-भिन्न रूपों के थे। प्रत्येक ब्रह्माण्ड में रामावतार और उनकी अपार बाल लीलाएँ देखते रहे।

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका। बीते मनहुँ कल्प सत एका ॥
फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ । तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ॥
उत्तरकांड 81, चौ. 1

अनेक ब्रह्माण्डों में भटकते हए, उनको मानो एक सौ कल्प बीत गये। फिरते-फिरते वे अपने आश्रम में आये और कुछ काल वहाँ रहकर, अवधपुरी में प्रभु के जन्म की सुनकर दौड़े चले गए।

देखि कृपाल बिकल मोहि बिहँसे तब रघुबीर ।
बिहँसतहीं मुख बाहेर आयउँ सुनु मतिधीर ॥
उत्तरकांड 82 (क)

काकभुशुण्डि कहते हैं कि उन्हें व्याकुल देखकर जब कृपालु श्री रघुवीर हँस दिये, तब वे उनके मुँह से बाहर आ गये।

काकभसुंडि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥
उत्तरकांड 83 (ख)

काकभुशुण्डि को अणिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ, दूसरी ऋद्धियाँ तथा सम्पूर्ण सुखों की खान मोक्ष, ज्ञान, विवेक, वैराग्य, तत्त्वज्ञान और अनेकों गुण माँगने को कहकर प्रभु ने अपनी भक्ति देने की बात नहीं कही।

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परम सुखदायक ॥
सुनु बायस तैं सहज सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥
उत्तरकांड 84, चौ. 1

'एवमस्तु' कहकर रघुवंश के स्वामी ने आशीर्वाद दिया।

दो० माया संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥
उत्तरकांड 85 (क)

राम काकभुशुण्डि को वरदान देते हैं कि माया से उत्पन्न भ्रम अब उन्हें नहीं व्यापेंगा। राम को अनादि, अजन्मा, अगुण, प्रकृति के गुणों से रहित और गुणातीत, दिव्य गुणों की खान ब्रह्म जानकर, शरीर, वचन और मन से उनके चरणों में अटल प्रेम रखने को कहा।

निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही ॥
उत्तरकांड 85, चौ. 1

प्रभु ने चराचर जीव को उनकी माया से उत्पन्न बताकर अपना 'निज सिद्धान्त' बताया और उसे मन में धारण करने और सब तजकर उनका भजन करने को कहा।

तब ते मोहि न ब्यापी माया । जब ते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा ॥
उत्तरकांड 88, चौ. 2

काकभुशुण्डि कहते हैं कि जब से श्रीरघुनाथजी ने उनको अपनाया, तब से उन्हें माया ने कभी नहीं व्यापा। श्रीहरि की माया ने उन्हें जैसे नचाया, वह सब गुप्त चरित्र उन्होंने कह सुनाया।

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा ॥

बाम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥

उत्तरकांड 84, चौ. 3

पक्षिराज गरुड़ को अपना निजी अनुभव बताते हुए काकभुशुण्डि कहते हैं कि भगवान के भजन बिना क्लेश दूर नहीं होता, उनके कृपा के बिना श्रीरामजी की प्रभुता नहीं जानी जाती -

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए।।

उत्तरकांड 92, चौ. 1

सुन्दर वचन सुनकर प्रेमानन्द के आँसू आ गये, उनका मन अत्यन्त हर्षित हो गया। उन्होंने श्रीरघुनाथ जी के प्रताप को हृदय में धारण कर लिया।

पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा। जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥

उत्तरकांड 92, चौ. 2

गरुड़जी ने बार-बार काकभुशुण्डि जी के चरणों पर सिर नवाया और उन्हें श्रीरामजी के ही समान जानकर प्रेम बढ़ाया। गरुड जी काकभुशुण्डि से पूछते हैं कि उन्होंने काक शरीर किस कारण धारण किया इसे विस्तार से बताएँ।

कारन कवन देह यह पाई। तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥

राम चरित सर सुंदर स्वामी। पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥

नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महा प्रलयहुँ नास तव नाहीं।।

उत्तरकांड 93, चौ. 2, 3

गरुड जी कहते हैं कि यह भी सुनने में आया है कि महाप्रलय में भी आपका नाश नहीं होता, भयंकर काल आप को नहीं व्यापता, इसका क्या कारण है? बताइये, यह ज्ञान का प्रभाव है या योग का बल है ?

प्रथम जन्म के चरित अब कहउँ सुनहु बिहगेस।

उत्तरकांड 96 (क)

काकभुशुण्डि अपने प्रथम जन्म में अयोध्यापुरी में शूद्र परिवार में जन्मने की कथा बताते हैं और कहते हैं कि मन, वचन और कर्म से वे शिवजी के सेवक थे और दूसरे देवताओं की निन्दा करने वाले अभिमानी बन गए। धन के मद से मतवाले, बहुत ही बकवादी और उग्रबुद्धिवाले हो गए। कलियुग के सभी अवगुण जो सभी नर-नारियों में व्याप्त थे, वह भी बताया।

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी । करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी।।

त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं। प्रभुहि समर्पि कर्म भव ॥

उत्तरकांड 102, चौ. 1

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ॥

उत्तरकांड 102, चौ. 3

कलियुग में न तो योग है, न यज्ञ है, न ज्ञान। श्रीरामजी का गुणगान ही एक मात्र आधार है।

गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु लाग।

रघुपति जस गावत फिरउँ छन छन नव अनुराग ॥

उत्तरकांड 110 (क)

सुमेरु पर्वत के शिखर पर बड़ की छाया में लोमश मुनि के पास जाकर उन्होंने निर्गुण-सगुण ब्रह्म की आराधना की प्रक्रिया बताने को कहा। अनेक तरह से उन्होंने उसे समझाने का प्रयास किया पर वे तर्क-वितर्क करते रहते थे, जिसे सुनकर मुनि ने उन्हें चाण्डाल पक्षी हो जाने का शाप दिया, जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि वे राम-भक्त हैं, तब उन्होंने उन्हें 'राममन्त्र' दिया । श्रीराम जी के ध्यान की विधि बतलायी और रामचरितमानस का वर्णन किया ।

सदा राम होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान ।

कामरूप इच्छामरन ग्यान बिराग निधान ॥

उत्तरकांड 113 (क)

जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्रीभगवंत।
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत॥
उत्तरकांड 113 (ख)

यह वरदान भी प्राप्त हुआ कि वे भगवान को स्मरण करते हुए वे जिस आश्रम में निवास करेंगे वहाँ एक योजन अर्थात् चार कोस तक अविद्या, माया-मोह नहीं व्यापेगी। काल, कर्म, गुण, दोष और स्वभाव से उत्पन्न कुछ भी दुःख उनको कभी नहीं व्यापा। श्रीराम जी के रहस्य - चरित्र और गुण को उन्होंने प्राप्त किया।

हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ। प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पायउँ॥1॥
इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा। बीते कलप सात अरु बीसा॥
उत्तरकांड 113, चौ. 5

प्रभु श्रीरामजी की कृपा से दुर्लभ वर पाकर उनको सत्ताईस कल्प बीत गये।

तातें यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह।
निज प्रभु दरसन पायउँ गए सकल संदेह॥
उत्तरकांड 114 (क)

उनको अपने इस काक शरीर से इसीलिये प्रेम था क्योंकि इस में उन्हें श्रीरामजी के चरणों का प्रेम प्राप्त हुआ।

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप।
उत्तरकांड 114 (ख)

महर्षि लोमश का शाप उनके लिए वरदान बन गया| उन्होंने 'सोऽहमस्मि' - वह ब्रह्म मैं हूँ के भेद को जाना, यह भी जाना कि मनुष्य-शरीर के समान कोई शरीर नहीं है जाना, चर-अचर सभी जीव जिसकी याचना करते हैं, वह मनुष्य-शरीर स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है तथा कल्याणकारी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को देनेवाला है।

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः॥ २॥

5. संदर्भ ग्रन्थ

1. रामचरितमानस – तुलसीदास
2. पञ्चभूत - विकिपीडिया (wikipedia.org)
3. पंचमहाभूत - Search (bing.com)
4. https://youtu.be/s4Xd8MiVm0U?si=QCtIsm1rnfigsj_x
5. https://youtu.be/0fHZlUfx77M?si=1vkK3teJBK-3s7Nw
6. https://youtu.be/s4Xd8MiVm0U?si=QCtIsm1rnfigsj_x

मानस में विवाह

विनीता मिश्रा
(mishravinita07@gmail.com)

एक प्रश्न मानस के सम्बन्ध में बड़ा विचित्र है! "शंकर भगवान विवाह करना नहीं चाहते तो उनका विवाह करवाने के लिए सब पीछे पड़े हैं, भगवान तक उनसे आग्रह करते हैं. दूसरी ओर नारद हैं, वे विवाह करना चाहते हैं, भगवान से विनती कर रहे हैं और भगवान उनका विवाह होने नहीं देते. दोनों ही वैरागी हैं. एक का विवाह हो जाता है, एक का रह जाता है." क्यों भला?

मानस की सम्पूर्ण कथा ही काम और अहंकार के दोषों से मुक्त होने का मार्ग दिखाने वाली कथा है. विवाह क्या है? इसके आगे-पीछे, भीतर-बाहर, काम और अहंकार की क्या भूमिका है? इसे ही हम आज समझने का प्रयास करेंगे.

शिव पार्वती विवाह प्रसंग:- इस विवाह में रूप सौन्दर्य गौण है, प्रेम की प्रधानता है,काम का समावेश ही नहीं है. विवेक है, श्रद्धा है, विश्वास है, जगत कल्याण की भावना है. इस विवाह की परिणिति सम्पूर्णता को प्राप्त होती है और संसार को अर्धनारीश्वर का स्वरूप मिलता है.

नारद प्रसंग:- रूप सौन्दर्य का आकर्षण है, विश्वमोहिनी का सौन्दर्य और उसे वरण करने वाला व्यक्ति त्रिलोक का स्वामी होगा, इन तथ्यों ने नारद में विवाह की इच्छा पैदा की है. अर्थात् काम भी है, कामना भी और लोभ भी. लोभ की प्रधानता के कारण मोह पैदा होता है और मोह से क्रोध की उत्पत्ति होती है. क्रोध से बुद्धि का क्षरण होता है. विवेक नष्ट होता है. और नारद अपने ईष्ट को ही शाप दे देते हैं.

राम सीता विवाह प्रसंग:- इस विवाह में सौन्दर्य की पराकाष्ठा है, राम सीता दोनों में सौन्दर्य की सीमा व्याप्त है ,इस सौन्दर्य के प्रति आकर्षण भी है और निष्काम प्रेम भी. कुल मर्यादा भी, बड़ों की आज्ञापालन और ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण भी. वंश, राज्य, परिवार, संसार सबके प्रति कर्त्तव्य बोध भी और निर्वहन भी. त्याग की पराकाष्ठा, जगत कल्याण के लिए दम्पति के रूप में पूर्ण त्याग कर सकने की सामर्थ्य भी.

मानस के अनुसार विवाह का वास्तविक स्वरूप: स्वार्थ नहीं, परमार्थ और केवल परमार्थ का मार्ग. वह भी कभी न मिटने वाले प्रेम की सम्पूर्णता के साथ.

यूँ तो बहुत संक्षिप्त रूप से बालकाण्ड में रावण और उसके द्वारा अपने दोनों भाइयों के विवाह का भी वर्णन किया गया है.

हर्षित भयउ नारि भलि पाई. पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई. 1.178. c4

और शूर्पणखा ने भी विवाह की इच्छा प्रकट की है.

किन्तु गोस्वामी जी ने विवाह के वर्णन में बड़ा ही सुन्दर निर्णय लिया है. उन्होंने किसी भी आसुरी प्रवृत्ति के व्यक्ति के विवाह का वर्णन किया ही नहीं. यह भी गूढ़ार्थ है विवाह के प्रसंगों का. आसुरी प्रवृत्ति का विवाह वर्णन के भी योग्य नहीं है. अतः विवाह में इस प्रकार की वृत्ति, प्रवृत्ति से दूर ही रहना चाहिए.

आज के इस विषय के लिए मैंने मानस से मुख्यतः तीन प्रसंग लिए हैं. शिव पार्वती प्रसंग, नारद प्रसंग और राम सीता विवाह प्रसंग.

विवाह की इच्छा और स्वयंवर का आयोजन

पार्वती और शंकर के विवाह में पार्वती की स्वयं की इच्छा ही सर्वोपरि है और किसी भी तरह के स्वयंवर आयोजन से मुक्त है. यह मानस में वर्णित प्रथम विवाह है. इस विवाह की पृष्ठभूमि है सती और शंकर का विछोह. राम के अवतार से पहले दो-दो विवाहों का बखान क्यों?

यह पृष्ठभूमि है हमारे हृदय में अवतरण लायक भूमि बनाने की जिसमें राम के चरित का अवतरण हो सके. राम का अवतरण हो सके. हमारी बुद्धि जो दक्षता और श्रेष्ठता के भाव से भरी हुई है. इसी कारण तर्क-वितर्क, शंका, संशय से घिरी रहती है. ऐसी बुद्धि को समाप्त कर एक ऐसी बुद्धि में विकसित करना है जो पार्वती है, जो स्वयं को दक्षसुता नहीं शैलसुता मानती है. शैल- पर्वत- जड़. यहाँ पर जड़ का अर्थ मूर्खता नहीं अज्ञानता है. जिसमें अपनी दक्षता का भाव नहीं होगा वही बुद्धि कुछ ग्रहण करने योग्य होती है. वही बुद्धि जानने सीखने योग्य होती है.

सती का पार्वती के रूप में जन्म लेना जिज्ञासा के शंकालुपने से छूटकर श्रद्धालुपने को प्राप्त करने की अवस्था है. श्रद्धा और विश्वास का मेल ही मानस में शिव पार्वती के विवाह का द्योतक है. इनके मेल के बिना कोई सिद्धजन भी अपने हृदय में ईश्वर का सम्पूर्ण स्वरूप जो सीताराम स्वरूप है, का दर्शन नहीं कर सकता. गोस्वामी जी ने मानस के आरम्भ में ही इसका उल्लेख कर दिया है

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ.
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्.

शिव सती प्रसंग: यह भी दम्पति हैं जिनके विवाह के विषय में गोस्वामी जी ने कहा है:

पञ्च कहें सिवँ सती बिबाही. पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही.

हालाँकि यह चौपाई सप्तर्षियों के द्वारा पार्वती की परीक्षा लेने हेतु है. जो शंकर के कहने से ही आये हैं. परन्तु शंकर को पार्वती के प्रेम, विश्वास और बुद्धि की परीक्षा की आवश्यकता क्यों है? यह भी समझने योग्य बात है. सती और शंकर का दाम्पत्य टूटा था शंका, दक्षता के भाव, अविश्वास, असत भाषण और छलपूर्ण व्यवहार के कारण.

सांसारिक भाव: पिता दक्ष की पुत्री दक्षसुता. जिसे अपने पिता के गुण दोष स्वाभाविक रूप से प्राप्त हैं. उसे अपनी दक्षता का बोध है. पिता की महत्ता को जानती है, महत्ता को समझना उसका स्वाभाव है इसलिए पति की महत्ता से भी अनभिज्ञ नहीं. ये उसे स्वयं के श्रेष्ठ होने के भाव से भर देता है. अर्थात् वह अहंकार से भर जाती है. यह अहंकार ही हर दोष विकार का मूल है. सती भी इसके चंगुल में फंस जाती है. प्रपंच, छल, अविश्वास, असत आदि का शिकार हो जाती हैं. यही दोष उनके दाम्पत्य के अंत का कारण बनते हैं. किसी भी वैवाहिक रिश्ते में दरार डालने के लिए ये तत्व पर्याप्त हैं.

अध्यात्मिक भाव: सती प्रतीक हैं उस जीवात्मा का जो अपनी बुद्धि पर निर्भर करती है. बुद्धि को दक्षता का भाव होता है. दक्षता पुष्ट होती है परीक्षण कर के. परीक्षण की सफलता उसके अहंकार को पुष्ट करती है. असफलता उसे आहत करती है. बुद्धि का स्वाभाविक गुण है जिज्ञासा. जिज्ञासा का आसरा है परमात्मा / गुरु. ऐसी जिज्ञासु बुद्धि शिष्य स्वरूप है. शिष्य का कर्त्तव्य है गुरु पर पूर्ण आस्था, विश्वास और समर्पण. इस सम्बन्ध में छल और झूठ का समावेश हो जाय तो गुरु शिष्य का सम्बन्ध समाप्त. जिज्ञासा आशंका बन गई तो बुद्धि का नाश. झूठ का सहारा बुद्धि को संतप्त कर देता है. उसका चैन छीन लेता है. जब तक बुद्धि को इस बात का अहसास होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है. और उसके पास पछताने के आलावा और कोई चारा नहीं होता. निरंतर पश्चाताप की अग्नि में जलकर ही ऐसी शंकालु बुद्धि समाप्त हो सकती है. पुनः निर्मल बुद्धि पाने के लिए जीव को बहुत कठिन तप करना पड़ता है. जब छल और असत्यता को पश्चाताप की अग्नि में भस्म किया जाता है तब जाकर जीव को शीतलता प्राप्त होती है. जब दक्षता का अहंकार मिटता है, दक्षता जब दग्ध होती है तब ही जीव को हिमालय का आश्रय अर्थात् शीतलता प्राप्त होती है. तब जाकर पता चलता है कि जीव को तो कोई ज्ञान ही नहीं है. वह तो निरा जड़ है. पहाड़ के समान. जो दक्षसुता थी वह हो जाती है पर्वत राज हिमालय की पुत्री पार्वती. यथा पिता तथा पुत्री. जीव स्वयं को जड़ मान ले तो समझिये उसका कल्याण हो गया. मायने ज्ञान की, मुक्ति की, अपने कल्याण की सबसे पहली सीढ़ी उसने पार कर ली. वह अहंकार से मुक्त हो गया. अब कल्याण ही कल्याण. अब शंकर से मिलना निश्चित है.

शिव पार्वती विवाह: माता पार्वती शंकर को अपना पति बनाने के लिए कठिन तप करने लगीं. और शंकर.... शंकर तो सती के वियोग में वैरागी हो गए, राम के नाम और गुणों की चर्चा सुनने में रम गए. जब राम ने स्वयं आकर उन्हें पार्वती के जन्म लेने की बात बताई और उनसे विवाह कर लेने का आग्रह किया तो अपने प्रभु की इच्छा मानकर उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और ऐसे निश्चिन्त हुए कि राम के ध्यान में मग्न होकर समाधि में चले गए. इतने में संसार को ताड़ना देने वाला असुर पैदा हो गया. उसके अत्याचार से जगत त्राहि त्राहि कर उठा. पता चला कि शंकर के वीर्य से उत्पन्न पुत्र ही इसका वध कर पायेगा. अब देवताओं को चिंता हुई कि भगवान शंकर तो समाधि में लीन हैं. वह भी सती के मरण से क्षुब्ध होकर, वैरागी भाव को लेकर. देवता; उन्हें अपनी रक्षा के अलावा दूसरी बात कहाँ सूझने वाली? उन्हें इतना धीरज भी कहाँ कि शम्भू के जागने की प्रतीक्षा कर लें! तो लग गए अपनी योजनाओं में. इंद्र देव ने कामदेव को भेजा, "जाओ और शंकर के मन को डिगाओ ताकि वे विवाह के लिए इच्छुक हों सकें". बस यहीं सारा रहस्य छुपा है विवाह का. यही काम इंद्रदेव ने नारद के साथ भी किया.

नारद के विवाह का प्रसंग

नारद के प्रसंग में ऐसा क्या है कि भगवान ने उन्हें विवाह करने से रोक दिया. नारद का मन भी प्रकृति के सान्निध्य में आकर स्थिर हुआ, समाधिस्थ हो गया. फिर इंद्र का सिंहासन डोला और फिर कामदेव भेजे गए कि जाओ और नारद का मन डिगाओ. कामदेव आये, सब प्रयास किये पर नारद का मन न डिगा सके. सबसे बढ़कर नारद को कामदेव पर क्रोध भी नही आया, उसे क्षमा कर दिया. न काम डिगा सका, न क्रोध उत्पन्न हुआ. पर वह पैदा हो गया जो इन सबका कारक है अर्थात अहंकार, अपनी उपलब्धि का अहंकार, अपनी विजय का अहंकार. इन्द्रियों पर ही विजय पाई और इन्द्रियों के स्वामी को ही बताने पहुँच गए

मुनि सुसीलता आपनि करनी. सुरपति सभाँ जाइं सब बरनी.

जैसे ही व्यक्ति के भीतर स्वयं के श्रेष्ठ होने का भाव आ जाए समझिये उसका पतन आरम्भ.

तब नारद गवने सिव पाहीं. जिता काम अहमिति मन माहीं.

यद्यपि शंकर ने उन्हें इस अहमिति अहम् भाव (उपलब्धि, प्रशंसा, विजय बोध, यश, कीर्ति आदि. हैं तो ये सब अहंकार के ही रिश्तेदार) से बचने को आगाह किया और कहा

बार बार बिनवऊँ मुनि तोही. जिमि यह कथा सुनायहु मोही.
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ. चलेहु प्रसंग दुराएहु तबहूँ.

अब भला नारद को शम्भू की यह सीख कहाँ सुहाने वाली थी? व्यक्ति जिसे सबसे अधिक चाहता हो, जिसे अपना सबसे प्रिय मानता हो उसके साथ ही अपनी उपलब्धि साझा न करे ये भी भला कोई बात हुई? अतः पहुँच गए भगवान विष्णु के पास, सारा प्रसंग अच्छे से बखान किया पर भगवान ने

क्या देखा कि अरे इनके मन में तो यह कौन सा अंकुर फूट चला है? यह तो इनका सर्वनाश कर देगा! इसको पनपने से पहले मैं उखाड़ फेकूँगा. आगे की कथा सबको पता है.

नारद ने ज्यों ही कन्या का हाथ देखा और उसका भाग्य विचार किया तो क्या पाया? पहले ही उसके रूप सौन्दर्य पर मोहित हो चुके थे अब यहाँ तो दिख रहा है कि यह सुंदरी जिसका वरण करेगी वह तीनों लोक का स्वामी होगा. अब अहंकार ने जीती हुई कामना को फिर पैदा कर दिया. कामना की प्रवृत्ति ने नारद जैसे ज्ञानी की बुद्धि हर ली. कन्या का स्वामी तो तीनों लोकों का स्वामी है ही. यह नारद न देख सके, न जान सके. क्योंकि उनके मन पर उस कामदेव ने कब्ज़ा कर लिया था जिसे वो जीत चुके थे. बस उसने अपना रूप बदल लिया था. अब अहंकार के कारण न केवल काम बल्कि लोभ (तीन लोक की सत्ता का लोभ) . और यह इच्छा पूरी न हो पाने के कारण अति क्रोध की अवस्था, ऐसी कि अपने प्रिय को ही शाप दे बैठे, अहंकार के छोटे से अंकुर ने ज़रा देर में काम, लोभ, मोह क्रोध सबका प्रपंच फैलाकर फंसा लिया.

पर उनके भगवान नारायण ने उन्हें बचा लिया. उन्हें विवाह नहीं करने दिया. अर्थात् जिस विवाह की इच्छा के मूल में आकर्षण, सौन्दर्य, लोभ आदि हो वह विवाह न आपका कल्याण करेगा न संसार का. नारद विश्वमोहिनी के रूप पर मोहित हो गए और जानते हुए भी कि तीनों लोकों के स्वामी उनके ही स्वामी हैं तब भी भगवान से उन्हीं का रूप मांग बैठे. जबकि पार्वती शंकर के भयंकर रूप को जानकर भी विवाह के निर्णय से विचलित नहीं हुई.

यहाँ हम देखते हैं कि सती ने सीता का वेश धरा तो क्या हुआ? और नारद ने भी तो वही किया. जो स्त्री रूप में सती ने किया, नारद ने पुरुष रूप होकर भगवान का रूप चाहा. जैसे सती से शंकर छूट गए शायद ऐसे ही नारद से उनके भगवान छूट जाते. हाँ अहंकार तो भगवान को छुड़वा ही देता पर दयालु, कृपालु भगवान ने नारद को इस गलती बचा लिया, उन्हें अपना रूप नहीं दिया. नारद भगवान के भक्त ही बने रहे. माता लक्ष्मी के पति नहीं. अर्थात् विवाह के पीछे सौदर्य के प्रति आकर्षण, कामवासना, लोभ, संपत्ति आदि कदापि नहीं होना चाहिए. प्रेम हो, समर्पण हो, त्याग और वैराग्य सा जीवन जीने का संकल्प भी हो तो क्या बात है!

इन दोनों विवाह प्रसंगों से हमें विवाह के सामजिक सार्थक कारण की सीख मिलती है और अध्यात्मिक रूप तो विलक्षण है ही. इसके पश्चात ही हम राम और सीता के आदर्श विवाह, सम्पूर्ण समर्पण, आदर्श प्रेम भाव, त्याग, वैराग्य, परोपकार, जन कल्याण, जगत उद्धार कितनी ही जिम्मेदारियों का पता चलता है और विवाह के सर्वोत्तम रूप के दर्शन होते हैं. यह हम सभी जानते हैं.

राम सीता विवाह

मानस का सर्वोत्तम प्रसंग, मानस की कथा का आधार, भगवान राम और भगवती शक्ति सीता का विवाह मनुष्य जीवन के लिए सर्वोत्तम, सार्थक, सबसे सुन्दर विवाह प्रसंग है. जिसका आरम्भ प्रथम दृष्टि के प्रेम से होता है.गुरु की इच्छा, संकल्प की पूर्णता, परिवार, कुल, समाज, राज्य, पालन पोषण, कर्त्तव्य, वचन पालन, जिम्मेदारी, शक्ति-सामर्थ्य, त्याग, वैराग्य, कल्याण, कृतज्ञता, मिलन विछोह, संतान, विश्वास, बंधन-मुक्ति, सब अपनी सम्पूर्णता के साथ मिलते हैं. राम सीता के विवाह और वैवाहिक जीवन में सबके ही जीवन का सार समाया हुआ है. उनके विवाह के साथ ही अन्य तीन भाइयों का विवाह जीवन के कितने ही चरणों को दर्शाता है. काम क्रोध लोभ मोह इन चार विकारों से परे हो जाता है तब उसके जीवन को राम सीता के विवाह का सुन्दर दर्शन होता है. और जीवन के चार आश्रमों में से अत्यंत सुन्दर किन्तु संघर्षपूर्ण आश्रम का आरंभ होता है. जीवन के चारों पुरुषार्थ को प्राप्त करने का मार्ग किस प्रकार एक दम्पति के रूप में सार्थक होता है यह भी समझने को मिलता है.

यदि मनुष्य इन चार पुरुषार्थ में से काम को सबसे पहले रखता है तो उसकी परिणिति क्रोध, लोभ और मोह में जाकर रुकती है और उसका सर्वनाश करती है. यदि जीवन का अर्थ वह दम्पति धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के क्रम में रखता है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है. अर्थात जीवन और संसार के हर द्वन्द, हर दुविधा से मुक्ति.

चारों भाइयों का विवाह:- यह विवाह मनुष्य जीवन की चारों सुन्दरतम अवस्थाओं:- जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय, उनकी चारों क्रियाएं क्रमशः यज्ञ, श्राद्ध्य, योग, ज्ञान. उनके सुन्दरतम स्वरूप: विश्व, तैजस, प्राज्ञ, ब्रह्म को दर्शाता है. जिसके आधार में धर्म अर्थ काम मोक्ष हैं.

हम सभी इस जगत में अर्थ धर्म काम मोक्ष के लिए अपने जीवन को लगाते हुए चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर या त्याग कर भगवान के चरणों में दासत्व भाव से बैठने लायक बन सकें. आत्मा और परमात्मा से शाश्वत सम्बन्ध बनाने के लिए प्रभु राम से याचना करते हुए अपने वक्तव्य को विराम देती हूँ. यह याचना प्रभु की ओर अनवरत पहुँचती रहे.

आदर्श जीवन की सरिता: रामायण

स्मिता लाधावाला
(smitnar@yahoo.com)

सनातन धर्म सीखाता है - हमें प्रभु से डरना नहीं हैं। प्रभु से डरना अर्थात् प्रभु से दूर जाना। हमें प्रभु तथा उनकी संतानो से प्रेम करना है। परमात्मा इसकी रीत भी समझाते हैं। राम-गाथा, राम-कथा या राम की व्यापकता Time-line है। वे सबके Time को Line पर ला देते हैं। मानव धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं हैं। एक बार भी यदि आपको निःस्वार्थ भावसे मानव समाजके लीए कुछ करने का विचार आए तो समझ लीजीये - आपकी विचार-धारा सही मार्ग पर है। आगे बढ़ीये । रामजी आप के साथ ही हैं। हृदय अयोध्या है और हृदयरूपी अवधपुरी में रामजी बीराजेंगे तभी यह जीवन सार्थक होगा।

1. प्रस्तावना

रावण बहुत बड़ा विद्वान है, शीवजी का परम भक्त हैं, तो भी सोनेकी लंकामे लोग राम-राज्य ही चाहते हैं। महाराज युधिष्ठीर सत्य के प्रतीक हैं, तब भी हम कहते हैं – ‘राम-राज्य' - युधिष्ठीर राज्य नहीं। इससे भी एक कदम आगे बढ़ें तो – ‘राम-राज्य’ न कि रघु-राज्य या दशरथ राज्य | रामचन्द्रजी तो Visionary है, युग दृष्टा हैं |

2. विस्तार

रामायण या श्रीरामचरितमानस के भिन्न-भिन्न पात्र, बिना उपदेश दीयें, हमें नीज धर्म पर चलना सीखाते हैं। रामायण एक जीवन शैली है| जैसे_ _ _

1. परिचय कैसे देना चाहिये

किष्किन्धाकाण्ड में दोहा 2 में रामजी अपना परिचय देते हुए कहते हैं ---

'कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु बचन मानि बन आए ||
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई ।।'

अर्थात् हम कोसलराज दशरथजीके पुत्र हैं और पिताका वचन मानकर वन आये हैं। राम-लक्ष्मण हमारे नाम हैं, हम दोनों भाई हैं। हमारे साथ सुन्दर सुकुमारी स्री थी ।

आज तो हमें परिचय देने भी नहीं आता है - उदाहरण के रूप में - हम किसी को फोन लगाते हैं तो सर्वप्रथम पूछते हैं – आप कौन बोल रहे हैं? साधारण सी बात है - आपने फोन लगाया है, तो पहले अपना परिचय दिजीये। सामने वाला व्यक्ति यदि पूछता है कौन बोल रहे हैं? हम जवाब देते हैं – स्मिता बोल रही हूँ। थोड़ा व्यवस्थित परिचय दिजीये। हो सकता है, सामने वाला एक से अधिक स्मिता को जानता हो । बनाइये स्मिता लाधावाला या स्मिता दवे।

अयोध्याकाण्ड दोहा 117 में सीताजी सुंदर परिचय देते हुए कहती हैं -

सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ||
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी । पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ।।'

देखिये, जानकी जी पहले देवर लक्ष्मणजी का परिचय देती हैं। बाद में शरमाकर इशारे से पति रामचन्द्रजी का परिचय देती हैं।

2. प्रात: उठना

बालकाण्ड दोहा 205 देखें -

“प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसु मागि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरषइ मन राजा ॥“

यहाँ पर श्रीरघुनाथजी प्रात:काल उठते हैं। **'Early to bed and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise’.** आज तो काम करने की पद्धति यह है कि रात को देर तक काम करते हैं तथा सुबह देर से उठते हैं। सुबह जल्दी उठकर काम शुरू करेंगें तो कुदरती प्रकाश, ताजी हवा का लाभ मीलेगा एवम् बिजली की बचत भी होगी। दूसरी बात - माता-पिता और गुरु को मस्तक नवाते हैं और आर्शीवाद प्राप्त करते हैं। चरण स्पर्श करें और बुजर्ग मस्तक पर हाथ रखते हैं तब उर्जाका चक्र पूर्ण होता है। बाद में रामजी नगर का काम करते हैं।

3. समय का सन्मान

समय का सन्मान भी रामजीसे सीखना चाहीये। रामजी को 14 वर्षका वनवास मीला था। एक दिन भी जल्दी अयोध्या लौटते तो पिता के वचनका

उल्लंघन होता; एक दिन भी देर से लौटते तो भरतजी आत्मसमर्पण कर देते। आज अक्सर कार्यक्रम का समय लिखते हैं- सुबह 10 बजे से; परंतु 12 बजे तक तो कार्यक्रम प्रारंभ भी नहीं होता है। समय का सन्मान किजीये, समय आपका सन्मान करेगा।

4. लोकतंत्र

लोकतंत्र के बीज तो रामजीने ही बो दीये थे। सुबह मंत्रीयोसे सलाह लेते थे कि हमें क्या करना चाहीये? लंका जाने के लीये पुल बनाने के पहले भी रामजी पूछते हैं हमें क्या करना चाहीये? विभीषण कहते हैं - समुद्र से प्रार्थना किजीये: यद्यपि लक्ष्मणको यह सुझाव नहीं जँचा, फीर भी, विभीषण की बात मानकर समुद्रसे प्रार्थना की। हमें यह संदेश है कि आवश्यकतानुसार सलाह लें, सुझाव की अवहेलना भी न करें।

उस समय बड़े बेटेको automatically राजा बना दीया जाता था। रामजीने उसमें क्रांतीकारी परिवर्तन कीया। राजगद्दी मीलने के बाद पूरा राज्य 4 भाइयों के 8 बेटो में बाँट दीया।

5. तनाव प्रबंधन

भरतजीके व्यवहारसे सीखना है कि परिस्थितिका स्वीकार किजीये, हल ढूँढीये तथा संवाद किजीये। मुझे याद आ रहा है कि विद्यालय में कोई छात्र गृहकार्य करके नहीं लाता था, तब शिक्षक उसे वर्गखण्डसे बाहर नीकाल देते थे – क्योंकि Non-communication is the biggest punishment. संवाद की महत्ता अरण्यकाण्ड दोहा 30 में भी समझाई है -

“हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता ||
लछिमन समुझाए बहु भाँती | पूछत चले लता तरू पाँती || “

अर्थात् सीताहरण के बाद व्याकुल रामजी लताओं और वनों की पंक्तियोंसे पूछते हुए चलते हैं।

6. देखने का नज़रीयाँ

रामके वनवासको लेकर एक नज़रीयाँ यह है कि कैकई के पाप से रामजी वन में आये हैं। उसी प्रसंग को लेकर ग्रामवासी कहते हैं - हमारे पुण्यसे हमें दर्शन देने, रामजी वन में आयें हैं। यही है सकारात्मक या नकारात्मक अभिगम । गुलाब में कांटे हैं, कहने के बदले यह भी सोच सकते हैं कि कांटे वाली डालीके सीर पर सुगंधी गुलाब का मुगुट है ।

7. श्रेय देना

रामजी अन्य सबको श्रेय देते हैं, स्वयंको कोई श्रेय नहीं देते हैं। हमनेतो व्याकरण में Active Voice और Passive Voice सिर्फ पढ़ा मात्र है। रामजी उसका कीतना सुंदर उपयोग करते हैं – वनवास के बाद अवध वापस जाते समय वे सीताजी को बताते हैं - यहाँ पर लक्ष्मणने मेघनाद को मारा था। रावण और कुंभकण यहाँ पर मारे गये थे |

8. जीम्मेदारी और भावना

मानस में सभी पात्र पग पग पर सीखाते है कि हमें जीम्मेदारी से दूर भागना नहीं हैं | भावना से भी कर्तव्य बड़ा है।

9. आदर्श समाज

10. रामजीने आदर्श समाजकी स्थापना की… छोटे-बड़े का भेद-भाव दूर कीया, शैव और वैष्णवको नज़दीक लायें, अस्पृश्यता निवारण का सटीक संदेश दिया। रघुनाथने पिता-पुत्र, भाइयों, पति-पत्नी, यहां तक कि शत्रु के साथ कैसा व्यवहार करना चाहीये, यह सब अपने व्यवहार से समजाया है। उन्होने कभी उपदेश तो दीया ही नहीं हैं, अत: उनका बहुत प्रभाव है। वस्तुतः वे स्वयम् बहुत कम बोलते हैं, कार्य करके समझाते हैं। वे समाजको जोड़ते हैं, जो एक नेताका काम हैं। शायद आजके कई नेता जोड़ने के बदले तोड़ते हैं; 'Divide and Rule’ में मानते हैं|

10. परिस्थिती तथा प्रतिक्रिया

अक्सर परिस्थिती हमारे नियंत्रण में नहीं होती है, परंतु प्रतीक्रिया तो हमारे हाथ में होती है। जैसे- सीता माता अशोक वाटीका में घबराती नहीं हैं और रावण को भी धमकाती है।

11. नेकी कर दरीयामें डाल

बालकाण्ड दोहा 35 देखें -

“रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा ॥
तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर ॥“

अर्थात् श्रीमहादेवजीने श्रीरामचरितमानस को रचकर अपने मन में रखा था और सुअवसर पाकर पार्वतीजीसे कहा। जबकि आज तो हम थोड़े से फल भी किसी को देकर फोटो खींचकर Facebook आदि पर फटाफट डाल देते हैं । नेकी कर दरीया में डाल तो हम भूल ही गयें हैं |

12. विश्वास

रामजीके हाथ बाली का वध हुआ तो भी प्राण त्यागने के पहले पुत्र अंगद का हाथ रामजीके हाथों में सौंपा और कहा - अंगद में मेरी जैसी ही बद्धि है और मेरे तुल्य ही बल है । कहीं वह मेरे जैसे ही गलत काम न करें, अत: आप उसको आदर्श जीवन का मार्गदर्शन करना और उसका

जीवन सार्थक रहें वैसा करना। यह बताता है हम अपनी बल-बुद्धि प्रभुको सौंप दें तो यह सब प्रभुका प्रसाद बन जाता है।

13 विदाई की रीत

उत्तरकाण्ड दौहा २० के शब्द देखें-

"तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥

बचन सुनत उपजा सुख भारी। परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥ "

अर्थात् कृपानिधान ने निषादराजको बुला लिया और उसे भूषण, वस्त्र प्रसाद में दिये और कहा अयोध्या में सदा आते जाते रहना। शायद यहीं से सीखकर, विदाई के समय हम गुजराती में कहते हैं- 'आवजो' अर्थात् फीर से आइएगा।

3. निष्कर्ष

इस प्रकार हम ग्रंथ पढे परंतु उसे जीवन में कार्यान्वित न करें तो वह केवल भार-वहन करना ही हैं। रामनवमी, विवाह पंचमी एवम् रामायण का संदेश यही है कि घर को मंदिर बनायें और परिवार के सदस्योंको प्रभु रुप में देखें। हम मंदिर जायें या न जायें, प्रभु हमारे यहाँ जरूर आयेंगे। इसका उत्तम उदाहरण है - कौशल्या माता तथा दशरथ महाराज के घर रामजी अवतरीत हुए हैं।

रामत्व की प्राप्ति

स्मिता मिश्रा

(smita1163@gmail.com)

जो सबमें रमें वह 'राम' है, जिसमें सब में वह 'राम' है मनुष्य योनि का महत्व सर्वाधिक है, क्योंकि इसके द्वारा रामत्व की प्राप्ति संभव है स्वयं नारायण ने नर लीला द्वारा इसका ज्ञान दिया। बाबा तुलसी ने रामचरित मानस द्वारा मानव हेतु इसे सम्भव किया।

रामचरितमानस यह महा ग्रन्थ है जो मानव बुद्धि की समसत ग्रन्थियाँ खोल कर आत्मा व परमात्मा में एकत्व उत्पन्न करती है। नर को नारायण बनाने वाला ग्रन्थ है। इसका एक-एक दोहा तंत्र, मन्त्र व यन्त्र है। यह हमारे मानसिक धरातल पर निर्भर करता है कि हम उसका प्रयोग कैसे करें? तथा किस रूप में सफलता प्राप्त करें।

जीवन एक अनंत यात्रा है इसमें यदि 'मैं'(अहम्) समाप्त नहीं हुआ तो हमारा संसार में आवागमन नहीं रुकेगा हम जहाँ थे वहीं खड़े रहेगें पर यदि श्री राम कृपा हो तो हम जहाँ खड़े है, मंजिल वहीं आयेगी।

श्री तुलसीदास कृत रामचरितमानस के बालकाण्ड में राम नाम की महिमा में तुलसी दास जी ने लिखा है

बंदऊँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।

विधि हरि हरमय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।।

र $ आ $ म: अग्नि $ सूर्य $ मयंक

राम नाम बीज रूप में प्रयुक्त है। दोहे का भावार्थ है अग्नि का ताप सूर्य में है, 'राम' का अवतरण सूर्यवंश में हुआ। यह अग्नि के समान विकारों को जलाने वाला है परन्तु जैसे सूर्य की किरण जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो शीतलता प्रदान करती है। उसी तरह से राम नाम की किरण जब हमारी आत्मा पर पड़ती है तो शीतलता प्रदान करती है।

यद्यपि अल्पज्ञ हूँ परन्तु बीज अक्षरों से शब्दार्थ विश्लेषण करने का प्रयास किया है जो आप सभी राम भक्तों के समक्ष है। दोहे में अयुक्त विधि हरि हर मय, वेद प्रान सो के अनुसार ब्रम्हा विष्णु महेश, राम में समाहित हैं। राम, जो कि वेदों के प्रान हैं। ब्रम्हा विष्णु महेश जो कि संसार की उत्पत्ति पालक व संहारक हैं राम नाम में ही समायें हैं।

रा अग्निऊर्जा उद्भव (उत्पन्न होने ब्रम्हा जनक का स्रोत)

आ सूर्य (सौर ऊर्जा) प्रकृति पालन हार है जीवों की, विष्णु पालनहार (भूमि से उत्पन्न सभी प्राकृतिक पदार्थ)

म चन्द्रमा ऊर्जा का परिवर्तित रूप अथवामहेश संहारक

(मयंक) (शीतलता प्रदान करता है) जिनके स्तक पर

कह सकते हैं सूर्य ऊर्जा का चन्द्रमा है।

परावर्तित रूप जो चन्द्रमा में संहार द्वारा ऊर्जा

शीतलता व प्रकाश देता है का रूप परिवर्तित कर देते हैं

अर्थात् 'राम' नाम में ही ब्रम्हा, विष्णु, महेश की शक्तियाँ समाहित हैं।

मानस में श्री शिव जी द्वारा महामन्त्र 'राम' का जाप की महिमा बतायी गयी है जिसका अर्थ है विश्वास व कल्याण कारी भावना से जप करना। पार्वती जी, जो श्रृद्धा स्वरूप है (तभी शिव की अर्धागिनी है), तथा सदैव पार्वती जी (श्रद्धा), शंकर जी (विश्वास) के साथ रहती हैं। श्रद्धा के साथ विश्वास का होना आवश्यक हे अन्यथा श्रद्धा भ्रमित हो जाती है। तुलसीदास जी ने मानस कथा शंकर व पार्वती जी के संवदा के रूप में कही है। शंकर जी विश्वास स्वरूप हैं, पार्वती जी श्रद्धा के रूप में है। श्रद्धा में बुद्धि जनित शंका उत्पन्न होती है अतः वह बार-बार प्रश्न करती है, शंकर जी उस संदेह को दूर कर विश्वास उत्पन्न करते हैं।

यदि जीव कल्याणकारी भावना व श्रृद्धा के साथ विश्वासपूर्वक 'राम' नाम का जाप करता है तब उसकी तीन नाडियों पर स्थित मस्तिष्क अर्थात काशी में उसकी मुक्ति की स्थित बनती है वह सभी कुंण्ठाओं से रहित हो बैकुण्ठ प्राप्त करता है अर्थात् उसकी हर्ष विषाद, जन्म मरण के भाव से मुक्ति प्राप्त होती है वह मोक्ष प्राप्त करता है।

राम नाम का जप का प्रभाव अवगुणों रूपी विष को भी गुणों अर्थात् अमृत में परिवर्तित कर देता है। शंकर जी का राम नाम की महिमा में विश्वास ही विष को कण्ठ से नीचे नही उतरने देता, उनको नीलकण्ठ के विशेषण से विभूषित करता है।

इसी तथ्य को एक अन्य परिपे्रक्ष्य से बताना चाहूंगी। राम नाम को जैव रसायनिक परिप्रेक्ष्य से समझने का प्रयास किया है, वो आपके समक्ष है। राम नाम में 'रा' का उच्चारण आक्सीजन को अन्दर लेना है जो जीवों की जीवनी शक्ति है। आक्सीजन की दाहिका शक्ति, अव्यक्त भाव में रक्त

संचरण द्वारा हृदयतन्त्र द्वारा सारे शरीर में व्याप्त होती है जो भौतिक शरीर द्वारा विभिनन जैविक कार्यो हेतु व्यक्त रूप में कार्य करती है। यह आक्सीजन युक्त रक्त शरीर में जैव रसायनिक क्रियाये करता है। राम नाम में 'म' का उच्चारण सांस छोड़ना है जो आक्सीजन युक्त रक्त द्वारा सम्पूर्ण प्रक्रिया के पश्चात उत्पन्न कार्बनडाई आक्साईड लेकर पुनः श्वास द्वारा बाहर चली जाती है।

इस पूर्ण प्रक्रिया में ऊर्जा उत्पन्न होती है, जैव रसायिक क्रियाओं में खर्च होने के पश्चात शरीर के ताप को सामान्य करती है तथा हृदय में आनन्द का भाव उत्पन्न करती है। यही कारण है राम नाम का जाप स्वस्थ शरीर, सवस्थ मन तथा आध्यामिक उन्नति का हेतु है।

योग की भाषा में राम नाम का महात्म्य बताना चाहूँगी कि 'राम' नाम का उच्चारण अर्थात् जप हमारे शरीर के मणिपुर चक्र को सक्रिय करता है। ध्वनि शास्त्र के अनुसार ध्वनि तरंगें होती हैं जो जिस स्थान में प्रवाहित होती हैं उसे गुंजायमान करती हैं। 'राम' की ध्वनि ऐसी है जो हमारे ऊर्जा चक्र को तरंगित करती है और शरीर में अमृत बरसाती है। हर ध्वनि का शरीर में एक स्थान होता है राम की ध्वनि नाभि के आस पास मणिपुर चक्र को तरंगित करती है। इस केन्द्र के गुण हैं निर्भयता, संकल्प शक्ति, निश्चय एवं धैर्य। राम नाम की तरंगे इस चक्र को स्वस्थ रखती है। राम नाम का जाप एक वैज्ञानिक प्रयोग है इसकी तरंगे नाभिकेन्द्र को प्रभावित करती है जिससे आध्यात्मिक ऊर्जा का विकास होता है, भय कम होता है, आत्मविश्वास दृढ़ होता है, धैर्य की वृद्धि होती है।

ऊँ ध्वनि अनहद् नाद है इस अक्षर को 'प्रणवाक्षर' भी कहते हैं इस अक्षर ऊँ के मध्य में ब्रम्हा विष्णु महेश तीनों एक हो जाते हैं यह भी नाभि में तरंगे उत्पन्न करता है अर्थात् ब्रम्हा विष्णु व महेश जहाँ तीनों एक रूप होते हैं वह 'राम' नाम है। यह 'राम' का अरुप स्वरूप है अत्यन्त सूक्ष्म तथा शीतलता व मधुरता प्रदान करने वाला अर्थात् आनन्द स्वरूप छोटी सी ध्वनि जो अंतस में समा जाती है।

आशो ने भी राम के इसी अरूप तत्व की बात कही है। उनका भाव है कि यह अरूप निर्गुण निराकार रूप सत्य है, जो राम की प्रतिमा है वह जीव की आकांक्षाओं का जाल है, 'उसे तुमने ही प्रतिष्ठित किया है, मंदिर स्वप्न का एक अंग है।' ओशो उस राम की बात कर रहे हैं जो वृक्षों में लहरा रहा है, पक्षियों में गीत का रहा है खुला आकाश है जो सबमें रमे हुये हैं। 'राम' नाम परम ऊर्जा है यदि आन्तरिक चक्षु खोलें, तो पायेंगे जो सब तरफ ऊर्जा का विस्तार दिखायी दे रहा है, जो अनेक रूपों में प्रकट हो रही है लीन हो रही है वह वही परम ऊर्जा है। ऊर्जा संरक्षण का नियम है कि ऊर्जा न बनाई जा सकती है न मिटाई जा सकती है केवल रूप परिवर्तन सम्भव है।

यह विराट शक्ति का खेल है हिंदुओं में राम लीला होती है। लीला अर्थात् खेल। ऊर्जा इतनी अधिक है, उसे खेल में लगा दें। खेल की धारणा केवल हिंदुओं के पास है।

तत्कालिक संदर्भ में कहना चांहूगी कि हम सब भाग्यशाली हैं जो तुलसी कृत मानस के मंथन में संलग्न है। राम की कृपा है जो इतने भक्तजनों का सत्संग मिला। अपने जीवन काल में ईश्वर की मंदिर में प्राणप्रतिष्ठा के साक्षी बने।

सूक्ष्म भाव है कि राम को शक्ति की तरह देखेंगे तो वह आपको संसार से मुक्त करा देगा, व्यक्ति की तरह देखेंगे तो आकांक्षाओं का हिस्सा बना लेगें।

मंदिर का अर्थ है जहाँ मन को दर पर रख दिया जाये अर्थात् मन को चैखट पर रख अपने भवन के अंदर प्रवेश करो (मन को वश में कर अंतस में प्रवेश करो), तो समझो आपके मन मंदिर में श्री राम प्रतिष्ठित हो गये। इस प्राण प्रतिष्ठा का अर्थ है शरीर के रहते भावों से मुक्ति अर्थात् परमानन्द में लीन। यही तो है रामत्व की प्राप्ति।

मानस में वेदांश : मंगलाचरण, बालकाण्ड

पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'

(purupurujaipur@gmail.com)

भारतीय वाङ्मय के प्राचीनतम व अपौरुषेय ग्रंथ वेद हैं जिनमें मानव जीवन के चारों पुरुषार्थ हेतु मार्गदर्शन व विधियाँ सूक्तों के रूप में संकलित हैं। यह विशद ज्ञान और इनके भाष्य जनसाधारण के लिए क्लिष्ट हैं। यद्यपि वेदों, पुराणों या अन्यत्र भी कठिन सूत्रों को सरल बनाने के लिए प्रतीकों का व आख्यायिकाओं का उपयोग किया गया तथापि मूल तत्व सामान्य मानस में स्पष्ट स्थापित नहीं हो पाया। रीति रिवाजों के माध्यम से यह ज्ञान परोक्ष रूप में प्रचलित जरूर रहा। भक्तिकाल में तुलसीदास जी ने एक नया रास्ता अपनाया। उन्होने सभी वेद, पुराण और अन्य ग्रंथों के मूल ज्ञान को राम चरित मानस में ग्राम्य भाषा में समाहित किया जो कालांतर में जन मानस में अमिट रूप से स्थापित हो गया। इस शोध पत्र में बालकाण्ड में लिखे मंगलाचरण में निहित वेदांश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

1. प्रस्तावना

निर्विवाद रूप से वेद भारतीय वाङ्मय के प्राचीनतम ग्रंथ माने गए हैं। इन वेदों में मानव की सभी तरह की इच्छाओं की पूर्ति हेतु सूक्त दिए हैं। पर इस ज्ञान के भंडार को समझने और चरित्रार्थ करने के लिए बुद्धि कोशल का एक विशेष स्तर आवश्यक है। जन साधारण के लिए ये दुरुह हैं। इसीलिये इन ग्रंथों पर अनेक पूज्य चरण महात्माओं ने भाष्य लिखे हैं। प्रतीकों व आख्यायिकाओं के माध्यम से भी ज्ञान को सरल कर समझाने का प्रयास किया गया। पर इन ग्रंथों और इनके भाष्यों को समझना आसान नहीं हुआ। फिर मुनियों ने, विचारकों ने इस सर्वोच्च ज्ञान को रीति रिवाजों में पिरोकर जीवंत रखा। इसका धनात्मक पक्ष यह रहा कि भले ही इन रिवाजों व प्रतीकों के पीछे का रहस्य स्पष्ट नहीं था फिर भी दीर्घ काल से इनका श्रद्धा से पालन होता रहा और यह सूक्ष्म ज्ञान लुप्त होने से बच गया।

कालांतर में अज्ञानवश और संभवतः स्वार्थवश भी अनेक लोगों ने इन रिवाजों के पीछे अपनी अपनी मति व मन मुताबिक अर्थ निकाले जिससे समाज में कभी-कभी असमंजस की स्थिति पैदा हुई। मूल ज्ञान की ग्लानि भी हुई।

कई विचारकों ने तो मूल ज्ञान के पक्ष या विपक्ष में जाकर नवीन धारणाएं समाज में प्रचारित कर दीं। सरलीकरण के नाम पर नये-नये नियम बनाए जाने लगे जो धीरे-धीरे नवीन पंथों व मतों के रूप में उभरे। समाज में इन नवीन पंथों को नये-नये सम्प्रदायों और धर्मो के रूप में मान्यताएँ भी मिल गईं। इन परिस्थितियों में भक्तिकाल में तुलसीदास जी ने एक नई राह अपनाई। उन्होंने सभी वेद, पुराण और अन्य ग्रंथों के मूल ज्ञान को राम चरित मानस में ग्राम्य भाषा में लिखा। इसका आरंभ में भले ही बड़ा विरोध हुआ लेकिन आज ग्राम्य भाषा में लिखा यह सर्व ग्राही ग्रंथ जन-जन के मानस पर अमिट रूप से स्थापित हो गया। इस शोध पत्र में बालकाण्ड में लिखे मंगलाचरण में वेदांश को यथा समझ, और शब्द शक्ति के तीनों प्रकार, अभिधा (शब्दार्थ - Literal sense of a word), लक्षणा - (लक्ष्यार्थ - Figurative sense of a word) और व्यंजना (व्यंजनार्थ - Suggestive sense of a word) का उपयोग करते हुए विस्तार में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

2. विस्तार

मानस मंगलाचरण, बालकाण्ड

श्लोक - 1

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।

मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ बा. का. 1 ॥

शब्दार्थ : अक्षरों, अर्थ समूहों, रसों, छन्दों और मंगलों को करने वाली सरस्वतीजी और गणेशजी की मैं वंदना करता हूँ॥ 1 ॥

लक्ष्यार्थ : वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वतीजी कृपा करें जिससे इस ग्रंथ में अक्षर समूहों और उनकी श्रृंखलाओं का पारमार्थिक अर्थ स्पष्ट हो। छन्दमय भाषा रसमय हो, हृदयग्राही हो, आनंद की सृष्टि कर सके और गणेशजी की कृपा से मंगलकारी हो।

व्यंजनार्थ : इस श्लोक में जो अक्षर शब्द है वह अस्तित्व का नाम है, उसके अर्थ का, गुणों का वर्णन है जो सूत्रात्मक, आनंदायक और मंगलकारी है। **गीता** में कहा है :

"उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।

यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।। गीता 15.17 ॥

उत्तम पुरुष परमात्मा अविनाशी (अक्षर) ईश्वर तीनों लोकोंमें प्रविष्ट होकर सबका भरणपोषण करता है

पुरुष सूक्त में भी कहा है:

"पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच भव्यम्। (ऋग्वेद - 10.90)"

यह अक्षर वही ब्रह्म है अर्थात वास्तव में अक्षर पुरुष ही सार रूप में यह सब सृष्टि है जो अतीत में अस्तित्व में था, वर्तमान में है और जो भविष्य में भी मौजूद रहेगा।

इसी अक्षर तत्व की विस्तार से व्याख्या **बृहदारण्यकोपनिषद्** में दी गई है:

साथहोवाच एतद्वै तदक्षरं गार्गि ब्राह्मणा अभिवदन्ति। (वृह. उ. 3-8-8)

जहाँ याज्ञवल्क्य जी कहते हैं, हे गार्गि वह अक्षर तत्व आकार विहीन, स्थूल व सूक्ष्म पंच तत्व से परे, स्थान निर्पेक्ष व माप से परे, अच्छाय, असं, अतम, द्रव भाव विहीन अस्तित्व है।

ब्रह्म सूत्र में भी कहा है :

"अक्षरम्म्बधरान्तधृतेः (ब्रह्म सूत्र: 1. 3. 10)।"

अक्षर शब्द परब्रह्म का ही वाचक है और सम्पूर्ण सृष्टि को धारण किये है

"सा च प्रशासनात् (ब्रह्म सूत्र: 1.3.11)।"

यह अक्षर ब्रह्म ही सब पर भलीभाँति शासन भी करता है।

इसी सत्य को एक अन्य ऋचा में भी उद्धृत किया है:

"ॐ ईशावास्यमिदम् सर्व यत्किंच जगत्यां जगत। (ईशावास्योपनिषद - 1 .)"

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो भी ये जगत है, सब ईशा (ईश्वर) द्वारा ही व्याप्त है।

जैसा **गीता** में भी लिखा है:

"सर्वेन्द्रियगुणाभास सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्छेव निर्गुण गुणभोकत्र च॥ (गीता 13.15)"

इस अदृश्य अक्षर तत्व की विशेषता है कि इंद्रियहीन होने बाद भी यह सबको देखता है, सुनता है और जानने वाला चैतन्य है।

और **मानस** में भी कहा है:

"बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥ "

वह (ब्रह्म) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, बिना मुँह (जिह्वा) के सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के ही सबसे योग्य वक्ता है।

छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित है:

"एकोहं बहुस्याम (छान्दोग्य उपनिषद् 6.2.3")

अक्षर तत्व को एक अन्य परिपेक्ष्य में भी देखा जा सकता है। अक्षर जो स्वयं निराकार है पर जब अपने को व्यक्त करता है तो अनंत समूह (विराट रूप सृष्टि संरचना) में बंट कर दृश्य रूप में प्रकट होता है।

स्वामी करपात्री महाराज जी भक्ति सुधा में लिखते हैं:

"अजायमानो बहुधा व्यजायत", "एकोहं बहुस्याम" "इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते" भक्ति सुधा (कृष्ण कोश) - पृ. 736"

अजायमान और एक ही परम तत्त्व माया से बहुरूप में जायमान सा प्रतीत होता है। तात्त्विक दृष्टि से देखा जाय तो 'ब्रह्म' अक्षर है, 'न क्षरति इति अक्षरः ' जिसका क्षरण - विनाश नहीं होता है, वह 'अक्षर' है।

श्लोक - 1 की पहली लाइन के उत्तरार्द्ध में कहा है: 'रसानां छन्दसामपि'

साहित्य में अक्षरों की छंदमय रचना रसमय होती ही है। पर यहाँ व्यंजनार्थ में बताया गया है कि वह अक्षर - परम तत्व रस स्वरूप है।

तैत्तिरीयोपनिषद् ने कहा:

"रसो वै सः। रस ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति। (तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मानन्दवल्ली - 37)"

वह अस्तित्त्व रसमय है। सः यहाँ स्वयम्भू सृजक के लिए प्रयोग किया गया है और रस उनकी सुन्दर रचना से मिला आनन्द है। जब प्राणी इस आनन्द को, इस रस को प्राप्त कर लेता है तो वह स्वयं आनन्दमय बन जाता है।

अथर्वेद की पिप्पलाद शाखा में उल्लिखित है:

" श्रीरामएवरसोवैसः। यस्यदासरसोवैपादः। यस्य शान्तरसो वै शिरः। वात्सल्यः प्राणः। शृङ्गारो बाहू। संख्यात्मा। अथर्वेद पिप्पलाद शाख्यम्।

वह रसो वै सः ही एकमात्र 'श्रीराम' हैं। जिसका दास्य रस है उसके पैर, शांत रस है सिर, वात्सल्य रस है प्राण, शृंगार रस है भुजा और सख्य रस है आत्मा।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि अक्षर अस्तित्व में निमग्न रहना ही रसमय है, मंगलकारी है और बुद्धिमत्ता है।

श्लोक - 2

"भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्॥ बा. का. 2 ॥ "

शब्दार्थ: श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वतीजी और श्री शंकरजी की मैं वंदना करता हूँ, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते ॥2॥

लक्ष्यार्थ: इस श्लोक के पूर्वार्द्ध में विशेष्य श्री पार्वतीजी और श्री शंकरजी के एक-एक गुण श्रद्धा और विश्वास को बताते हुए साधक ही नहीं सिद्धजन को भी सचेत किया है कि इन दोनों गुणों को धारण किए बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

व्यंजनार्थ: सभी ईश्वर दर्शनाभिलाशी चाहे वह साधक, मुमुक्षु, मुनि या सिद्धजन हो उसे पता होना चाहिए कि जिस ईश्वर की उसे तलाश है वह ही उसके भीतर भी है और उसकी अभिप्रायनुभूति के लिए उसे इस श्लोक पर पूर्ण श्रद्धा और विश्वास होना ही चाहिए।

वेदों में मन के बारे मे विशद वर्णन है। मन के सामर्थ्य की बड़ी महिमा बताई है। योग्यता के बिना किसी भी लक्ष्य की प्रप्ति नहीं होती। श्रद्धा की गलत विवेचना या अंध श्रद्धा के कारण ही अनेक वर्षों तक साधना करने पर भी कुछ साधक लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं। श्रद्धा तदनुसार कर्म (भक्ति) और इंद्रिय संयम के यम नियम के पालन से ही वह आवश्यक प्रात्रता उपलब्ध होती है जिससे जीव का उत्कर्ष होता है। जीव जड़-चेतन की ग्रंथी को शिथिल करके फिर तोड़ कर ही स्वरूप की तरफ बढ़ता है। श्रद्धा को ज्ञान - कर्म के समुच्चय का (परम प्रमाण श्रुति के प्रकाश में) विवेक तुला पर कसोटी किया और समझा हुआ प्रतिफल ही जानना चाहिए। इसी की उपस्थित में ही लक्ष्य प्राप्ति संभव बताई है।

जैसा कि **गीता** में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं :

"श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ गीता 4.39 ॥"

जो जितेन्द्रिय तथा साधन - परायण है, ऐसा श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञानको प्राप्त होता है और ज्ञानको प्राप्त होकर वह तत्काल परम शान्तिको प्राप्त हो जाता है।

पर यह हो कैसे ?

उपरोक्त **परिष्कृत श्रद्धा में संशयहीन अटल** धारणा **ही विश्वास है,** वट विश्वास है। पर प्रश्न उठता है कि परम तत्व पर वट विश्वास बने कैसे? इसके लिए उपलब्ध विषयों, ज्ञान को प्रमाण विचार प्रक्रिया पर तोलकर ही तत्वों (सिद्धांतों) की परीक्षा कर ही प्रमा बनानी चाहिए। ऐसी प्रमा अबाधितं, अनधिगतुं, असंदिग्धं, स्मृति विलक्षणं होनी चाहिए। इस तरह की प्रमा- सिद्ध श्रद्धा व तदनुसार उत्पन्न विश्वास को हृदय में धर जब परम तत्व की खोज़ की जाती है, तब वह शिव स्वरूप (मंगलकारक) ज्ञान उस अज, अव्यय, अव्यक्त, अस्तित्व का, जो हृदय के भीतर ही विराजमान है और बाहर सारा दृश्य प्रपंच जिसका आभासीय विस्तार है, की अपरोक्ष अनुभूति कराता है। यहाँ जो कुछ है, परमात्मा का है, यहाँ जो कुछ भी है**,** सब ईश्वर है। हमारा यहाँ कुछ भी नहीं है-

निष्कर्ष में कह सकते हैं कि प्रमा आधारित श्रद्धा और संदेहहीन अटल विश्वास ही अंतकरण मे स्थित ईश्वर के ज्ञान को प्राप्त करने के सोपान हैं। अब प्रश्न आता है कि यह ज्ञान कैसे सुलभ हो ? परिष्कृत ज्ञान के लिए गुरु नितांत आवश्यक है। गुरु कैसा हो उसके लिए तीसरे श्लोक में तुलसी बाबा लिखते हैं:

श्लोक - 3

"वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते। बा. का 3॥"

शब्दार्थ: ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है ॥3॥

लक्ष्यार्थ : अल्प ज्ञानी, अभिमानी प्राणी (व्रक चंद्र), साधक या मुमुक्षु भी जब ज्ञानी श्रोत्रिय ब्रह्म निष्ठ मंगलकारी गुरु के आश्रित हो ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो, वो भी आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त कर वंदनीय हो जाते हैं।

व्यंजनार्थ : मानव जीवन का परम लक्ष्य आत्म स्वरूप की पहचान है जिससे वह आवागमन के चक्र से मुक्त हो सके। इस पथ की जानकारी व उस पर चलने की क्षमता ज्ञान की प्राप्त से ही संभव है। ज्ञान की प्राप्ति बिना गुरु बहुत दुरुह है। विशेषतया सही धार्मिक ज्ञान तो बिना गुरु संभव ही नहीं। प्रश्न उठता है कि गुरु का अर्थ क्या है और गुरु कौन हो सकता है। उपनिषदों में बताया है

"गु शब्दस्त्वन्धकारः स्यात् रु शब्दस्तननिरोधकः।

अन्धकारनिरोधित्वात् गुरु ऋत्यभिधीयते ॥16॥ [अद्वैतारक उपनिषद, श्लोक 16..22.23] "

'गु' अक्षर का अर्थ है अंधकार और अक्षर 'रू' का है जो उन्हें दूर करता है। अत: गुरु वह हुआ जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर सके, ज्ञान के पथ को आलोकित कर सके। जगत में गुरु तो बहुत मिलते हैं लेकिन सही गुरु का मिलना आवश्यक है अन्यथा साधक पथभ्रष्ट भी हो सकता है। इसीलिए मानस के इस तीसरे श्लोक में तुलसीदास जी गुरु के गुण बताते हैं। गुरु ज्ञानी (बोधमय) हो। बोधमय के अर्थ को विस्तार देते हुए अद्वैतारक उपनिषद में आया है कि 'गुरु' एक कुशल शिक्षक, परामर्शदाता, स्वयं (आत्मा) की प्राप्ति में मदद करने वाला, मूल्यों और अनुभवात्मक ज्ञान को स्थापित करने वाला होना चाहिए। एक आदर्श, एक प्रेरणा और जो एक छात्र (शिष्य) के आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करने वाला हो।

छांदोग्य उपनिषद के अध्याय 4.4 में घोषणा है कि केवल गुरु के माध्यम से ही व्यक्ति उस ज्ञान को प्राप्त करता है जो मायने रखता है, और अंतर्दृष्टि को आत्म-ज्ञान की ओर ले जाता है।

श्लोक के उत्तरार्द्ध में तुलसीदास जी कहते हैं कि गुरु को नित्य व शंकर रूप होना चाहिए। इसी को श्वेताश्वतर उपनिषद में कहा है:

यस्य देवे परा "भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते सारिआ ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥ [श्वेताश्वतर उप. 30.37]"

अर्थात साधक जितनी भक्ति अपने इष्ट देव (यहाँ शंकर रूप व विश्वास रूप) में रखता है उतनी ही भक्ति अपने गुरु में रखे। और ऐसे गुरु के पास जाकर समर्पित हो प्रश्न करे। ऐसा करने से ही शिष्य में पात्रता आयेगी, उसके लिए नित्य ज्ञान उजागर होगा। ऐसे साधक को ही वेदांत के अर्थ का बोध होता है।

निष्कर्ष मे कहा जा सकता है कि ज्ञानमय ब्रह्म में नित्य रमण करने वाले, शिव रूपी मंगलकारी गुरु के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त शिष्य वंदनीय और अनुकरणीय हो जाता है।

चौथे श्लोक में तुलसीदास जी ज्ञान प्राप्त सिद्धजन की स्थिति व स्वभाव का वर्णन करते हैं:

श्लोक - 4

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञान कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ बा. का 4 ॥

शब्दार्थ : श्री सीतारामजी के गुणसमूह रूपी पवित्र वन में विहार करने वाले, विशुद्ध विज्ञान सम्पन्न कवीश्वर श्री वाल्मीकिजी और कपीश्वर श्री हनुमानजी की मैं वन्दना करता हूँ॥4॥

लक्ष्यार्थः तुलसीदास जी कहते हैं कि सगुण साकार उपासक भक्त को अपने हृदय में सीताराम जी के अनगिनत पवित्र गुणों का स्मरण, विचार, निदिध्यासन और दी गई शिक्षा पर आचरण करना चाहिए। उनके गुणों की सत्यता, प्रमाणिकता को अनुभूत करते हुए जीवन जीना चाहिए। यही गुण स्वरूप वन है जिसमें विहार करना चाहिए। ऐसे वाल्मीकि जी जैसे वैज्ञानिक-कवि-ईश्वर और हनुमान जी जैसे भक्त - कपि-ईश्वर वंदनीय हैं।

व्यंजनार्थ : तुलसीदास जी जिन सीताराम जी के गुणों की बात कर रहे हैं वो कौन हैं ? मात्र दशरथ जी के पुत्र और पुत्रवधु। क्या वो दो अलग अलग अस्तित्व की ईकाई हैं या एक ही अस्तित्व के दो दृश्यमान रूप। इस बारे में तुलसीदास जी स्वंय एक चौपाई में स्पष्ट करते हैं।

"गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ बा. कां. 8 ॥"

जो वाणी और उसके अर्थ तथा जल और जल की लहर के समान कहने में अलग-अलग हैं, परन्तु वास्तव में अभिन्न (एक) हैं, उन श्री सीतारामजी के चरणों की मैं वंदना करता हूँ, जिन्हें दीन-दुःखी बहुत ही प्रिय हैं ॥ 18 ॥

इसी सत्य को गीता में श्री कृष्ण भी कहते हैं:

"पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।।। गीता 10.31॥"

पवित्र करने वालों में वायु और शस्त्रधारियों में दशरथ पुत्र राम मैं हूँ।

वेदों में 'राम' का उल्लेख बहुत कम स्थानों पर हुआ है। जैसे ऋग्वेद में केवल दो स्थलों पर 'राम' शब्द आया है।

"भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्। सुप्रकेतैर्देयुभिरग्निर्वितिष्ठत्रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्॥] (10-3-3)"

इस मंत्र में कहा है की भद्र पुरुष जो सर्वहित रहता है और निस्वार्थ भाव से ज्ञानपूर्वक कर्तव्य कर्मो को ज्ञानपूर्वक प्रभु स्मरण करता है वह राम (वह प्रभु जो सर्वत्र विद्यमान है) को प्राप्त होता है। यहाँ राम का नाम आया है पर सीधे दशरथ नंदन राम के बारे में हैं इस तरह निश्चित कहना दुरुह है। हालांकि कई विजन ने उनके रामकथापरक अर्थ भी किये हैं। यहाँ एक स्थल पर 'इक्ष्वाकुः' (10-60 -4) का तथा दूसरे स्थान 'दशरथ' (1-126-4) शब्द का भी प्रयोग हुआ है। परन्तु उनके राम से सम्बद्ध होने का कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिल पाता है।

एक और सूत्र में राम शब्द आया है:

"प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु। ये युक्त्वाय पञ्चं शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम्॥ (10.93.14)"

यहाँ राम शब्द (रमे हुए) विशेषण के रूप में आया है। राम भगवान की संज्ञा के रूप में नहीं।

ऐतरयोपनिषद के ब्राह्मण साहित्य में 'राम' शब्द का प्रयोग दो स्थलों पर [10 (7-5-1{=7-27} तथा 7- 5-8{=7-34})] हुआ है; परन्तु वहाँ उन्हें 'रामो मार्गवेयः' कहा गया है, जिसका अर्थ आचार्य सायण के अनुसार 'मृगवु' नामक स्त्री का पुत्र है। एक स्थल पर 'राम' शब्द का प्रयोग हुआ है (4-6-1-7)। यहां 'राम' यज्ञ के आचार्य के रूप में है तथा उन्हें 'राम औपतपस्विनि' कहा गया है।

तैत्तरीय आरण्यक में दिए गए एक श्लोक के अनुसार, राम शब्द का अर्थ होता है पुत्र राम। वहीं, **ब्रह्मण संहिता** में कहा गया है कि राम नाम का अर्थ है जो सभी जगह रमा हुआ है। आप इस बात का वर्णन इस श्लोक में देख सकते हैं. **'रमन्ते सर्वत्र इति रामः।'**

इन के इतर कई विद्वानों ने वेदों के कई मंत्रों का सीधे रामपरक अर्थ किया है जैसे नीलकंठ जी का ऋग्वेद के मंत्रों पर आधारित संकलित संग्रह जिसे "मंत्र - रामायण" कहा जाता है।

मान्यता है कि हर कल्प में रामावतार होता है इसलिए मेरे विचार से कल्प विशेष राम की वेदों में खोज की जगह जिस तत्व को राम की संज्ञा दी गई है उसकी खोज आवश्यक है और उसका खुलासा हमें अनेक ग्रंथों में मिलता भी है जैसे मानस में ही मनु शतरूपा जी जिस प्रभु का दर्शन और उन्हीं के समान पुत्र की कामना के लिए तपस्या करते हैं उनके स्वरूप का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी चौपाई में लिखते हैं :

"अगुन अखंड अनंत अनादी। जेहि चिंतहिं परमारथबादी॥
नेति नेति जेहिं बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा।।
शंभु बिरंचि विष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंश ते नाना॥
तुम ब्रह्मादि जनक जग स्वामी। ब्रह्म सकल उर अंतरजामी॥ (बा. कां. 114)"

मनु व शतरूपा जी के हृदय में निरंतर यही अभिलाषा रहती है कि जो निर्गुण, अखंड, अनंत और अनादि हैं, तत्त्ववेत्ता और ब्रह्मज्ञानी जिनका चिन्तन किया करते हैं, जिन्हें वेद नेति नेति कहकर निरूपण करते हैं, जो आनंदस्वरूप उपाधिरहित और अनुपम हैं एवं जिनके अंश से अनेक शिव, ब्रह्मा और विष्णु भगवान प्रकट होते हैं ऐसे 'परम प्रभु' को आँखों से देखें | उनसे प्रार्थना करते हुए वो कहते हैं।

"दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।। बा. कां 149॥"

मनु व शतरूपा ने कहा, है दानियों के शिरोमणि, है कृपानिधान! हे नाथ! हम अपने मन का सच्चा भाव कहते हैं कि हमें आपके समान पुत्र मिले। प्रभु से भला क्या छिपाना॥ 149॥ वरदान फलस्वरूप आप ब्रह्मा आदि के जनक, जगत के स्वामी और सबके हृदय के अन्तर्मन के भावों को जानने वाले ब्रह्म स्वयं प्रकट हुए।

इन ब्रह्म के स्वरूप का विस्तृत वर्णन अनेक उपनिषदों में आया है। शोध पत्र की सीमा को ध्यान में रखते हुए यहाँ सिर्फ कुछ संदर्भ ही दिए जा रहे हैं:

1. **अणोरणीयान्महतो ...... धातु प्रसादान्महिमानमात्मनः**
2. **आसीनो ...... ज्ञातुमर्हति (कठो. प्रअ द्विव. श्र. 20-21)**
3. **हँसः ...... बृहत् (मुण्डकोप. द्वितीय मु. प्रख. श्र 1 - 9)**

बाल्मीकि ने रामायण में राम जी के 67 गुण बताए उनमें से दो गुण उनके ब्रह्म स्वरूप को इंगित करते हैं। वहाँ लिखा है :

1. **रामो विग्रहवान् धर्मः।**

धर्म तो निराकार है, किन्तु यदि उसकी मूर्ति की कल्पना की जाये तो श्रीराम के समान वह मूर्ति होगी।

2. **समाधिमान् -** तिलक टीकाकार लिखते हैं कि श्रीराम अपने तत्त्व में लीन रहते हैं। उनका अपना तत्त्व ही ब्रह्मतत्त्व है, जिसमें वे हमेशा लीन रहते हैं।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि कि मुमुक्षु को कवीश्वर श्री वाल्मीकिजी की तरह सत्य, विवेक से प्रमाण व्यापार से अनुमोदित, विज्ञान की कसौटी पर कसा, विशुद्ध (संशयहीन) ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। तदुपरांत उसकी रहनी सीताराम जी के गुण रूपी अरण्य में विचरते अर्थात भक्ति करते हुए कपीश्वर श्री हनुमानजी की तरह होनी चाहिए।

श्लोक - 5

"उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥ बा. का. 5॥"

शब्दार्थ: उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और संहार करने वाली, क्लेशों को हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों को करने वाली श्री रामचन्द्रजी की प्रियतमा श्री सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ॥ 5॥

लक्ष्यार्थः इस श्लोक में तुलसीदास जी, अक्रिय ब्रह्म की उस क्रिया शक्ति (सीता माता) की बात कर रहे हैं जिसका आधार लेकर ही सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और संहार आदि सभी क्रियाएँ हो रही हैं। यह शक्ति राम जी की ही शक्ति है उन्हें नमन है।

व्यंजनार्थः कठोपनिषद में ब्रह्म की इस शक्ति को अदिति नाम से कहा गया है और व्याख्या करते हुए लिखा है:

"या प्राणेन संभवत्यदितिर्देवतामयी।
गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तीं या भूतेभिर्व्यजायत। एतद्वै तत् ॥ (कठो. द्विअ. प्रव, श्र. 7)"

ये वो सर्वदेवतामयी भगवती अदिति देवी हैं जो सबसे पहले उस परब्रह्म के संकल्प से सब जगत की जीवन शक्ति के सहित उत्पन्न होती हैं तथा जो सम्पूर्ण प्राणियों को बीज रूप से अपने साथ लेकर प्रकट हुई। हृदय रुपी गुहा में प्रविष्ट होकर वहीं रहने वाली भगवती भगवान की अचिन्त्यमहाशक्ति भगवान से सदा अभिन्न है। भगवान और उसकी शक्ति में कोई भेद नही है। भगवान ही शक्तिरूप से सबके हृदय में प्रवेश किये हुए हैं। ये हैं देवों की माता 'अदिति' जिनका 'प्राण' के माध्यम से प्रादुर्भाव हुआ, जिनका भूतग्राम सहित प्राकट्य हुआ और पदार्थो की हृदगुहा में प्रवेश करके 'वे' वहां प्रतिष्ठित हैं। यही है 'वह', जिसकी तुन्हें (नचिकेता) अभीप्सा है।

गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा:

"भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ 8.19 ॥"

हे पार्थ! वही यह भूतसमुदाय है जो पुनः पुनः उत्पन्न होकर लीन होता है। अवश हुआ (यह भूतग्राम) रात्रि के आगमन पर लीन तथा दिन के उदय होने पर व्यक्त होता है ॥

दुर्गा सप्तशती (मार्कण्डेय पुराण) में इस शक्ति को महमाया नाम से कहा गया।

यही महामाया शक्ति सृष्टि की तीन अवस्थाओं का तीन रूपों में संचालन करती है।

"त्वयेतद्धार्यते विश्वं त्वयेतत् सृज्यते जगत। त्वयेतत् पाल्यते देवी त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ दुर्गा सप्तशती 75 ॥"

तुम्हीं इस विश्व ब्रह्माण्ड को धारण करती हो, तुमसे ही इस जगत की सृष्टि होती है। तुम्हीं सबका पालनहार हो, और सदा तुम्ही कल्प के अन्त में सबको अपना ग्रास बना लेती हो ॥75॥

श्लोक - 6

"यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ बा. का. 6॥"

शब्दार्थः जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य जगत् सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिए एकमात्र नौका हैं, उन समस्त कारणों से पर (सब कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ) राम कहलाने वाले भगवान हरि की मैं वंदना करता हूँ।

लक्ष्यार्थः हरि की माया की परिधि में, उससे नियंत्रित और प्रभावित सारा विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं। उनकी ही नियमावली से नियंत्रित इन सबका उदय, पालन व पुनः संकुचन होता है। प्रभु की माया के प्रभाव से जगत में लिप्त जीव अपना मूल स्वरूप भूल जाता है। इस की पहचान कर अपने स्वरूप में स्थित हो जाना ही अंतिम पुरुषार्थ है। इसके लिए प्रभु की उपासना और उनको वंदन करते हैं।

व्यंजनार्थः अब प्रभु की माया के वशीभूत होने का अर्थ क्या है वह देखना होगा। माया का अर्थ ही है कि जो जैसा दिख रहा है वह वास्तव में वैसा है नहीं और जो वास्तव में जैसा है वह भी वैसा नहीं दिख रहा है। वेदों में उदाहरणार्थ बताया है कि जैसे कोई धुंधलके में जा रहा हो और राह में रस्सी पड़ी हो, है रस्सी पर यात्री को अज्ञानवश रस्सी सांप लग रही है। सिर्फ लग ही नहीं रही उसे विश्वास हो गया है इसीलिए वह रस्सी को सर्प जानकर ही उसी हिसाब से व्यवहार कर रहा है। एक और उदाहरण जैसे परदे पर चल रहे दृश्य व घटनाक्रम जीवंत लगते हैं पर होते नहीं। या फिर जैसे जब कोई जादूगर खेल दिखाता है वह बिल्कुल सत्य लगता है पर सत्य होता नहीं। यही माया है।

इसी तरह यह विश्व भी सत्य नहीं है अपितु माया है। यहाँ संसार, सत्य ब्रह्म का विवर्त रूप ही है। हम संसार देख रहे हैं ब्रह्म को नहीं। उदाहरणार्थ जीव जन्म से पहले शाश्वत अस्तित्व का एक अंश था पर देह पाते ही उस पर अनेकों संज्ञाएं आरोपित कर दी जाती हैं (पुरुषोत्तम श्रीवास्तव. 2023., अनुभूति के पल पृ.सं. 141) रिश्तों की, कुल की, समाज की, गाँव, देश की आदि, आदि। जीव शरीर त्यागने के बाद फिर से उसी शाश्वत अस्तित्व में विलीन हो जाता है। और यह च्रक चलता ही रहता है। जैसे लहर (जीव) सागर (ब्रह्म) का विवर्त है। लहर का कोई निज अस्तित्व नहीं है वह मूल तत्व सागर की अभिव्यक्ति मात्र है। लहर और सागर में जल तत्व समान ही है। यह तत्व शाश्वत अस्तित्व ही सभी चेतन देहों में प्रतिबिम्बित है। यही सत्य है। जीव को अपने इस मूल स्वरूप की पहचान और उसकी निरंतर अनुभूति करनी है। इसीलिए तुलसीदास जी कहते हैं **"सीय राममय सब**

जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।" वेद का **"एकोहं बहुस्याम" सूत्र इसी सत्य को उद्घाटित करता है।** यह ज्ञान ही परमसत्य है। उसी के लिए ऋषि-मुनि तप करते हैं, मनीषी गवेषणाएं करते हैं और वैज्ञानिक खोज करते हैं।

श्लोक - 7

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति॥ बा. का 7॥

शब्दार्थ : अनेक पुराण, वेद और (तंत्र) शास्त्र से सम्मत तथा जो रामायण में वर्णित है और कुछ अन्यत्र से भी उपलब्ध श्री रघुनाथजी की कथा को तुलसीदास अपने अन्तःकरण के सुख के लिए अत्यन्त मनोहर भाषा रचना में विस्तृत करता है॥7॥

लक्ष्यार्थ: किसी भी जीव की हर पल हर चेष्टा सुख की प्राप्ति हेतु ही है पर इंद्रिय के विषय के संयोग से उत्पन्न सुख, काल, देश, स्थिति, और संबंध (जो सभी स्वयं अस्थिर है) पर निर्भर होने के कारण क्षणिक हैं। शाश्वत सुख की प्राप्ति तो जो शाश्वत व स्वतंत्र है उससे ही मिल सकेगी। ऐसा अन्तःकरण का सुख सभी जीवों का अभीष्ट है (पुरुषोत्तम श्रीवास्तव. 2022., चलें नित्य की ओर पृ.सं. XX)। तुलसीदास इसी सुख हेतु श्री रघुनाथजी की कथा राम चरित मानस को लिख रहे हैं।

व्यंजनार्थ: प्रत्येक प्राणी उपरोक्त वर्णित अन्तःकरण का सुख चाहता है। जीव का देह त्यागने के बाद भी अस्तित्व उसी प्रकार बना रहता है जैसे नाटक की समाप्ति पर किसी अभिनेता का। नाटक के पश्चात् वह अभिनेता अपने मूल स्वभाव में रहता है वही उसकी वास्तविक संतुष्टि है।

लेकिन जीव यदि नाटक में इतना लिप्त हो जाए कि अपने मूल स्वरूप को ही भुला दे और नाटक के सुख को ही अपना परम सुख मानने लगे तो वह भ्रम में है माया से ग्रसित है। संसारी नाटक में सुख की अपेक्षा से, अपनी अतृप्त वासनाओं की पूर्ति हेतु वह पुनः पुनः देह धारण करता रहेगा और वास्तविक शाश्वत सुख से वंचित।

इस प्रकार जीव निरंतर व्यक्त (देह रूप में) और अव्यक्त (विदेह रूप में) के चक्र में चलता रहता है। यह निरन्तर परिवर्तन एक अपरिवर्तनशील नित्य अविकारी अधिष्ठान के बिना ज्ञात नहीं हो सकता। उसी अधिष्ठान पर इस परिवर्तन का आभास होता है।

3. निष्कर्ष

वह नित्य ब्रह्म (अधिष्ठान) जिस पर इस सृष्टि का नाटक खेला जाता है वह राम (ब्रह्म) तत्त्व हैं उसकी पहचान तुलसीदास जी मानस के सगुण राम के माध्यम से हम सबको करा रहे है और शाश्वत सुख की ओर चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। तुलसीदास जी ने मानस के प्रथम सोपान बालकाण्ड के मंगलाचरण में सात श्लोकों में सरस्वती जी. गणेश जी, भवानी जी, शंकर जी, गुरु जी, सीताजी और राम जी के सगुण रूपों की स्तुति करते हुए परोक्ष रूप में निराकार ब्रह्म के अस्तित्व का परिचय, उसके गुण, कारण, व्यापकता का बोध कराया। श्लोकों की विषय वस्तु पर विशेष ध्यान देने से हम पाते हैं कि तुलसीदास जी ने आध्यात्मिक ज्ञान के विभिन्न सोपानों का क्रमबद्ध परिचय भी दिया है जैसे: प्रथम श्लोक में महात्म्य, द्वितीय श्लोक में साधक की पात्रता, तीसरे श्लोक में साधन मार्ग, चतुर्थ श्लोक में साध्य का परिचय, पंचम श्लोक में सृष्टि का आधार, शष्ठम श्लोक में दृश्य जगत का मिथ्या वाद (अध्यास) और अंतिम सप्तम श्लोक में समाधि अन्तःकरण आनंद) का स्वरूप बताकर सम्पूर्ण सनातन चिंतन को सूत्र रूप में प्रस्तुत कर दिया है। इसका अनुपालन करके जीव अपने परम लक्ष्य ब्रह्म से मिलन या दूसरे शब्दों कहें तो निज स्वरूप प्राप्त कर सदैव के लिए शाश्वत सुख प्राप्त कर सकता है। जय श्री राम।

4. संदर्भ

1. ऋग्वेद, मनोज पब्लिकेशन (2015), 1027 pp.
2. तुलसीदास, 1633, राम चरित मानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2073.), 256 pp.
3. बाल्मीक, 700-400 (BC)., रामायण, गीता प्रेस गोरखपुर, (वि.सं. 2068), 1852 pp.
4. ब्रह्म सूत्र, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2072), 478 pp.
5. ईशावास्योपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2073), 46 pp.
6. कठोपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2073), 160 pp.
7. श्वेताश्वतर उपनिषद, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2073), 256 pp.
8. मुण्डकोपनिषद्, गीता प्रेस गोरखपुर, (वि.सं 1992), 122 pp.
9. तैतिरीयोपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2073), 221 pp.

10. ऐतरयोपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2068), 94 pp.
11. छान्दोग्योपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2073), 928 pp.
12. बृहदारण्यकोपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2072), 1376 pp.
13. अद्वैतारक उपनिषद्, www.shdvef.com, 17pp.
14. अथर्ववेदी की पैप्पलाद संहिता, आदित्य प्रकाशन, (2008), अंसारी रोड, नई दिल्ली।
15. दुर्गा सप्तशती (सं मार्कंडेय पुराण), गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2067), 292 pp.
16. श्रीमद् भगवत गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर, (वि.सं. 2072), 256 pp.
17. मोरारी बापू, 1970, भावार्थ रामायण, मानस प्रकाशन, करोल बाग, दिल्ली, 728 pp.
18. रमण महर्षि, उपदेशासार (व्याख्याकार स्वामी सुबोधानंद), 2019, चिन्मय तपोवन ट्रस्ट, सिद्धबाड़ी, कांगड़ा, 280 pp.
19. स्वामी शंकरानन्द, 2017, तत्व - बोध, सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, मुम्बई, 56 pp.
20. स्वामी चिन्मयानंद, 1999, श्रीमद् भगवत गीता, (अनुवाद स्वामी तेजोमयानन्द) सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, मुम्बई, 872 pp.
21. स्वामी सुबोधानंद, 2022, गीता तात्पर्य बोधिनी सप्तम अध्याय, सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, मुम्बई, 155 pp.
22. स्वामी करपात्री, 2000, कृष्ण कोश (भक्ति सुधा - पृ. 736)
23. पुरुषोत्तम श्रीवास्तव, 2022. चलें नित्य की ओर - पुरु सतसई, जयपुर, प्रिंटर्स, जयपुर, 152 pp.
24. पुरुषोत्तम श्रीवास्तव, 2023., अनुभूति के पल, बोधि प्रकाशन, जयपुर, 144 pp.
25. नरेन्द्र कुमार, 2019, उपनिषद् विज्ञान, शोर्यभूमि पब्लिकेशन, जयपुर, 283 pp.
26. नीलकंठ, 2012, मंत्र - रामायण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

श्री वाल्मिकी रामायण और श्री रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन

राकेश चौबे
(rakeshanju1988@gmail.com)

1. शोध-सार

तुलना यदि शेर और शेर के बीच हो तो क्या कहा जा सकता है, तुलना बाह्य ही होगी जैसे इसकी उम्र इसका रंग इसकी प्रजाति आदि आदि, शेर तो शेर ही रहेंगे | दोनों कवि और उनके साहित्य अपने समय के श्रेष्ठ साहित्य तो हैं ही प्रभु श्रीराम को समर्पित हैं, समर्पण प्रभु कृपा से मिलती है | एक संस्कृत के महाकवि और उनकी रचना पहली महाकाव्य से सुशोभित है तो दुसरे हिंदी के महाकवि और उनकी मानस आज की सबसे लोकप्रिय रचना| दोनों ने प्रभु श्रीराम के चरित्र को आम जन के लिए इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वे अपने चारिरिक विकास के लिए आधार और माप-दंड के रूप में उपयोग कर जीवन को सफल बनायें | यहाँ हम साहित्य, भाषा से ज्यादा श्रीराम के गुणों और उनसे जुड़े प्रसंगों पर तुलनात्मक चर्चा करेंगे |

श्रीराम की कथा में जो प्रचलित प्रसंग हैं उनको दोनों महान कवियों ने कैसे देखा यह हम यहाँ देखेंगे, हलाकि बाबा ने अपने ग्रन्थ के प्रारंभ में ही **“कवीश्वर कपीश्वरौ”** कह कर वाल्मीकिजी को सम्मान दिया है, साथ ही वाल्मीकिजी के साहित्य को अपने काव्य की कथा वस्तु में स्थान दिया है | वाल्मीकिजी ने अपने समय के **श्रेष्ठ मानव अवतार** की कथा को अपने काव्य में पिरोया है | दोनों के काव्य के समय को देखें तो बाबा ने **रामायण** को आधार मानते हुए **राष्ट्रीय चेतना, अधिरचना** (निर्माण, जिसमें सामाजिक,पारिवारिक और देश सभी शामिल हैं) को अपने युग की सामाजिक परिस्थिति के अनुरूप श्रीराम की कथा को मानस में उकेरा है | **“धर्म” राष्ट्रीय चेतना** के लिए एक आवश्यक अंग है, जो उस समय की आवश्यकता थी | आज # और ## के युग में हम बिना गूगल और साहित्यकारों की रचना के सन्दर्भ के कोई नए साहित्य के सृजन की कल्पना कर सकते हैं ? नहीं न ! शायद यही वाल्मीकिजी की विशेषता है और उनके नाम और साहित्य में “आदि” प्रत्यय का कारण और अर्थ भी यही है |

कवि वाल्मीकि ही काव्य के जनक हैं, उसी प्रकार जैसे आधुनिक युग में हिंदी (खड़ी बोली) के लिए हम **भारतेन्दुजी** को याद करते हैं | रामायण मूलरूप में **संस्कृत भाषा** में लिखी गई है और **मानस मुख्यत: अवधी** की रचना है | वाल्मीकि रामायण में **२४०००** श्लोक(१/४/२/) है, वहीं मानस में छंद, चौपाई और दोहे मिलकर **१२५८५** (श्रीराम चरित मंथन, ह्यूस्टन के अनुसार) लाइन हैं | इससे यह स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में विस्तार अधिक है | वाल्मीकि **रामायण को इतिहास और मानस को भक्ति का काव्य** कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी |

2. बीज-शब्द

हम यहाँ विवादों में न पड़कर **गीताप्रेस गोरखपुर** से जो दोनों पुस्तकें छपी हैं उनको ही आधार मानेंगे | उसके अनुसार दोनों पुस्तकों में सात काण्ड हैं और हम कांड के अनुसार प्रसंगों पर चर्चा करेंगें | उत्तरकाण्ड को छोड़कर |

दोनों पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय –

वाल्मीकि रामायण के मुख्यत: तीन अलग अलग पाठ या पुस्तक मिलती हैं जिनमें

१ दक्षिणात्य पाठ

२ गौन्डीय पाठ

३ पश्चिमोत्तरीय पाठ

उपरोक्त २ और ३ काफी मिलते जुलते हैं परन्तु १ में भिन्नता है | दक्षिणात्य पाठ सबसे पुराना है | (**“राम कथा” फादर कामिल बुल्के पेज / ४७-४८)**

वाल्मीकि रामायण में प्रक्षेप या छेपक बहुत हैं येंसा विद्वान मानते हैं | जिसकी चर्चा आगे प्रसंगों के साथ करेंगे |

तुलसीदास जी की श्रीरामचरित्रमानस में येंसा कुछ नहीं है क्योंकि यह “संबत सोलह सै एकतीसा “ संवत १६३१ में श्रीराम जन्म से बाबा ने लिखना प्रारंभ किया और लगभग ९६६ दिनों में श्रीराम विवाह के दिन समाप्त किया जिसकी मूल प्रति भी उपलब्ध है | अर्थात मानस लगभग ५०० वर्ष पहले ही लिखी गई है |

दोनों कवियों का कथानक एक ही है परन्तु समय, भाषा और उद्देश्य के कारण दोनों कवियों की कथा में कहीं कहने के ढंग तो कहीं कथा में भी भिन्नता मिलती हैं परन्तु यदि शोध परक दृष्टी अपनाएँ तो पायेंगे कि कथा तो एक ही हैं कहने का ढंग अलग-अलग है | प्रभु श्रीराम के जन्म से लेकर रामराज्य की स्थापना तक की कथा दोनों विभूतियों ने कही है परन्तु वाल्मीकिजी ने इतिहास और भूगोल के साथ सम्बंधित पात्रों के चारित्रिक विशेषता पर भी जोर दिया है जैंसे पुत्रकामेष्ठी यज्ञ के ऋषी शृंगी के बारे में वाल्मीकिजी ने विस्तार से बताया है | राजा दशरथ की पुत्री शांता, शृंगी ऋषि की कथा

के साथ देवताओं ने श्रीराम की मदद के लिए अपने वंशजों को धरती पर बानर, रीछ आदि के रूप में जन्म लेकर श्रीराम की मदद हेतु भेजा उसको भी बताते हैं | (सर्ग ८ से १७ तक विस्तार से यज्ञ और शृंगी ऋषी की कथा का उल्लेख है)

परन्तु बाबा ने सिर्फ एक अर्धाली में चर्चा समाप्त कर दी है - सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा, पुत्रकाम सुभ जग्य करावा |१/१८९/५ इसी प्रकार अन्य प्रसंगों में भी हम आगे विस्तार से देखेंगे |

तुलसीदासजी ने कथानक को उसके प्रसंग के अनुसार बल देने के लिए रस, छंद और अलंकार का उपयोग किया है | वाल्मीकिजी ने तथ्यपरक और यथार्थ वर्णन किया है, जैंसे -

तुलसीदास जी – गौतम नारी श्राप बस उपल देह धरि धीर | १/२१०/दो (उपल देह) हृदय विहीन संवेदना विहीन नारी |

वाल्मीकि रामायण – वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी | १/४८/३० (राख में सोई रहो) नहीं सुन रहे हो, तो जाओ जो समझ आये करो , उपेक्षित करना, ध्यान न देना |

इसके साथ अहल्या अपने अपराध की स्वीकारोक्ति वाल्मीकि रामायण में करतीं हैं जबकि मानस मैं इस प्रकार नहीं है | यहाँ वाल्मीकिजी जटिल सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को स्त्री पुरुष के संबंधों को मुहावरों में ढालकर, प्रसंग के कई अनछुए पहलूओं की तरफ इशारा करते हैं | जैंसे- इंद्र औपनिवेशिक और उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं | आज दुनिया का दृष्टिकोण स्त्री के प्रति अहल्या जैंसा ही तो है, जिसका शोषण लालच, झूठे गौरव, भ्रष्ट आचरण और चालाकी से रोज हो रहा है |

इस प्रकार के कई प्रसंगों पर आगे हम विस्तार से यहाँ चर्चा करेंगे |

3. शोध आलेख

काण्डों के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन –

बालकाण्ड – मानस में ३६१ दोहे हैं और रामायण में ७७ सर्ग हैं |

मुख्य प्रसंग –

भूमिका

जन्म के कारण और पुत्रकामेष्ठी यज्ञ

श्रीराम जन्म और विश्वामित्र द्वारा श्रीराम को मांगना

श्रीराम विवाह

१ बालकाण्ड प्रारंभिक काण्ड होने से दोनों कवियों ने अपने ग्रन्थ के बारे में कुछ विचार रखे हैं, उस पर चर्चा करते हैं |

दोनों महान कवियों का श्रीराम काव्य रचना का उद्देश्य -

वाल्मीकिजी ने नारदजी से पूछा इस समय **संसार में गुणवान, वीर्यवान धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है –**

को न्स्मिन साम्प्रतं लोके गुणवान कशच वीर्यवान |
धर्मज्ञशच, कृतज्ञशच सत्यवाक्यो दृढ़व्रत: || १/१/१

नारद जी कहते हैं –

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनै: श्रुत: |
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान घृतिमान यशी || १/१/८

इक्ष्वाकु वंश में राम नाम से विख्यात, मन को वश में रखने वाले, कान्तिमान, धैर्यवान और जितेन्द्रिय पुरुष हैं |

मन में श्रीराम का ध्यान रखते हुए वे स्नान हेतु तमसा नदी के किनारे जाते हैं वहां क्रोंच पक्षी के जोड़े को एक निषाद घायल कर देता है जिसे देख कवि हृदय वाल्मीकि जी के मुख से निकलता है –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती समा: |
यत क्रोंचमिथुनादेकमवधी: काममोहितम || १/२/ १५

इस श्लोक ने वाल्मीकिजी को श्रीराम कथा लिखने के लिए काव्य का आधार दिया और जब प्रभु कृपा हो तो सभी कुछ हमारे पक्ष में होता चला जाता है | ब्रह्माजी स्वयं श्रीराम के चरित्र के वर्णन की आज्ञा कविश्रेष्ठ को देते हैं | उसका आधार वही हो जो नारदजी ने की है |यथा

रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वमृशिसत्तम|
धर्मात्मनो भगवतो लोके रामस्य धीमत: || १/२/३२
वृतं कथय धीरस्य यथा ते नारदाच्छुतम |

यह आधार है रामायण को लिखने का, जिसका उद्देश्य श्रीराम के पवन चरित्र को काव्य में लिखकर आमजन के जीवन में श्रीराम के समय का इतिहास और उनकी भक्ति संचार करना था |

इससे यह भी स्पष्ट होता है की रामायण महाकाव्य श्रीराम के युग में ही लिखा गया था | इसका एक और प्रमाण लव-कुश की कथा में भी मिलता है|

अब तुलसी बाबा की बात करते हैं की उन्होंने श्रीरामचरितमानस की रचना किस उद्देश्य से की-

नानापुराण निगमागम सम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिद्न्यतोअपि |
स्वांत:सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति || १/ श्लोक ७

तुलसीदासजी यहाँ यह तो कहते हैं की में स्वत: सुखाय इस काव्य की रचना कर रहा हूँ, पर वह सुख क्या है-

भनिति मोरि सब गुण रहित, बिस्व बिदित गुण एक |
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्ह कें बिमल बिबेक || १/९/दो
मेरी रचना में बैसे तो कोई खास बात नहीं है परन्तु एक गुण अवश्य है -
एहि महँ रघुपति नाम उदारा, अति पावन पुराण श्रुति सारा |
मंगल भवन अमंगल हारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी || १/१०/१-२
वे अपनी का रचना का आधार ग्रन्थ और कवि रामायण और वाल्मीकिजी को ही मानते हैं |

कवीश्वरो कपीश्वरौ की स्तुति के साथ आगे भी कहते हैं –

तेहिं बल मैं रघुपति गुण गाथा, कहिहऊँ नाइ राम पद माथा |
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई, तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई ||१/१३/९-१०
बंदउ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ | १/१४(घ) सो 2

यहाँ, प्रथम व्यक्ति जिन्होंने रामायण का निर्माण किया और श्रीराम की प्रसंशा की है, येंसे आदि कवि वाल्मीकि जी की मैं वंदना करता हूँ |

श्रीराम के जन्म की कथा -

दोनों कवियों ने श्रीराम के जन्म के प्रसंग को सामान रूप से अपने काव्य में व्यक्त किया है | दोनों ही ऋषी श्रंगी के द्वारा पुत्रकामेष्ठी यज्ञ और उससे प्राप्त हविष अर्थात खीर का मिलना, उसका बंटवारा जिससे कौसल्या से श्रीराम और कैकई से भरत और सुमित्रा से लक्षमण और शत्रुघ्न का जन्म बताते हैं |

तुलसी बाबा एक चौपाई में यज्ञ की चर्चा करते हैं –

सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा, पुत्रकाम सुभ जग्य करावा |१/१८९/५

जबकि वाल्मीकिजी शृंगी ऋषी की कथा को विस्तार देते हैं और राजा दशरथ की पुत्री शांता, शृंगी ऋषि की कथा के साथ देवताओं ने श्रीराम की मदद के लिए अपने वंशजों को धरती पर बानर, रीछ आदि के रूप में जन्म लेकर श्रीराम की मदद हेतु भेजा उसको भी बताते हैं | सर्ग ८ से १७ तक विस्तार से यज्ञ और शृंगी ऋषी की कथा का उल्लेख है)

जन्म का कारण –

तुलसीदासजी - जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा, तुम्हहि लागि धरिहऊँ नर बेसा | १/१८७/१
बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार | १/१९२/दो
वाल्मीकिजी – भयं त्य्तात भद्रं वो हितार्थ युधि रावणं |
सपुत्र पौत्रम सामात्यं समन्त्री ज्ञाति बांधवं ||१/१५/२८
रावण ही नहीं उसके वंश का समूल नाश करूंगा |

हमारी संस्कृति में इन कथा के द्वारा सीधा सन्देश है यहाँ अत्याचार स्थाई नहीं हो सकता है | अत्याचारी कितना भी शक्ति शाली हो उसका अंत निश्चित है और वह भी सामान्य स्थिति, परिस्थियों में बहुत शक्ति और युक्ति आवश्यक नहीं, सीघे चुनौती दी जा सकती है, जैसे श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों ने दी थी |

श्रीराम के विवाह के पूर्व और पश्च्यात के प्रसंग –

विश्वामित्र द्वारा श्रीराम को सहायता के लिए मांगना और ताटका वध-

ताटका वध- प्रसंग में भी दोनों कवियों ने लगभग एक से ही विचार अपने काव्य में व्यक्त किए है | वाल्मीकिजी ने ताटक के जन्म और वध को विस्तार से बताया है (सर्ग २५-२६) |

मुख्य अंतर जिसका मानस में संक्षेप में वर्णन है –

वाल्मीकि रामायण में विश्वामित्र द्वारा जो शक्तियां, अस्त्र शस्त्र श्रीराम लक्षमण को प्रदान किए उनका विस्तार से वर्णन है **(सर्ग २७-२८)** |

सिद्ध आश्रम और वामन अवतार की कथा (सर्ग २९)

सिद्धाश्रम को राक्षसों से मुक्त करने के बाद मिथिला प्रस्थान के समय विश्वामित्रजी श्रीराम को उनके वंशजों की कहानी भी सुनाते हैं | (सर्ग ३८-४४) जिसमें राजा सगर के पुत्रों को तारने (मोक्ष) के लिए राजा भगीरथी द्वारा गंगा को लेकर आने की कहानी भी उद्धत है |

गंगा के प्रसंग का सीधा सम्बन्ध श्रीराम के वंश से है और शायद वाल्मीकिजी ने एक सारभूत गंगा के अवतरण **को श्रीराम के चरित्र में देखा होगा** इसीलिए यहाँ इसका विस्तार दिया है |जिसके उदाहरण हैं -

अहल्या, निषाद, शबरी, बाली, विभीषण जैसे पात्रों को भी तो श्रीराम ने अपने स्पर्श ने ही पवित्र किया था |

राजा जनक के यहाँ प्रस्थान का कारण –

यहाँ दोनों काव्य के केंद्र बिंदु में धनुष तो है, परन्तु एक धर्म यज्ञ तो दुसरा धनुष यज्ञ की बात करते हैं देखिये

वाल्मीकि जी ने कहा -

मैथिलस्य नरश्रेष्ठ जनकस्य भविष्यति |
यज्ञ: परमधर्मिष्ठस्तत्र यास्यमाहे वयं || १/३१/६

धर्म यज्ञ में अद्भुत धनुष को दिखाने ले जाने का कहते हैं |

तुलसीदास जी धनुष यज्ञ की बात करते हैं –

तब मुनि सादर कहा बुझाई, चरित एक प्रभु देखिया जाई |
धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा, हरषि चले मुनिबर के साथा || १/२१०/९-१०

अहल्या प्रसंग -

तुलसीदास जी – गौतम नारी श्राप बस उपल देह धरि धीर | १/२१०/दो (उपल देह) ह्रदय विहीन संवेदना विहीन नारी |

वाल्मीकि रामायण – वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी | १/४८/३० (राख में पड़ी रहो)नहीं सुन रहे हो, तो चूल्हे में जाओ, उपेक्षित करना, ध्यान न देना |

इसके साथ अहल्या अपने अपराध की स्वीकारोक्ति वाल्मीकि रामायण में करतीं हैं जबकि मानस मैं इस प्रकार नहीं है | यहाँ वाल्मीकिजी जटिल सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को स्त्री पुरुष के संबंधों को मुहावरों में ढालकर उसके अनछुए पहलूओं की तरफ इशारा करते हैं |

इस प्रसंग में इंद्र औपनिवेशिक और उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं | आज दुनिया का दृष्टिकोण स्त्री के प्रति अहल्या जैंसा ही तो है, जिसका शोषण लालच, झूठे गौरव, भ्रष्ट आचरण और चालाकी से रोज हो रहा है |

देश, काल, वातावरण का प्रभाव साहित्य में दीखता है, शायद बाबा ने इसे स्वीकारते हुए कई तथ्यों पर चुप्पी ही साधना ठीक समझा है | वाल्मीकिजी इस प्रकार के प्रसंगों में मुखर दिखे हैं | यहाँ ऐतिहासिक काव्य और भक्ति काव्य का अंतर स्पष्ट होता है |

गाधिपुत्र के ब्राह्मणत्व प्राप्त कर ऋषी विश्वामित्र बनाने की कथा वाल्मीकि रामायण में है, (सर्ग ३२-३४) जो मानस में इशारे इशारे में कही गई हैं |

धनुष भंग – वाल्मीकि रामायण और मानस में यह प्रसंग बहुत अलग है |

वाल्मीकि रामायण में विश्वामित्र धनुष दिखाने को कहते हैं सर्ग ६६ श्लोक १ मुनि की आज्ञा से श्रीराम धनुष को बीच से पकड़कर उठाते हैं और प्रत्यंचा चढाते ही वह टूट जाता है |

वहीँ मानस में श्रीराम को विश्वामित्र जी कहते हैं –

उठहु राम भंजहु भवचापा |१/२५६/६
लेत चढ़ावत खैंचत गाढें......... तेहि छन राम मध्य धनु तोरा |१/२६१/७-८
यहाँ दोनों काव्य के केंद्र में धनुष भंग की शर्त और सीताजी स्वयंवर समान ही है |

भारत के इतिहास की तरफ यदि दृष्टीपात करें तो पायेंगे कि त्रेता अर्थात वाल्मीकिजी के समय समाज शैव, शाक्त और वैष्णव जैसे संप्रदाय में नहीं बंटा था परन्तु तुलसीदासजी के समय इसका समाज में बहुत प्रभाव था, इसलिए दोनों के काव्य में इसका प्रभाव दिखता है |

वाल्मीकि रामायण में परसुराम विवाह की विदाई के बाद जंगल में मिलते हैं, जबकि मानस में यज्ञशाला में यह बड़ा अंतर है | परन्तु अंतिम परिणाम दोनों में एक ही है, परसुरामजी के स्थान पर श्रीराम का अवतार रूप में स्थापित होना |

गंभीरता से विचार करिए दोनों के प्रसंगों को तो पायेंगे की बाबा का धनुष प्रसंग शैव परम्परा का द्योतक है जो अन्तोगत्वा वैष्णव में मिलता है, परन्तु वाल्मीकिजी ने श्रीराम को विष्णु के अवतार स्वरूप को सिद्ध करने के लिए धनुष प्रसंग का प्रयोग किया है | एक बात और विशेष है जनक क्षत्रीय होते हुए विदेह हैं,**अर्थात ब्राह्मण और परसुराम, ब्राह्मण** होते हुए क्षत्रिय और दोनों **धनुष भंग प्रसंग के विशेष किरदार हैं** |

विवाह प्रसंग

मानस में बहुत रोचक ढंग से विवाह के सामाजिक रीति-रिवाज का वर्णन मिलता है, परन्तु **वाल्मीकि रामायण** में यह प्रसंग सीधा सीधा दिया है | इस प्रकार समझ सकते हैं की मानस में यह प्रसंग दोहा **२८६ से दोहा ३६१** बालकाण्ड के अंत तक है | वाल्मीकि रामायण में सिर्फ एक **सर्ग ७३ में ४० श्लोक** में इसका वर्णन है | वाल्मीकि रामायण में बालकाण्ड **परसुराम प्रसंग** पर समाप्त होता है, जबकि बाबा **शादी के आनंद** के साथ अपने बालकाण्ड को समाप्त करते हैं |

हम सब को ज्ञात ही है कि शादी में दूल्हा और दुल्हन अग्नि को साक्षी मानकर **सात फेरे लेते हैं,** परन्तु वाल्मीकि रामायण में **३ फेरों** का ही उल्लेख मिलता है |

बाबा तुलसी ने लिखा – **करि होमु बिधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भावंरीं** १/३२४/दो/छंद भावर

वाल्मीकि रामायण – **त्रिरगिन्म ते परिक्रम्य ऊहूभार्या महौजस:** | १/१/७३/३९ यहाँ ३ जबकि प्रचालन में ७ भावर हैं |

अयोध्याकाण्ड –

रामायण में ११९ सर्ग और मानस में ३२६ दोहे हैं |

प्रारंभ

श्रीराम का वनवास

कैकई की मानसिकता और मंथरा प्रसंग

संवाद

प्रस्थान

चित्रकूट प्रसंग

राजा दशरथ मरण

भरत का चित्रकूट प्रस्थान

श्रीराम का बापसी के लिए मना करना

भरत का अयोध्या बापसी

प्रारंभ - दोनों ही रामायण में अयोध्याकाण्ड का प्रारंभ राजा दशरथ का अपनी वृद्ध अवस्था का जिक्र और श्रीराम को युवराज धोषित करने से होता है देखें-

वाल्मीकि रामायण –

अथ राज्ञो बभूवैव वृद्धस्य चिरजीविन: | प्रीतिरेषा कथं रामो राजा स्यन्मायी || १/२/१/३६

तं चंद्मिव पुष्येण युक्तं धर्मभ्रुतां वरम | यौवराज्ये नियोक्तास्मी प्रात: प्रुरुषपुंगवम || १/२/२/१२

तुलसी कृत मानस में –

श्रवन समीप भए सित केसा २/२/७

भए राम सब बिधि सब लायक | २/३/१

सुदिन सुमंगल तबहिं जब, रामू होहिं जुबराजू | २/दो/४

श्रीराम का निर्वासन –

वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ यह जानते थे कि यह जल्दबाजी का निर्णय है और कैकई नरेश और जनकजी को इस शुभ समाचार को नहीं भेजना उचित नहीं है परन्तु वे सोचते है इसकी सूचना उन्हें बाद में कर देंगे | १/२/१/४८

यही आगे जाकर विवाद का कारण बनता है | इसका जिक्र मानस में नहीं है |

युवराज पद पर श्रीराम की घोषणा का निर्णय राजा सार्वजनिक रूप से सभी सभासदों की सहमती से करते है जिसका उल्लेख दोनों कवि ने किया है| मानस में मानवीय भावनाओं का बहुत सुन्दर चित्रण है जो उसे लोकप्रिय बनाता है, यहाँ श्रीराम के मन में अपने भाइयों के प्रति प्रेम श्नेह देखने को मिलता है | देखें -

पुलकि सप्रेम परसपर कहहिं, भरत आगमनु सूचक अहहिं | २/७/५

भरतजी के प्रति विशेष प्रेम व्यक्त होता है | आगे वे अपने राज्याभिषेक से बहुत खुश नहीं है क्योंकि

राम हृदय अस बिसमउ भयऊ |२/१०/६

जनमे एक संग सब भाई २/१०/

बिमल बंस यहु अनुचित ऐकू, बन्धु बिहाई बड़ेहि अभिषेकू | २/१०/७

हम सभी भाई एक साथ खेले बड़े हुए शादी भी साथ हुई, फिर मुझे ही युवराज क्यों बनाया जा रहा है | बड़े बेटे को युवराज बनाने की यह वंश परम्परा उचित नहीं है |

कैकई प्रसंग –

प्रारम्भ में कैकई के मन में राम के राज्याभिषेक से प्रसन्नता दोनों कवि लिखते है –

रामायण – अतीव सा तू संतुष्टा कैकयी विस्मयान्विता १/२/७/३२

मानस – प्रान तें अधिक रामू प्रिय मोरें, तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें | २/१५/८

परन्तु कोई न कोई विघ्न संतोषी आज भी हमारे समाज में देखने को मिलते है, जो कोई न कोई कारण से शुभ कार्य में विघ्न डालते हैं, उससे बचना या उलझना हमारी सोच पर निर्भर करता है | यहाँ मंथरा है जिसे बाबा ने कैकई से कहलवाया है कि वह घर फोडू सा काम न करे परन्तु इस प्रकार के लोग आसानी से हार नहीं मानते और यदि हम नहीं सम्हल पाते तो जिन्दगी भर हमें अपयश झेलना पड़ता है |

पुनि अस कबहूँ कहसि घरफोरी, तब धरि जीभ कढावऊ तोरी |२/१४/८

परन्तु विनाशकाले विपरीत बुद्धि की शिकार हो जाती हैं | शेष कहानी दोनों ही पुस्तकों में सामान ही हैं फिर चाहे वह कोपभवन की या दो वरदान की हो |

वाल्मीकि रामायण को इतिहास इसलिए कहते हैं कि यहाँ आंकड़ों का भी जिक्र है –

दश सप्त च वर्षाणि जातस्य तव राघव | १/२/२०/४५

यहाँ श्रीराम की वनगमन के समय आयु का जिक्र है जहाँ माता कौसल्या श्रीराम को कहती हैं १० वर्ष जनेऊ के उसके बाद १७ वर्ष बीत गए परन्तु इन २७ वर्षो मैं मुझे आज तक पुत्र सुख नहीं मिला और पति से भी उपेक्षित रही हूँ | अब एक आशा तुमसे थी तो तुम भी वन को चले मैं कैसे जियूंगी|

दशरथ का पुत्र शोक और मृत्यु –

वाल्मीकिजी – हा राघव महाबाहो ममायासनाशन |

हा पितृप्रिय में नाथ हा ममासि गत: सूत ||१/२/६४/७५

तुलसीदासजी - राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम |

तनु परिहरि रघुबर बिरहँ, राऊ गयउ सुरधाम || २/१५५/दो

श्रवण कुमार की कथा –

तुलसीदास जी – तापस अंध साप सुधि आई, कौसल्याहि सब कथा सुनाई |२/ १५५/३

वाल्मीकिजी ने इस प्रसंग को दो सर्ग में दशरथजी यह कथा कौसल्याजी से कहते हैं सर्ग ६३-६४ में | यहाँ पर वाल्मीकिजी दो सन्देश देने का प्रयास करते हैं एक कर्मों का फल भोगना ही होता है और राजा कितना भी शक्तिशाली हो परन्तु आम आदमी की भी अपनी ताकत होती है यह नहीं भूलना चाहिए | राजमद में आम आदमी की भावना और अधिकार को आहात नहीं करना चाहिए |

भरतजी का प्रसंग –

यहाँ पर भी सभी कथा के अंश दोनों काव्य में समान ही हैं | दोनों कवियों की कथा में भरत द्वारा राज्य स्वीकार नहीं करना, रामजी को मनाने चित्रकूट जाना और श्रीराम द्वारा मना करने पर उनकी चरण पादुका ले कर बापिस आना के प्रसंग में लगभग समानता ही है फिर भी कुछ अंतर जो मुझे दिखे आपको बताता हूँ |

तुलसीदासजी ने राजसिहासन पर पादुका को बैठकर स्वयं नंदीग्राम में बैरागी सा जीवन यापन करने लगना तक की कथा का विस्तार और जिस मनोभावों के साथ किया है, वह आमजन में मानस की पैठ को बढ़ाता है | यहाँ भरतजी का चरित्र अनुकरणीय है तो श्रीराम का व्यवहार कई शिक्षा देता है | भरतजी का अपने भाई के प्रति समर्पण देखिए -

अरथ न धरम न काम रूचि, गति न चहऊ निरबान |

जनम जनम रति राम पद, यह बरदानु न आन ||२/२०४/दो

भ्रात प्रेम के लिए भी बाबा ने कहा है –

होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए, ओड़ीअहि हाथ असनिहु के घाए | २/३०६/८ कुअवसर पर श्रेष्ठ भाई ही सहायक होते हैं | वज्र के आघात भी हाथ से ही रोक जाते हैं|

संदर्भित कथा -
तुलसीदासजी ने अपने काव्य में कई कथाओं का उल्लेख तो किया है परन्तु उसका विस्तार नहीं किया क्योंकि उनके काव्य का उद्देश्य प्रभु श्रीराम की कथा पर केंदित था जैसे भरतजी के चित्रकूट प्रसंग में ६ कथाओं को मात्र २ चौपाई में लिखा दिया | जबकि वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार की कथा को विस्तार से बताया है, जैंसे-
राजमद की कथा -

ससि गुरु तीय गामी नघुषु, चढ़ेउ भूमिसुर जान |
लोक बेद तें बिमुख भा, अधम न बेन सामान || २/२२८/दो
सहसबाहू सुरनाथु त्रिसंकू, कही न राजमद दीन्ह कलंकू | २/२२९/१

यहाँ राजमद में अंधे होकर किन किन ने दुःख भोगा उसका उल्लेख है |
भौगोलिक स्थिति –
वाल्मीकि रामायण जो श्रीराम के समय लिखी गई है इसलिए उस समय का इतिहास और भूगोल इसमें देखने को मिलता है – यथा
जब भरत को सैनिक शीघ्र लेने जाते हैं तब वे छोटे मार्ग से जाते हैं, परन्तु जब भरतजी लाव-लस्कर से अपने मामा के घर से अयोध्या जिस मार्ग से आते हैं उसका वर्णन विस्तार से लिखा है, जो कवि का भूगोल का ज्ञान प्रदर्शित करता है | हमें उस समय की भौगोलिक स्थिति का भी ज्ञान यहाँ मिलता है देखे सर्ग ७१
श्रीराम को राजनैतिक ज्ञान –
वाल्मीकि रामायण में भरत मिलाप के समय ,भरतजी से श्रीराम कुशल क्षेम के बहाने राजनीति के उपदेश सर्ग १०० में विस्तार से देते हैं इससे यह ज्ञात होता है, कि श्रीराम को राजनीति का अच्छा ज्ञान था | जबकि मानस में बाबा ने अलग से नहीं दर्शाया है | बाब का तो प्रयास रहा है कि वे श्रीराम के चरित्र से ही सारी बात समझाएं |

वाल्मीकिजी ने यहाँ एक येंसे पात्र को लिया है जिसका नाम जबालि है जो आज के भौतिकवादी युग का प्रतिनिधित्व करता है जिसको श्रीराम द्वारा नास्तिक कहलाया है | इसके तर्क आज की मानसिकता में सही लगते हों परन्तु यदि मानव को अपने जन्म का उद्देश्य प्रारंभ में ही ज्ञात हो जाता है तो वह इन तर्कों से प्रभावित नहीं होता है | जब ३ संस्कृतियों में देवसंस्कृति, असुर संस्कृति और मानव संस्कृति को देखें तो जब भी मानव संस्कृति अपना विकास करती है, तो मानव की इस यात्रा में अवतार अवश्य होता है और उस श्रेष्ठ मानव की यह यात्रा नर से नारायण की होती है |
पादुका प्रसंग –
में एक प्रश्न हमेंशा उछलता है कि श्रीराम नंगे पैर थे, तो पादुका कहाँ से आई इसका जवाब वाल्मीकिजी देते हैं
मानस में- प्रभु करि कृपा पॉवरीं दीन्हीं, सादर भरत सीस धरि लीन्हीं |/२/३१६/४
अधिरोहार्य पादाभ्यां पादुके हेमभूषिते|
एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यत: ||१/२/११२/२१ भरतजी स्वर्ण पादुका लेकर आते हैं जिनको श्रीराम को पहनाते हैं |
अयोध्याकाण्ड का समापन दोनों काव्य में भरतजी के अयोध्या लौटने से ही होता है |

अरण्यकाण्ड –

रामायण में कुल ७५ सर्ग हैं और मानस में ४६ दोहे हैं |
इस काण्ड में मुख्य प्रसंग निम्न हैं –
विराध वध
शरभंग ऋषि का प्रसंग
सुतीक्षण मुनि का आश्रम
अगस्त ऋषि जहाँ से पंचवटी प्रस्थान
जटायु प्रसंग
सूर्पनखा प्रसंग
सीता हरण
सीता की खोज
जटायु प्रसंग
कबंध का सुग्रीव से मिलने का प्रस्ताव देना
शबरी प्रसंग

श्रीराम चरित मानस में अरण्यकाण्ड का प्रारंभ बहुत सुन्दर प्रसंग से है जहाँ श्रीराम और सीता का प्रेम प्रसंग है-

एक बार चुनि कुसुम सुहाए, निज कर भूषण राम बनाए |

सीतहि पहिराए प्रभु सादर, बैठे फटिक सिला पर सुन्दर ||३/१/३-४

उसके बाद जयंत प्रसंग है | रामायण में यह प्रसंग यहाँ नहीं है सुन्दरकाण्ड में आता है |

श्रीराम की लीला का वर्णन मानस में –

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला, मैं कछु करबि ललित नरलीला |

तुम्ह पावक महूँ करहु निवासा, जौं लगि करौं निसाचर नासा ||३/२४/१-२

आगे कहते हैं -

निज प्रतिबिम्ब राखि तहँ सीता ३/२४/४

लाछिमनहूँ यह मरमु न जाना ३/२४/५

ये दोनों प्रसंग वाल्मीकि रामायण यहाँ नहीं मिलते | रामायण में सीताजी द्वारा श्रीराम से अहिंसा धर्म के पालन के लिए अनुरोध ९ सर्ग है जिसे वे स्वयं उसी काण्ड में तोड़ने को कहती हैं जब स्वर्ण मृग को लाने के लिए कहती हैं | शायद इसी प्रकार के विरोधाभाष विद्वानों को यह कहने को मजबूर करती है कि इसमें बहुत कुछ जोड़ा घटाया गया है प्रक्षिप्त किया गया है यह सर्ग बौध धर्म के सिद्धांतों के करीब लगता है |

पुन: उम्र का उल्लेख -

जैसा पहले भी कहा गया है की इसमें इतिहास, भूगोल और आंकड़ों पर भी बात हुई है सर्ग ४७ देखें जहाँ सीताजी और रावण के बीच जो बात हुई है उसमें सीताजी अपनी और श्रीराम की उम्र का जिक्र करती हैं –

मम भर्ता महातेजा व्यास पंचविन्शक: |

अष्टादश हि वर्षाणी मम जन्मनि गण्यते || १/३/४७/१०

श्रीराम २५ वर्ष से ऊपर और मेरी १८ वर्ष की उम्र थी |

अयोध्याकाण्ड में माता कौसल्या और श्रीराम के बीच वार्ता होती है तब भी उम्र का जिक्र है वहां २७ वर्ष श्रीराम की उम्र बताई गई है | जो वाल्मीकि रामायण से छेड़-छाड़ को सिद्ध करती है |

इस काण्ड की मुख्य कथा सीताहरण है जो लगभग दोनों ही पुस्तकों में सामान रूप से लिखी गई है सिर्फ वाल्मीकिजी ने उस समय सीताजी और लक्षमणजी के बीच की वार्ता में जिस भाषा का उपयोग किया है, वह भाषा बाबा की पुस्तक में नहीं है |

लक्ष्मण रेखा –

यह प्रसंग दोनों पुस्तकों में यहाँ नहीं है |बाबा ने कहा है रामायण सतकोटि अपारा कहा है इसलिए शायद यह किसी अन्य रामायण से लिया गया है| इसीलिए बाबा इस प्रसंग का जिक्र लंका काण्ड में करते हैं, जब मंदोदरी रावण को समझती है –

रामानुज लघु रेख खचाई, सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई | ६/३६/२

अरण्य शब्द की सार्थकता मानस में मिलती है| जहाँ प्रभु श्रीराम का प्रकृति के करीब और ऋषी मुनियों का सानिध्य और उनसे सत्संग का वर्णन अरण्य के वास्तविक अर्थ को सार्थक करती है | मानव जीवन की सार्थकता प्रकृति के नजदीक या उसके साथ में ही है| मानस के अरण्यकाण्ड में भक्ति और सत्संग का रस है इसमें नवधा भक्ति और नारद प्रसंग में संत के लक्षण जैसे प्रसंग सहज ही सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करते हैं, इसीलिए मानस सामान्य जीवनशैली के बहुत नजदीक है |

किष्किन्धाकाण्ड –

वाल्मीकि रामायण में ६७ सर्ग हैं और श्रीरामचरित मानस में ३० दोहे हैं |

प्रारंभ

हनुमान का श्रीराम से मिलन का प्रसंग

सुग्रीव से मित्रता

बाली वध

ऋतुओं का वर्णन

बानरों का खोज के लिए प्रस्थान

दोनों ही पुस्तकों में कथा का प्रारंभ पम्पापुर सरोवर के किनारे घूमते हुए श्रीराम लक्षमण को देखकर सुग्रीव को रिषीमूक पर्वत की तरफ आने की शंका होना और हनुमानजी को पता लगाने भेजने से होता है |

हनुमानजी का श्रीराम से मिलन – यह इस काण्ड का मुख्य आधार है जो दोनों पुस्तकों में प्रमुखता से उठाया है |

मानस में हनुमानजी श्रीराम के सामने साधारण ब्राह्मण के रूप में उपस्थित होते हैं और दोनों भाइयों से उनके वन में विचरण का कारण पूछते हैं | अपने राजा सुग्रीव की तरफ से सारी बात विश्वास और अधिकार से करते हैं | रामायण में श्रीराम हनुमान को वेदों का ज्ञाता बताते है और हनुमान स्वयं अपना परिचय देते हैं जबकि मानस में हनुमानजी स्वयं पहचानकर प्रभु को नतमस्तक प्रणाम करते हैं |

वाल्मीकि रामायण-

राज्ञा वनार्मुख्यानां हनुमान नाम वानर: | १/४/३/२१
नानऋगवेद विनीतस्य नाययजुर्वेदधारिण: |
नासामवेद विदूष: श्क्यमेवं विभाशितुम ||१/४/३/२८

मानस

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना, सो सुख उमा जाई नहिं बरना | ४/२/५

सुग्रीव से मित्रता के प्रसंग में मानस अग्नि को साक्षी मानकर मित्रता करना बताती है जबकि रामायण में येंसा नहीं है |

बाली का वध और उससे जुड़े सारे प्रसंग लगभग समान हैं | श्रीराम की परीक्षा सुग्रीव द्वारा दोनों पुस्तकों में सामान रूप से लिखी है | वाल्मीकि रामायण में बाली को उसके अपराध के लिए मारने की कथा लगभग सामान है ||

मानस में – धर्म हेतु अवतरेहु गोसाई ....
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा ....
अनुज बंधू भगनी सूत नारी, सुनु सठ कन्या सम ए चारी |
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई, ताहि बधें कछु पाप न होई || ४/९ ५-८

वाल्मीकि रामायण में बाली को उसके अपराध के लिए मारने के एक कारण में श्रीराम अपने को राजा भरत के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करते हैं यह विशेष है, चूंकि भरत एक न्याय प्रिय, सत्यवादी राजा हैं इसलिए मेरा निर्णय न्यायोचित है |

तस्य धर्म् कृतादेशा वयमन्ये च पार्थिवा: |
चरामो वसुधां कृतसत्राम धर्म संतान मिच्छव: || १/४/७-९

इसके बाद सुग्रीव द्वारा बानरों को चारों दिशा में भेजने का प्रसंग और दक्षिण दिशा में अंगद के नेतृत्व में जो दल भेजा उसमें हनुमान भी थे श्रीराम हनुमान को अपने नाम अंकित अगूठी देते हैं यह भी प्रसंग दोनों पुस्तकों में है | वाल्मीकि रामायण में चारों दिशाओं का विस्तृत वर्णन और उन दलों के नायकों की विशेषता का उल्लेख वाल्मीकिजी ने किया हैं | सर्ग से ४० से ४६ तक

यहाँ सुग्रीव का विश्व भूगल का वर्णन श्रीराम से करते हैं बताते हैं बाली से बचने के लिए कहाँ कहाँ भागते फिरे उसमें पूरे विश्व का वर्णन है |(सर्ग ४६)

ऋतुओं का वर्णन भी दोनों रामायण में दिया गया है |

किष्किन्धाकाण्ड काण्ड का अंत भी दोनों रामायण में एक सा ही है | जम्बंतजी हनुमानजी को समुद्र लांघने और माता सीता की खबर लाने के लिए प्रेरित करते हैं और हनुमानजी समुद्र लांघने के लिए तैयार हो जाते हैं, यहीं से कथा सुन्दरकाण्ड में प्रवेश करती है |

सुन्दरकाण्ड –

रामायण में कुल ६८ सर्ग हैं और मानस में ६० दोहे हैं |

भूमिका – इस काण्ड में कोई भूमिका नहीं है सीधे हनुमानजी की लंका की यात्रा का वर्णन है शायद इसीलिए मानस में सुन्दरकाण्ड का प्रारंभ चौपाई से होता है विद्वान इसे किष्किंधाकाण्ड से आगे का काण्ड मानते हैं और इसीलिए अक्सर सुन्दरकाण्ड का पाठ किष्किंधाकाण्ड के अंतिम दोहे से प्रारंभ होता है |

हनुमान का लंका में प्रवेश
अशोक वाटिका में सीता माता की स्थिति का प्रसंग
हनुमान सीता का संवाद
लंका दहन
हनुमानजी की वापसी यहाँ रामायण में सुन्दरकाण्ड समाप्त हो जाता है
जबकि मानस में यह कथा लंकासेतु तक चलती है |

हनुमानजी कि लंका यात्रा लगभग दोनों ग्रंथों में सामान हैं सिफ बाबा मसक सामान रूप कपि घरी कहते हैं वहीँ वाल्मीकि जी बिल्ली के सामान छोटा रूप रखते हैं | ५/सर्ग/२/श्लोक ४९

मानस में हनुमानजी लंका में प्रवेश कर विभीषणजी से मिलते हैं जबकि रामायण में इसका उल्लेख नहीं है |

रावण के अंत:पुर के वर्णन में वाल्मीकिजी ने भवनों के प्रकार पुष्पक विमान का उल्लेख किया है, देखें श्लोक ७ सर्ग ४ जिसका जिक्र वाराह्मीर की संहिता में दिया है | ४ द्वार वाले घर सर्वतोभद्र ३ द्वार जिसमें पश्चिम में द्वार न हो नन्घावर्त, जिसमें दक्षिण के अलाबा और कोई द्वार न हो वह वर्धमान, जिसमें पूर्व की ओर द्वार हो उसे स्वस्तिक गृह कहा गया है |सर्ग ४ श्लोक ७

असोक वाटिका प्रसंग -

मानस-तृण धरी ओट देखि वैदेही ५/९/६

रामायण - तृणमंतरत: कृत्वा २/५/२१/३ यह दोनों पुस्तकों में सामान है |

वाल्मीकि रामायण में सीताजी और हनुमानजी की वार्ता में हनुमान जी कहते हैं कि मुझे माता से वार्ता अयोध्या की भाषा अर्थात अवधि में करना चाहिए जिससे यह विशवास दिला सकूँ मैं उनके अपने गाँव का ही हूँ और श्रीराम का दूत हूँ देखें सर्ग ३० श्लोक १९

कुछ छोटे अंतर सुन्दर काण्ड के प्रसंगों में देखने को मिलते हैं जिनमें हनुमानजी माता सीता को अपनी पीठ पर बिठाकर लेजाने को तैयार हो जाते हैं परन्तु माता सीता पराये पुरुष के स्पर्श को जानबूझकर नहीं करने का कह कर मना कर देती हैं | वाल्मीकि रामायण सर्ग ३७ श्लोक ६२

उसी प्रकार जयंत प्रसंग वाल्मीकि रामायण में माता सीता को विश्वास दिलाने के लिए हनुमानजी यहाँ बताते हैं, जबकि मानस में यह प्रसंग अरण्यकाण्ड में मिलता है |

हनुमानजी के असोक वाटिका को क्षति और रावण के दरवार में जो प्रसंग हुए वे भी सामान ही हैं | लंकादहन का प्रसंग भी दोनों पुस्तकों में सामान है |

श्रीराम से मिलकर समाचार सुनाने तक की कथा रामायण में हैं उसके बाद कथा युद्धकाण्ड में चली जाती है | जबकि मानस में कथा सुन्दरकाण्ड में ही आगे बढती है और वह सेतुबंध तक जाती है | रामायण में यह युद्ध कांड में है परन्तु कथा में कोई अंतर नहीं है विभीषण का प्रसंग उनके प्रति विश्वास दोनों पुस्तक में सामान है सर्ग १८ श्लोक ३

मानस - मम पन सरनागत भयहारी |

समुद्र प्रसंग भी दोनों पुस्तकों में एकसा ही है | वही ३ दिन प्रार्थना फिर क्रोध और उसके बाद समुद्र द्वारा समुद्र को पार करने का उपाय बताना नल-नील का सेतुबांध बनाना,आदि आदि |इस प्रकार कथा युद्ध में प्रवेश करती है |

रामायण में युद्धकाण्ड और मानस में लंकाकाण्ड-

वाल्मीकि रामायण में कुल १२८ सर्ग हैं, परन्तु सर्ग १ से ४१ तक की कथा लंका अभियान है, जिसकी चर्चा हम सुन्दरकाण्ड में कर चुके हैं अब यहाँ युद्ध में सीधे जायेंगे, मानस में १२१ दोहों में युद्ध का विस्तार है |

नागपाश प्रसंग

द्वन्द युद्ध

कुम्भकरण वध

लक्षमण शक्ति प्रसंग

इन्द्रजीत वध

रावण वध

दोनों पुस्तकों में युद्ध का वर्णन अलग अलग है रामायण में अधिक विस्तार से एक एक सेनापतियों के साथ और रावण के साथ युद्ध की चर्चा की गई है परन्तु विशेष प्रसंगों में बहुत अधिक अंतर नहीं है जिनसे नागपाश, लक्षमण शक्ति, छल-युद्ध, रावण का श्रीराम से हारकर युद्ध से पलायन आदि आदि | बानर सेनापतियों का वर्णन भी रामायण के सर्ग२७ में विस्तार से दिया है |

कुछ विशेष अंतर -

मानस में लक्ष्मण शक्ति के समय हनुमानजी अयोध्या पर से लौटते हैं तब भरतजी से मुलाकात का उल्लेख रामायण में नहीं है, दोहा ५९ देखें इसके साथ ही कई छोटे छोटे प्रसंग जो मानवीय भावना और भक्ति के आधार पर मानस में दिए हैं उनका अभाव रामायण में है जैसे बिभीषण पर रावन द्वारा प्रहार को श्रीराम झेलते हैं आदि दोहा ९४/२

अगस्त ऋषी द्वारा आदित्य हृदय स्त्रोत का भी रामायण में उल्लेख जबकि मानस में नहीं है सर्ग १०५ देखें |

विभीषण से युद्ध के दौरान चर्चा –

मानस में दोहा ७९-८० प्रभु धर्म-रथ की चर्चा करते हैं जबकि रामायण में श्रीराम को इंद्र सीधे ही रथ भेजते हैं | रामायण में इस प्रकार कई प्रसंग सीधे सीधे हैं जबकि मानस में इनको मानवीय भावना से जोड़कर बाबा ने प्रस्तुत किया है |

रावण वध -

सर्ग १०८ में श्रीराम रावण का वध करते हैं यहाँ भी थोडा अंतर है मानस में बिभीषण नाभि में अमृत की बात करते हैं, मानस - ६/१०२ ५

परन्तु यहाँ अगस्तमुनी द्वारा दिए अस्त्र जिसका स्मरण मातलि इंद्र का सारथी करता है से रावण का वध बताया है सर्ग १०८/ श्लोक ३ और १९ |
सीताजी की अग्नि परीक्षा का प्रसंग-
भी दोनों पुस्तकों में है परन्तु रामायण में श्रीराम द्वारा सीताजी के लिए जिस भाषा का उपयोग किया है वह उल्लेख करने योग्य नहीं लगती, शायद यही कारण है की वाल्मीकि रामायण सर्वग्राह्य नहीं बन पाई |
मानस में लंकाकाण्ड की समाप्ति भरतजी को सूचना देने पर समाप्त होती है |

रामायण कुछ प्रसंग आगे के भी सम्मलित किए हैं जिसमें मुख्यत: राज्याभिषेक का प्रसंग शामिल है जिसमें कहने का ढंग अलग हो सकता है परन्तु भाव बाबा के "दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज काहू नहीं व्यापा" जैंसे ही हैं | प्रकृति का सहयोग भी राज्य हित में है और प्रजा भी धर्मपरायण है| कुलमिलाकर रामराज्य की विशेषता दोनों कवियों ने अपने अपनी भाषा में लगभग एक प्रकार से ही की कही है |वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के ११००० वर्ष तक शासन का उल्लेख और १०० अश्वमेघ यज्ञ आदि का भी वर्णन मिलता | रामायण के लंकाकांड के अंत में इस काव्य के स्मरण, गायन आदि से होने वाले लाभ का उल्लेख यह सिद्ध करता है की रामायण मूल रूप में यहीं तक लिखी गई होगी जिसका समर्थन कई विद्वान करते हैं| उत्तरकाण्ड में श्रीराम की कथा अपेक्षाकृत कम ही है इसलिए इसे बाद में जोड़ा गया होगा |

मानस का उत्तरकांड श्रीराम के राज्य की विशेषता के साथ श्रीराम के उत्तम चरित्र को भी प्रतिपादित करता है | मुगलकाल में हिन्दुओं को आत्मबल देने वाली मानस लोकभाषा के कारण घर घर में रामलीला, कथा वाचन और रामसत्ता जैसे मंचन ने उसे गाँव-गाँव में पहुंचा दिया और TV सीरियल रामायण ने इसको शहरों में भी पहुंचा दिया | कुल मिलाकर मानस आमजन, विद्वान, साधू-संत के साथ साथ भारतीय जीवन में रच-बस गई | इसका एक मुख्य कारण मानस में जो संवाद हैं, जिसमें निहित गहन चर्चा जीवन को एक आश्रय प्रदान करती है, जैसे शंकरजी-पार्वतीजी, याज्ञवल्क्य भरद्वाज, काग-भुसुंडी और बाबा और संतों के बीच संवाद के साथ-साथ श्रीराम-नारद संवाद, श्रीराम-लक्ष्मण संवाद, जैसे गंभीर संवाद सनातन संस्कृति को सहज-सरल ढंग से बाबा ने प्रस्तुत किया है |

उत्तरकाण्ड दोनों पुस्तक में भिन्न हैं, परन्तु कुछ विशेष विन्दुओं पर हमने ऊपर चर्चा की है |

उपसंहार –

जब बात हम तुलना की कर रहे हैं तो दोनों पुस्तकों की तुलना वर्त्तमान सन्दर्भ में भी कर लेते हैं | आधुनिक भाषा में वाल्मीकि रामायण पश्चिमी सभ्यता की सोच को प्रदिपादित करती है जहाँ जीवन को विज्ञान, इतिहास और भूगोल के मानकों पर हमेंशा परखा जाता है परन्तु मानस हमेंशा पहले मानवीय भावना को इन सबसे आगे रखती है वह विज्ञान, इतिहास और भूगोल को झुठलाती नहीं है परन्तु हमेंशा हनुमान की खोज और मित्रता के लिए सुग्रीव विभीषण को ढूढती नजर आती है | वह नारायण से नर और फिर नर से नारायण की यात्रा करती है वह हमेंशा देवसंस्कृति, दानव संस्कृति में मानव संस्कृति को सर्विपरी सिद्ध करने का प्रयास करती है जहाँ तक की देव और दानव संस्कृति भी उसके साथ खड़ी नजर आती हैं | रामायण संवेदना से अधिक नियम क़ानून की बात करती हुई उस समय की सभ्यता और संस्कृति को प्रतिपादित करती है | शायद त्रेता युग में मात्रसत्तात्मक शासन रहा हो जिसको श्रीराम तोड़ते हैं परन्तु वे पित्रसत्तात्मक सत्ता का भी समर्थन नहीं करते हैं | श्रीराम की कथा सामाजिक उत्थान और समानता के साथ प्रजातंत्र में विश्वास करने वाले लोक नायक हैं इसीलिए हजारों वर्ष बाद भी हम उनके जीवन को व्यक्तिगत, सामाजिक, जीवन के साथ देश-दुनिया से जोड़कर अनुसन्धान का विषय बनाकरआज भी हम मंथन कर रहे हैं |

4. संदर्भित ग्रन्थ

1. स्व. श्रीरामकिंकरजी का साहित्य
2. स्व. श्रीनरेंद्र कोहलीजी की रामकथा
3. स्व. श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी निरालाजी की राम की शक्ति पूजा
4. स्व. श्रीजय शंकर प्रसादजी की कामायनी
5. स्व. श्री मैथली शरण गुप्तजी की साकेत

5. रामायण पर समीक्षा

1. महामंडलेश्वर करपात्रीजी महाराज
2. फादर कामिल बुल्केजी
3. श्री गुनवंत शाहजी,
4. श्री विनोद शाही जी

विवाह का मंडप और जीव की चार अवस्थाएँ

संजना मिश्रा
(Sanjanamisra09@gmail.com)

रामचरितमानस एक ऐसा महासागर है, जिसमें यदि डुबकी लगाओं तो मोती ही पाओं और अबकी जो मोती मेरे हाथ में आया वह इस शीर्षक विवाह का मंडप और जीव की चार अवस्थाओं के रूप में प्रस्तुत है।

बालकांड में दशरथ के चारो पुत्रों का विवाह जनक जी और उनके भाई की चारों पुत्रियों से हो रहा है, जिसके विषय में तुलसीदास जी कहते है कि वर वधू की चारो जोड़ियाँ ऐसे लग रही है, जैसे जीव के हृदय की चार अवस्थाएँ हो। ये अवस्थाएँ है जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय इनके स्वामी है, विश्व, तेजस, प्राज्ञ और ब्रहम। इसके बाद के दोहे में जब चारों भाई अपने वधुओं के साथ आते है तब दशरथ जी उन्हें राजाओं की शिरोमणि क्रियाओं यज्ञ क्रिया, श्रद्धा क्रिया, योग क्रिया और ज्ञानक्रिया के रूप में देखकर आनन्दित हो रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि जैसे चारो पुरूषार्थ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष पा गये हो।

परन्तु इनके गूढ़ अर्थ को समझने के लिये इन्हे जब हम चेतना की अवस्थाओं के रूप में देखते है तो पाते है कि ये अवस्थाएँ हमारे भीतर ही है। हृदय हमारा मंडप है, जिसमें धर्म रूपी कुंड में कर्मरूपी आहुति देकर परम काम रूप अग्नि प्रज्ज्वलित हो रही है जो विकारों को पिघलाकर मोक्ष रूपी अवस्था की प्राप्ति करा रही है। अब इन अवस्थाओं को रामचरितमानस के विवाह के दृश्य से जोड़ते है तो पाते है कि प्रथम अवस्था है जाग्रत अवस्था जिसका तात्पर्य है अपने अस्तित्व की वस्तुनिष्ठता के प्रति जाग्रत होना और आत्मनिष्ठता का अदृश्य होना। श्रुतकीर्ति जो कि शत्रुघ्न की पत्नी है और जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री है पराक्रम, शौर्य और जागरूकता के गुणो से सुशोभित है। शत्रुघ्न संसार के शत्रुओं का तभी नाश करने में सक्षम है, जब उनके पास जाग्रत चेतना शक्ति है। यह शक्ति चूँकि सूक्ष्म रूप में है तभी विश्व में व्याप्त है। कर्म के परिणाम से मोह न करके, स्वंय के अस्तित्व को आभा स्वरूप प्रक्षेपित करना जाग्रत अवस्था है। अपने आराध्य अर्थात् राम में अत्यन्त प्रेमपूर्वक समाधि लगाकर विश्व के शत्रुओं का संहार करने के लिये शत्रुघ्न का लयबद्ध होना जाग्रत अवस्था है। इस अवस्था में जीवन एक यज्ञक्रिया की भाँति है जहाँ अपने कर्मो की आहुति इस प्रकार दी जाती है, जिससे विश्व का कल्याण हो। इस यज्ञ में मम भाव का त्याग किया जाता है जो अविद्या के कारण उत्पन्न होता है तथा अनात्म तत्वों में आत्म तत्व को आरोपित करता है ये आरोपण ही अहंकार है इस विकार की समाप्ति जीवन को अर्थपूर्व बनाती है अर्थात् सार्थक बनाती है।

दूसरी अवस्था है स्वप्न की अवस्था। जाग्रत और निद्रा के बीच की अवस्था है स्वप्नावस्था उर्मिला जो कि लक्ष्मण जी की शक्ति के रूप में मंडप के नीचे विराजमान है, उनके नाम का अर्थ है तरंग या लहर । उर्मिला विनम्रता, गंभीरता, शुभता और समृद्धि की सूचक है। लक्ष्मण, शेषनाग जी का अवतार हैं उर्मिला और लक्ष्मण दोनो ताप की दो धाराओं गर्म जलधारा और ठण्डी जलधारा का प्रतीक हैं जो अपने कार्यक्षेत्र में लयबद्ध है। स्वप्न का तात्पर्य है सासांरिक गतिविधि की अनुपस्थिति। यह वो अवस्था है जहाँ बाहरी विचार है ही नहीं केवल आन्तरिक विचार है। व्यक्ति तरंगो की भाँति आवश्यकतानुसार उपस्थित होता है और फिर विलुप्त हो जाता है। यथास्थिति तथा रूप। परन्तु उसको तेज अथवा तेजस का क्षेत्र विशाल होता है। लक्ष्मण जी राम की छाया की भाँति रहे परन्तु जब कठिन परिस्थिति आयी तो उनके तेजस्व के ओज से शत्रु कंपित हो गये। स्वप्नावस्था में कर्म का माध्यम है श्रद्धा। उर्मिला और लक्ष्मण की अपने कर्तव्यों के प्रति श्रद्धा क्रिया है जो अन्य घटनाक्रमों की भाँति दृश्यमान नही थी परन्तु उसका प्रभाव गहरा है जैसे जागने पर स्वप्न की शारीरिक अवस्था समाप्त होती है परन्तु उसकी स्मृति शरीर को प्रभावित अवश्य करती है। उसी प्रकार लक्ष्मण और उर्मिला का वियोग का प्रभाव अपने-अपने कर्तव्यों के रूप में उनकी श्रद्धा क्रिया के रूप में परिलक्षित हो रहा हे और इससे उपजा धर्म निष्ठता का भाव उनके वियोग में भी संयोग को दर्शाता है। श्रद्धा एक गुण है जो व्यक्ति को सत् विचारों और उत्कृष्ट विशिष्टिताओं के आधार पर श्रेष्ठता प्रदान करता है अर्थात् श्रद्धा वह भाव हे जिसके अधीन अपने विचारों और कर्मो को करने से ही तेजस उत्पन्न होता हे और सूक्ष्मरूप में फैलता हे। जब जीव की चेतना यथास्थान तथा चित्त की अवस्था में रहकर अपने सत्कर्मो का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करे यही इसका धर्म है। लक्ष्मण ने राम के प्रति अपनी श्रद्धा को ही अपना धर्म समझा अर्थात् जिस स्थान जिस रूप में भी हम रहें उसी में स्थूल अस्तित्व को नगण्य मानकर सूक्ष्म रूप में श्रद्धापूर्वक लीन होना ही हमारा धर्म हैं।

तीसरी अवस्था है सुषुप्ति की अवस्था है अर्थात् गहरी नींद की अवस्था जो सुख दुःख से परे है, जहाँ चेतना विश्राम की अवस्था में है। मांडवी जो कि भरत जी की पत्नी है, निष्ठा और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति है। अपने सुखों और दुखों दोनो अवस्था से परे है। उसके प्रभाव से मुक्त है उनका वैराग्य भाव भरत के वैराग्य भाव में समाहित होकर भरत को प्राज्ञ यानि कि विवेक का स्वामी बनाता है। भरत का आत्मबोध ही उन्हें पृथ्वी की खोदकर उसके भीतर कुश की आसनी बिछाकर ऋषि की भाँति कठिन करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे वे अपना स्थान राम से नीचे रख सके। ये भाव मोक्ष प्राप्ति के निकट है। तभी भरत के कठिन तप करने के बाद भी कांति अथवा शोभा वैसी ही बनी हुई हे। भरत का वैराग्य उन्हें योग क्रिया के द्वारा उस परमात्मा के साथ लयबद्ध करता है जहाँ सुख और दुख का मोह नश्वर अर्थात् अस्तित्वहीन है। योगक्रिया यर्थाथ ज्ञान, ईश्वर, बोध और आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने की वैज्ञानिक प्रणाली है, जिसका उद्देश्य है गुणहीन होकर आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया को अपनाना और प्रशांति तथा ईश्वर के साथ जुड़ाव

की एक परम स्थिति को उत्पन्न करना ही सासांरिक कामनाओं से विमुख करके परम कामना की उत्पत्ति है। अर्थात् निष्काम भाव की इच्छा ही परम् की कामना है। इसके लिये योग क्रिया के द्वारा अपनी कर्मन्द्रियो और ज्ञानेन्द्रियों के प्रभाव से मुक्त होकर श्वांस पर नियन्त्रण करना है जो इस संसार से परे गहरी निद्रा की अवस्था में ले जाये अर्थात् सुषुप्ति की अवस्था महाव्याप्ति की अवस्था है, जिसमें वस्तुनिष्ठता व निष्काम भाव असीमित है।

चौथी अवस्था है तुरीय अवस्था। यह आत्म की अन्तिम और परम् आनन्द की अवस्था हे। यह अखण्ड एकात्म की अवस्था है। चेतना की इस अवस्था का न तो कोई गुण है, न रूप यह निर्गुण निराकार अनन्त है। ये अवस्था जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति से परे पूर्ण जागृति की अवस्था है। मन्डप में सीता जी शक्ति स्वरूप विराजमान है, जिनके स्वामी है ब्रहम यानि कि प्रभु राम। शक्ति आधार है ब्रहम का अर्थात् ब्रहम को स्वरूप प्रदान करने का कार्य शक्ति का है। दोनो एक है अनन्त है। ब्रहम की व्यापकता को सिद्ध करती है शक्ति और दोनो का संयोग है तुरीय अवस्था। ये भेद में अभेद को समझ पाना ही एक क्रिया है। "ज्ञानय कृत्यं परमं क्रियाश्च"। शक्ति और ज्ञान के एकात्म स्वरूप को जानकर ही मोक्ष से मुक्ति का मार्ग है जो मोक्ष की प्राप्ति कराता है। नकारात्मक प्रवृत्तियों का नाश करके आत्मा में परमात्मा की अनुभूति करना ही सतचित् आनन्द की प्राप्ति है। इसके पूर्व की तीनो अवस्थाएँ द्वैत का आभास करवाती है जब यह समाप्त हो जाता है तो जीव स्वंय चतुर्थ अवस्था अद्वैत में पहुँच जाता है। अतः इस विश्लेषण से ज्ञात होता है कि हमारा हृदय ही वह विवाह मंडप है। जहाँ अपने विकारो और दुष्ट प्रवृत्तियों का संहार करना तथा माया मोह से परे जीवन के उद्देश्य को समझना ही जाग्रत अवस्था है, जिस स्थान जिस धर्म में हों उसमें लीन होकर विवेकपूर्ण ढंग से उसे पूर्ण करना स्वप्न की अवस्थाएँ, परन्तु धर्म के परिणामों अर्थात् सुख और दुख दोनो स्थितियों से प्रभावित न होना ही सुषुप्ति की अवस्था है तथा इन अवस्थाओं को पार करके उस परम शक्ति का हृदय में प्रकाश फैलना आत्म साक्षात्कार करना ही मोक्ष है। अर्थात् शरीर का अन्त मृत्यु है पर जीवन और मृत्यु के चक्र से परे जाना मोक्ष अर्थात् राम की प्राप्ति है।

रामचरितमानस के मंगलाचरण और पुष्पिका: कथावस्तु निर्देश और शैली प्रबंधन की अद्भुत दृष्टि

राजरानी शर्मा
उर्मिला त्रिपाठी
(rajranis@gmail.com)
(tripathi@gmail.com)

विराट् प्रबंधन का नाम ही महाकाव्य सृजन है। विराट् को शब्दायित करने के प्रयास भी विशेष और विराट् ही होते हैं , इसीलिये महाकाव्य को प्रबंध काव्य कहा जाता है। "छंद प्रबंध अनेक विधाना " और नानापुराणनिगमागम सम्मतं यद् रामायण ये निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि " कहकर तुलसी ने विशिष्ट प्रबंधन को स्वीकार किया है।अनेक शास्त्रों से कथावस्तु चयन करने में अद्भुत प्रबंध कौशल और शास्त्रीय विवेक से तुलसी ने लोकमंगल के विराट् लक्ष्य को साध कर लोकरक्षक श्रीराम को वर्ण अर्थों में साकार कर दिया है। राम कथा को कालजयी और लोकग्राही बनाने के लिये महाकवि ने परम वैदुष्यपूर्ण 'महाप्रबंधन ' कौशल का प्रयोग किया है। प्रबन्ध का प्रबंधन करके, आद्योपान्त एकतानता को लक्षित किया है। तुलसी का महाकाव्य 'शैली प्रबंधन ' का सुपरिणाम है। मानस में विराट् चयन के माध्यम से तुलसी ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म सजगता के साथ घटना चयन , कथावस्तु चयन , शब्द और विशेषण चयन, भाषा चयन, रस , छंद अलंकार चयन आदि सभी स्तरों के सोद्देश्य चयन ने ही मानस को कालजयी अनुपमेय महाकाव्य सिद्ध किया। आद्योपांत निरन्तरता और रचनात्मक समग्रता एक विराट् प्रभाव को जन्म दे सके इसलिये महाकाव्य के प्रारंभ में सायास मंगलाचरण होता है।

मंगलाचरण किसी भी अध्याय या प्रकरण के शुरु में की जाने वाली वंदना है। मंगलाचरण सघन प्रयोजनमूलक और सार्थक होते हैं जो शास्त्र के पारायण को उदात्त चेतना तक संप्रेषित करते हैं। शास्त्रों के पारायण का मर्म यह है कि भाषा सिर्फ लिपि में निहित संकेत ही नहीं है। उसके प्राण और अर्थ ध्वनि में बसते हैं। कुछ ध्वनियां बहुत शुद्ध होती हैं और कुछ अशुद्ध, जो उनके कंपन पर निर्भर करता है।मानस के मंगलाचरण देववाणी संस्कृत में हैं जो शास्त्रीय पावनता और प्रांजलता के साथ ग्रंथ को पूज्य विग्रह के सदृश बनाती है। स्तुतियों की विशेष प्रभावान्विति बनी रहे इसके लिये तुलसी ने प्रत्येक सोपान में स्तवन का विशेष नियोजन किया है !

रामचरितमानस में मंगलाचरण के श्लोक कथावस्तु निर्देश एवं घटनाक्रम की साभिप्राय 'अग्रप्रस्तुति 'करने के लिये सोद्देश्य रचे गये हैं। 'अग्रप्रस्तुति ' से तात्पर्य है सायास उल्लेख करके घटनाक्रम का संकेत करना ; जिससे श्रोता व पाठक की पूर्वपीठिका बन सके। ये मंगलाचरण मानस में शैलीचिन्हक (स्टायलमार्कर)के रूप में प्रभावान्विति उत्पन्न कर सके।

सर्वप्रथम तुलसी बालकाण्ड में , माँ सरस्वती स्तुति से मंगलाचरण का प्रारंभ करते हैं, साथ ही विनायक स्तुति करते हैं।

" वर्णनामर्थसंघानां रसानामछन्दसामपि।
मंगलानाम् च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥"

पहली बार किसी कवि ने वर्ण अर्थ और रस छंदों के नियामक प्रभु की प्रार्थना की है या कहें कि मंगलाचरण में वर्ण अर्थादि की चर्चा की है।

तुलसी ने मानस को " रचि महेस निज मानस राखा " कहा है। शिव स्वयं उनके संवाद चतुष्टय के एक संवाद - युगल के रूप में पार्वती जी के साथ उपस्थित हैं। इसलिये तुलसी ने अपने सोपान के प्रारंभ में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से शंकर जी की स्तुति की है। अरण्यकांड ऐर किष्किन्धाकांड में परोक्ष रूप से शंकर जी की स्तुति की है।

बालकाण्ड के मंगलाचरण में वे शंकरपार्वती की स्तुति करने का प्रयोजन स्पष्ट करते हैं कि उनकी कृपा के बिना सिद्ध जन अपने अंतर्मन के ईश्वर को देख नहीं पाते। "याभ्यां विना न पश्यंती सिद्धास्वान्तस्थमीश्वरं " । इसके साथ ही कवि ने कवीश्वर बाल्मीकि जी और कपीश्वर हनुमान जी की वंदना की जो सीताराम गुणगान के पुण्य अरण्य में विहार करते हैं। बाल्मीकि और हनुमान जी को "विज्ञानवुभौ "भी कहा है। सीताराम जी की युगल वंदना एवं शक्तिस्वरूपा सीता जी की साभिप्राय स्तुति की है।

संपूर्ण स्तवन में मंगलाकांक्षा की गयी है। संपूर्ण मंगलाचरण रामकथा के भव्य फलक को अभिव्यक्त करता है। मंगलाचरण के अंत में तुलसी की आत्मस्वीकृति भी "भूतो न भविष्यति "के समान प्रथम बार निवेदित की गयी है। "स्वान्त:सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा " कहकर निष्काम प्रयोजन की पवित्र एवं आत्मविश्वास पर्क कृपामयी उद्घोषणा की गयी है।

पाँच सोरठे भी स्तुतिपरक रचे हैं जिनका गूढ़ निहितार्थ है कि महाकाव्य सर्वसमन्वित दृष्टि का प्रकाशक रहेगा।

मानस के प्रथम कांड में "मानस सरोवर "का सांगरूपक प्रस्तुत किया है इसलिये सर्ग को 'सोपान ' नाम दिया है। क्योंकि सोपान से ही उतरकर सरोवर में अवगाहन किया जाता है।

मानस के द्वितीय सोपान अयोध्याकाण्ड के मंगलाचरण में निम्न बिन्दु उल्लेखनीय हैं ..

अयोध्या से राम लक्ष्मण सीता तीन जन ने वन गमन किया अत: मंगलाचरण में तीन स्तुतियाँ हैं।

पहली में गुरु रूप में शंकर जी की स्तुति हैं जिन विशेषणों से शंकर जी की स्तुति की गयी वे सब सहैतुक हैं। पर्वत जड है उसकी पुत्री वाम अंग में है। देवता चेतन हैं उनकी नदी शीश पर शोभित है। अमृतमय चंद्रमा सिर पर तो गरल कंठ में ऐसे ही अन्य विशेषण भी अयोध्याकाण्ड के हर्ष - विषाद व सम - विषम प्रसंगों के सूचक हैं।

दूसरी स्तुति में राम के विशेषण सहैतुक हैं कि ऐसे राम जो वनवास के दुख से यत्किंचित भी म्लान नहीं हैं। " न मम्ले वनवासदु:खत: " कहा है। अर्थात् वनवास अग्रप्रस्तुत तथ्य है।

तृतीय स्तुति श्रीराम की चारों अवस्था की जिसमें संपूर्ण कथा संकेतित व स्तवन की गयी है और सायास प्रस्तुत की गयी है।

1. "नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगम् " से बाल रूप राम की वंदना
2. "सीतासमारोपितवामभागम् "से विवाहित रूप की वंदना
3. "पाणौ महासायकचारुचापम् " से रघुवीर के वीर रूप और वनवासी राम की वंदना की गयी है। नरलीला यानी अयोध्याकांड से लंकाकाण्ड तक का चरित्र अग्रप्रस्तुत हुआ।
4. "नमामि रामं रघुवंशनाथं "चतुर्थ चरण से उत्तरकांड तक का चरित्र सूचित कर दिया।
5. "बरनऊँ रघुबर विमल जसु जो दायक फलु चारि। "में सोद्देश्य रघुबर संज्ञा का प्रयोग किया है।इस व्यापक शब्द से राम भरत दोनों के चरित वर्णन की सूचना संकेतित होती है।

तृतीय सोपान अरण्यकांड में भी मंगलाचरण की तीन स्तुतियाँ हैं। यहाँ वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण किया गया है। " सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं " विशेषण पदबंध से प्रभु को सुंदर मेघ की उपमा दी है जो ऋषि मुनियों को तृप्त करेंगे। इस श्लोक के प्रथम चरण में शृंगार की , द्वितीय चरण में वीररस की , तीसरे चरण में शांतरस की शोभा कही गयी है।

यहाँ जटाजूट बाँधे मार्ग में जाते सीताराम लक्ष्मण यत्र -तत्र वनवासी मुनियों से मिलते हैं अत: अरण्यकांड का मंगलाचरण सहैतुक व कथाक्रम को अग्रप्रस्तुत करने वाला है।

चतुर्थ सोपान किष्किंधाकांड में मंगलाचरण कुल दो छंदों में किया है। श्रीराम के अनेक विशेषण साभिप्राय दिये हैं :

1. "गोविप्रवृंदप्रियौ , मायामनुष्यरूपिणौ , सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ " कहकर सभी घटनाओं को योजनाबद्ध रीति से प्रस्तुत किया है। कुछ विद्वान् इस श्लोक को कांड की घटनाओं की सूची बताते हैं।यहाँ नाम , रूप , लीला , गुण और धाम पाँचों का उल्लेख है। ' कुन्देदीवर' से रूप , अतिबलौ से गुण , गोविप्रवृन्दप्रियौ से लीला और विज्ञानधामावुभौ से धाम सूचित किया गया है।
2. दूसरे श्लोक में "धन्यास्ते कृत्तिन: पिबन्ति सततं श्री रामनामामृतम् ॥ "इससे द्योतित होता है कि यहाँ यज्ञादि करनेवाले ऋषि न मिलकर शबरी, गीध, वानर, भालुओं से भेंट होगी जो रामनाम अमृतपान करने के अधिकारी हैं।

सुंदरकांड या पंचम सोपान का मंगलाचरण साभिप्राय है।

यहाँ तीन श्लोकों में विभिन्न उद्देश्यों की चर्चा की गयी है : -

1, श्रीराम के "शाश्वतं शान्तं अप्रमेय अनघं निर्वाण शान्तिप्रदं " रूप का वर्णन है ही। 'मायमनुष्यं हरि " पदबंध का ललित नरलीला करने के कारण सोद्देश्य उल्लेख है।

1. प्रभु की सुंदर भक्ति हनुमान जी को विभीषण को मिली अत: ये निर्भरा भक्ति प्रदान करने का सोपान है।
2. तीसरे श्लोक में "अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं " कहा है साथ ही "दनुजवन कृशानु " कहकर लंकादहन की पूर्व सूचना भी दी है। " ज्ञानिनामग्रगण्यं" से हनुमान जी की प्रत्युत्पन्नमतित्व का संकेत दिया है।

षष्ठ सोपान लंकाकाण्ड में पहले छंद में श्रीराम की वन्दना की गयी है परन्तु "कामारिसेव्यं "पदबंध का प्रयोग कर संकेत दिया है कि शिव जी का स्मरण है। मायातीतं विशेषण से अभिव्यक्त किया कि रावण की कोई माया यहाँ चलेगी नहीं , मदमत्त काल के लिये सिंह हैं राम खलवध में निरत हैं। एक ही स्तवन में पंद्रह से अधिक सार्थक सोद्देश्य विशेषण देकर निर्विकार भी कहा कि रावणादि का वध करने के बाद भी राम सदैव निर्विकार हैं।

द्वितीय छंद में शंकर जी की वन्दना में विशेष रूप से "काशीश "विशेषण दिया है , कि जिनको काल ग्रसेगा उन्हें शंकर मुक्ति प्रदान कर देंगे। क्योंकि वे कल्याण के कल्पवृक्ष हैं , "कल्याणकल्पद्रुम "विशेषण पदबंध का प्रयोग किया है।

तृतीय श्लोक में स्पष्ट करते हुये महाकवि लिखते हैं कि कैवल्यमुक्ति देने वाले शंभु हमारा कल्याण करें।

यहाँ प्रथम दोहे में भी श्रीराम के कोदंड को ही काल बता दिया है।" लव निमेष परमानु जुग काल जासु कोदंड "

सब श्रीराम के प्रचंड बाण हैं , काल उनके संकेतों पर नृत्य करता है। सभी विशेषण लंकाकाण्ड के भीषण युद्ध का संकेत कर रहे हैं।

उत्तराकाण्ड के मंगलाचरण में प्रथम श्लोक में "केकीकण्ठाभिनीलं "विशेषण से राम के सौन्दर्य का वर्णन किया है। इस समय श्रीराम मयूराकृति पुष्पकारूढ़ हैं। कारुणीक विशेषण है , अर्थात् भक्त भरत का दुख सह नहीं सकते।कौसल को लौट रहे राम को कवि "कौसलेन्द्र "कहकर राज्याभिषेक प्रसंग की पूर्व सूचना देना चाहते हैं। 'जानकीकरसरोजलालितौ 'जैसे सुंदर पदबंध से अभिव्यक्ति की है कि आनेवाले समय में सुखद संयोग प्रयोग हैं।

इस काण्ड में शंकर जी की वंदना दूसरे छंद में की है। "अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् " कहकर शिव की सामर्थ्य का वर्णन किया है। बालकाण्ड में विश्वरूप तथा गुरुरुप , अयोध्याकाण्ड में विश्वासरूप में , अरण्यकांड में भी गुरु रूप में शिव वंदना की है। अरण्य एवं किष्किन्धा कांड में शंकर जी की वंदना नहीं की है किन्तु रामनाम मुक्ति दायक कहकर तथा काशी की चर्चा द्वारा प्रकारान्तर से शिव वंदना ही की गयी है तथा बताया है कि रामभक्ति के इच्छुक को शिवभक्ति करना परमावश्यक है।

मानसाचार्य के अनुसार

"बालकाण्ड प्रभु चरण अयोध्या कटि मन मोहे।
उदर बन्यो अरण्य हृदय किष्किन्धा सोहे॥ "

कह कर सभी कथा क्रम को अतिमहत्वपूर्ण रूप से वर्णित किया गया है।

1. मानस में वर्णित पुष्पिकायें ….

भारतीय पद्धति से प्रत्येक ग्रन्थ के अध्याय पूरे होने पर उस प्रकरण का क्रम, संक्षेप और उद्देश्य की घोषणा को पुष्पिका कहते हैं। पुष्पिका में फलश्रुति का भी वर्णन किया जाता है। मंगल श्लोक और पुष्पिका का महत्व यह है कि ये उस ग्रंथ को पुस्तक की श्रेणी से निकाल कर मंत्र के स्तर तक उठा देते हैं।श्रीमद्भागवत व श्रीमदभगवद्गीता, महाभारत ,आदि सभी पौराणिक औपनिषदिक आध्यात्मिक ग्रंथों में पुष्पिका व फलश्रुति देने का विधान है। फलश्रुति ग्रन्थ के पठन पाठन को न श्रवण को उदात्त व महिमावंत बना देती हैं।

रामचरितमानस की पुष्पिकायें क्रम व कांड के समग्र उपसंहार का वर्णन इस प्रकार है :-

बालकाण्ड में श्रीराम जी के व्रतबंध अर्थात् यज्ञोपवीत व विवाहादि का वर्णन है अत: बालकाण्ड में सुख उत्साह की प्राप्ति की फलश्रुति कही गयी है।बालकाण्ड का नाम 'सुखसम्पादन सोपान ' है।

"सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु॥"

अयोध्याकाण्ड की फलश्रुति में भरतचरित को रेखांकित किया है आधा अयोध्याकाण्ड भरत चरित ही है :-

"भरतचरित करि नेमु। तुलसी जे सादर सुनहि।
सीयराम पद प्रेम। अवसि होय भवरस विरति॥ "

उल्लेखनीय बिन्दु यह है कि "अवसि " कहकर तुलसी ने फलश्रुति की अतिरिक्त आश्वस्ति दी है। अयोध्याकाण्ड का नाम ' प्रेमवैराग्य संदीपन नाम " दिया गया है।

अरण्यकाण्ड में श्रीराम जी स्त्रीविरह से दुखी हुये इसी लिये वहाँ स्त्री का त्याग कहा गया है।

"दीपसिखा सम जुबति तन जनु मन होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहिं सदा सतसंग॥ "

अरण्यकांड में श्री राम को "रावणारि "विशेषण कहकर ये संसूचित किया है कि सीताहरण का सम्यक् परिणाम रावण को मिलेगा।

अरण्यकांड का नाम ' विमलवैराग्यसंपादनो नाम तृतीय: अध्याय "कहा गया है। इस कांड में पार्वती जी के प्रश्न " वन बस कीन्हे चरित अपारा " का उत्तर दिया गया है।

किष्किंधाकांड में श्रीराम जी का मनोरथ सिद्ध हुआ , हनुमान जी सुग्रीव जी जैसे सेवक मिले , सीता शोध का उद्योग हुआ इसी से इस कांड की फलश्रुति में रामभक्ति का सोरठा दिया गया है -:

"नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक।
सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक॥ "

किष्किन्धा कांड को राम जी का हृदय कहा गया है इसलिये इसकी फलश्रुति " विशुद्ध संतोष सम्पादन " नाम चतुर्थ अध्याय कहा गया है।

सुदरकांड की फलश्रुति ज्ञान की प्राप्ति है अत: यह " ज्ञान सम्पादन नाम " सोपान कहा गया है तथा फलश्रुति में भी …

" सकल सुमंगलदायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं जे तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥ "

विशेष रूप से बिना जल यान के भव सागर पार करने का उल्लेख किया गया है क्योंकि श्रीराम ने बिना यान के ही पदुम अठारह यूथप बंदर वाली सेना को सागर पार करा दिया था।

इसलिये सुदरकांड का नाम " ज्ञानसम्पादन नाम पंचम सोपान कहा गया है।

लंकाकांड की फलश्रुति में विज्ञान वर्णन है।

कामदिहर विज्ञानकर सुर सिद्ध मुनि गावहि सदा। "

लंकाकांड में श्रीराम को विजय प्राप्त हुई अत: यहाँ विजय विवेक विभूति प्राप्ति कही है ओ:~

"समर विजय रघुबीर के चरित जे सुनहि सुजान।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान॥ "

उत्तरकांड में फलश्रुति के रूप में -" अविरल हरिभक्ति " का वर्णन है ! इसी से यह "अविरल हरि भक्ति संपादन "नाम सप्तम सोपान है।

"कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तरहु प्रिय लागहु मोहि राम॥ "

सारांश यह कि बाल में धर्म, अयोध्याकांड में प्रेम, और वैराग्य, अरण्यकांड में विमल वैराग्य और किष्किंधाकांड में संतोष संपादन, सुंदरकांड में ज्ञान, लंकाकांड में विज्ञान, और उत्तरकांड में अविरल हरिभक्ति की फलश्रुति कही गयी है।

निष्कर्ष यह है कि रामचरितमानस के शैली प्रबंधन में सोद्देश्य और सायास चयनित विशेषण पदबंधों एवं स्तवन परक , सिद्धांत परक और वस्तुनिर्देशात्मक सार्थक मंगलाचरण विधान का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मंगलाचरण से मानस में महाकवि तुलसी ने अद्भुत सूत्रात्मकता , निर्दिष्ट चिन्तन , सुचिन्तित और सुचिन्हित कथावस्तु व अग्रप्रस्तुति युक्त पात्र, घटना , स्थान और चरित्रों का उल्लेख करके अपना मंतव्य प्रस्तुत किया है। मंगलाचरण विधान से महाकाव्य की मंत्रात्मकता और दिव्यता में वृद्धि हुई है। महाकाव्य को आध्यात्मिक ग्रंथ की गरिमा मिली है। स्तुतियों की गेयता से जन जन तक संप्रेषित हुआ है।

पुष्पिका में फलश्रुति अर्थात् सुनने का फल और आध्यात्मिक लाभ दोनों समाविष्ट होते हैं। प्रत्येक सोपान के अंत में तुलसी ने " इति श्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने (सोपान का नाम) कहकर सोपान की इति श्री की है।

शैली प्रबंधन ही महाकाव्य का मूल प्राण है। प्रारूप ही लक्ष्य है। योजनाबद्ध पद्धति से सुविचारित संग्रह त्याग पद्धति से रचित रामचरितमानस कालजयी कृति बना। लोकमंगल कारी काव्य बना। सामान्य जन से प्रबुद्ध जन तक , जन से संत जन तक, अज्ञानी से काव्य मर्मज्ञ तक एकतान और अखंड आनंद का प्रकाशक महाकाव्य रामचरितमानस बन सका इसमें शताधिक युक्तियों का समावेश है। उन्हीं शताधिक युक्तियों में एक महत्वपूर्ण प्रबंधकीय युक्ति है मंगलाचरण से लेकर पुष्पिका और फलश्रुति तक का अद्भुत विन्यास करना। इस सुचिन्तित विन्यास से समग्र प्रभाव उत्पन्न हुआ जो कालजयी बना। भारतीय शास्त्रीय परंपरा के निर्वहण के साथ तुलसी ने मंगलाचरण को मौलिक, सैद्धांतिक और आध्यात्मिक प्रारूप दिया। वस्तुतः मानस के मंगलाचरण विधान का स्वतंत्र अनुसंधान और विश्लेषण अपेक्षित है। पुष्पिका भी एक प्रकार से सोपान का समग्र दर्शन है , सारांश है और पाठ या श्रवण को उदात्त प्रभावान्विति और उच्च मनोविज्ञान तक ले जाने का शास्त्रीय माध्यम है। पुष्पिका को तुलसी ने जिस काव्यात्मक उत्तरदायित्व और शास्त्रीय गंभीरता से प्रस्तुत किया यह युक्ति तुलसी के महाकाव्य प्रबंधन का मूल कौशल है। निस्संदेह सुविचारित प्रबंधन को प्रमुखता देकर तुलसी ने अपने प्रबंध का प्रकृष्ट प्रबंधन किया है।

लोकजीवन में राम

उषा श्रीवास्तव
आचार्या इंस्टिट्यूट ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज
(drusha236@gmail.com)

लोकजीवन में लोकधर्मिता के रूप में राम उपस्थित हैं। चौपाइयों और रामलीलाओं के माध्यम से लोक जीवन में रचे-बसे राम शास्त्रों और मंत्रों से परे अनपढ़ जन के मन में आज भी रमते हैं। एक-दूसरे से मिलने में भी राम-राम और अंतिम यात्रा की गति भी बिना राम नाम के सत्य नहीं होती। १८२ देशों में श्री राम की पूजा होती है। जहां हिंदू हैं वहां श्री राम हैं, कृष्ण है, शिव हैं और होली-दिवाली है। दुनिया के १८५ देशों में से १८२ देशों में हिंदू बसते हैं और जहां हिंदू हैं वहीं पर श्री राम हैं।

1. प्रस्तावना

संस्कृत की दृष्टि से देखा जाए तो, 'रम् धातु में घम' प्रत्यय जोड़कर राम बना है। यहां'रम्' का अर्थ है रमण, रमना या निहित होना, निवास करना और 'घम' का अर्थ है ब्रह्मांड का खाली स्थान। इस प्रकार राम का अर्थ पूरे ब्रह्मांड में निहित या रमा हुआ तत्व अर्थात स्वयं ब्रह्म है। सामान्यतः गाँव मे एक दूसरे को तथा ग्वाले,सब्जीवाले,धोबी,कुम्हार,किसान आदि एक दूसरे से मिलने पर "राम-राम" कहकर ही संबोधित करते हैं। इसी तरह से "जय रामजी की" का सम्बोधन आज भी गांवों में प्रचलित है ।

2. विस्तार

छत्तीसगढ़ के निवासियों में राम-राम, जय राम, सीताराम का अभिवादन सुनकर स्पष्ट हो जाता है कि राम कहना जिह्वा का स्वभाव है क्योंकि राम छत्तीसगढ़ियों की आत्मा में बसे हुए हैं। राम के दीवाने तो दुनियाभर में है पर रामनामी आदिवासियों की बात ही कुछ ओर है जिन्हें न केवल राम के नाम से जाना जाता है बल्कि उन्होंने खुद को राममय कर लिया है। इन लोगों ने पूरे शरीर पर राम का नाम गुदवाए, रामनामी पोषाक पहने और सिर पर राम नाम का ताज सजाए यह इनके जीवन का हर क्षण राम नाम से जुड़ा है ऐसा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। रायपुर के समीप मन्दिर-हसौद से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर ग्राम चन्द्रखुरी माता कौशल्या का जन्म स्थान इनके संबंध का साक्षी है ।

आपस में एक दूसरे को दो बार ही "राम राम" बोलने के पीछे आदि काल से चला आ रहा बड़ा गूढ़ रहस्य है । हिन्दी की शब्दावली में 'र' सत्ताइसवां शब्द है, 'आ' की मात्रा दूसरा और 'म' पच्चीसवां शब्द है। तीनो अंको का योग 27+2+25= 54, अर्थात एक "राम" का योग 54 हुआ-इसी प्रकार दो "राम राम" का कुल योग 108 होगा। इस तरह सिर्फ 'राम राम' कह देने से ही पूरी माला का जाप हो जाता है।

बिहार के मिथिला प्रदेश के लोकजीवन में प्रभु राम दामाद के रूप में अधिक स्थापित है क्योंकि मिथिला की बेटी सीता से उनका विवाह हुआ। मिथिला प्रदेश ही नहीं कमोबेश उत्तर भारत का एक बड़ा वर्ग है, जो अपने नाम में बड़े गर्व से "राम" नाम जोड़ता है। जैसे गंगाराम,भगतराम,हरीराम इत्यादि। मिथिला के गांव-कस्बों में महिलाएं सहज ही कहती हैं कि हमारे राम, परदेस गए हैं कमाए खातिर।

ज़ाहिर है "राम" लोकजीवन में भगवान के रूप में कम लोकधर्मिता के रूप में अधिक मौजूद थे। मुगलों दौर में कबीर ने कहा -"हरि मोरा पिउ, मैं राम की बहुरिया" तो दूसरी तरफ शास्त्रों और मंत्रों से परे अनपढ़ जन भी "राम ही राम रटन करूं जिभिया रे..." गुनगुनाता है।

"राम" लोक मानस में तो है ही लोक व्यवहार का भी एक अभिन्न हिस्सा है मिथिला के राम की बात करें तो यहां के राम भगवान के रूप से भी आगे उनके जीवन-मरण का हिस्सा है।

यहां शिशु को "राम" ही माना जाता रहा है गीतों की भाषा में जन्म देने वाली मां कौशल्या मानी जा रही है और शिशु तो "राम" है ही। उपनयन संस्कार में भी "राम बरवा गोदिया लेले जेकर जेनेवा होवे..."राम उस बालक के साथ समाहित हो जाते हैं। विवाह के गीतों की भाषा में भी दूल्हे में राम को देखा जाता है। मिथिला के गीतों में हर दामाद राम का स्वरूप है उसे राम कहकर ही संबोधित किया जाता रहा है।"बता दो बबुआ लोगवा देत काहे गारी एक भाई गौर कहे एक भाई कारी"।संस्कार और रिवाज से इतर हर दिन की भाषा संसार में भी राम उपस्थित हैं जैसे अभिवादन में राम-राम एवं जय राम जी की।

जीवन दर्शन की जब बात होती है तब कहा जाता है-"राम जी की माया कहीं धूप कहीं छाया" लोकगीतों और पर्वों में भी जैसे "होली खेले रघुवीरा…।" फसल को जब पक्षी खाए तो उसमें भी "राम जी की चिराई" कहा जाता है। हर संज्ञा में विशेषण के रूप में भी राम ही है। ग्रामीण इलाकों में सामान की गिनती में भी "एक रामें,दो रामे" करके गिना जाता था।

लोक की व्यंजनात्मक भाषा यानी लोकोक्तियां में तो राम शब्द की जैसे भरमार है जैसे ''मुंह में राम बगल में छुरी राम'',''राम नाम जपना पराया माल अपना'',"जिनके राम धनी उनके कोई ना कमी" "रामभरोसे" इत्यादि। कुल मिलाकर लोकभाषा में राम शब्द बहुलता के साथ अपनी धाक जमाए हुए हैं। राम शब्द को हटाकर भाषा के लोक व्यवहार की बात की जाए तो शायद इसका तीसरा भाग ही बचा रह जाएगा।

शास्त्रों में 'राम' शब्द कहते ही वाल्मीकि के राम, तुलसी के राम का आध्यात्मिक रूप उभर कर सामने आता है। कभी दुःख की भाषा के साथ तो कभी ख़ुशी के उजास भाव में।दरअसल लोकजीवन में राम लोगों की दिनचर्या का हिस्सा हैं।

राम लोकमंगलकारी,गरीब नवाज एवं मर्यादित व्यक्तित्व के स्वामी हैं। राम नाम पर देश में आदर्श शासन की कल्पना हुई। उसी रामराज्य के सपने को पूरा करने के लिये गांधी अंग्रेजी साम्राज्य से लड़ गये। राम जाति-वर्ग से परे हैं,रिश्तों में संस्कारों की मर्यादा है। शासक के रूप में नीति कुशल और न्याय प्रिय, लेकिन लोकतांत्रिक व सामूहिकता को समर्पित। विनोबा इसे प्रेम योग और साम्य योग के तौर पर देखते थे।

ये राम का देश है यहां कण-कण में,भाव की हर हिलोर में एवं कर्म के हर छोर में राम हैं। राम यत्र-तत्र-सर्वत्र हैं। जिसमें रम गए वही राम है।

"यहां सबके अपने-अपने राम हैं। वाल्मीकि और तुलसी के राम में भी फर्क है। भवभूति के राम दोनों से अलग हैं। कबीर ने राम को जाना,तुलसी ने माना,निराला ने बखाना।" गांधी और लोहिया के राम भी अलग हैं।

भारतीय समाज में मर्यादा, आदर्श, विनय, विवेक, लोकतांत्रिक मूल्यवत्ता और संयम का नाम है राम। घर-घर में राम की गहरी व्याप्ति ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम तो मानना ही पड़ेगा। स्थितप्रज्ञ, असंपृक्त, अनासक्त। एक ऐसा लोक नायक, जिसमें सत्ता के प्रति निरासक्ति का भाव है वह जिस सत्ता का पालक है, उसी को छोड़ने के लिए तैयार है।

राम हमारे देश की उत्तर-दक्षिण एकता के अकेले सूत्रधार हैं। राम पूरी तरह धर्म के स्वरूप हैं जिसे राम प्रिय नहीं हैं उसे धर्म प्रिय नहीं है। कबीर राम को परम ब्रह्म मानते हैं 'कस्तूरी कुण्डल बसे मृग ढूंढे बन माही, ऐसे घट-घट राम हैं दुनिया देखे नाहीं।' निर्गुणिया कबीर राम की बहुरिया बन कर रहना चाहते हैं। वृद्धजन राम को संस्कारों में जीते हैं।

काले वर्षति पर्जन्य: सुभिक्षंविमला दिश:
हृष्टपुष्टजनाकीर्ण पुरू जनपदास्तथा।
नकाले म्रियते कश्चिन व्याधि: प्राणिनां तथा।
नानर्थो विद्यते कश्चिद् पाने राज्यं प्रशासति।

यानी जिस शासन में बादल समय से बरसते हों सदा सुभिक्ष रहता हो, सभी दिशाएं निर्मल हों। नगर और जनपद हृष्ट-पुष्ट मनुष्यों से भरे हों। वहां अकाल मृत्यु ,प्राणियों में रोग एवं किसी प्रकार का अनर्थ न होता हो। पूरी धरा पर एक समन्वय और सरलता हो, प्रकृति के साथ तादात्म्य हो वही रामराज्य है।

हिंदू धर्म और लोकचिंतन में राम शीर्ष पर हैं। तुलसी के राम तो जन-जन और कण-कण के देवता के तौर पर लोकमानस में बैठे हुए हैं। ये लोकजीवन में राम का प्रभाव ही है कि गोस्वामी तुलसीदास के इतने विशद और व्यापक ग्रंथों के बाद भी हिंदी साहित्यकारों के लिए राम प्रतीक और विषय के तौर पर आज भी प्रिय पात्र हैं। हमारे राम लोक मंगलकारी हैं,मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

राम जाति, वर्ग से परे हैं। नर, वानर, आदिवासी, पशु, मानव, दानव सभी से उनका करीबी रिश्ता है। निषाद राज हों या सुग्रीव, शबरी हों या जटायु, सभी को साथ ले चलने वाले वे अकेले देवता हैं। भरत के लिए आदर्श भाई हनुमान के लिए स्वामी तथा प्रजा के लिए नीतिकुशल न्यायप्रिय राजा हैं। परिवार नाम की संस्था में उन्होंने नए संस्कार जोड़े। पति-पत्नी के प्रेम की नई परिभाषा दी। इसीलिए आज भी मानव को एक पत्निव्रती बनाने की अपेक्षा की जाती है। राम ने पिता की आज्ञा का पालन कर पिता-पुत्र के सम्बन्धों को नई ऊंचाई दी।कैकई के वचनों का पालन कर आज्ञाकारी पुत्र की मिसाल कायम की।

उनमें अहंकार छू तक नहीं गया था यही वजह है कि अपार शक्ति के बावजूद राम मनमाने फैसले नहीं लेते थे। वे लोकतांत्रिक हैं सामूहिकता को समर्पित विधान की मर्यादा जानते हैं। धर्म और व्यवहार की मर्यादा भी और परिवार का बंधन भी। नर हो या वानर, इन सबके प्रति वे अपने कर्तव्यबोध पर सजग रहते हैं। वे मानवीय करुणा जानते हैं। वे मानते हैं-"परहित सरिस धर्म नहीं भाई। वे उस राम राज्य के हिमायती थे जहां लोकहित सर्वोपरि था। तुलसी कहते हैं- 'मणि मानिक महंगे किये, सहजे तृण जल नाज। तुलसी सोई जानिए, राम गरीब नवाजा।'

राम साध्य हैं, साधन नहीं। वह निर्बल के एकमात्र सहारे हैं उनकी कसौटी प्रजा का सुख है। यह लोकमंगलकारी कसौटी आज की सत्ता पर हथौड़े-सी चोट करती है-"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृपु अवस नरक अधिकारी।

"हनुमान, सुग्रीव, जाम्बवंत, नल-नील सभी को समय-समय पर नेतृत्व का अधिकार उन्होंने दिया। उनका जीवन बिना हड़पे हुए फलने की कहानी है। अल्लामा इकबाल कहते हैं- 'है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज, अहले नजर समझते हैं, उसको इमाम-ए-हिन्द।'

राम का जीवन बिल्कुल मानवीय ढंग से बीता। उनके यहां किसी चमत्कार की गुंजाइश नहीं है। आम आदमी की मुश्किल उनकी मुश्किल है। आम आदमी की तरह लूट, डकैती, अपहरण और सत्ता बेदखली के शिकार होते हैं। सीता माँ के अपहरण वापस पाने के लिए अपनी वानर सेना बनाई एवं लंका जाने के लिए उनकी सेना एक-एक पत्थर जोड़ पुल बनाती है।

वे कुशल प्रबन्धक हैं उनमें संगठन की अद्भुत क्षमता है। जब दोनों भाई अयोध्या से चले तो महज तीन लोग थे। जब लौटे तो एक साम्राज्य का निर्माण कर पूरी सेना के साथ।

राम कायदे-कानून से बंधे हैं। एक धोबी ने जब अपहृत सीता पर टिप्पणी की तो वे बेबस हो गए। भले ही उसके आरोप बेदम थे पर वे इस आरोप का निवारण उसी नियम से करते हैं जो आम जन पर लागू होता है। वे चाहते तो नियम बदल देते संविधान संशोधन कर सकते थे। वे चाहते तो सत्ता छोड़ सीता के साथ चले जाते पर उन्होंने सीता का परित्याग किया क्योंकि प्रजा के प्रति उनकी जवाबदेही थी।

राम अगम है संसार के कण-कण में विराजते हैं। सगुण भी हैं निर्गुण भी कबीर कहते हैं निर्गुण राम जपहुं रे भाई। मैथलीशरण गुप्त मानते हैं कि “राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है।“

3. निष्कर्ष

इस संपूर्ण विश्व में राम-सा चरित्र दूसरा नहीं। न कहीं राम-सी मर्यादा है, न राम-सा पौरुष और न ही राम-सी तितिक्षा। राम इस दुनिया का संतुलन हैं अमीरों की माया है तो गरीबों के राम हैं। उनका नाम भर ही दुनिया भर के गरीब-ग़ुरबों के भीतर जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों से टकराने का हौसला है। भक्तों के मोह में उन्होंने जीवन-मरण के चक्र को भी तोड़ डाला।

देश के हर रामभक्त के पास उसके हिस्से की कहानियां हैं। राम कब-कब और किन-किन परिस्थितियों में उसकी मदद के लिए आए, उसकी ज़ुबान पर चढ़ा हुआ है। राम के आगे विज्ञान का संसार बौना है। चिकित्सा शास्त्र और रसायन शास्त्र के सूत्र अधूरे हैं। ये सब बाहरी आंखों से दिखते हैं पर राम अंतर्मन के हैं। भाव जगत की लगन के हैं। जीवन की सृष्टि के, सृष्टि के जीवन के हैं,राम जन-जन के हैं।

4. संदर्भ सूची

1. राम नाम भारतीय लोकजीवन का हिस्सा है- प्रत्यूष प्रशांत
2. ‘अयोध्या का चशमदीद’ व ‘युद्ध में अयोध्या’-हेमंत शर्मा
3. लोक संसार भाषा और राम- डॉ.विजया सिंह
4. छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में राम -संपादक अजय अटपटू
5. युद्ध और राम को नए नजरिए से रचने वाले -नरेश मेहता
6. विकिपीडिया

माता सीता में सशक्त और आदर्श नारीत्व के दर्शन

वीणापाणि
(paniveena53@gmail.com)

माता सीता का जीवन चरित सनातन है | उनके जीवन के सूत्र केवल पारिवारिक, सामजिक , नैतिक मूल्यों और दायित्यों को ही स्तापित नहीं करते वरन आज के परिपेक्ष्य में जीवन को गति देने में नारीत्व के उत्कर्ष की आवश्यकता को भी पूर्णतः परिभाषित करते है | इस प्रपत्र मे केवल तीन प्रसंगों – बनगमन, लंका ले अग्निपरीक्षा और सीता परित्यान- के आधार पर माता सीता के सशक्त, आदर्श, सर्वजनीन और सर्वकालिक चरित्र को समझाने का प्रयास किया गया है |

1. प्रस्तावना

जनकसुता जगजननि जानकी | अतिसय प्रिय करुनानिधान की ||
ताके जुग पद कमल मनावऊँ | जासु कृपा निर्मल मति पावऊँ ||

ऐसी माता सीता जो जनजन के मन में बसी है | उनका जितना बखान वेद शाश्त्रों में है उतना ही वे लोक गीतों के भाव में बसी है | और आज तक लोक जीवन का आधार बनी हुई है |

माता सीता जीतनी मर्यादाशील है उतनी ही प्रगतिशील भी वे राजर्षि विदेहराज की पुत्री है, जिनके यहाँ ऋषियों, मनीषियों का आना जाना दिनचर्या में सम्मिलित था माता सीता स्वयंसिद्धा है | पृथ्वी पुत्री, भूमिजा है | मिट्टी से, धरती से , लोकमन से जुडी हुई है | उनमे आत्मगौरव और समर्पण साथ-साथ है | वे न रुकती है, न हार मानती है | उनका संघर्ष और संकल्प लोकसंग्रह के लिए है | अपने अदम्य चरित्र से वे नारी के उत्कर्ष को परिभाषित करती है | सीता माता हमारी संस्कृत की आधार है | [2]

आईये लिए गए इन तीन प्रसंगों के आधार पर उन्हें समझने का प्रयास करते है-

1. वन गमन
2. लंका में अग्नि परीक्षा
3. सीता परित्याग

1. वन गमन

भगवान राम का राज्याभिषेक होने जा रहा है | सम्पूर्ण अयोध्या आनन्दोत्सव मना रही है | दैव योग से दृश्य बदलता है माता कैकेयी और और राजा दशरथ के आज्ञानुसार श्रीराम 14 वर्ष की अवधि के लिए वनवास जाने लगते है | माता सीता को भी समाचार मिलता है उनकी प्रतिक्रया देखिये राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में –

‘सीता ने सोचा मन में
स्वर्ग बनेगा अब वन में
धर्म धारिणी हूँगी मै
वन विहारिणी हूँगी मै’(साकेत)

इसा प्रकार माता सीता ने धर्म की ध्वजा तुरंत थाम ली और वन विहार को अपने लिए चुन लिया | यह तो रहा उनका संकल्प, उधर देखिये माता कौशिल्या की चिंता –

‘जियनमूरि जिमि जोगवत रहऊ | दीप बाति नहीं टारन कहऊ ||
सोई सिय चलन चहत वन साथ | आयसु काह होय रघुनाथा ||’ (मानस)

भगवान राम सीता को भांति-भांति से समझाते है कि सासु ससुर की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है | सीता धैर्यपूर्वक सब सुनती रहती है | पुनः माता कौशिल्या के चरण पकड़कर प्रार्थना करती है – गोस्वामी जी लिखते है –

‘लागि सासु पद कह कर जोरी | छमबि देवि बडि अविनय मोरी ||
दीन्हि प्रानप्रिय मोहि सिख सोई | जेहि विधि मोहि परम हित होई ||
मै पुनि समुझि दीखि मन माही | पिय वियोग सम दुःख जग नाही ||’ (मानस) [3]

इस तरह माता ने मर्यादा भी निभाई और मनतव्य भी बता दिया | पिय प्रभु राम है, तो पिय माता सीता के जीवन का निर्धारित पथ भी है |सासु माँ को तो विश्वास में ले लिया किन्तु श्रीराम पुनः मार्ग की दुरूहता, वन्य जीवन की कठिनाई, पशुआ का भय, राक्षसों का आतंक आदि सभी विषमताओं का पूरा पूरा चित्रण करते है फिर भी माता सीता टस से मस नहीं होती है और अंत में भगवान राम को कहना पड़ता है –

'हंस गवनि तुम नहिं बन जोगू | सुनि अपयश मोहि देईहि लोगू ||' (मानस)

माता सीता तुरंत उत्तर देती है –

आप जोग और मै भोग ?

आगे वे श्रीराम की सारी शंकाओ का समाधान करते हुए कहती है –

'वन देवी वन देव उदारा | करिहहिं सासु ससुर सम सारा ||
कंदमूल फल अमिय अहारू |अवध सौत सत सरिस पहारू ||
भोग रोग सैम भूषन भारू | जम जातना सरिस संसारू ||
प्रान नाथ तुम बिन जग माहीं | मो कहु सुखद कतहुं कछु नाहीं ||'

आध्यात्म रामायण में, एक पग और आगे, माता सीता कहती है – मै पहले चलूंगी | पीछे आप अयिएगा | मै मार्ग के कुश कांटे हटाती चलूंगी | बाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता कहती है मैंने पिता के घर में ब्राह्मणों के मुख से सुना था कि मुझे अवश्य ही वन में रहना है वनवास तो उनके लिए दुःख पूर्ण होता जिनका मन और इन्द्रिया उनके बस में नहीं है | मै आपके पीछे उसी तरह रहूंगी हैसे सावित्री सत्यवान की अनुगामिनी थीं |

मैथिलीशरण गुप्त जी लिखते है –

'प्रभु ने दृष्टि उधर डाली
दीख पड़ी दृढ ह्रद वाली' (साकेत)

माता सीता के दृढ़ता को भगवान राम अच्छी तरह जानते है और अंत में वह कहते है-

'तुमने मेरे साथ चलने का जो निर्णय लिया है, वह तुम्हारे और मेरे, दोनों कुलों के लिए सर्वथा योग्य है |' (बाल्मीकि रामायण) [4]

2. लंका में अग्नि परिक्षा

माता सीता से कौन अग्नि परीक्षा ले सकता है ? वैदेही के सन्निकट खड़े होने भर की तपस्या किसके पास है ? हां ! लोक मानस को पुष्ट करने के लिए वे अग्नि परीक्षा भी दे सकती है | क्योंकि उनका उद्देश्य लोक शिक्षण के द्वारा लोक संग्रह करना है | जो लोग उनका संघर्ष नहीं समझते है जिन्हें उनके पथ की दुरूहता का आकलन संभव नहीं है उन्हें भी विश्वास में लेना है |

श्रीराम के वनगमन का उद्देश्य माता पिता के आज्ञा के पालन के साथ ही वन में आततािइयों का समूल नाश कर जन सामान्य के जीवन में आस्था और विश्वास पैदा करना था इसके साथ ही साथ साधको, तपस्वी और ऋषियों को ऐसा साकारात्मक परिवेश उपलब्ध कराया जा सके जिससे वे निश्चिन्त होकर अपनी साधना कर सके और उनके ज्ञान के प्रकाश में सामज उत्कर्ष की ओर बढे |

इसलिए श्रीराम अनुज लक्ष्मण के साथ सर-संधान करते है तो माता सीता पुरवासियों के बीच रहकर उनका मानसिक शोधन करती है | उनमे प्यार विश्वास बाटती हैं | कर्मठता और कार्यकुशलता भरती है |

शोकवाटिका में बैठी माता सीता केसरीनंदन हनुमान को आशीर्वाद देती है –

'अजर अमर गुननिधि सुत होहू | करहु बहुत रघुनायक छोहु ||' (मानस)

वे राम के कार्य से सबको जोड़ती रहती है| उन्होंने कौन्सिलिंग का बीड़ा उठा रखा है |

गौरी पूजन में गयी सीता माता ने रघुवीर का दर्शन लाभ लिया, वहीँ उनका मन, जीवन और जीवन लक्ष्य भी रघुवीर से एकमेक हो गया तथापि उनका स्वतन्त्र मत और आत्मगौरव संरक्षित रहता है |

राम लंका से आई छाया सीता के स्थान पर असली सीता को प्राप्त करने के लिए कुछ कटु वचन कहकर सीता में क्षोभ पैदा करते है –

माता प्रत्युत्तर देती है –

'किं माम सदृंश वाक्यमीदृंश शोक दारुणम्
रूक्षं श्रावसे वीर प्राकृतः प्राक्रितामिव' (वाल्मीकि रामायण) [5]

'वीर ! आप कठोर, अनुचित, कर्णकटु और रूखी बातें मुझे क्यों सुना रहे है | जैसा कोई निम्न श्रेणी का पुरुष निम्न श्रेणी की स्त्री से कह रहा हो |' माता सम्मानजनक शब्द 'वीर' से श्रीराम को संबोधित करती है, किन्तु अगले पल लक्ष्मण से कहती है –

'लछिमन होहु धरम के नेगी | पावक प्रकट करहु तुम बेगी |' (मानस)

आगे गोस्वामी लिखते है –

'पावक प्रबल देखि वैदेही | हृदय हरष नहिं भय कछु तेहीं ||
जो मन बचन क्रम मम उर माही | तजि रघुवीर आन गति नाहीं ||
तौ कृसानु सब कै गति जाना | मो कहु होऊ श्रीखंड समाना ||' (मानस)

अध्यात्मा रामायण और वाल्मीकि रामायण में प्रसंग आता है कि, जब माता अग्नि में प्रवेश कर रही थी, वहाँ उपस्थित जनसमुदाय नर, बानर,राक्षस इसके अतिरिक्त अपने अपने स्थान पर सिद्ध तपस्वी सभी व्याकुल होने लगे | इंद्र, कुबेर, वरुण, महादेव, ब्रम्हा सहित समस्त देवता भगवान राम की स्तुति कर उन्हें उनका स्वरूप याद दिलाने लगें देवता कहते है –

'श्रीराम ! आप सम्पूर्ण विश्व के उत्पादक, ज्ञानियों में श्रेष्ट और सर्व व्यापक है,फिर इस समय आग में गिरी हुई सीता की उपेक्षा कैसे कर रहे है | आप समस्त देवताओं में श्रेष्ठ विष्णु ही है, इस बात को कैसे नहीं समझ रहे है?'

गोस्वामी जी मानस में लिखते है –

धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग विदित जो |
जिमि क्षीरसागर इंदिरा रामहिं समरपी आनि सो ||
सो राम बाम विभाग राजति रुचिर अति सोभा भली |
नव नील नीरज निकट मानहु कनक पंकज की कली ||' (मानस)

जैसे क्षीरसागर ने भगवान विष्णु को लक्ष्मी जी समर्पित किया था, उसी प्रकार अग्निदेव ने स्वं प्रकट होकर सम्मानपूर्वक माता सीता को श्रीराम को समर्पित किया |

अब भगवान राम समस्त उपस्थित लोगों से कहते है –

जैसे महासागर अपनी तटभूमि को नहीं लांघ सकता उसी प्रकार रावण अपने ही तेज से सुरक्षित इन विशाललोचना सीता पर अत्याचार नहीं कर सकता| तथापि तीनो लोको के प्राणियों के मन में विश्वास दिलाने के लिए एक मात्र सत्य का सहारा लेकर मैंने अग्नि में प्रवेश करती हुई विदेह कुमारी सीता को रोकने की चेष्टा नहीं की |' (बाल्मीकि रामायण) [6]

लंका में मंदोदरी माता सीता की शक्ति और तेज को पहचानती है, वे अपने पति रावण को समझाते हुए कहा रही है –

'तव कुल कमल विपिन दुखदायी | सीता सीत निशा सम आयी ||
सुनहु नाथ सीता विन दीन्हे | हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ||' (मानस)

3. सीता परित्याग

रामराज्य सुचारू रूप से चल रहा था –

'वयरू न करि काहू सन कोई | राम प्रताप विषमता खोई ||
सब नर करइ परस्पर प्रीती | चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ||'

सब मंगल था | हां कुछ दिनों पूर्व माता सीता ने श्रीराम से एक प्रसंग की चर्चा की थी | जिसमे बताया की देवताओं ने सीता जी से प्रार्थना करते हुए कहा है कि आप चिद्शक्ति है, आपके ही कारण श्रीराम भूतल पर रुके हुए हैं, कृपा करके आप बैकुंठ चली आये तो पीछे-पीछे श्रीराम भी आ जायेंगे और हम सभी सनाथा हो जायेंगे | (अध्यात्म रामायण)

अभी एक दिन पूर्व अशोक वनिका में विहार करते समय श्रीराम सीता में गर्भ के चिन्ह देखकर अत्यंत आनंदित हुए थे और उन्होंने माता से पूछा – 'सीते ! तुम्हारा कौन सा मनोरथ पूर्ण करू' | तब माता ने गंगा तट पर स्थित ऋषियों के आश्रम देखने की अभिलाषा प्रकट की थी और राम ने अगले ही दिन उसे पूरा करने का वचन दिया था | (वाल्मीकि रामायण)

इतनी सब बातें हुई थी कि राम को पता चला कि प्रजा में सीता को लेकर अपवाद हो रहा है प्रभु राम शोक संतप्त हो गए | मर्मान्तक पीड़ा उन्हें निर्बल बना रही थी | उनके मन में एक ही विचार घूम रहा था – कि विदेह नंदिनी पर यह कैसा वज्राघात हो रहा है | वेदना विह्वल वे सीता का सामना नहीं कर पा रहे थे |

राम राज धर्म से बंधे हैं | सत्य की प्रतीति और सत्य की प्रतिष्ठा प्रजा में सतत् जीवंत और जाग्रत रहे यह शासन का धर्म है | इसका क्या उपाय है, राम अत्यंत आतुर है –

उत्तररामचरितम के षष्ठ अंक में महाकवि भवभूति में लिखा है –

'रामेण किं दुष्करम' अर्थात राम के लिए कुछ दुष्कर नहीं है | प्रजा रंजन के लिए वे कठोर से कठोर निर्णय लेते रहते है | वे लक्ष्मण को बुलवाते है और सीता माता को वाल्मीकि आश्रम ले जाने की बात कहते हैं |

माता प्रसन्नता पूर्वक ऋषि पत्नियों के लिए वस्त्र आभूषण आदि रखती है और सहर्ष बन जाने को प्रस्तुत होती है क्योंकि अभी कल ही रघुनन्दन ने उन्हें वचन दिया था |

लक्ष्मण के मस्तिष्क में रास्ते भर श्रीराम की कही हुई एक ही बात घुमड़ रही है –
'भैया लक्ष्मण ! सीता अब अयोध्या कभी नहीं आयेगी' |

मार्ग में ऋषि वाल्मीकि के सम्बन्ध में बहुत सी बातें करते हुए, लक्ष्मण जी बाल्मीकि आश्रम के सन्निकट पहुचते है और सीता माता को सारी बातें बताते है |

माँ तनिक विचलित होती है, स्वं को संभालती है और धैर्य पूर्वक अयोध्या के लिए सन्देश देती है – वे लक्ष्मण से कहती है- 'सभी माताओं को मेरा प्रणाम कहियेगा और सबको बताईयेगा कि मै शकुशल हूँ' |

भगवान राम के लिए वे कहती है –'लोगों में आपकी जो निंदा हो रही है अथवा जो अपवाद फैल रहा है, उसे दूर करना मेरा भी दायित्व है |
'लक्ष्मण ! तुम महाराज से कहना आप धर्म पूर्वक बड़ी सावधानी से रहकर पुरवासियों के साथ वैसा ही वर्ताव करें जैसा अपने भाईयों के साथ करते है| यही आपका परम धर्म है | (वाल्मीकि रामायण)
अब उनके सामने अधिक विशाल कार्यछेत्र था ! जिसे प्राणपण से उन्हें संभालना था !

अब माता उनके सन्निकट थी, जो उनके सदा से आत्मास्वरूप आत्मीय रहे है – लता –विटप,पशु-पक्षी नदी-सरोवर,ऋषि मुनि !अब वे धरती माँ के सुविस्तृत उन्मुक्त परिवेश के मध्य थी !अपने शिशुओ के जन्म के लिए उन्होंने इसी प्रकार के सहज, नैसर्गिक, सुसंस्कारित,आत्मिक और अध्यात्मिक वातावरण की संकल्पना संजोयी थी !ये शिशु राष्ट्र की निधि, देश का भविष्य है !इस पीढ़ी को सबल,सशक्त और सक्षम बनाना व्यक्ति,समाज का गुरुतर उत्तरदायित्व है !अब यही कार्य उन्हें करना है !

वे जब जंहा रही है,उन्होंने सृजन ही किया है !अब सन्तति के दायित्व का वरण करती है और हमे देती है – लव कुश जैसे तेजस्वी,ओजस्वी,वर्चस्वी वीर राजकुंवर !

उत्तररामचरितम के षष्ठ अंक में महाकवि भवभूति ने वर्णित किया है –राम शम्बूक बध कर लौटे है,वे ऋषि बाल्मीकि के आश्रम के निकट विमान से उतरते है,यही पर दो बालको ने उनके अश्वमेघ यज्ञ के लिए छोड़े गए अश्व को पकड़ लिया है और चन्द्रकेतु तथा लव में युद्ध भी आरम्भ हो गया है वहां पर लव कुश को देख कर राम विस्मय विमुग्ध है उन्हें पता चला है की लव कुश को जिर्म्भकास्त्र स्वतः प्रकाश है !राम आश्चर्यचकित होते है,वे सोचते है यह कैसे हो सकता है ! जिर्म्भकास्त्र तो गुरु परमपरा से मिलता है !यही पर उन्हें प्रतीति हो जाती है कि ये सीता पुत्र है !लव के लिए वि कहते है –
"जैसे धनुर्विद्या सशरीर हो गई हो,जैसे शौर्य,दया धैर्य सरे गुणों का संग्रह हो !"

कुश को देखकर वे कहते है जैसे साक्षात् वीर रस चला आ रहा हो

राम-सीता को तनिक समझना हो तो हम आज के समय में श्रीराम शर्मा आचार्य और माता भगवती देवी शर्मा के जीवन पर दृष्टिपात कर सकते है जिन्होंने आधुनिक समय में अखिल विश्व गायत्री परिवार खड़ा कर दिया और शांतिकुंज जैसी पुरातन तपस्थली अपनी तप साधना से विनिर्मित की !माता भगवती देवी शर्मा और गुरु देव दो होते हुए भी एक है !ऐसे लोग विश्व में नव निर्माण के लिए आते है
माता सीता का जीवन चरित मर्यादा और कर्तव्यंबोध का अप्रतिम उदाहरण है !
माता सीता के जीवन के कुछ अनमोल सूत्रों को हम इस प्रकार समझ सकते है –

1. राम सीता का लक्ष्य एक है ---- समाज का उन्नयन !
2. राम सीता की परस्पर प्रगाढ प्रतीति और समर्पण,भले वे पास रहें या दूर !
3. सीता माता का अनवरत सामाजिक क्रिया कलापों में निरत रहना !
4. प्रकृति, वन्य प्राणियों और लोक जीवन से उनका अत्मिक लगाव !
5. अगली पीढ़ी को सशक्त और संस्कारवान बनाना !

इस प्रकार सीता माता का चरित हमारी संसकृति का आधार और नारीत्व को उत्कर्ष पर ले जाने वाला प्रकाशस्तम्भ है !

2. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अध्यात्म रामयण
2. बाल्मीकि रामायण
3. रामचरितमानस
4. साकेत ---- मैथिलीसरण गुप्त
5. उत्तररामचरितम ----भवभूति

Teaching of Ramayana in Practical Life

Ujjwal Sardar
Deshabandhu Mahavidylaya, West Bengal
(ujjwalsardar88@gmail.com)

The study of scriptures is very useful in our practical life. The teaching of different Indian scriptures like Vedas, Epics, Puranas, Smriti sastras etc. are very useful in our daily life. The Ramayana and The Mahabharata are our national epics. The Ramayana one of the ancient Hindu epic depicts enormous ways of moral teachings, which helps us understanding ourselves and building our character through numerous ways, by following path of righteousness even in the face of adversity. Even Ramayana shows about the consequences of one's action.

Keywords: Veda, Ramayana, Mahabharata, Puran, Practical Life

1. Introduction

It is said about the epic Ramayana –

Kaamaarthagunasamyuktam dharmaarthagunavistaram
Samudramivaratnaadhyam sarvashrutimanoharam // Ramayana - 1.3.8

Ramayana is the meeting place of four purusartha - *Dharma, Artha, Kama and Moksha*. The aim of Ramayana is to establish an eternal ideal not only for a nation but for the entire human society. The protagonist of the epic the Ramayana, Rama had to accept *Banavas* (exile) due to some family commitments/ or to keep his father's vow/promise. Then he had to waged a war to rescue his wife Sita from Ravana.

The happiness, sadness, pain in the life of every character in the epic is centred on this banavas and war. Almost all the characters in the stories based on The Ramayana have to overcome many hurdles in real life due to various reasons. Yet each individual in the Ramayana has to overcome various obstacles in the family, social, political and move forward in life with their own personality traits. Therefore, many teachings, principles, advices and experiences necessary in the practical life of people are scattered in the Ramayana.

Here are some examples that are very necessary in real life and can be retrieved from the Ramayana. This teaching of Ramayana will be very useful in our practical life which I want to show in this article.

2. Discussion

In The Ramayana, Rama decides to go to the forest to protect the righteousness of his father's truth. But Lakshmana was against Rama's decision and convey his mind to Rama and tries to dissuade him from entering into the path of exile-

Biklabo biryahino yah sa daibamanubartate /
Birah sambhabitatmano na daibam paryupasate // Ramayana- 2.23.16

He further said to Rama – One who is supported by his own virtues and righteousness is never disheartened by the act of divine influences.

Daibam purusakarena yah samartha prabadhitum /
Na daivena bipannaarthah purasha soabasidati // Ramayana- 2.23.17

This speech of Lakshmana to Rama is influential and helpful in firm installation of abidance in those depending on divine support worldwide. Rama contemplates about the security of his wife Sita and decides to leave his wife in Ayodhya before embracing the forest life like an ascetic. During this moment, Rama advises Sita against praising him to Bharata, as aafluent individuals dislike gossip from others.

Hridhiyuktaa hi purusaa na sahantye parastavam/
Tasmaanna te gunah kathyaa Bharatasyaagrato mama// Ramayana-2.26.25

This statement of Rama is absolutely true in the practical life of man. If there is any possibility of upcoming danger, a wise individuals will take precautions to remedy it before it occurs.

Anaagatabidhanamtu karttavyam shhubhamicchataa/
Aapadam shhamkamaanena purusena bipashitaa // **Ramayana-3.24.11**

The role of money in people's life is recognized as significant in Ramayana, but money-making is not of paramount importance because it only makes people more and more greedy. He emphasised that being solely dependent on accumulating monetary gain is reprehensible. Ram said to Kaushalya and Lakshamana that- doing all the work that is only related to money will also be hated by the people.

Dweshyo bhavatyarthaparo hi loke.... Ramayana-2.21.58

If we follow this teaching of Ramayana in our practical life our mutual turmoil and misery will be reduced. There will be no corruption in India or rather in the whole wide world, if everybody follow this rule and specifically political persons or leaders and the officers of the government offices follow this principle.

The Mahabharata also condemns excessive attachment to any one of Dharma, Artha and Kama. Bhima's decision on this ground is memorable.

Dharmaarthyakaamaah samameva sevyaa/
Yo hyekabhaktah sa khalu jaghanyah // Mahabharata-12.167.40

From the above discussion we can conclude that the importance of money in the social life presented in both of the epics Ramayana and Mahabharata was equal. However, both the societies depicted in the epics, earning the excessive amount of money in dishonest ways were frowned upon and condemned and lead them towards destruction.

Before the battle Rama said to Khar, who was intoxicated with self –praise.

He who commits sin out of greed or infatuation without knowing what the outcome will be, rejoices in his destruction like the *Raktapuchikaa* (Blood sucking reptile)

Lobhaat paapaani kurbaanh kaamaadva yo na budhyate /
Hristhah pashyati tasyantam brahamani karakaadiva// Ramayana-3.29.5

Shurpanakha's words to Ravana are particularly useful for pragmatic politicians. (Chapter3.3). Elsewhere, when Sita is abducted by the demon king Ravana, She says- The consequences of unethical actions are not seen immediately but it will be devised by the Fate depended upon your karma.

Na tu sadyoabinitasya drishyate karmaph falam/
Kaloapyangibhabatyatra shsyanaamiva paktaye //. Ramayana-3.49.27

When Rama was very griefstriken by thinking about Sita's demise, Lakshmana consoled and said to him – You should leave your love for your loved ones without suffering. If something essential is lost, and no effort is made to regain it, it can never be recovered. Therefore, regain your strength and discard any feelings of weakness. Enthusiasm is the ultimate force; there is no greater power. Because, nothing is scare in the world, for spirited beings.

Swastham bhadram bhajaswaarja tyajyataam kripanaa matih/
Artha hi nastakaaryaarthairajatnenaadhigamyate//
Utsaho balavaanarya nasttuyutsahat param balam/
Sotsahasya hi lokeshu na kimchid opi durlabham// Ramayana-4.1.120-121

Lakshmana's words to Rama are very useful for the grieving people of the world. In response to some of the statements of the dying Bali, Rama said- He who stays on the path, the elder brother and the teacher should be considered as father, and the younger brother and the meritorious disciple should be considered as sons. Religion has reason for this.

Jyestho bhrataa pitaa vaapi yasch vidyaam prayacchati/
Trayaste pitaro jnyeya dharma ch pathi vartinah//
Yabiyaanaatamanah putrah shisyashaapi gunoditah/
Putravatte trayashintya dharmashaivatra kaaranam // Ramayana-4.18.13

On the verge of death, Bali told his son with various advices – Do not engage yourself in deep friendship or never displease anyone because both are sinful. So strive to take the middle path.

Na caatipranayah karyah kartavyoapranayashca te /
Ubhyam hi mahaadosom tasmadantaradrig bhava. // Ramayana-4.22.23

Without supporting wrongdoings, Kubera says- the result of sin is only sorrow and it is to be suffered by oneself in this world. Henceforth, who commits grievous crimes resulting in killing himself.

Paapasyahi phalam duksham tad bhoktavyamihaatmona /
Tasmaadaatmapaghaataartham mudah paapam karisyati //
Kasyachinna hi durbudheschandato jayate matih /
Yaadrisham kurute karma taadrisam phalamashnute // Ramayana- 7.15.25

A lot of real life truths are highlighted in multiple anecdotes narrated in Uttarkandaa of Ramayana. Each of the mentioned comments can be said to be the result of the practical life of people.

3. Conclusion

In today's society, a class of people, proud of their authoritative power and wealth, disregard ethical considerations, without any fear denounces the effect of Karma. Some political leaders, in particular, amass fortunes by using dishonest means, leading towards deadly consequences. Their once respected stature diminishes rapidly, as they are viewed with disdain by the people, who once showed great respect and saw them through the lens of reverence. It is said that the sinner will face the consequences of their actions, if not immediately, then eventually. The inexorable power of time is beyond any measures; a person who wields great power today may find themselves impoverished and scorned as time passes. Because karma shows no mercy and give them the fruit bear by their sins as well as virtues.

Arthasasthramidam proktam dharmasastramidam mahat /
Kamasastramidam proktam vyaasenaamitabudhinaa // Mahabharata-16.18.33-36

So people should start thinking about the future consequences.

Chalachittam chalabittam chalajibanajouvanam/
Chalaachalamidam sarvam kirtiryasya sa jibati //

This scripture of Mahabharata should be obeyed.

4. References

1. Alan, Davidson Keith. A History of Sanskrit Literature. Oxford University Press, London: 1920.
2. Bandyapadhyay, Bibekananda. Tulonamulak alochanay Ramayan o Mahabharat. Kolkata**:** Sanskrit book depot, 2006.
3. Bhattacharya, Sukhomoy. Mahabharate chaturbarga. Kolkata: Sanskrit Mahavidyalaya Gobeshona Granthamala: 82
4. Choudhuri, Sajal (Ed.). Ananta shradhanjali. Kolkata: Saraswatasamaj, 1411 B.
5. Thakur, Anatalal. Nibandhabali**.** Kolkata: New age publishers.1422 B.
6. M. Winternitz. A History of Indian Literature. Vol.I, Part-II Calcutta University,1978.
7. Shrimad Balmikiya Ramayana,Gita press, Gorakhpur.

Journal and Paper Consulted

1. Anviksha Vol.XXXIII, Journal of the department of Sanskrit, Jadavpur University, Ed. Lalita Sengupta.Kolkata:2012.
2. Chauhan, Mehul. Leaders in Competitive Business Environment. 5th International Ramayana Conference.

Evolution of Linguistic Adaptation in Mythological Narratives of Ramayana

Debashis Paul
Kazi Nazrul University, Asansol
(debashispaul@dbmcrj.ac.in)

The paper intends to analyse comparatively and comprehensively on the distinct linguistic strategies employed in two noteworthy adaptations of the Indian epic Ramayana: the contemporary cinematic rendition, "Adipurush," directed by Om Raut, and the well-known television series, "Ramayana," by Ramanand Sagar. The primary focus is on the deliberate linguistic choices, with an emphasis on how "Adipurush" utilizes a popular, common language, diverging significantly from the traditional lofty language inherent in the epic narrative and by adapting a popular, common language, the film appears to bridge the gap between the epic's traditional grandeur and contemporary accessibility, potentially reshaping the narrative landscape.

Keywords: Ramayana, Adipurush, Adaptation, Translation, Mythology

1. Introduction

Translation is generally considered not only a mere language transmission from one language to another but also as the process of transferring an idea, a concept, or a thought from one language to another, as Susan Bassnett remarks "*Translation is a process which can go from one language to another but is also a process which moves between different cultural and social contexts*." Lawrence Venuti opines that literary translation involves the "*domestication*" or "*foreignization*" of texts, with translators choosing whether to preserve the work's foreignness or adapt it to the standards of the target culture. Danish linguist Henrik Gottlieb and French linguist Yves Gambier also support the concepts of localization which focuses on the modification of the content to make it fit for the target audiences' language and cultural peculiarities. In this context, adaptation is one of the most significant tools of translation. In the process of making fit, a translator makes the senses available for the target audience and in doing so (recreating the text), he/she enables the building of communicative bridges across language and cultural boundaries. This act of translation incorporates not only (in a linguistic sense) transferring what has been produced in one language in another, but enabling the communicative transfer of what has been produced in a particular language and culture into another language and culture. To bridge these gaps the translators, take shelters of adaptation which again goes beyond simple language alteration as a necessary element of translation. Translation theorist and critic André Lefevere points out that adaptation means changing the text to adapt to the language, social, and cultural standards of the intended audience. To optimize resonance and comprehension among the target audience, this procedure could involve changing idiomatic terms, cultural allusions, or even the plot itself.

This modification is an essential tool in ensuring narratives resonating across diverse audiences and contexts especially in the art of story-telling which transcends time, culture, and medium. Whether it's the translation of a revered epic like the Ramayana into another language or the strategic modification of language elements to suit contemporary sensibilities, linguistic adaptation involves a deliberate and nuanced approach aimed at preserving the essence of the original narrative while making it accessible to diverse sections of audiences. The present work is a comparative and comprehensive exploration of the distinct linguistic strategies employed in two noteworthy adaptations of the Indian epic Ramayana: the contemporary cinematic rendition, "Adipurush," directed by Om Raut, and the well-known television series, "Ramayana," by Ramanand Sagar. The primary focus is on the deliberate linguistic choices, with an emphasis on how "Adipurush" utilizes a popular, common language, diverging significantly from the traditional lofty language inherent in the epic narrative.

The Ramayana of Ramanand Sagar sticks to a classical linguistic style but "Adipurush" strategically incorporates to a very colloquial or tacky language for instances, the dialogues said by the Lord Hanuman, Indrajit and even Ravana. Such adoption of language is a clear depart from the classical linguistic style which is prevalent in the source text or previous adaptations. This kind of deliberate activity in linguistic evolution prompts an exploration into its impact on narrative authenticity as well as cultural resonance. By adopting a popular, common language, the film tries to bridge the gap between the epic's traditional grandeur and contemporary accessibility, potentially reshaping the narrative landscape. It is also highlighted in the beginning of the movie in the form of disclaimer: "*The following film is a screen adaptation of the Valmiki Ramayana, the greatest Indian epic. While every effort has been made to stay true to the essence and spirit of the original text, certain elements, characters, and events may have been interpreted or modified to suit the screen adaptation……the film may also include, dramatizations, and fictional additions.*"

Thus, by such linguistic strategies, these adaptations not only render the mythological characters more relatable but also invite audiences to actively participate in the storytelling process which help foster a deeper sense of immersion and emotional resonance. The use of colloquial language, however, serves as a catalyst for narrative innovation, allowing filmmakers and storytellers to explore alternative interpretations of familiar themes and characters. In "Adipurush," for instance, the juxtaposition of contemporary language with the epic backdrop creates a compelling juxtaposition, highlighting the timelessness and universality of the Ramayana's moral dilemmas and ethical predicaments. By infusing the narrative with elements of modernity, these adaptations breathe new life into ancient tales, inviting audiences to reevaluate their own understanding of morality, heroism, and redemption in the era of globalisation.

In “A Theory of Adaptation” Hutcheon points out "*Adaptations are acts of creation that transform elements from the adapted work in light of contemporary social and cultural contexts.*" In the light of this concept a comparative analysis of Ramayana (1987) and Adipurush (2023) will try to show the complex relationship between narrative authenticity and language adaptation and shed light on the evolving nature of mythological storytelling in contemporary cinema and television. It will also investigate the linguistic choices made by filmmakers and their impact on cultural representation and audience engagement. With a particular focus on the linguistic evolution evident in these two adaptations by this way, this paper will try to contribute to a deeper understanding of the ways in which the deliberate language choices made by the filmmakers shapes our perception of myth, tradition, and cultural identity and the dynamic interplay between tradition and innovation in the realm of mythological storytelling.

2. The Two Ramayanas

The Ramayana is Indian’s the most revered ancient epic of Hindu religion written in ancient Sanskrit between 500 and 100 BC by Hindu sage Valmiki. He composed it in Sanskrit *Slokas* (verses) in a 32-syllabe *Anustup* metre. It consists of 24000 verses and in seven *Kandas* (Cantos) dealing chronologically with the events in the life of Lord Rama. It illustrates the tale of Lord Rama and his quest to rescue his wife Sita from the clutches of the demon king Ravana.

In Adipurush, the movie is introduced like: “The history of India is a glorious one and among those pages of history, the greatest one is the page where the tales of *Marayada Purushottom* (the man who is supreme in honour) Lord Rama’s tales are written. This tales and the glorious songs of Shri Rama cannot be told in crores of cantos. Such is His magnificence that being beyond any verbal description He becomes describe-able by everyone. Whatever images of Him he/she sees in his/her mind accordingly he/she writes his/her own tales of Lord Rama.” This introduction exemplifies the importance of the Ramayana in Indian context. At the same time, it hints at the prevalence of the diverse narratives of the Ramayana and different adaptation of it in different culture and society.

On the 25th January, 1987, on the channel Doordarshan, that the first episode of Ramanand Sagar’s Ramayana (an adaptation primarily from Tulsidas’s Ramayana) was aired. The Ramayana by Ramanand Sagar remains one of the most popular and beloved television series in Indian history with the cast members including Arun Govil as Lord Rama, Deepika Chikhalia as Sita, and Sunil Lahri as Laxman. It is praised for its breathtaking sights, catchy soundtrack, and fascinating acting. The show is renowned for its attention to detail since it added its own special touches while staying true to the original epic. It was shot on a grand scale with lavish sets, intricate costumes, and impressive special effects. The adaptation was entertaining and full of valuable life lessons that continue to resonate with the contemporary audiences and teaches us about the importance of following the path of righteousness and standing up for what is right even in the face of adversity.

"Adipurush" is a cinematic adaptation of the timeless Indian epic Ramayana, directed by Om Raut. The film promises to offer a fresh interpretation of the classic tale, blending elements of mythology, fantasy, and high-octane action using modern technique of VFX. Set against the backdrop of ancient India, "Adipurush" follows the epic journey of Lord Rama as he battles the demon king Ravana to rescue his abducted wife, Sita. One of the most intriguing aspects of this adaptation lies in its linguistic choices, particularly in its departure from the traditional elevated language of the source text or the earlier adaptations like the TV series Ramayana (1987). Unlike previous adaptations that often adhere closely to the classical linguistic style of the Ramayana, "Adipurush" strategically incorporates a more colloquial and accessible language, reflecting a conscious effort to bridge the gap between the ancient narrative and contemporary audiences as Om Rout said in an interview with the *Variety*, “*I* was mesmerized. This is the way this story has to be told, very condensed… precise, yet you feel for the characters, you are rooting for Prabhu [Lord] Ram — and at the same time the presentation was so modern and so fresh and very children friendly…..the teachings and everything was said very simply as opposed to making it a little heavy and mundane and boring and monotonous.”

3. Languages of the two Ramayanas

The linguistic strategy in both the adaptations of the Ramayana are quite different in their approach. To understand it comprehensively let’s consider some dialogues from the TV and the movie adaptations of the Ramayana. As the TV adaptation is quite familiar with the readers, I am citing one particular scene as an example among the numerous instances. Let’s take the dialogue of Ravana from the court scene when Hanumana is brought in after being captured by Indrajit.

Ravana Says: “…hmmm…Hum aap sab ke mat ko swikar karte hai, parantu iss dusta banara ko koi na koi danda dena abashyak hai……banaron ko apni puchh se badi mamta hoti hai, wohi uska abhushan hai! Atah, iski puchh jwala dijaiye. Jwali puchh leke yeh apni swami ke pass jaye aur wahan iske mitra aur kutumbi jan ise din aur peet abastha mei dekh kar dukhi *ho*......” (I agree with you all (his courtiers) but this monkey has to be punished… I have heard that monkeys are fond of their tails and it is also their ornament. So, let his tail be set fired. And let him go to his master and friends and relatives with his burned tail to make them feel sad….)

The overall tone of the dialogue is quite refined, sophisticated as well as delicate and dignified. But if we compare the languages with the Adipurush, the dialogues are quite different. They are more like a day-to-day conversation. Like:

“…soch raha hun bina puchh ka bandar keysa lagega!” (I am wondering how a monkey would look like without his tail!)

And then with some facial expression he instructed Indrajit to ablaze his tail and after doing that another significant exchange happens between Bajrang (Hanumana) and Indrajit which is like this:

Bajrang: *Ahh*!

Indrajit: Jwali na? Abhi toh aaur jwalegi. Bechara! Jiski jwalta hai wohi janta hai.
Bajrang: Kapda teri lanka ka, tel teri lanka ka, aag bhi teri lanka ki aur jwalegi bhi teri lanka hee!
(**Bajrang**: Ahh! Indrajit: Feeling ablazed? The more is coming. Poor guy! He who is ablazed feels the pain. **Bajrang**: The cloth belongs to your father, the oil belongs to your Lanka, the fire also belongs to your Lanka and it will burn your Lanka only)
Another such instance is when Bajrang returns from Lanka to the sea shore and after being asked by Jambavan:
Jambavan: Kiya hua Bajrang?
Bajrang: Bol diya, jo hamare behanoko haat lagayenge unki Lanka jwala denge.
(**Jambavan**: What happened, Bajrang? **Bajrang**: I told them whoever will touch the hands of our sisters their Lanka will be burned down.)
One such instance is when Bajrang enters the Ashoka Vatika in Lanka and the exchanges between Dhakdasur and Bajrang are like:
Dhakdasur: Tum andar keyse ghuse? Yeh kiya koi maidan hai jo tum ghumne chale aaye? Aur tumhe kiya laga tum bach jaoge mujhse? Tum jante bhi ho kau hun mein? Dhakdasur! Maroge bete! Aj tum apne jaan se haat dhoge!
Bajrang: Haat nhi, mein Dhakde ko hee dhounga!
(**Dhakdasur**: How dare you enter the garden? Is this any play ground that you have come to walk? And what have you thought Will you escape from my surveillance? Do you know who am I? I am Dhakdasur! You will die, son! Today you will surely die? **Bajrang**: I won't die rather I will make Dhakda dead!)

Such colloquial day-to-day language is spoken by the majority of people in our country especially those who live in semi urban and rural areas. This kind of language is not refined and sophisticated as India is having more than 1650 dialects and dialects are not considered as standard language. If we compare the words like '*swikar', 'parantu', 'atha', 'swami', 'mitra', 'kutumbi jan', din aur peet'* etc with the words like *'jwali na', 'abhi toh aur jwalegi', 'teri Lanka', 'behanoko haat lagayenge', 'maroge bete', 'jaan se haat dhoge', 'dhakdeko dhounga'* etc it will be very clear that the language strategies applied in both the adaptation are different. In this context, Linda Hutcheon's concept of "adaptive transformation" is very much pertinent. It emphasizes the dynamic interplay between tradition and innovation in adaptations. Hutcheon notes, "*Adaptations are acts of creation that transform elements from the adapted work in light of contemporary social and cultural contexts*". This theory affirms the idea that linguistic choices in mythological adaptations, such as the use of colloquial language, are deliberate acts of creation aimed at resonating with modern audiences while retaining ties to the source material.

4. Conclusion

As Bassnett points out in her "Adaptation: Studying Film and Literature" that "*Adaptation as rewriting acknowledges that texts exist in specific socio-political contexts and are constantly changing in meaning as those contexts change*". In the light of the above concept, the film adaptation of Ramayana can also be considered as a rewriting of the age old epic. To stray away from the epic the names of the principal characters have been changed like Rama is Raghav, Sita is Janki, Lakshmana is Shesh, while Hanuman is Bajrang. As the society is changing the narrative is also changing. This may be read as a revolt against the hegemony of elite language keeping in mind the target audience as Lefevre says 'domestication' to make it fit and appropriate to the desired audience. The characters like Lord Hanuman, Indrajit, and Ravana are depicted speaking in tacky language is a clear departure from the classical linguistic style prevalent in the other adaptations. This linguistic evolution serves multiple purposes within the adaptation like catering to the sensibilities of modern audiences, creating new narrative acceptability. By adopting such a popular, common language, the film aims to make the mythological narrative more relatable and accessible to a broader audience, thereby ensuring its continued relevance in contemporary culture and society. Moreover, the use of colloquial language serves as a tool for audience engagement, drawing viewers into the story and fostering a deeper emotional connection with the characters and themes of the Ramayana. Overall, "Adipurush" represents a bold and innovative approach in adapting the timeless tale of the Ramayana for modern audiences, highlighting the dynamic interplay between tradition and innovation in mythological storytelling.

5. References

1. https://youtu.be/rMSYSzrZ6f0 (Ramanand Sagar's Ramayana from open-source YouTube)
2. https://youtu.be/2qzk1-F5c10 (Om Rout's Adipurush from open-source YouTube)
3. Venuti, Lawrence. *The Scandals of Translation*, Routledge, 1998
4. Bassnett, Susan and Lefevere, André. (Ed) *Translation/History/Culture: A source book*, Routledge, 1992
5. Bassnett, Susan. *Adaptation: Studying Film and Literature*
6. Hutcheon, Linda. *A theory of Adaptation*, Routledge, 2006
7. Augusto, Carlos and da Silva, Viana. *Modern narratives and film adaptation as translation*, Acta Scientiarum. Language and Culture Maringá, v. 35, n. 3, p. 269-274, July-Sept., 2013
8. Baker, Mona and Saldanha, Gabriela. (Ed) *Routledge Encyclopedia of Translation Studies*, Routledge, 2nd ed 1998.
9. Khazrouni, Mohsine. *Adaptation in Translation: Howells's Short Story "Christmas Every Day",* AWEJ for translation & Literacy Studies, Volume 1, Number 3, August 2017 Pp. 237-251
10. Yu Li, Liuling Long. *On the Translation of Film and TV Drama from Bassnett's Cultural Translation Theory*, International Journal of Education and Humanities, Vol. 4, No. 3, 2022
11. Bassnett and Lefevere (Ed). *Translation, Rewriting and the Manipulation of Literary Fame*, Routledge, 2004

12. 123telegureview.com
13. https://variety.com/2022/film/news/prabhas-adipurush-om-raut-ramayana-1235186861/
14. https://scroll.in/reel/1050836/adipurush-review-visual-effects-overwhelm-ramayana-adaptation

राम कथा में रावण और राक्षस जाति का चरित्र

राम मल्लिक
सरस्वती मल्लिक
(rammmallik@gmail.com)
(sarasmal@aol.com)

रावण रामकथा के महत्त्वपूर्ण पात्र है। वे मुनिवर विश्रवा के पुत्र, ब्रह्मर्षि पुलस्त्य के पौत्र और प्रजापति ब्रह्मा के प्रपौत्र थे । इनकी माता कैकसी लंका की पूर्व राजकुमारी और राक्षस जनजाति की थी । देवताओं से संघर्ष में राक्षसों का राजा मारा गया और भीषण जन संहार हुआ । बचे हुये लोग रसातल भाग गये। रावण ने माता के निर्देशन और प्रोत्साहन से उच्चशिक्षा प्राप्त की और घोर तपस्या से वरदान और अस्त्र शस्त्र प्राप्त किये । रावण ने लंका को स्वतंत्र कर प्रतापी राजा बना और राक्षसों का पुनर्वास कराया ।मानस में रावण के चार कल्पों का वर्णन है । रामकथा में उसकी भूमिका मात्र एक वर्ष की है । यह पंचवटी में सीताहरण से प्रारम्भ होकर लंका में राम रावण युद्ध में रावण की मृत्यु पर समाप्त होती है । प्रस्तुत लेख में इसकी विस्तृत चर्चा है।

1. प्रस्तावना

रामके कार्यकलापों का प्रारम्भ ताड़का राक्षसी के बध से होता है । विश्वामित्र मुनि अयोध्या से राम और लक्ष्मण को राक्षसों के संहार के लिये राजा दशरथ से माँगकर मिथिला में अपने आश्रम में लाते हैं । रास्ते में अपने आश्रम के निकट खड़ी ताड़का को मारने के लिये राम को संकेत करते हैं । राम ताड़का और उसके पुत्र सुबाहु और अन्य राक्षसों का संहार करते हैं और ताडंका के दूसरे पुत्र मारीचको बाण से दूर समुद्र के पास फेंक देते हैं ।

रावण रामचरितमानस का बहुत ही महत्त्वपूर्ण पात्र है । वह चारों वेदों और छओ शास्त्रों का प्रकांड पंडित माना जाता है । इसके अतिरिक्त उसे बाल चिकित्सा विज्ञान, ज्योतिष विद्या , सांख्य और वैशेषिक दर्शन पर भी ग्रंथों का रचनाकार माना जाता है । रावण रचित शिव तांडव स्तोत्र आज भी लोक प्रिय है। अपनी कठोर तपस्या और साधना से ब्रह्मा और शिव से वरदान प्राप्त किया था । समग्र देवताओं को पराजित कर अपनी मातृभूमि लंका द्वीप और समवर्ती क्षेत्रों को स्वाधीन किया था और अपने निष्कासित परिजनों का पुनर्वास कराया था । मानस की राम कथामें रावण की सक्रिय भूमिका मात्र एक वर्ष की है । यह पंचवटी में सीता हरण से प्रारम्भ होकर लंका में राम रावण युद्ध में रावण की मृत्यु पर समाप्त होती है । कृत्तिवास रामायण के अनुसार राम द्वारा बध किये गये राक्षसों की संख्या तीन करोड़ है ।

2. विस्तार

ताड़का का वृतांत

ताड़का राक्षस जनजाति की एक विधवा स्त्री थी जो ताड़का वन में रहती थी । यह क्षेत्र मिथिला राज्य का जनपद था। कामिल बुल्के के अनुसार रामकथा के राक्षस आदिवासी अनार्य प्रजातियाँ थी। सिद्धाश्रम पहुँचने के पूर्व विश्वामित्र राम को सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी तथा मारीच की माता ताड़का की कहानी सुनाते हैं । अगस्त्य ने सुन्द को मार डाला था। विश्वामित्र के कहने पर राम ताड़का का बध करते हैं और सुबाहु और अन्य राक्षसों को भी मार डालते हैं । मारीच को शतयोजन दूर समुद्र में फेंक देते हैं । वा० रा० के अनुसार ताड़का भूमि जपर गिरकर मर जाती है । रामचरितमानस में ताड़का दिव्यरूप धारण कर स्वर्गलोक चली जाती है ।

राम चरित मानस में ताड़का की कहानी एक चौपाई में है ।
चले जात मुनि दीन्ह देखाई । सुनि ताड़का क्रोध कर धाई ॥
एकहि बान प्राण हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥।३॥दो०२०९

स्त्री अवध्य है । शास्त्र की आज्ञा है कि न तो उसको मारे न अंग-भंग करे। वा०रा०में विश्वामित्र ने इसके समाधान में कहा कि आपका यह स्त्री बध घृणित कार्य नहीं है। जिससे चारो वर्णो का हित हो वह राजकुमार का कर्त्तव्य है। विश्वामित्र ने राम को अनेकानेक सिद्ध दिव्यास्त्र प्रदान किए और सबका प्रयोग-विज्ञान भी बता दिया। मुनि विश्वामित्र दूर अयोध्या जाकर राजा दशरथ से असुर समूह द्वारा सताये जाने की बात कहकर राम लक्ष्मण को मॉगकर लाते हैं। निकट में मिथिला राज्य के अधिकारियों से नहीं मिलते हैं । राजा जनक शायद ताड़का का बध नहीं पसंद करते।

रावण का चरित्र

- मानस के अनुसार प्रत्येक कल्पके रामावतारमें रावण भिन्न भिन्न हुआ करते हैं । मानस में जिन चार कल्प के रावणों का वर्णन है उनमें एक कल्प में जय विजय का रावण कुम्भकर्ण होना

- दूसरे कल्प में जालन्धर का रावण होना
- तीसरे कल्प में हरगणौं का रावणादि राक्षसों के रूप में पैदा होना, तथा
- चौथे कल्प में राजा भानु प्रताप का रावण होना पाया जाता है।

जिस रावण का विस्तार में वर्णन मानस में किया गया है वह चौथे कल्प का कहा गया है। राजा भानु प्रताप के भाई अरिमर्दन कुम्भकर्ण हुये, सचिव धर्मरुचि विभीषण और सुत सेवक आदि घोर राक्षस हुये। इसका विवरण मानस के बालकांड में दिया गया है।

मानसमें शिवजी का कथन है

उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर शाप बस भए सकल अघरूप ॥

रावण के जन्म और प्रारम्भिक जीवन की कथा वाल्मीकि रामायण में वर्णित है

रावण मुनिवर विश्रवा के पुत्र, ब्रह्मर्षि पुलस्त्य के पौत्र और प्रजापति ब्रह्मा के प्रपौत्र थे। इनकी माता कैकसी लंका की पूर्व राजकुमारी थी। कैकसी के दादा सुकेश ने बड़ी साधना और तपस्या की थी और लंका राज्य की स्थापना की थी। उनके बाद उनके पुत्र माल्यवान्, सुमाली और माली राज कर रहे थे। उनका देवताओं से संघर्ष हुआ जिसमें माल्यवान् मारे गये और भीषण जन संहार हुआ। बॉकी लोग पलायन कर रसातल में रहने लगे। मुनिवर विश्रवा के पुत्र वैश्रवण थे जिन्होंने अपनी साधना से कुबेर का पद प्राप्त किया था। लंका उस समय उजाड़ अवस्था में थी। पिता के कहने पर उन्होंने लंकापुरी में निवास किया। कैकसी रसातल से भूतल पर आकर मुनि विश्रवा की शरण में आई और उन्हें वरण किया। विश्रवा और कैकसी के रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण तीन पुत्र और शूर्पणखा नामकी एक पुत्री का जन्म हुआ। एक दिन कैकसी ने वैश्रवण कुवेर को रावण को दिखाकर कहा कि अपने भाई को देखो कितने तेजस्वी और वैभवशाली हैं और हम किस दयनीय अवस्था में हैं। तुम भी यत्न करो और भाई की तरह बनो। रावण ने प्रतिज्ञा कर माता को आश्वस्त किया और प्रचंड तपस्या और प्रयत्न से सफलता प्रात की। वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावणने अपने भाई कुबेर के पास दूत को भेजकर अपने निवास के लिये लंका देने की प्रार्थना की और विश्रवा ने भी कुवेर को कहा और उसने बात मान ली। उसके बाद रावण लंका का महाप्रतापी राजा बना।

मानस के अनुसार जिस कल्प में जो राक्षसों का राजा रावण होता है वही लंकापुरी में वास करता है। इन्द्र की प्रेरणा से कुवेर के एक करोड़ रक्षक लंका में रहते थे। रावण की सेना ने उन्हें भगा दिया और रावण ने लंका में अपनी राजधानी बनाई।

मानस के कुछ राम -रावण से जुड़े प्रसंग

राम , लक्ष्मण और सीता ने वनवास के समय १३ वर्ष चित्रकूट में निवास किया। रामने दंडक वनमें प्रवेश करने के पूर्व ही सामाजिक रूप से राक्षसों के जनसंहार की प्रतिज्ञा की थी

निसिचर हीन करहुँ महि भुज उठाय प्रण कीन्ह।

राम ने अगस्त्य मुनि से राक्षसों के संहार का उपाय पूछा। उन्होंने रामको इन्द्र द्वारा दिया हुआ दिव्य धनुष दिया जिससे विष्णुने राक्षसों का संहार किया था और तलवार भी दिया। मुनि के सुझाव पर रामने लक्ष्मण और सीता के साथ रावण के राज्य में दंडक वन के पंचवटी में निवास किया। वहाँ रावण की बहन शूर्पणखा आई और राम से विवाह का प्रस्ताव किया। राम और लक्ष्मण उसे चिढ़ाते रहे और लक्ष्मण ने उसे अपशब्द कहे और उसके साथ दुर्व्यवहार किया उसकी नाक कान काट दी। यह रावण को चुनौती देने के लिये थी।

ताके कर रावण कहँ मनो चुनौती दीन्हि। तुलसीदासजी कहते हैं।

उसके भाई ख़र और दूषण सेना के साथ लड़ने आये और राम के हाथों मारे गये। शूर्पणखा ने रावणके दरवार में जाकर सारी बात बताई। यह भी कहा कि

समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी। रहित निसाचर करिहहिं धरनी ॥

सेनानायक अकम्पन ने भी सेनाके संहार का समाचार रावण को दिया। रावण तक्षण जनस्थान आकर राम लक्ष्मण से युद्ध के लिये चल रहा था परन्तु अकंपनने सारी स्थिति समझाकर सीता हरण का सुझाव दिया।रावणने इस पर विचार किया

ख़र दूषन मोहि सम बलबंता। तिन्हहिं को मारई बिनु भगवंता ॥
सुररंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा।
तौं मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भवतरऊँ ॥

रावण मारीच को स्वर्ण मृग वनाकर सीताका हरण कर लंका ले आया। हरण के पहले रावण ने मनमें सीता को प्रणाम किया। लंका में सम्मान के साथ रमणीय अशोक वाटिका में रखा। अपनी भतीजी को सहायक नारियों के साथ उनके देखरेख के लिये तैनात किया।

हनुमानजीका सीता का पता लगाने के लिये लंका आना और बिभीषण के साथ सॉठ गॉठ , उनके द्वारा सीता का पता और रावण के दरवार में हनुमान का समर्पण और लंका दहन की कथा का मानस मे विस्तृत वर्णन है।

विभीषण ओर कुछ अन्य लोग रावणको राम के समक्ष समर्पण और सीता को लौटाने की सलाह देते हैं। किन्तु रावण अपनी बहन का अपमान और राक्षसों का संहार नहीं भूल पाता। इसे आत्म सम्मान और देश के स्वाभिमान पर चोट मानता है। विभीषण शत्रु के साथ चला जाता है और राम उसे लंका का राजा घोषित कर देते हैं। इसके बाद विभीषण रामजीका अंतरंग मित्र और सलाहकार बनकर रावण के विरुद्ध युद्ध कार्य में सक्रिय भाग लेता है। विभीषण के इस व्यवहार को कुछ लोग अपने भाई से विश्वासघात मानते हैं जिसने उसे प्यार और मान सम्मान दिया। कुछ लोग इसे रामजी के प्रति भक्ति की पराकाष्ठा मानते हैं।

रामजी की सेना समुद्र पर सेतु वनाकर लंका के भीतर पहुँचती है। रामजीने रावण से संधि वार्ता के लिये अंगद को भेजा। मानस में रावण-अंगद संवाद बहुत ही बड़ा है। किन्तु दोनों तरफ़ से अपमान जनक वार्तालाप से कोई बात नहीं बनती है। इसके बाद रावण भी सेना को युद्ध के लिये तैयार करता है। इस भयंकर युद्ध की कुछ प्रमुख बातों का उल्लेख करते हैं।

रावण अपने पुत्र मेघनाद को युद्ध में भेजता है। वह लक्ष्मण को शक्तिवाण के प्रहार से मुर्छित कर देता है। वैद्य सुषेण की चिकित्सा और हनुमानजी के लाये संजीवनी बूटी से लक्ष्मण स्वस्थ हो जाते हैं। रावण चिन्तित हो उठता है और भाई कुम्भकर्ण को सोये से जगाकर युद्ध में भेजता है। वह भीषण युद्ध करता है पर अन्त में राम द्वारा मारा जाता है। मेघनाद फिर मायामय रथपर चढ़कर युद्धमें आया। वह शक्ति, शूल, तलवार आदि अस्त्र, शस्त्र एवं वज्र आदि आयुध चलाने लगा। हनुमान, अंगद आदि बीरों को व्याकुल कर दिया। लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण को वाणों से मारकर शरीर छलनी कर दिया। फिर रामसे लड़ने लगा और नागशस्त्र से राम और अन्य सब लोगों को नागपाश में बॉध दिया। जाम्बवान ने त्रिशूल से मारकर मेघनाद को मुर्छित कर दिया। नारदजी ने गरुड़ को भेजकर राम और अन्य लोगोंको नागपाश से मुक्त कराया। अन्य कथा में उल्लेख है कि सीताने नागयंत्र का प्रयोग कर सबों को मुक्त कराया। मेघनाद विजय पाने के लिये यज्ञ करने लगा विभीषण द्वारा गुप्त समाचार मिलने पर रामने लक्ष्मण के साथ विभीषण और वानर वीरों को यज्ञविध्वंस कर मेघनाद के वध के लिये भेजा। विभीषण ने बताया कि मेघनाद यदि मंदिर के बाहर बरगद के बृक्ष तक पहुँच जायेगा तो अजेय हो जायेगा। मेघनाद वहीं मंदिर में लक्ष्मंण द्वारा मारा गया।

इसके बाद रावण युद्ध में आया। पहले दिन वह मुर्छित हो गया और सारथी उसे वापस ले आया। मूर्च्छा से जागकर कुछ यज्ञ करने लगा। विभीषणने यह गुप्त बात रामजी को बताई। रामजीने वानर वीरों को भेजकर यज्ञ का विध्वंस करा दिया। रावणने राम पर आक्रमण किया और भयंकर शक्ति छोड़ी। इससे राम मूर्च्छित हो गए। विभीषण ने रावण पर गदा से प्रहार किया और फिर राम-रावण में युद्ध होने लगा। रामका अमोघ वाण रावण पर असफल रहा। विभीषण ने रावण का रहस्य बताया कि उसके नाभि में अमृत कुंड है जिससे वह जी रहा है। राम ने एक बाण से नाभि के अमृत कुंड को सोख लिया और फिर तीस बाण मारकर मस्तकों और भुजाओं को काट डाला। इस प्रकार महाप्रतापी रावण, उसके परिवार और सेना का विनाश हो गया।

राम -रावण के युद्ध के संवंध में एक बात दिलचस्प लगती है कि दोनों हीं अपनी शक्ति की सीमा पर पहुँचते हैं। रामजी रावण पर विजय प्राप्ति के लिये ऋषि अगस्त्य की दी हुई आदित्य हृदयम् का पाठ करते हैं और रावण चामुंडामंत्र यज्ञ का अनुष्ठान करता है जिसका रामजी विध्वंस करवाते हैं। युद्ध की समाप्ति पर राम इन्द्र से प्रार्थना कर अमृत वर्षा कराते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं: अमृत बृष्टि भए द्वौ दल माहीं। जिये भालु कपि निसिचर नाहीं।।

3. निष्कर्ष

रावण ने जो राक्षस प्रतारित और निरीह अवस्था में रसातल में थे उनका पुनर्वास कराया। उनमें आत्मविश्वास और बल उत्पन्न किया। राज्यव्यवस्था और राष्ट्रनिर्माण का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया।

विश्वामित्र ने राम को अनेकानेक सिद्ध दिव्यास्त्र प्रदान किए और सबका प्रयोग-विज्ञान भी बता दिया। यहॉ द्रष्टव्य है कि राम को अस्त्र शस्त्र मुनि विश्वामित्र और अगस्त्य से मिले रावण और उसके लोगोंको इसके लिये साधना और परिश्रम करना पड़ा।

रावण की मृत्यु पर विभीषण ने कहा-आज मानो सूर्य पृथ्वी पर गिर पड़ा, धैर्य,सहनंशीलता,तपस्या,शूरता का प्रतीक नष्ट हो गया। रावण बड़ा तपस्वी, वेद-ज्ञानी ,नीतिज्ञ और सर्वशस्त्रास्त्रकोविद महारथी था। राम ने कहा - कुछ दोषों के होते हुये भी रावण परम ज्ञानी, तपस्वी, महात्मा, बलवीर्यशाली, महातेजस्वी तथा प्रख्यात योद्धा था। राम ने लक्ष्मण को रावण के पास राजनीति की शिक्षा के लिये भी भेजा था।

बँगला भाषा के महान कवि माइकेल मधुशूदन दत्त ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य "मेघनाद बध" में मेघनाद के महान चरित्र का वर्णन किया है।

रावण की कथा से हमें शिक्षा मिलती है कि

- दीन व्यक्ति भी उपयुक्त साधना और परिश्रम से उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है।
- महानता के साथ साधुता और नैतिकता भी आवश्यक है। रामजी की महानता को उनकी साधुता और नैतिकता ही उन्हें आदर्श पुरुष बनाती है।
- अधीनस्थ अधिकारियों पर समुचित नज़र आवश्यक है। प्रलोभन या अन्य कारणों से वे विरोध में कार्य कर सकते हैं।
- मंत्री और सलाहकार विना भय के उचित सलाह देने वाले होने चाहिये।

4. संदर्भ ग्रंथ

1. रामचरितमानस
2. वाल्मीकि रामायण
3. राम कथा-कामिल बुल्के

रामकथा में जगज्जननी सीता के संवाद

सरस्वती मल्लिक
राम मल्लिक
(sarasmal@aol.com)
(rammmallik@gmail.com)

रामकथा में जगज्जनी सीता के महत्त्वपूर्ण संवाद हैं जिनमें उनकी क्षमता और आत्मशक्ति का परिचय मिलता है। सर्बप्रथम उनका संवाद पार्वतीजी से हैं जिसमें सीताजी स्वयंवर से पहले रामजी को वर रूपमें पाने का मनोरथ बताती हैं और उनका वरदान पाती है। रामजीके बन जाने के समय उनके साथ जाने की बात करती है। रामजी सहमत हो जाते हैं। रामजी से संवाद कर पंचवटी में राक्षसों के भय से अपने वास्तविक स्वरूप को अग्नि के पास रखकर मायासीता का स्वरूप लेती है। रावण बध के पश्चात राम के पास लायी जाती है। रामजी सीता को दुर्वाद कहते हैं। वह कुछ उत्तर नहीं देती है और लक्ष्मणजी से चिंता बनवाकर अग्नि में प्रवेश कर जाती है। अग्निदेव वास्तविक सीता को लाकर राम को देते हैं। सीताजी का हनुमानजी के साथ तीन वार लंका में संवाद होता है। हनुमानजी रामजीका समाचार देते हैं और सीताजी का आशीर्वाद पाते हैं। सीताजीका पंचवटी और लंका में रावण से संवाद होता है और सीताजी उसकी भर्त्सना करती है। इन संवादों की विवेचना लेख में की गई है।

1. प्रस्तावना

रामकथा में जगज्जननी सीता के अनेक संवाद है। सब संवाद उनका रामजी के प्रति असीम प्रेम और सम्मान की भावना का दिग्दर्शन कराती है। सभी संवादों में उनकी निर्भीकता, वाक्पटुता और स्पष्टवादिता की अद्वितीय क्षमता दीख पड़ती है। प्रमुख संवाद हैं :

- स्वयंवर से पहले पार्वतीजी से संवाद
- राम वनवास में संग जाने के लिये राम से संवाद
- रावणबध के पश्चात लंका में राम से संवाद
- दंडकवन में सीता हरण के समय रावण से संवाद
- लंका में रावण से संवाद
- लंका में हनुमानजी से संवाद
- अयोध्या में हनुमानजी से संवाद

इन संवादों पर संक्षेप में विवेचना करेंगे।

2. विस्तार

स्वयंवर से पहले पार्वतीजी से संवाद

स्वयंवर के पहले सीताजी और रामजी पुष्पवाटिका में एक दूसरेको देखते हैं और प्रेम करने लगते हैं। सीताजी पार्वतीजीके मंदिर जाकर पूजा-स्तुति करती हैं और संवाद करती है। कहती है कि मेरे मनोरथ को भलीभाँति जानती हैं।आप सदा सबके हृदयरूपी नगरीमें निवास करती हैं। इसी कारण मैंने उसको प्रकट नहीं किया। ऐसा कहकर सीताजीने उनके चरण पकड़ लिये। पार्वतीजी सीताजी के विनय और प्रेमके वशमें हो गयीं। कहा तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है वहीं वर तुमको मिलेगा।

राम वनवास में संग जाने के लिये राम से संवाद

रामजी के वनवास का समाचार सुन सीता व्याकुल होकर सास के पास पहुँची। वहाँ रामजी ने माताजी को समझाया। फिर वन के गुण- दोष बताकर सीताजी को समझाने लगे। रामने कहा-

हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥

रामजी ने वन के कष्टों के अतिरिक्त पारिवारिक कर्तव्य भी मृदुल भाषा में प्रेम से समझाया किन्तु सीताजी रामजी के साथ वन जाना ही चाहती है। सीताजी अनेक तरह से आग्रह करती है।

प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मों कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी॥

सीताजी दुख से व्याकुल हो गई। रामजीने देखा कि हठपूर्वक यहाँ रखने से प्राण त्याग देंगी और कहा कि

परिहरि सोचु चलहु बन साथा॥

वा०रा०में यह संवाद सीताजीके अपने महल में होता है और सीताजी रामजी से लिपट जाती है और विलखते हुये विनती करती है।

अ०रा० में सीताजी एक नये तर्क का प्रतिपादन करतीहै ।कहतीहै-मैने अनेकों रामायण सुना है किन्तु किसी में नहीं सुना है कि रामजी सीता के छोड़कर अकेले वन गये हों। इसलिये मुझे संग ले चलिये।

रावणबध के पश्चात लंका में राम से संवाद

रावणबध और विभीषण के राजतिलक के बाद हनुमानजी रामजी के आदेश पर सीताजी को सब समाचार देते हैं और उनका कुशल समाचार रामजी को देते हैं। रामजी अंगद, विभीषण और हनुमानजी को सीताजी को आदर के साथ अपने पास लाने के लिये कहते हैं। रामजीने प्रसन्नता व्यक्त करने की जगह कुछ दुर्बचन कहे। सब राक्षसियाँ जो सीताजी के साथ छोड़ने आई थी विषाद करने लगी। सीताजीने प्रभु के बचनों को शिरोधार्य किया और लक्ष्मणजी से कहा कि तुम धर्म के रक्षक बनो और शीघ्र अग्नि प्रकट करो, चिता तैयार करो। सीताजी अग्नि में प्रवेश करती् हैं। प्रतिबिम्ब और लौकिक कलंक अग्नि में छूट गये। वास्तविक सीता को अग्नि ने रामजीको सौंप दिया।

वाल्मीकि रामायण की कथामें जब राम जनसमूह के बीच लोकापवाद की आशंका से सीता को दुर्वाक्य कहते हुये चरित्र पर संदेह करते हैं, कहते हैं कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो परगृह में रही स्त्री को पुन: रख लेगा। तब सीता करुणा और भावविह्वलता औरं आत्मविश्वासके साथ उत्तर देती है। कहती है आप हनुमान द्वारा परित्याग का संवाद भेज देते, मैं वहीं प्राण त्याग देती। आप ओछे मनुष्य के व्यवहार का अनुसरण कर मेरे शील-स्वभाव और विचार को उठा कर एक निम्न कोटि के स्त्री स्वभावके समक्ष मुझको रखा है। मिथ्यापवाद से पीड़ित सीता क्षण भर भी जीवन धारण करने के लिये तैयार नहीं हैं। लक्ष्मण ने चिता तैयार की और सीताने अग्नि में प्रवेश किया। अग्निने सीताको निष्पाप बताकर रामजीको सौंप दिया। अध्यात्म रामायण में सीता परित्याग से संबन्धित राम-सीता संवाद है जो मानस और वा०रा०में नहीं मिलता है। सीताजी रामजी से एक दिन एकान्त में कहती है कि देवगणने एक दिन एकान्त में आकर हम सबों को वैकुंठ चलने के लिये कहा। देवगण ने जो मुझे कहा वह मैंने आपको सुना दिया। सीताके वचन सुननेके पश्चात रामजी युक्ति कहते हैं कि मैं लोकापवाद के बहाने आपको निर्वासित करके वाल्मीकि आश्रम भेज दूँगा। अभी आप गर्भवती हैं, वहाँ आपके दो पुत्र होंगे। पुन: मैं आपको लोक-विश्वास के लिये शपथ कराऊँगा। आप पृथ्वी के विदीर्ण होने पर छिद्र के द्वारा वैकुंठ चली जाइयेगा पश्चात मैं भी आ जाऊँगा।

दंडकवन में सीता हरण के समय रावण से संवाद

राम सीता और लक्ष्मण पंचवटी में निवास कर रहे हैं। रावण मारीच को स्वर्णमृगके रूपमें वहाँ भेजता है। राम उसके पीछे जाते हैं और बाद में लक्ष्मण भी रामके पास जाते हैं। सीता कुटिया में अकेली रह गई।

सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती के बेसा॥

रावण सुनसान अवसर देखकर संन्यासी के वेष में सीताजी के पास आया। जिस रावणसे देवता और राक्षस डरते हैं वह प्रभावशाली वीर कुत्ते की तरह इधर उधर देखता हुआ चोरी करने चला। रावणने तरह-तरहकी बातों से सीता को प्रलोभन दिया तथा भयभीत करने की चेष्टा की। सीता ने कहा हे यती! तुम्हारी बातें तो दुष्टों जैसी है। तब रावण ने अपना असली रूप प्रगट किया और नाम भी बताया। तब सीता ने धैर्य धारण कर कहा- अरे दुष्ट! खड़ा रह, प्रभु राम आ गये। फिर रावणने क्रोधित होकर सीता को बलपूर्वक रथमें विठा लिया। भयके कारण वह रथ हॉक नहीं पा रहा था। सीता विलाप करने लगी।

हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा। सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोसा॥

लंका में रावण से संवाद

रावणने सीताजी को लंका में लाकर अशोक वाटिका में रखा था। जिस समय हनुमानजी वहाँ अशोक वाटिका में छिपकर बैठे थे उसी समय रावण अपनी स्त्रियोंके साथ ठाट-बाट से वहाँ पहुँचा।

बहु विधि खल सीतहिं समुझावा। साम दान भय भेद देखावा॥

उस दुष्टने सीताजी को अनेक प्रकार से समझाया। उन्हें साम, दाम, भय और भेद दिखलाया। रावणने सीता को अपने पक्ष में लाने के लिये हर तरह का प्रयास किया।

रावण की बातों के उत्तर में सीता ने निर्भीक होकर कहा-

सठ सूनें हरि आनेहु मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही॥

अरे दुष्ट ! सूने में तुम मुझे चुराकर ले आया है। तू नीच और निर्लज्ज है, तुझे लज्जा नहीं आती।

सीता के वचन युन रावण उत्तेजित होगया।

लंका में हनुमानजी से संवाद

सीताजीका पता लगाने हनुमानजी लंका गये। सीताजी अशोकवाटिका में रावण द्वारा रखी गई थी। हनुमानजी बुद्धिमत्ता पूर्वक सीताजीके समक्ष प्रस्तुत हुये। रामकथा सुनाई और रामजीकी अंगूठी देकर विस्वास दिलाया कि वे रामके दूत हैं। सीताजीको जब विश्वास होगया तब उन्होंने दुखी होकर रामजीकी कुशलता पूछी। हनुमानजी को रामका सेवक समझकर सीताजीके मनमें स्नेह उमड़ पड़ा और नेत्रोंमें जल भर आया। हनुमानजी ने रामजी का सीताजी के लिये संदेश उन्हीं के बचनोंमें कहा।

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एक मनु मोरा॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥

सीताजी बहुत दुखी हुई। हनुमानजीने सीताजीको कहा कि मैं आपको अभी ले जाता परन्तु रामजी की आज्ञा नहीं है। कछ दिन धीरज रखने को कहा। आश्वासन दिया कि रामजी वानर सेना के साथ आकर राक्षसों का संहार कर आपको ले जायेंगे। वाल्मीकि रामायणके अनुसार हनुमानजी ने सीताजीको पीठ पर विठाकर समुद्रपार ले जाने का सुझाव दिया । सीता ने राम की प्रतिष्ठा का ख़्याल कर मना कर दिया।

वह शंका जताने लगी कि वानरोंकी सहायता से राक्षस कैसे पराजित होंगे। तब हनुमानजीने उनका धीरज बँधाया ओर अपना असली रूप दिखाकर संदेह दूर किया। सीताजीने बलशील, अजर, अमर और गुणों के भंडार होने का आशीर्वाद दिया। कहा कि रामजी तुमसे बहुत प्रेम करेंगे। हनुमानजी आज्ञा लेकर फल खाने वाटिका गये । रक्षकों और वण के पुत्र अक्षयकुमार का बध, रावणसे वार्ता और लंकादहन आदि के पश्चात सीताजीसे मिले। उनसे चिन्ह माँगकर चूड़ामणि लिया। सीताजी ने उन्हें रामके लिये संदेश दिया-

दीन दयाल विरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥

अयोध्या में हनुमानजी से संवाद

लंका विजयके वाद राज्याभिषेक के उपरान्त वसिष्ठादि महात्माके समक्ष रामके आग्रह पर हनुमानजी से संवाद किया। सीता तत्वोपदेशिका है । संवाद से हनुमान को तत्त्वोपदेश दिया।

3. निष्कर्ष

संवाद में सहधर्मिणी का स्वाभिमान, निर्भीकता, आत्मविश्वास और पतिप्रेम का आदर्श प्रदर्शित होता है । मानसकी सीता श्रद्धामयी है, वाल्मीकि की सीता तर्कमयी है। वाल्मीकि की सीता विदुषी है और उनमें विद्वत्ता के प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी है ।

तुलसी-काव्य में काव्य-सौन्दर्य

ओम नीरव
अध्यक्ष, अखिल भारतीय कवितालोक सृजन संस्थान, लखनऊ
(neerav.neerav1971@gmail.com)

काव्य-सौन्दर्य वह गुण है जिसके कारण कविता जन-जन के मन में बस जाती है जबकि गद्य वह स्थान प्राप्त करने में अक्षम रहता है। महाकवि तुलसीदास की कविता इसका सर्वोच्च उदाहरण है जिसकी पंक्तियाँ प्रकाण्ड विद्वानों से लेकर अनपढ़ों तक के ओठों पर थिरकती रहती हैं। इसका प्रमुख कारण है उनके साहित्य में काव्य-सौंदर्य।

1. प्रस्तावना

आचार्य राजशेखर के अनुसार कवि तीन प्रकार के होते हैं- पहले **काव्य कवि** जो काव्य सौन्दर्य पर विशेष ध्यान देते हुए तर्क-प्रधान रूखे विषय को भी लालित्य के साथ प्रस्तुत करते हैं जैसे सूरदास, दूसरे **शास्त्र कवि** जो काव्य के सिद्धांत को एकल लक्ष्य बना कर प्रतिपादित करते हैं जैसे केशवदास और तीसरे **उभय कवि** जिनमें काव्य कवि और शास्त्र कवि दोनों के गुण विद्यमान रहते हैं जैसे तुलसीदास। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की कविता में जहाँ एक ओर उच्चकोटि की सम्प्रेषणीयता, भावप्रवणता और प्रभावोत्पादकता के साथ रसात्मकता, वैचारिकता, छंदबद्धता और बिम्बात्मकता का उत्कर्ष है, वहीं दूसरी ओर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से काव्य की शास्त्रीय व्याख्या भी है। शास्त्रीय व्याख्या कुछ इस प्रकार की गयी है कि उसमें काव्य-लालित्य कहीं पर बाधित नहीं होने पाया है। अस्तु तुलसी रसज्ञ और शास्त्रज्ञ दोनों का स्वर्णिम संयोग होने के कारण सर्वश्रेष्ठ हैं, कवियों में महाकवि हैं। एक उदाहरण के रूप में तुलसी के महाकाव्य 'श्रीरामचरितमानस' अथवा संक्षेप में 'मानस' के प्रथम छन्द को देखा जा सकता है-

वर्णानामार्थसंघानां, रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्तारौ, वन्दे वाणी विनायकौ।
(मानस 1.1.1, अनुष्टुप)

इस छन्द में गणपति की वन्दना करते हुए तुलसी ने स्पष्ट किया है कि काव्य में पाँच तत्व अभीष्ट हैं- वर्ण, अर्थ, रस, छन्द और मंगल। इस प्रकार उन्होंने काव्य-सौन्दय को बिना बाधित किये काव्य की परिभाषा दे दी है इसके अनुसार 'काव्य वह शब्दार्थमयी रचना है जो रसात्मक, छंदोबद्ध और मंगलकारिणी हो।' इस शास्त्रीय विवेचना के साथ गणपति-वन्दना के इस छन्द में भक्ति की रसानुभूति, सटीक छंदबद्धता, सटीक वर्ण-विन्यास, अलंकार-योजना आदि के कारण काव्य-सौन्दय भी अपने उत्कर्ष पर है।

इसी क्रम में वे भक्तिरस केन्द्रित अपने महाकाव्य के अंगों का वर्णन करते हुए काव्य के अंगों का बड़ी कुशलता के साथ प्रतिपादन कर देते हैं, यथा-

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना, ज्ञान नयन निरपत मन माना।---
पुरइनि सघन चारु चौपाई, जिगुति मंजु मानि सीप सुहाई।
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा, सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा।---
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहुभाँती॥---
नव रस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा॥
(मानस 1.37.1-8, चौपाई)

इस रूपक में तुलसी ने काव्य के तत्वों का दिग्दर्शन किया है।
वे काव्य-सौंदर्य के साथ काव्य-प्रयोजन को भी स्पष्ट करते हुए कहते हैं-

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वांत: सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति॥
(मानस 1.1.7 वसंततिलका) ---
सुत बित लोक ईशना तीनी,
केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी।

(मानस 7.71.3, चौपाई)

इन उक्तियों से सिद्ध होता है कि तुलसी ने अर्थ, काम और यश को काव्य-प्रयोजन नहीं माना है, अपितु उनका काव्य प्रयोजन है-

रसानुभूति और मंगल, यथा-

कबित रसिक न राम पद नेहू, तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू।

(मानस 1.9.2 चौपाई)

इसी निस्पृह प्रयोजन के कारण उनकी कृतियाँ काव्य-सौंदर्य के शिखर पर दिखाई देती हैं।

काव्य सौंदर्य के तत्व

1. भाव-सौंदर्य
2. विचार-सौंदर्य
3. नाद-सौंदर्य
4. बिम्ब-सौंदर्य

1. भाव-सौंदर्य

प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि का विभिन्न परिस्थितियों में मर्मस्पर्शी चित्रण ही भाव-सौंदर्य है। भाव-सौंदर्य को ही काव्य-शास्त्रियों ने रस कहा है।

शान्त, शृंगार, वीर, रौद्र, करुण, अद्भुत, भयानक, हास्य, वीभत्स– ये पारंपरिक नौ रस हैं। परवर्ती आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को भी अलग रस माना है। तुलसी-काव्य में भक्ति रस का वर्चस्व है। तुलसी के अनुसार भक्ति रस सहित 11 रस हैं।

तुलसी भक्ति रस को रसराज और मूल रस मानते हैं, यथा-

रामचरित जे सुनत अघाहीं, रस विशेष जाना तिन नाहीं।

(मानस 7.53.1, चौपाई) ---

जो मोहिं राम लागते मीठे।

तौ नवरस षटरस रस अनरस ह्वै जाते सब सीठे।

(विनयपत्रिका 1.169, सार छंदाधारित पद)

1. भक्ति रस दो प्रकार का होता है-

(क) **शुद्ध भक्ति रस**, जिसका स्थायी भाव शुद्ध भगवद् रति है जिसमें किसी अन्य भाव काम रति, हास आदि का मिश्रण नहीं है। शुद्ध भक्ति रस चार प्रकार का है – **विशुद्ध** जिसका स्थायी भाव भगवान से सम्बंधित शुद्ध सात्विक रति है, **शान्त** जिसका स्थायी भाव शांता रति है, **प्रेयान्** जिसका स्थायी भाव प्रेयोरति है और **वत्सल** जिसका स्थायी भाव प्रभु से सम्बंधित वात्सल्य है।

तुलसी की काव्य-सर्जना में विशुद्ध भक्ति रस भी है किन्तु वह बहुत कम दिखाई देता है क्योंकि वह उनके दास्य भाव के कारण प्रेयान भक्ति रस में परिणत हो जाता है। विशुद्ध भक्ति रस के रूप में कवितावली के इस दुर्मिल सवैया को देखा जा सकता है-

सियराम सरूपु अगाध अनूप बिलोचन मीननु को जलु है।

श्रुति रामकथा मुख राम को नामु हिएँ पुनि रामहिं को थलु है।

मति रामहिं सों गति रामहिं सों रति राम सों रामहिं को बलु है।

सबकी न कहै तुलसी के मतें इतनों जग जीवन को फलु है।

(कवितावली 7.37, दुर्मिल सवैया)

तुलसी का भक्ति रस मुख्यतः प्रेयान भक्ति रस है जिसका स्थायी भाव प्रेयोरति है और वह मूलतः तीन प्रकार का होता है- दास्य प्रेयान, सख्य प्रेयान और उभय प्रेयान। तुलसी-काव्य में आद्यंत 'दास्य प्रेयान रस' का वर्चस्व दिखाई देता है। सख्य प्रेयान रस भी यत्र तत्र देखने को मिल सकता है किन्तु वह सूर के सख्य भाव जैसा कभी नहीं हो पाया है। तुलसी-काव्य में दशरथ, कौशल्या, भरत, लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण आदि की भक्ति भी अंततः दास्यभाव में परिणत हो जाती है।

(ख) **मिश्रित भक्ति रस**, जिसके स्थायी भाव में भगवद् रति के साथ काम रति, हास आदि का मिश्रण होता है। भक्ति के साथ सभी रसों का मिश्रण हो सकता है किन्तु इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। व्याप्त दृष्टि से मिश्रित भक्ति रस के दो भेद हैं-

एक मिश्रित भक्ति रस का वह रूप है जिसमें आलंबन एक ही अर्थात भगवान रहते है उदाहरणार्थ –

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा, मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा।

देखि राम जननी अकुलानी, प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी।

(मानस 1.201.7-8. चौपाई)

यहाँ पर भय, विस्मय और भक्ति के आलंबन भगवान् राम ही है।

दूसरा मिश्रित भक्ति का वह रूप है जिसमें आलंबन राम के साथ अन्य अर्थात भिन्न भी हैं उदाहरणार्थ-

तो सों कहौं दसकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिए बौरे।
बाली बली खरु दूषनु और अनेह गिरे जे जे भीति में दौरे।
ऐसिय हाल भई तोहि धौं न तु लै मिलु सीय चहै सुख जौ रे।
राम के रोष न राखि सकैं तुलसी बिधि श्रीपति संकरु सौ रे।
(कवितावली 6.12, मत्तगयन्द सवैया)

यहाँ पर अंगद की भक्ति के आलंबन राम हैं जबकि अंगद के क्रोध और उत्साह का आलंबन रावण है।

तुलसी के मिश्रित भक्ति रस में भगवद् रति के शेष दस स्थायी भावों, यथा- वत्सल, शान्त, शृंगार, वीर, रौद्र, करुण, अद्भुत, भयानक, हास्य, वीभत्स का सम्मिश्रण होने से 10 प्रकार के मिश्रित भक्ति रस प्रकट हुए हैं।

1. **वत्सल रस,** जिसका स्थायी भाव वात्सल्य है। यह वात्सल्य वस्तुतः पाल्य-पालक लक्षण से युक्त स्नेह है। वात्सल्य रस के प्रणयन में हिन्दी के अनेक श्रेष्ठ कवियों ने माँ की ममता का मार्मिक चित्रण किया है किन्तु तुलसी की काव्य में माँ का जो ममत्व सौतेले पुत्र और उनकी पत्नियों के साथ देखने को मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। तुलसी के काव्य में जहाँ एक ओर पाल्य प्रभु राम के प्रति उनके पालकों दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा आदि का वात्सल्य हैं, वहीं दूसरी ओर पाल्य भक्तों के प्रति पालक प्रभु राम का वात्सल्य है। इसीलिए राम को भक्तवत्सल कहा गया है। पहले प्रकार में जहाँ राम आलंबन है वहीँ दूसरे प्रकार में राम आश्रय हैं।

वत्सल रस भी दो रूपों में प्रकट होता है- संयोग वत्सल और वियोग वत्सल। संयोग वात्सल्य का एक उदाहरण-

छोटिऐ धनुहियाँ पनहियाँ पगनि छोटी,
छोटिऐ कछौटी कटि छोटिऐ तरकसी।
लसत झँगूली झीनी दामिनि की छवि छीनी,
सुन्दर बदन सिर पगिया जरकसी।
वय अनुहरत बिभूखन बिचित्र अंग,
जोहे जिय आवति सनेह की सरक सी।
मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै,
जानै सोई जाके उर कसकै करक सी।
(गीतावली 1.44, मनहर घनाक्षरी)

वियोग वत्सल का उदाहरण-

माई री' मो'हि कोउ न समुझावै।
रामगवन साँचो किंधौ' सपनो, मन परतीति न आवै।
लगेइ रहत मेरे नैनन आगे, राम लषन अरु सीता।
तदपि न मिटत दाह या उर को, बिधि जो' भयो बिपरीता।
दुख न रहै रघुपतिहि बिलोकत तनु न रहै बिनु देखे।
करत न प्राण पयान सुनहु सखि अरुझि परी यहि लेखे।
(गीतावली 2.53, सार छन्द में निबद्ध पद)

2. **शान्त रस,** जिसका स्थायी भाव शम या निर्वेद या उदासीनता है। शम निवृत्ति से उपजता है जबकि भक्ति प्रवृत्ति से। शान्त रस का आलंबन प्रभु का चिंतन है जबकि भक्ति का आलंबन प्रभु की अनुरक्ति है। तुलसी-काव्य में जहाँ पर स्थायी भाव शुद्ध शम है, वहाँ पर शान्त रस की निष्पत्ति हुई है, यथा-

बिनु पग चलइ सुनइ बिनु काना, कर बिनु करम करइ बिधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु बानी बकता बड़ जोगी।
अथवा
अबलौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं।।

पायेउँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर तें न खसैहों।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं।।
(विनयपत्रिका 105, सार में निबद्ध पद)

3. **शृंगार रस,** जिसका स्थायी भाव काम रति है। शृंग का अर्थ है- कामोद्रेक या कामोत्तेजना। इसी लिए स्थायी भाव से उपजे रस को शृंगार कहा गया है। तुलसी ने महाकवि और महाकाव्य के रचयिता होने के नाते शृंगार रस का परिपाक अपने काव्य में किया है किन्तु यह उनका प्रतिपाद्य नहीं है। तुलसी का शृंगार कालिदास, कुमारदास जैसे कवियों के शृंगार जैसा अमर्यादित नहीं है अपितु पूर्णतः मर्यादित है। यहाँ तक कि कहीं-कहीं पर सूर का शृंगार भी मर्यादा की रेखा लांघता हुआ दिखाई दे जाता है लेकिन तुलसी के राम मर्यादापुरुषोत्तम है और तुलसी का काव्य मर्यादा की दृष्टि से सर्वोत्तम है। तलसी के शृंगार रस में कम या अधिक भक्ति रस का सम्मिश्रण प्रायः सर्वत्र बना रहता है।

शृंगार के दो प्रकार हैं- संयोग और विप्रलंभ। तुलसी के संयोग शृंगार का एक बिम्ब देखने योग्य है जिसमें मर्यादा का उत्कर्ष रेखांकनीय है-

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि, कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि।
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्हीं, मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्हीं।
अस कहि फिरि चितये तेहि ओरा, सिय मुख ससि भये नयन चकोरा।
भये बिलोचन चारु अचंचल, मनहुँ सकुचि निमि तजेउ दिगंचल।
(मानस 1.230.1-4, चौपाई)

थके नयन रघुपति छवि देखें, पलकन्हिं हूँ परिहरीं निमेषें।
अधिक सनेह देह भइ भोरी, सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।
लोचन मग रामहि उर आनी, दीन्हें पलक कपाट सयानी।
जब सिय सखिन्ह प्रेम बस जानी, कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी।
(मानस 1.232.5-8, चौपाई)

दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मंदिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुंदरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं।
राम को रूप निहारति जानकी कंकन के नग की परछाहीं।
या तें सबै सुधि भूलि गयी, कर टेकि रही पल टारति नाहीं।
(कवितावली 1.7, मत्तसवैया)

यहाँ पर यह उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि 'रामलला नहछू' का उन्मुक्त शृंगार तुलसी के सामान्य भक्ति-मिश्रित मर्यादित शृंगार से कुछ अलग दिखाई देता है, यथा-

कटि कै छीनि बरिनिया छाता पानिहिं हो,
चंद्रबदनि मृगलोचनि सब रसखानिहिं हो।
नैन बिसाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो,
देइ गारि रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हो।
(श्रीरामलला नहछू 8, सुखदा छान्दाधारित सोहर)

4. **वीर रस,** जिसका स्थायी भाव उत्साह है। कवितावली का लंकाकाण्ड वीररस के छन्दों से भरा पडा है। एक-दो स्थलों को छोड़ कर अधिकाँश स्थलों पर वीररस के अंग अथवा अंगी के रूप में भक्तिरस अपना प्रभाव छोड़ने से चूकता नहीं है। एक उदाहरण-

हाथिन सों हाथी मारे, घोरे सों संघारे घोरे,
रथनि सों रथ बिदरनि बलवान की।
चंचल चपेट, चोट चरन, चकोट चाहें,
हहरानीं फौजें भहरानी जातुधान की।
बार-बार सेवक सराहना करत रामु,
'तुलसी' सराहै रीति साहेब सुजान की।

लाँबी लूम लसत, लपेटी पटकत भट,
देखौ देखौ, लखन! लरनि हनुमान की।
(कवितावली 6.40, मनहर घनाक्षरी)

5. **रौद्र रस,** जिसका स्थायी भाव क्रोध है। तुलसी के काव्य में क्रोध से तेज की उत्पत्ति होती है, जो अन्याय का विरोध करने की शक्ति से संपन्न होता है। उदाहरण-

गर्भ के अर्भक काटन को पटु धार कुठार कराल है जाको।
सोई हौं बूझत राजसभा धनु को दल्यो हौं दलिहौं बल ताको।
लघु आनन उत्तर देत बड़ो लरिहै मरिहै करिहै कछु साको।
गोरो गरूर गुमान भरो कहौ कौसिक छोटो सो ढोटो है काको।
(कवितालोक 1.20, उपजाति सवैया)

6. करुण रस, जिसका स्थायी भाव शोक है। करुण रस को भवभूति ने 'एको रसः' अर्थात एकमात्र रस कहा है किन्तु तुलसी-काव्य में भक्ति-रस की छात्रछाया में ही वह पलता दिखाई देता है। एक उदाहरण-

अर्धराति गइ कपि नहिं आएउ, राम उठाइ अनुज उर लाएउ।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ, बन्धु सदा तव मृदुल सुभाऊ।
मम हित लागि तजेउ पितु माता, सहेहु बिपिन हिमआतप बाता।
सो अनुराग कहाँ अब भाई, उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।
जौ जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू, पिता बचन मनतेउँ नहि ओहू।
सुत बित नारि भवन परिवारा, होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।
अस बिचारि जिअँ जागहु ताता, मिलै न जगत सहोदर भ्राता।
(मानस 6.61.1-4, चौपाई)

अथवा

मोपै तो न कछू ह्वै आई।
ओर निबाहि भली बिधि भायप, चल्यो लखन-सो भाई।
पुर, पितु-मातु, सकल सुख परिहरि, जेहि बन बिपति बटाई,
ता सँग हौं सुरलोक सोक तजि, सक्यो न प्रान पठाई।
जानत हौं या उर कठोर तें, कुलिस कठिनता पाई,
सुमिरि सनेह सुमित्रा-सुत को, दरकि दरार न जाई।
तात-मरन, तिय-हरन, गीध-बध, भुज दाहिनी गँवाई,
तुलसी मैं सब भाँति आपने, कुलहि कालिमा लाई।
(गीतावली 6.6, सार में निबद्ध पद)

7. **अद्भुत रस,** जिसका स्थायी भाव विस्मय है। समुचित अवसर मिलने पर तुलसी ने अद्भुत रस की अद्भुत उद्भावना की है। एक उदाहरण-

लीन्हों उखारि पहार बिसाल चल्यो तेहि काल बिलंब न लायो।
मारुतनंदन मारुत को, मन को, खगराज को बेग लजायो।
तीखी तुरा तुलसी कहतो पै हिये उपमा को समाउ न आयो।
मानो प्रतच्छ परब्बत की नभ लीक लसी कपि यों धुकि धायो।
(कवितावली 6.54, मत्तगयन्द सवैया)

8. **भयानक रस,** जिसका स्थायी भाव भय है। प्रसंगवश तुलसी ने भयानक रस के अतीव सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं-

बालधी बिसाल बिकराल ज्वालजाल मानो,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।
कैधों ब्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
बीररस बीर तरवारि-सी उघारी है।

तुलसी सुरेश चाप कैंधो दामिनी कलाप,
कैंधो चली मेरु तें कृसानु सरि भारी है।
देखें जातुधान जातुधानी अकुलानी कहैं,
कानन उजार्यो, अब नगर प्रजारी है।
(कवितावली 5.5, मनहर घनाक्षरी)

9. **हास्य रस,** जिसका स्थायी भाव हास है। तुलसी हास्य के कवि नहीं है किन्तु वे महाकवि होने के कारण प्रत्येक रस के परिपाक में पारंगत हैं। अस्तु नारद-मोह के प्रसंग में वे हास्य की उद्भावना करने में कोई चूक नहीं करते हैं-

काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा, सो सरूप नृपकन्याँ देखा।
मर्कट बदन भयंकर देही, देखत हृदय क्रोध भा तेही।
(मानस 1.134.7)
जेहिं दिसि नारद बैठे फूली, सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली।
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं, देखि दसा हरगन मुसुकाहीं।
(मानस 1.135.1)

10. **वीभत्स रस,** जिसका स्थायी भाव जुगुप्सा या घृणा है। यह वह भाव है जो किसी अप्रिय विकृत वस्तु को देखने से उत्पन्न होता है। उदाहरण-

ओझरी सी झोरी काँधे आँतनि की सेल्ही बाँधे,
मूँड़ के कमण्डलु खपर किये कोरि कै।
जोगिनी झुटुंग झुंड झुंड बनी तापसी सी,
तीर तीर बैठीं सो समर सारि खोरी कै।
श्रोनित सों सानि सानि गूदा खात सतुआ से,
प्रेत एक पियत बहोरि घोरि घोरि कै।
तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ,
हेरि-हेरि हंसत हैं हाथ हाथ जोरि कै।
(कवितावली 6.50, मनहर घनाक्षरी)

2. विचार-सौंदर्य

विचारों की उच्चता से काव्य में जो गरिमा आती है उसे विचार-सौंदर्य कहते हैं। तुलसी का काव्य नैतिक मूल्यों का उत्कर्ष विचार-सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। सच पूछा जाये तो रामचरित मानस एक रूपक है जिसमें रामकथा उपमान या अप्रस्तुत है और तत्व ज्ञान उपमेय या प्रस्तुत है। अप्रस्तुत की माध्यम प्रस्तुत की अभिव्यंजना की गयी है| तुलसीदास जी रामकथा के माध्यम से लोकमंगलकारी रामभक्ति का सन्देश देना चाहते हैं। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में भारतीयों का मनोबल गिरा हुआ था, वे अपने को असहाय पा रहे थे और शोषण-दमन के आगे झुकने को विवश थे। तुलसी ने राम-काव्य के माध्यम से लोगों के निराश जीवन में आशा का संचार किया और उन्हें अन्याय और अनीति के विरुद्ध लड़ने की शक्ति प्रदान की। लोगों के मन में यह विश्वास जग गया कि जब बनवासी राम शक्तिशाली सम्राट रावण को परास्त कर सकते हैं तो अन्याय, दुराचार और शोषण करने वाली सत्ता का विरोध हम क्यों नहीं कर सकते हैं।

भारतीय समाज विदेशियों के प्रभाव में आकर अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा था और उसमें अमर्यादिक आचरण की प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही थीं। इस सामाजित अवगति को रोकने के लिए तुलसी ने लोकभाषा में सहज सुन्दर सरस काव्य के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का वह चरित्र लोगों के समक्ष रखा जो सनातन संस्कृति का उन्नायक था। तुलसी के ललित काव्य का यह प्रभाव हुआ कि ‘सनातन संस्कृति के उन्नायक श्रीराम’ जन-जन के हृदय में एक प्रेरणा श्रोत बन कर बस गये।

तुलसी काव्य का वैचारिक धरातल बहुत उच्च है, जिसके मूल में जनजागरण, लोकमंगल और रामभक्ति की भावना का वर्चस्व है। तुलसी ने अपने सर्वजनहिताय विचारों को विनम्रतापूर्वक स्वान्तःसुखाय कह कर बड़ी सरलता और तरलता के साथ अपने काव्य में कुछ इसप्रकार प्रस्तुत किया है कि उसका अनिर्वचनीय काव्य-सौंदर्य पाठक के मन को सहज ही मुग्ध कर लेता है। कठिन बात को सरल शब्दों में कहने की अपनी विलक्षण क्षमता का प्रयोग करते हुए ‘सर्वंखल्विदं ब्रह्म’ को कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त किया है-

सीय राम मय सब जग जानी, करहुँ प्रनामु जोरि जुग पानी।
(मानस 1.8.2, चौपाई)

भगवत्प्रेम की तीव्रता को व्यक्त करने के लिए वे उपमान-विधान का अतीव सुन्दर सहज प्रयोग किया है-

कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम॥
(मानस 7.130ख, दोहा)

वैचारिक संपदा के रूप में तुलसी के नारी सम्बन्धी विचार बहुत विवादास्पद रहे हैं। इस विषय में मेरा अध्ययन यह है कि सनातन धर्म के पूर्ववर्ती संवाहकों ने स्मृति, पुराण और समस्त संस्कृत वांग्मय में वैराग्य का निरूपण करते समय काम का आलंबन नारी को माना है, पुरुष को नहीं। तुलसी ने उसी परम्परा का अनुसरण किया है, उसका विद्रोह न करना तुलसी का दोष माना जा सकता है किन्तु ध्यान रहें कि उस समय परम्परा की अवमानना करना महाकाव्य की लोकप्रियता में बाधक हो सकता था जबकि तुलसी-काव्य की लोकप्रियता उस समय की अनिवार्य आवश्यकता थी।

3. नाद-सौंदर्य

कविता में छन्द नाद-सौंदर्य की सृष्टि करता है। छन्द में लय, तुक, यति और प्रवाह का समावेश होता है। छन्दानुबंध के साथ वर्ण और शब्द के सार्थक और समुचित विन्यास से जो लालित्य उत्पन्न होता है, उसे नाद-सौंदर्य कहते हैं। उदाहरण-

घन घमंड नभ गरजत घोरा,
प्रिया हीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं,
खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं।
(मानस 4.14.1, चौपाई) ---
कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि,
कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही,
मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही।
(मानस 1.230.1-2, चौपाई)---
बर दंत की पंगति कुन्दकली, अधराधर-पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घन बीच जगै, छवि मोतिन माल अमोलन की॥
घुँँघुरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलन की।
निवछावरि प्रान करैं तुलसी, बलि जाउँ लला इन बोलन की॥
(कवितावली 1.5, दुर्मिल)

नाद-सौंदर्य का प्रथम और अनिवार्य आधार छन्द-विधान है। इस दिशा में हम निरीक्षण करें तो पायेंगे कि तुलसी ने विविध प्रकार के अनेक छन्दों का विषयानुकूल प्रयोग किया है। मेरे अध्ययन के अनुसार तुलसी के सम्पूर्ण काव्य में कुल 56 प्रकार के छन्द प्राप्त हुए है, जिनमें मापनीयुक्त और मापनीमुक्त दोनों प्रकृति के मात्रिक और वर्णिक; सम, अर्धसम और विषम; सामान्य और दंडक – लगभग सभी प्रकार के पारंपरिक छन्दों का प्रयोग किया है तथा कुछ नये छन्दों की उद्भावना भी की है जिनमें अनुदोहा, प्रदीप, नवप्रिया और मनोहारी मुख्या है। सम्प्रति यह नामकरण अध्ययनोपरांत मेरे द्वारा ही किया गया है।

संस्कृत छन्दों को देखें तो तुलसी ने कुल 14 प्रकार के संस्कृत छन्दों का प्रयोग किया है जिनके कुल 47 उदाहरण हैं। ये मुख्यतः प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में है जबकि अनुष्टुप, प्रमाणिका, भुजंगप्रयात और शार्दूलविक्रीडित मध्य या अंत में आये हैं।

कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं-

1. **अनुष्टुप**, 8 वर्ण, 5,6,7 वें वर्ण चरों चरणों में क्रमशः लगागा, लगाल, लगागा, लगाल होते हैं। चरण अतुकांत होते हैं।
तुलसी ने कुल 7 अनुष्टुप छन्द संस्कृत में रचे हैं जिनमें से बालकाण्ड में 5, लंकाकाण्ड में 1 और उत्तरकाण्ड में 1 छन्द है।

वर्णानामार्थसंघानां, रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्तारौ, वन्दे वाणी विनायकौ।
(मानस 1.1.1, अनुष्टुप) ---

2. **भुजंगप्रयात**, 12 वर्ण, अतुकांत चार चरण, मापनीयुक्त,

वर्णिक मापनी- लगागा लगागा लगागा लगागा

तुलसी ने कुल 8 भुजंगप्रयात छन्द संस्कृत में रचे हैं जो उत्तरकाण्ड में हैं।

नमामी/शमीशा/न निर्वा/णरूपं,
(लगागा/ लगागा/ लगागा/ लगागा)
य य य य
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।
(मानस 7.108.1, भुजंगप्रयात))

3. रथोद्धता (11 वर्ण) : यह वर्णिक समवृत्त अर्थात मापनीयुक्त वर्णिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। इसकी वर्णिक मापनी निम्नलिखित प्रकार है-

मापनी- गालगा ललल गालगा लगा (11 वर्ण)

पिंगल सूत्र- र न र ल ग

तुलसी ने कुल 2 रथोद्धता छन्द संस्कृत में रचे हैं जो उत्तरकाण्ड में हैं।

उदाहरण :

कोशलेन्/द्र पद/कंजमं/जुलौ,
(गालगा/ लगल/ गालगा/ लगा,)
र न र ल ग
कोमलावजमहेश वन्दितौ।
जानकीकरसरोजलालितौ,
चिन्तकस्य मनभृंगसंगिनौ।
(मानस 7.1.2, रथोद्धता)

4. दुर्मिल सवैया : 24 वर्णों के इस सवैया छन्द की मापनी इस प्रकार है-

वर्णिक मापनी- ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा

पिंगल सूत्र- स 8

तुलसी द्वारा रचित 41 दुर्मिल सवैया कवितावली में संगृहीत हैं।

उदाहरण :

अवधे/श के द्वा/रे' सका/रे' गयी/ सुत गो/द कै' भू/पति लै/ निकसे।
अवलोकिहौं सोच विमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से।
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक-से।
सजनी ससि में समसील उभे नवनील सरोरुह से बिकसे।
(कवितावली 1.1, दुर्मिल सवैया)

4. **जलहरण घनाक्षरी** : इसमें चार समतुकान्त चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में 32 वर्ण होते हैं, 16-16 पर यति अनिवार्य होती है जबकि 8-8-8-8पर यति और उत्तम होती है, प्रत्येक वर्ण-समूह में विषम-सम-विषम प्रयोग वर्जित होता है, चरणान्त में लल अनिवार्य होता है।गीतावली के 1 पद में जलहरण घनाक्षरी का अनुप्रयोग हुआ है, जिसके चार चरण अग्रलिखित हैं।

उदाहरण :

छोटी-छोटी गोड़ियाँ अँ,गुरियाँ छबीली छोटी,
नख-जोति मोती मानो, कमल दलनि पर।
ललित आँगन खेलैं, ठुमुक-ठुमुक चलैं,

झुँझुनु- झुँझुनु पाँय, पैजनी मृदु मुखर।
किंकिनी कलित कटि, हाटक जटित मनि,
मंजु कर-कंजनि, पहुँचिया रुचिरतर।
पियरी झीनी झँगुली, साँवरे सरीर खुली,
बालक दामिनि ओढ़ी, मानो बारे बारिधर।
(गीतावली 1.4, जलहरण)

उपर्युक्त उदाहरणों में वर्ण-विन्यास, शब्द-विन्यास और इनसे उपन्न होने वाला नाद-सौंदर्य रेखांकनीय है।

5. बिम्ब-सौंदर्य

कवि जब प्रस्तुत दृश्य, रूप और तथ्य को हृदय-ग्राही बनाने के लिए अप्रस्तुत का
सहारा लेता है तो एक विशेष प्रकार का लालित्य उत्पन्न होता है जिसे बिम्ब-सौंदर्य कहते हैं।

अप्रस्तुत-योजना के लिए यह आवश्यक है कि उपमेय के लिए जिस उपमान की, यथार्थ के लिए जिस प्रतीक की और प्रस्तुत के लिए जिस अप्रस्तुत की योजना की जाये उसमें सादृश्य अवश्य होना चाहिए।

'**पीपर पात सरिस मन डोला**' तुलसी की बिम्ब योजना में प्रस्तुत है- 'मन' और अप्रस्तुत है- 'पीपर पात'। दोनों के साधारण धर्म 'डोलने' में सादृश्य है, साम्य है।

प्रस्तुत और अप्रस्तुत के बीच यह साम्य तीन प्रकार का हो सकता है-

1. रूप साम्य

लता भवन ते प्रकट भे, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाइ।
(मानस 1.232, चौपाई)

प्रस्तुत – लता भवन से दोनों भाइयों का प्रकट होना
अप्रस्तुत – बादलों के पटल को हटा कर दो निर्मल चंद्रमाओं का बाहर निकलना
साधारण धर्म- उपर्युक्त दोनों का रूप

2. धर्म साम्य

अस मन गुनइ राउ नहिं बोला।
पीपर पात सरिस मनु डोला॥
(मानस 1.45.3 चौपाई)

उपमेय (प्रस्तुत) – मन
उपमान (अप्रस्तुत) – पीपर पात
साधारण धर्म – डोलने का धर्म

3. भाव साम्य

कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम।तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम॥
(मानस 1.130ख)

पमेय (प्रस्तुत) – मैं भक्त और राम
उपमान (अप्रस्तुत) – कामी और नारी अथवा लोभी और दाम
साधारण धर्म – प्रिय लगने का भाव

इस प्रकार उपमेय और उपमान के समुचित प्रयोग से उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अनेक अलंकारों निष्पत्ति तुलसी-काव्य में हुई है।
बिम्ब सौन्दय का दूसरा उकृष्ट रूप है- ध्वनि या व्यंजना। जब प्रस्तुत वाच्यार्थ की तुलना में व्यंग्यार्थ अधिक महत्वपूर्ण होता है अथवा व्यंग्यार्थ ही कवि का प्रयोजन होता है तो उसे ध्वनि या व्यंजना कहते हैं। उदाहरण –

1. '**कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि**'
(मानस 1.230.1, चौपाई)

इस उक्ति के द्वारा यह अर्थ ध्वनित या व्यंजित किया गया है कि सीता के उठते समय पहले हाथ हिले, फिर कटि हिली और फिर पाँव हिले।

2. 'पुनि आउब एहि बेरिया काली,
अस कहि मन बिहसी एक आली।'
(मानस 1.234.6)

इस उक्ति में सखी जो कुछ सीता से कह रही है उससे व्यंजित होता है कि वह राम को बता रही है कि हम सीता सहित कल इसी समय फिर आयेंगे और तब आप मिलन का पुनः आनंद प्राप्त कर लेना।

3. सिय बन बसिहि तात केहि भाँती, चित्र लिखित कपि देखि डेराती।
सुरसर सुभग बनज बन चारी, डाबर जोगु कि हंस कुमारी। **(मानस 2.60.2-3)**

इस उदाहरण में 'सुरसर' से अयोध्या की सुन्दरता, 'डाबर' से वन की दुरूहता और 'हंसकुमारी' से सीता की सुकुमारता व्यंजित होती है।

4. **'बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू, भूप किशोर देखि किन लेहू।'**
(मानस 1.234.1)

इस उदाहरण में ध्वन्यार्थ है – राम के प्रत्यक्ष दर्शन का आनंद ले लो, आँख बंद करके उनका ध्यान तो कभी भी कर सकती हो।

अस्तु काव्य में ध्वन्यात्मकता का सौन्दर्य उत्पन्न कर तुलसी ने अपनी ही उक्ति **'धुनि अवरेब कबित गुन जाती, मीन मनोहर ते बहुभाँती'**
(मानस 1.37.7-8)
को सार्थक कर दिया है।

2. उपसंहार

महाकवि तुलसी सरस कवि और काव्याचार्य – दोनों थे, तथापि उनके समस्त सृजन में काव्य-सौंदर्य केंद्र-विन्दु रहा है जिसके कारण उनकी कविता जन-जन की कविता बन गयी है। आज के जो कवि तोड़-जोड़ की कविता से अर्थ, काम और यश को प्राप्त करने की इच्छा रखते है, उन्हें तुलसी के काव्य सौंदर्य को आत्मसात करना चाहिए और उससे समाज का हित करना चाहिए जैसे तुलसी ने **भारतीय संस्कृति के उन्नायक श्रीराम** के चरित्र-चित्रण से समाज को रसानन्द के साथ दिशाबोध देने का पुनीत कार्य किया है।

3. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. छन्द प्रभाकर – जगन्नाथ प्रसाद 'भानु कवि' – उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ
2. छन्द विज्ञान – आचार्य ओम नीरव – कवितालोक प्रकाशन लखनऊ
3. तुलसी के छन्द – आचार्य ओम नीरव – कवितालोक प्रकाशन लखनऊ
4. तुलसी काव्य मीमांसा – उदय भानु सिंह – राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
5. गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल – प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली
6. तुलसीदास एक पुनर्मूल्यांकन – सं. अजय तिवारी – आधार प्रकाशन पंचकूला, हरियाणा
7. रामचरित मानस – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
8. कवितावली – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
9. गीतावली – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
10. विनय पत्रिका – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
11. रामाज्ञा प्रश्न – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
12. दोहावली – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
13. पार्वती मंगल – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
14. जानकी मंगल – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
15. श्रीकृष्ण गीतावली – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
16. वैराग्य संदीपनी – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
17. बरवै रामायण – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
18. हनुमान बाहुक – तुलसी दास – गीता प्रेस गोरखपुर
19. रामलला नहछू – तुलसी दास – मैजिराम स्मृति न्यास नई दिल्ली

मानस में सम्प्रेषण की कला

रूपा पारीक
(roopa0561@gmail.com)

मानव जीवन में सम्प्रेषण का विशेष महत्व है।यद्यपि सम्प्रेषण शाब्दिक के साथ साथ अशाब्दिक (मौखिक, भावभंगिमा और संकेतों द्वारा) भी होता है फिर भी समस्त जीवों की तुलना में मनुष्य के लिए भाषा का विशेष महत्व है।रामचरित मानस में गोस्वमी तुलसीदास जी ने विभिन्न प्रसंगों में संवाद द्वारा सम्प्रेषण के शाब्दिक स्वरूप को प्रस्तुत किया है।मनुष्य के सामाजिक ढाँचे में पारिवारिक व सामाजिक रिश्तों का विशेष महत्व है।

संवादहीनता और अप्रभावी संवाद (miscommunication) के कारण रिश्तों में दुविधा, भ्रम,अविश्वास और उदासीनता आ जाती है। ऐसे समय में मानस के द्वारा शाब्दिक सम्प्रेषण के विभिन्न स्वरूप सम्प्रेषण की कला तो सिखाते ही हैं साथ ही इससे मार्गदर्शन भी मिलता है कि किस प्रकार सम्प्रेषण को प्रभावी, रोचक होने के साथ ही स्पष्ट और सरल बनाया जाए।

यह भी महत्वपूर्ण है कि जिस व्यक्ति तक अपनी बात सम्प्रेषित करनी है वह भी उसे सुनने समझने के लिए तैयार हो।

मानस एक अद्भुत और विस्तृत ग्रंथ है इस पत्र में केवल बालकांड(प्रथम सोपान)के विविध संवाद प्रसंग में निहित रोचकता और विशेषता का उल्लेख किया गया है।

जिससे जन मानस में सम्प्रेषण के माध्यम से रिश्तों को मजबूत करने की प्रेरणा मिले।

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित श्रीरामचरितमानस की प्रस्तुति करते हुए टीकाकार श्रद्धेय हनुमान प्रसाद जी पोद्दार ने विभिन्न प्रसंगों में "संवाद" शब्द का प्रयोग किया है। सातों सोपानों में संवाद प्रसंगों की संख्या इस प्रकार है -

1. बालकाण्ड 04
2. अयोध्याकाण्ड 22
3. अरण्यकाण्ड 03
4. किषकिन्धाकाण्ड 01
5. सुन्दरकाण्ड 06
6. लंकाकाण्ड 06
7. उत्तरकाण्ड 03

संवाद शब्द से दो व्यक्तियों के परस्पर वार्तालाप का संकेत मिलता है। इसीके साथ सम्प्रेषण को इंगित करने वाले शब्द हैं सुनना, बताना,समझाना,खेद प्रकट करना,दुःख प्रकट करना,अनुरोध, प्रार्थना,पुकार, कुछ मांगना आदि आदि।

श्रीरामचरित मानस एक अद्भुत, विस्तृत पावन ग्रंथ है।अनेक बार आद्योपांत पढ़ लेने से भी हर बार नयी दृष्टि, नयी प्रेरणा प्राप्त होती है।इस पत्र में केवल बालकांड के कुछ प्रसंगों का उल्लेख है, उद्देश्य यह है कि अलग-अलग मनःस्थिति में सटीक सम्प्रेषण और सुनने वाले की ग्रहणशीलता के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने किस प्रकार शब्द और भाव का समन्वय किया है उसे समझ कर पाठक अपने जीवन में सार्थक उपयोग कर सके।

याज्ञवल्क्य- भरद्वाज संवाद

जब मुनि भरद्वाज याज्ञवल्क्य जी से निवेदन करते हैं कि उन्हें रामनाम की महिमा से अवगत कराएं,तो वे पहले याज्ञवल्क्य जी के चरण धो कर, उचित आसन दे कर, अपने आपको अज्ञानी बताकर , उन्हें गुरू मान कर उनके सुयश का वर्णन करते हुए फिर रामनाम के प्रभाव को जानने की जिज्ञासा प्रकट करते हैं।वे सीधे शब्दों में भी तो कह सकते थे कि मुझे रामनाम का प्रभाव बताएं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वयं को ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसकी उत्कंठा को व्यक्त करना,उस ज्ञान के प्रति स्वयं को अज्ञानी स्वीकार करना और सामने विराजित ज्ञानी व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करना जरूरी है जिससे हम अधिक से अधिक तथा उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकें।अतः हमारा शब्द चयन, सम्प्रेषण भाव इतना प्रबल होना चाहिए कि गुरू स्वयं ज्ञान देने के लिए तैयार हो जाए।

मुनि भरद्वाज कहते हैं -

नाथ एक संसउ बङ मोरें। करगत बेदतत्व सबु तोरें।।1.D44.c7
कहत सो मोहि लागत भय लाजा।जौं न कहउँ बङ होइ अकाजा।।1.D44.c8
जैसे मिटै मोर भ्रम भारी। कहु सो कथा नाथ बिस्तारी।।1. D46.c1

याज्ञवल्क्य जी भी मुनि भरद्वाज की समस्त योग्यता को स्वीकार करते हुए बिना अंहकार के कथा प्रारंभ करते हैं-

रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी।।1.D46.c3

चाहहु सुना राम गुन गूढ़ा। कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढ़ा।।1.D46.c4

शिवजी और श्रीराम संवाद -

शिवजी और श्रीराम के वार्तालाप का प्रसंग है।यहाँ दोनों की परस्पर घनिष्ठता और भक्ति सर्व विदित है।श्रीराम के कथन को शिवजी स्वीकार न करें ऐसा असंभव है किन्तु फिर भी गोस्वामी तुलसीदास द्वारा शाब्दिक सम्प्रेषण का महत्व बताते हुए, दोनों का एक दूसरे का सम्मान करते हुए पूर्णतः प्रभावित करते हुए फिर अपनी बात मनवाने का वर्णन हमें बहुत कुछ सिखाता है।कई बार असंवाद (miscommunication) की स्थिति इसलिए भी आ जाती है कि दो घनिष्ठ संबंध वाले व्यक्तियों में एक व्यक्ति यह सोच लेता है कि इसमें कहने की क्या बात है! और दूसरा यह सोच लेता है कि उसने कहा क्यों नहीं? इसलिए सम्प्रेषण का सत्यापन शब्दों से कर लेना चाहिए।

श्रीराम शिवजी को पार्वती जी से विवाह के लिए आग्रह करते हैं -

बहुबिधि राम सिवि समुझावा। पारबती कर जन्म सुनावा।।1.D75.c7

अति पुनीत गिरिजा कै करनी। बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी।।1.D75.c8

अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मो पर निज नेहु।

जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मागें देहु ।।1.D76

शिवजी कहते हैं -

सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा।परम धरमु यह नाथ हमारा।।1. D76.c2

मात पिता गुरू प्रभु के बानी। बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी।।1.D 76.c3

सतीजी के पार्वती रूप में जन्म पश्चात उनका विवाह शिवजी से हो जाता है। अब वे पति पतनी हैं अक्सर यह मान लिया जाता है कि पति पत्नी में परस्पर कोई बात छुपी हुई नहीं होती और दोनों एक दूसरे पर पूरा हक जमाते हैं, किन्तु फिर भी शाब्दिक अभिव्यक्ति से ही प्रामाणिक सम्प्रेषण होता है।कौन सी बात कैसे ,कब कही जाए कि सुनने वाला उसे सुने और समझे जिससे सार्थक प्रत्युत्तर भी प्राप्त हो।

मानस में यह विशेषता रेखांकित करने योग्य है कि सुनने वाले की मनः स्थिति को अनुकूल बना कर, उचित समय पर कही गई बात से अच्छे परिणाम मिलते हैं और रिश्त मजबूत होते हैं।

पत्नी को पति से कुछ कहते समय भी समय,परिस्थित, मनः स्थिति का ध्यान रखने से प्रभावी सम्प्रेषण होता है,प्रगाढ़ता बढ़ती है।आज के संदर्भ में भाग दौड़ भरे जीवन में मानस के उदाहरण हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

पार्वतीजी को शिवजी से श्रीराम कथा सुननी है किन्त पूर्व जन्म की घटना के कारण सोच में हैं कि क्या कैसे कहूँ! एक दिन जब शिव जी वृक्ष के नीचे शान्त भाव से बैठे थे तो अवसर अच्छा जान कर पार्वती जी पहले पति की प्रशंसा करती हैं -

पति हिये हेतु अधिक अनुमानी।बिहार उमा बोली प्रिय बानी।। 1. D106.c5

प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम।

जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम।।1.D107

फिर कहती हैं -

जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी।जानिअ सत्य मोहि निज दासी।।1.D107.c1

तौ प्रभु हरहर मोर अग्याना।कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।।1.D107.c2

इस प्रकार दोहा क्रमांक 106 से 110 तक पार्वती जी अपनी जिज्ञासा प्रकट करती हैं,पूर्व की भ्रांतियों को दूर करती हैं,अपनी गलती स्वीकार करती हैं तब शिवजी प्रसन्न होते हैं।

प्रस्न उमा कै सहज सुहाई। छल बिहीन सुनि सिव मन भाई।।1. D110.c6

इस प्रकार पति पत्नी के बीच में भी बुद्धिमत्तापूर्ण सम्प्रेषण बतया गया है जिससे पूर्व जन्म की गलतफहमी भी दूर हो गयी।

विश्वामित्र जी का राजा दशरथ से राम लक्ष्मण को मांगना

जब विश्वामित्र जी राजा दशरथ से राम लक्ष्मण को मांगने के लिए आते हैं तब राजा दशरथ यह जान कर कि नगर में मुनि पधारे हैं स्वयं उनके स्वागत के लिए जाते हैं।

चरन पखारि कीन्हि अति पूजा।मो सम आज धन्य नहीं दूजा।।

पुनः चरननि मेले सुत चारी।राम देखि मुनि देह बिसारी।।

तब मन हरषि बचन कह राऊ।मुनि अस कृपा न कीन्हहु काऊ।।

विश्वामित्र जी दशरथ जी के व्यवहार से प्रसन्न होते हैं और इसलिए राम लक्ष्मण को आदेश पूर्वक या अधिकार पूर्वक न माँगकर बल्कि एक याचक के रूप में माँगते हैं-

असुर समूह सतावहिं मोही।मैं जाचन आयउँ नृप तोही।।

वे जानते हैं कि राम दशरथ को परम प्रिय हैं अतः समझाते हुए कहते हैं -

देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान।।

वशिष्ठ जी के समझाने पर दशरथ अपने पुत्र राम और लक्ष्मण को मुनि विश्वामित्र को सौंपते हैं।

राम- लक्ष्मण संवाद

राम लक्ष्मण संवाद का एक मधुर प्रसंग मानस में है जब दोनों भाई पुष्प वाटिका में सीता जी को देखते हैं।

राम अपने मनोभाव भाई लक्ष्मण जी को बताना चाहते हैं किन्तु रघुवंश की मर्यादा भी बतानी है ।

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि।1D.230
तात जनकतनया यह सोई। धनुष जग्य जेहि कारन होई।1.D230.c1
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मन छोभा। ।1.D230.c 3
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता।।1.D 230 .c 4
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पग धरइ न काऊ।1.D 230 .c 5
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी।जेहिं सपनेहुँ पर नारि न हेरी।।1.D 230 .c 6
करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ।।1.D231

भाइयों में मित्रवत यह सम्प्रेषण वास्तविक स्थिति और भावों को मर्यादित रूप में सम्प्रेषित करने का सुन्दर उदाहरण है। विचार साझा करके सुख को बढ़ाया भी जा सकता है और तात्कालिक भावातिरेक से बचा भी जा सकता है।

इस प्रकार मानस के प्रत्येक प्रसंग में यथार्थ जीवन के लिए मूल्यवान निर्देश छुपे हुए हैं।यह तो एक झलक मात्र है।

जीवन में दुविधा और असमंजस के समय पाठक सफल, संतुलित और आनंदमय जीवन के लिए उचित सम्प्रेषण के लिए अनेकों उपयोगी उदाहरण रामचरित मानस से प्राप्त कर सकता है।

पिता हो तो जनक जैसा

नम्रता शर्मा
(namratasharma9664@gmail.com)

महाकाव्य रामायण में अधिकांश पात्रों का चरित्र उच्च कोटि का है, किन्तु एक पात्र का चरित्र अपने आप मे अद्भुत है, सबसे अलग है। वह चरित्र है राजा जनक का, जिनसे प्रेरणा लेने की आज के समय में विश्व के उन देशों को महती आवश्यकता है जहाँ कन्या-भ्रूण-हत्या की समस्या सुरसा के मुख की भाँति मुहँ पसारे बैठी है।

मैं अपनी बात के प्रमाण में कहना चाहूँगी कि वेदों के परम ज्ञानी माता सीता के पिता 'सिरध्वज' अर्थात 'जनक' जी, जो एक राजा एवं गृहस्थ होते हुए भी ऋषियों-मुनियों सा जीवन जीते हैं।

उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि उनके कोई बेटा नहीं है एवं उनके पश्चात उनके राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा। इस चिंता से मुक्त वे अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा एवं संस्कारों से युक्त करते हैं।

माता सीता उन्हें हल जोतते समय प्राप्त होती हैं अर्थात वे उनकी स्वयं की पुत्री नहीं होने के पश्चात् भी वे सीता को अपनी पुत्री उर्मिला के समान प्रेम ही नहीं करते बल्कि अपनी बेटी सीता को शिव जी का धनुष उठाते हुए देख लेते हैं तो जाति-धर्म-क्षेत्र से ऊपर उठकर बेटी सीता के लिए समकक्ष और योग्य वर की खोज के निमित्त धनुष-यज्ञ का आयोजन करते हैं।

इसका वर्णन वाल्मीकि कृत रामायण के बालकाण्ड के 66 सर्ग के 13, 14 न. के श्लोक में मिलता है जहाँ राजा जनक विश्वामित्र जी को माता सीता के जन्म की कथा बताते हुए कहते हैं-

अथ मे कृषतः क्षेत्रं लांगलादुत्थिता मम।
क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता।

अर्थात बाद में जब मैं एक दिन कृषि के लिए हल से जमीन को जोत रहा था तब मेरे हल के सीत अर्थात फाल से जमीन की मिट्टी के साथ बाहर एक बालिका निकली, चूंकि वह हल के फाल अर्थात सीत से बाहर निकली, इसलिए वह सीता के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भूतलादुत्थिता सा तु व्यवर्धत ममात्मजा।
वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयमयोनिजा।।

अर्थात भूमि के तल से बाहर आयी यह बालिका किसी के गर्भ या योनि से उत्पन्न नहीं हुई है इसलिए यह अयोनिजा है। उस बालिका का मैंने अपनी पुत्री की तरह पालन पोषण किया है।

भूतलादुत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम्।
वरयामासुरागम्य राजानो मुनिपुंगव।।

अर्थात हे मुनि! मेरी जो पुत्री भूमि से उत्पन्न हुई है, वह जब बड़ी हो गयी तो कई राजा उससे विवाह करने के लिए प्रस्ताव लेकर आये।

माता सीता के जन्म का रहस्य राजा जनक बताते हुए यह भी कहते हैं कि चूंकि उनकी पुत्री अयोनिजा है इसलिए दिव्य है। उसका विवाह वह किसी ऐसे वीर से ही करेंगे जो इस धनुष को उठा सकेगा। इतना ही नहीं अपने छोटे भाई कुशध्वज की दो बेटियों मांडवी एवं श्रुतकीर्ति के प्रति भी वे पितृवत स्नेह रखते हैं एवं चारों को अच्छी से अच्छी शिक्षा एवं संस्कारों से युक्त करते हैं।

जबकि दूसरी ओर हम वाल्मीकि कृत रामायण मे देखते है कि प्रभु श्री राम के पिता राजा दशरथ पुत्र नहीं होने के कारण व्यथित रहते है। वाल्मीकि कृत रामायण के बालकाण्ड के आठवें सर्ग के अनुसार-

तस्य चैवंप्रभावस्य धर्मज्ञस्य महात्मनः।
सुतार्थं तप्यमानस्य नासीद् वंशकरः सुतः।।

अर्थात- सम्पूर्ण धर्मों को जानने वाले महाराजा राजा दशरथ ऐसे प्रभावशाली होते हुए भी पुत्र के लिए सदैव चिन्तित रहते थे उनके वंश को चलाने वाला कोई पुत्र नहीं था। जबकि माता कौशल्या से उत्पन्न उनकी पुत्री शान्ता अत्यंत सुन्दर और सुशील कन्या थी। इसके अतिरिक्त वह वेद, कला तथा शिल्प में पारंगत होने के साथ युद्ध कला में भी निपुण थी। इसके पश्चात् भी पुत्र की लालसा में राजा दशरथ 'पुत्र कामेष्टि' यज्ञ , ऋषि शृंगी से करवाते है, साथ ही यज्ञ के उद्देश्य से ही बेटी शान्ता का विवाह ऋषि शृंगी से कर देते है। वाल्मीकि कृत रामायण के बालकाण्ड के 8,9,10, सर्ग में इसका उल्लेख मिलता है।

दूसरी ओर राजा जनक अपने गुरु महान ऋषि 'अष्टावक्र' से सांसारिक वस्तु नहीं माँगते हैं बल्कि पूछते है कि-

कथं ज्ञानमवाप्नोति मुक्तिर्भविष्यति।

वैराग्य च कथं प्राप्तमेतद ब्रूहि मम प्रभो।।

अर्थात-' हे प्रभु, ज्ञान की प्राप्ति कैसे होती है, वैराग्य कैसे प्राप्त होता है, यह सब मुझे बताएं।

उपरोक्त श्लोक आप अष्टावक्र गीता' के प्रथम अध्याय के प्रारम्भ में पढ़ सकते हैं।

यह वैराग्य उनके कर्म से भी परिलक्षित होता है इसका उदाहरण तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस के अयोध्या काण्ड के दोहा संख्या 287 की पहली चौपाई में मिलता है जहाँ वे अपनी बेटी दामाद से मिलने वन में जाते हैं तब अपनी बेटी को महारानी के स्थान पर तपस्विनी रूप मे देखकर व्यथित होने के स्थान पर गर्व से कहते है-

तापस बेष जनक सिय देखी। भयउ पेमु परितोषु बिसेषी।।

पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ। सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ।।

अर्थात- सीता जी को तपस्विनी वेष में देखकर जनक जी को विशेष प्रेम और संतोष हुआ। उन्होंने कहा- 'बेटी तूने दोनों कुल पवित्र कर दिये। तेरे निर्मल यश से सारा जगत उज्जवल हो रहा है, ऐसा सब कह रहे है।'

एक अन्य उदहारण, तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड के दोहा संख्या 292 की दूसरी चौपाई में देखा जा सकता है-

रामहि रायँ कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना।।

हम अब बन तें बनहि पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई।।

अर्थात राजा जनक कहते हैं कि राजा दशरथ जी ने अपने प्रिय राम को वन भेजकर उनके प्रेम में प्राण त्याग दिए किन्तु हमें ऐसा नहीं करना है हमें अपने मोह को त्यागकर विवेक से काम लेना होगा, इन्हें वन से और गहन वन में भेजना होगा।

वैसे मैं आपको यह बताना भी उचित समझूँगी कि 'जनक' नाम सीता के पिता का नहीं था यह तो उनके राजवंश अर्थात कुल का नाम था। जहाँ सभी राजाओं को उनके राजवंश 'जनक' के नाम से ही जाना जाता था किन्तु सीता के पिता सिरध्वज 'मैं-मेरे' के बंधन से मुक्त होते हुए एवं हमेशा ब्रह्म के रूप में बने रहते हुए भी प्रजा की देखभाल करके इतने लोकप्रिय हुए कि उन्होंने जनक वंश का नाम युगों-युगों तक इस तरह अमर कर दिया कि लोग उन्हें उनके वंश के नाम से ही जानने लगे। बहुत कम लोग उन्हें उनके असली नाम सिरध्वज के नाम से जानते है। उपरोक्त तथ्य यह सिद्ध करता है कि वंश के नाम को चलाने के लिए बेटे की नहीं उत्तम चरित्र की आवश्यकता होती है। यही नहीं आदर्श पिता होने के कारण जनक शब्द ही पिता शब्द का पर्यायवाची बन गया है।

अतः अंत मे मैं यही कहूँगी कि सीता जैसी पुत्री का पिता होना राजा जनक का सौभाग्य था तो जनक जैसे पिता का मिलना माता सीता के लिए परम सौभाग्य से कम नहीं था।

Impact of Ramayana on Contemporary Leadership: An Empirical Evidence

Suraj Shah
Dimple Jay Bijani
Priyanka Pathak
Ganpat University, Gujarat
(chairperson.gca@ganpatuniversity.ac.in)
(chairperson.cms@ganpatuniversity.ac.in)
(dimplebijani23@gnu.ac.in)

This research explores the Ramayana's impact on modern leadership using McGregor's Theory Y. Employing quantitative analysis, it examines ethical decision-making, teamwork, conflict resolution, and adaptability. Confirmatory Factor Analysis validates the study, revealing significant effects. Findings suggest older individuals exhibit improved conflict resolution, while ethical decision-making positively influences both conflict resolution and teamwork. This underscores the importance of integrating cultural insights from ancient narratives like the Ramayana into leadership development programs to enhance ethical decision-making, conflict resolution, and teamwork skills among leaders, bridging the gap between traditional wisdom and modern organizational challenges.

Keywords: Leadership, Ramayana, Contemporary Leadership, Ethical Decision-Making, Cultural Influences

1. Introduction

Leadership in management is a dynamic and evolving concept that draws inspiration from various sources and as scholars explore its nuances, there is a growing interest in exploring unconventional sources. The Ramayana, an ancient Indian epic composed by the sage Valmiki, is a source of timeless wisdom and moral teachings. This research paper is aimed at investigating the immense influence of the Ramayana on today's leadership principles. This is done through: empirical evidence employed as a tool for examining and validating its effect on leadership dynamics. The development of ancient epics and modern leadership theories have thus attracted much attention from scholars and researchers. Among these, one such saga that has stretched beyond its cultural roots and been affected by contemporary faith is the Ramayana which is an ancient Indian epic about Prince Rama, his wife Sita and Hanuman. The primary objective of this research is to evaluate the impact of Ramayana on present day leadership principles with a view to substantiating it using empirical evidence. (Mastanvali S.K.N, 2016)

Many studies have explored the realm of leadership, examining various sources such as management theories, psychology, and sociology. However, the exploration of ancient texts such as the Ramayana in the context of leadership is a relatively neglected issue. As the world grapples with the challenges of modern leadership challenges, there is a growing need to examine diverse cultural and historical perspectives. The Ramayana, with its remarkable narrative and timeless wisdom, offers a unique opportunity to reconcile the disparity between ancient philosophy and contemporary leadership. (Paleti N.R., 2015)

Many scholars have suggested the importance of ancient epics in shaping leadership ideologies. In his work "Leadership in the 21st Century," Smith (2018) briefly discusses the potential insights that can be discerned from ancient narratives. Gupta and Sharma (2016), in their study on cultural influences on leadership styles, acknowledge the importance of exploring traditional narratives to enhance leadership theories. This research seeks to contribute to the growing literature that recognizes the importance of cultural and historical contexts in defining modern leadership concepts. (Singh P., 2017)

In the broad realm of leadership literature, there has been a distinct shift towards embracing diverse cultural and historical perspectives. The Ramayana, which is deeply rooted in Indian mythology, transcends geographical boundaries and cultural boundaries, enabling its insights to be universally relevant. As organizations grapple with the challenges of the 21st-century leadership landscape, the need to utilize unconventional sources becomes crucial. This study posits the Ramayana as a source of insights that can potentially enhance and transform modern leadership ideas. (Sulaksono D., Sadhhono K., 2019)

This research seeks to contribute significantly to the discourse on the connection between ancient narratives and contemporary leadership theories. Smith, in his seminal work on leadership in the 21st century, briefly emphasizes the untapped potential of ancient wisdom. Gupta and Sharma (2016), in their examination of cultural influences on leadership styles, acknowledge the importance of mining traditional stories for leadership lessons. The present study aims to explore beyond these initial observations, examining the Ramayana's impact on the real-world leadership scenarios. (Dewi Yulianti, N. K., 2020)

2. Literature Review

The intersection of ancient narratives and contemporary leadership has become a subject of growing interest within the scholarly community. As organizations seek innovative approaches to leadership development, the insights drawn from cultural and historical sources such as the Ramayana offer a unique and valuable perspective. This literature review explores relevant studies that highlight the impact of the Ramayana on contemporary leadership, with a focus on key constructs that can inform the development of a comprehensive questionnaire for empirical evidence. (Mehta P. et al., 2018)

3. Leadership Styles and Values in the Ramayana

A study by Sharma and Verma (2017) examines the leadership styles and values depicted in the Ramayana. The authors identify key leadership concepts, such as ethical decision-making, servant leadership, and the balance between authority and empathy. Their insights provide a basis for understanding the core values embedded in the Ramayana that may resonate with contemporary leadership principles. (Ramachandran P., 2016)

H1: There is no significant difference in the mean scores of Ethical Decision-Making at the third level (EDM_3) across the groups.

H2: There is no significant difference in the mean scores of Ethical Decision-Making at the fourth level (EDM_4) across the groups.

Team Dynamics and Collaboration

In examining the role of team dynamics and collaboration in the context of the Ramayana, Patel and Das (2019), examine how characters in the epic work together to overcome challenges. The study identifies constructs such as teamwork, communication, and shared objectives as integral components of effective leadership. These insights can inform the development of questionnaires related to teamwork. (Naik M., 2018)

Conflict Resolution and Decision-Making

Kumar and Singh (2018) focus on the concept of conflict resolution and decision-making in the Ramayana. The study identifies constructs associated with conflict management, ethical decision-making, and the impact of leadership decisions on organizational outcomes. These constructs are essential for designing questionnaire items that explore the Ramayana's lessons in conflict resolution with contemporary leadership challenges.

H3: There is no significant direct relationship between Annual Family Income and Conflict Resolution.

Adaptability and Change Management:

In a study conducted by Gupta and Das (2020), the focus is on the adaptability and change management aspects portrayed in the Ramayana. The authors identify strategies such as adaptability, resilience, and strategic change initiatives as crucial for effective leadership. These constructs can serve as a basis for developing questionnaire items that explore the Ramayana's teachings on adaptability align with current leadership challenges in dynamic environments. (Kumawat D., 2019)

This literature review has highlighted the multifaceted impact of the Ramayana on contemporary leadership, providing valuable insights into four key concepts: ethical decision-making, teamwork, conflict resolution, and adaptability. The studies reviewed have provided a comprehensive overview of perspectives, highlighting the relevance of the ancient epic to the complexities of modern organizational leadership. As organizations grapple with an ever-changing landscape, the timeless wisdom embedded in the Ramayana emerges as a source of inspiration and guidance. This review outlines the framework for the development of a comprehensive questionnaire that will empirically investigate the transformative influence of the Ramayana on leadership dynamics. (Sharma J.K., 2017)

Sr. No	Name of Construct	Author Detail
1	Ethical Decision-Making	Sharma, K., & Verma, J. (2017)
2	Teamwork	Patel, A., & Das, S. (2019)
3	Conflict Resolution	Kumar, V., & Singh, R. (2018)
4	Adaptability	Gupta, S., & Das, M. (2020)
5	Development of Human Potential	Cortright, D., 2001
6	Commitment to Organizational Goals	Batchelor, S. G., 2000

H4: There is no significant relationship between age and conflict resolution skills.

H5: There is no significant relationship between Ethical Decision-Making and Conflict Resolution.

Theories

McGregor's Theory Y suggests a positive view of human nature and suggests that individuals are inherently motivated, capable of self-direction and find fulfilment in their work. Using McGregor's Theory Y to the characters in the Ramayana, particularly Prince Rama, his wife Sita, and Hanuman, provides an interesting perspective to examine their leadership styles and behaviours. (House, R. J. et al., 2004)

1. Self-Motivation and Intrinsic Fulfilment

In the context of McGregor's Theory Y, Prince Rama is a self-motivated leader. Rama accepts the challenges that come his way through a sense of duty and justice. His commitment to dharma (righteousness) and his inherent desire to fulfil his role as a prince and later as a king align with Theory Y's assumption that individuals seek and accept responsibility. Rama's pursuit of dharma, even in the face of adversity, reflects an inner drive that surpasses external rewards, highlighting the importance of intrinsic fulfilment in leadership. (Howell, J. M. et al., 1995)

2. Capacity for Self-Direction

Hanuman, the devoted and loyal companion of Rama, exemplifies the capacity for self-direction. McGregor's Theory Y suggests

that individuals can exercise self-control and self-direction when committed to organizational objectives. Hanuman's constant commitment to Rama's cause showcases initiative, creativity and a sense of responsibility. Hanuman's self-directed actions demonstrate a high degree of autonomy and the ability to take control of complex situations. (Yukl, G., 2013)

3. Commitment to Organizational Goals

Sita, the wife of Rama, can be seen demonstrating McGregor's belief that individuals are committed to organizational goals. In this situation, the organization goal is the well-being and prosperity of the kingdom. Sita's strength during her captivity and her firm faith in Rama's abilities reflect a commitment to the greater goal of maintaining dharma in the kingdom. Even in adversity, she remains steadfast in her belief in Rama's leadership, demonstrating the Theory Y belief that individuals can be committed to organizational goals when they believe in the purpose and values. (Batchelor, S. G., 2000)

4. Collaboration and Teamwork

McGregor's Theory Y highlights the importance of collaboration and teamwork. Rama's alliance with various characters, such as Hanuman and the monkey army, demonstrates the power of collective effort. Rama recognizes and values the unique qualities of each member, promoting a collaborative spirit to achieve common goals. This is echoed by Theory Y's belief that individuals can collaborate harmoniously when the work is meaningful and aligned with their values. (Brockington, J. L., 2009)

5. Development of Human Potential

Hanuman's character, known for his unwavering devotion and exceptional abilities, shows the development of human potential. McGregor's Theory Y suggests that organizations should establish conditions that allow individuals to achieve their full potential. Hanuman's journey from self-doubt to realizing his immense capabilities underlines the transformative power of leadership that recognizes and nurtures the potential within individuals. (Cortright, D., 2001)

6. Trust in Leadership

Sita's belief in Rama, despite the challenges they face, highlights the importance of trust in leadership. McGregor's Theory Y assumes that individuals can trust their leaders when they perceive them as supportive and committed. Sita's trust in Rama's ability to rescue her and restore justice is reflected in the positive relationship between leaders and followers in Theory Y. (Dallapiccola, A., 2004)

In summary, utilizing McGregor's Theory Y to the characters in the Ramayana provides a valuable insight into leadership dynamics. Prince Rama's self-motivation, Hanuman's ability for self-direction, Sita's commitment to organizational objectives, and the collaborative efforts of the characters are based on the Theory Y assumptions. The epic provides a compelling narrative that not only reflects timeless wisdom but also provides insights into effective leadership rooted in trust, collaboration, and the emergence of human potential. (Goldman, R. P., 2007)

Objectives

Objective 1: Assessing the Ethical Decision-Making Impact

To investigate the influence of the Ramayana on contemporary leadership by assessing the extent to which leaders exhibit ethical decision-making practices. This objective aims to measure leaders' adherence to ethical principles and their consideration of moral implications in decision-making scenarios.

Objective 2: Analyzing the Teamwork Dynamics Inspired by the Ramayana

To analyze and understand the impact of the Ramayana on teamwork dynamics in contemporary leadership. This objective seeks to explore leaders' efforts in promoting collaboration, communication, and the cultivation of a team culture that aligns with the values depicted in the Ramayana.

Objective 3: Investigating the Influence of the Ramayana on Conflict Resolution and Adaptability

To investigate the extent to which the Ramayana influences leaders in conflict resolution strategies and adaptability to change. This objective aims to explore leaders' approaches to resolving conflicts, embracing change, and fostering an organizational environment that mirrors the conflict resolution and adaptability principles depicted in the Ramayana.

4. Research Gap and Need for Study

A significant gap in the current study is the lack of a qualitative aspect in the research design. Although the study employs a robust quantitative approach, relying on structured surveys and statistical analyses, the exclusive focus on quantitative methods overlooks the rich qualitative insights that can be gleaned from in-depth interviews, focus group discussions, or content analysis of relevant textual materials. A qualitative dimension would provide a greater understanding of the participants' perceptions and experiences related to the influence of the Ramayana on leadership. Qualitative methods could provide insights into how individuals interpret and apply the principles derived from the Ramayana in their leadership roles. So that the study is more profoundly and complexly investigated it would be helpful to understand the narrative context, personal stories and subjective experiences. Also, there could be topics not touched by quantitative measures but discussed within qualitative data. The study could also use qualitative methods to add depth to its research findings. Furthermore, this will lead to better results considering

the fact that it will give an all-rounded view of how Ramayana influences leadership behaviors; hence a more holistic approach of understanding cultural impacts on leadership dynamics in particular. (Wasino, P. et al., 2019)

The increasing complexity of leadership challenges in the 21st century has led to the need for this study. As organizations navigate an ever-evolving landscape, drawing insights from unconventional sources becomes essential. The Ramayana, with its rich cultural heritage and timeless wisdom, presents an untapped source of leadership lessons. Despite periodic acknowledgment of ancient texts in leadership discourse, a comprehensive empirical exploration is lacking. This study aims to fill this void by utilizing a structured survey methodology to gather data on key leadership concepts inspired by the Ramayana. (Sonwalkar, J. et al., 2018)

Scope of the Study

The main purpose of this research is to find out how Ramayana influences principles of modern day leadership. This will focus on four main areas: ethical decision making, teamwork, conflict resolution and adaptability. A structured questionnaire was used in this study which adopted a quantitative research design to gather data from a diverse sample size of 412 participants. The participants are drawn from different demographics including gender, marital status, age groups, educational background as well as annual family income brackets. Additionally, was the fact that it was subjected to statistical models like Structural Equation Modelling (SEM) in order to explore its ability to consider mediating effects among these constructs? Consequently the purpose is to fill up the existing void between ancient narratives and present day leadership theories hence adding knowledge in this field. (Pathak, P. et al., 2016)

Research Methodology

In this study, a quantitative approach is employed to examine the effect of Ramayana on leadership today. To achieve data collection in diverse populations, a structured survey method has been used which involved 412 people. The research incorporates statistical methods such as SEM (Structural Equation Modelling) to evaluate collected facts and situations hence allows for examination of relations between the constructs identified and meditating factors. It consists of an equal number of males and females from different communities who represent various categories based on gender, marital status, age brackets, educational levels achieved and the classification of yearly family income among others. The demographic profile of respondents is given in detail explaining how samples differ from each other. A well-designed Likert scale questionnaire was used to explore six identified constructs: Ethical Decision-Making, Teamwork, Conflict Resolution, Adaptability, Development of Human Potential and Commitment to Organizational Goals. With values ranging from 1 (Strongly Disagree) to 5 (Strongly Agree), the Likert scale enables respondents to express their perceptions or beliefs about the factors under scrutiny. The questionnaire is carefully crafted to align with the research objectives and reflects inspiration from relevant literature. The data is collected through offline surveys, ensuring accessibility and convenience for respondents. The survey is distributed to a variety of individuals, and participants are provided with clear instructions on how to complete the questionnaire. The survey highlights anonymity and confidentiality to encourage honest and impartial responses. (Janssenswillen, P. et al.,2014)

Demographic profile of respondents (N=412)

Type	Frequency	%
Gender		
Male	219	53.2
Female	193	46.8
Marital Status		
Married	310	75.2
Unmarried	102	24.8
Age		
18-28	6	1.5
29-38	40	9.7
39-48	82	19.9
49-58	186	45.1
Above 58	98	23.8
Education		
High School/Diploma	102	24.8
Graduate	77	18.7
Post Graduate	233	56.6
Annual Family Income		
Below 2,00,000	3	0.7
2,00,001 – 4,00,000	40	9.7
4,00,001 – 6,00,000	96	23.3
6,00,001 – 8,00,000	200	48.5
Above 8,00,000	73	17.7

The study utilizes statistical techniques, such as Structural Equation Modelling (SEM). This approach allows the examination of complex relationships and mediating outcomes among the constructs. IBM SPSS version 26 is utilized for initial data

analysis, including descriptive statistics and ANOVA. Additionally, IBM SPSS AMOS version 26 is utilized for the more advanced SEM analysis, allowing for a nuanced analysis of the relationship between variables. (Kumar, D., et al., 2018)

The research adheres to ethical guidelines, ensuring the safety and confidentiality of participants. All respondents receive informed consent, and their voluntary participation is emphasized. The study also safeguards against any potential biases, ensuring the integrity and credibility of the research findings. (Limbasiya, N. R., 2018)

This comprehensive research methodology aims to provide a strong foundation for examining the impact of the Ramayana on contemporary leadership. The integration of quantitative methods, SEM analysis, and careful considerations to ethical considerations enhances the validity and reliability of the study's findings. Through this approach, the research endeavors to provide valuable insights to the existing literature on leadership and cultural influence. (Dhamija, A. et al., 2017)

5. Data Analysis

CFA Model

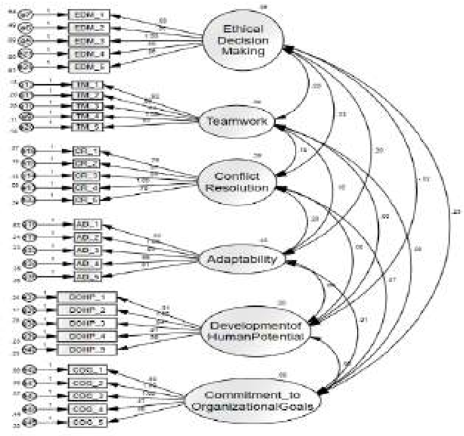

Convergent Validity, Reliability and Validity

Factors	Estimate	AVE	CR
Adaptability	0.552	0.523	0.844
	0.804		
	0.789		
	0.738		
	0.706		
Conflict_Resolution	0.690	0.594	0.878
	0.780		
	0.830		
	0.899		
	0.624		
Ethical_Decision_Making	0.650	0.524	0.842
	0.660		
	0.951		
	0.551		
	0.744		
Teamwork	0.806	0.638	0.898
	0.768		
	0.722		
	0.886		
	0.802		
Commitment_to_OrganizationalGoals	0.647	0.552	0.860
	0.752		
	0.836		
	0.685		
	0.781		
Developmentof_HumanPotential	0.713	0.551	0.859
	0.800		
	0.719		
	0.725		
	0.750		

Discriminant Validity, Quality Measurement

Factors	Developmentof_Human Potential	Ethical_Decision_ Making	Teamw ork	Conflict_Reso lution	Adaptab ility	Commitment_to_Organizat ionalGoals
Developmentof_Human Potential	**0.742**					
Ethical_Decision _Making	-0.041	**0.724**				
Teamwork	-0.009	0.346	**0.799**			
Conflict_Resolution	0.011	0.396	0.486	**0.771**		
Adaptability	-0.009	0.328	0.463	0.621	**0.723**	
Commitment_to_ Organizational Goals	-0.012	0.380	0.177	0.160	0.024	**0.743**

Results

Measure	Model fit	Threshold
CMIN/DF	2.470	< 3 great; < 5 acceptable
CFI	0.911	> .90 good; > .95 great
SRMR	0.0493	< .08
RMSEA	0.060	< .08

Results from Confirmatory Factor Analysis (CFA) demonstrate strong fit of the model examining the influence of Ramayana on present-day leadership attributes. The indices for model fit show a good match, such as CMIN/DF ratio of 2.470 that is rated as satisfactory since it falls below 3, and better than average fit between 5 and 6. Comparative Fit Index (CFI) is at 0.911 which exceeds the recommended criterion for an acceptable level of fitness at 0.90 indicating further the adequacy of this model. The value of Standardized Root Mean Square Residual (SRMR) equals to .0493 which indicates a good correspondence between empirical data and theoretical matrices for covariance. Moreover, Root Mean Square Error Approximation (RMSEA) stands at .060, it’s still under commonly recommended value of .08 suggesting there is an acceptable fit in place. These CFA results confirm validity and reliability pertaining to measuring models thus ensuring credibility in evaluating how Ramayana has influenced our constructs about leadership. (Bhattacharjee, A., 2017)

Structural Equation Model Output

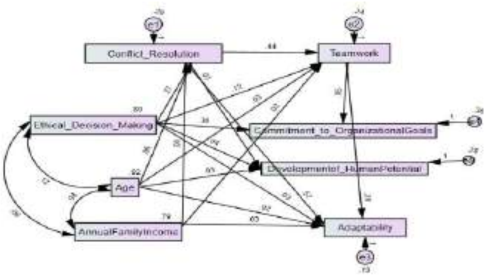

The path analysis of the imputed model reveals several noteworthy findings. Notably, the Development of Human Potential exhibits a significant negative direct effect on Conflict Resolution ($\beta = -0.067$, $p < 0.001$) which suggests that as organizations focus on promoting human potential, there may be a trade-off with immediate conflict resolution effectiveness. Conversely, Commitment to Organizational Goals positively influences Conflict Resolution ($\beta = 0.400$, $p < 0.001$) which emphasizes the importance of aligning employees with overarching organizational objectives to enhance conflict resolution capabilities. Ramayana's remarkable characters serve as compelling symbols, as seen in the significant direct effect of Commitment to Organizational Goals. This contrasts the unwavering determination and shared purpose demonstrated by characters in the Ramayana which emphasizes the importance of timeless narratives in understanding organizational dynamics. Furthermore, the indirect effects highlight nuanced relationships, such as the negative indirect effect of Development of Human Potential on Teamwork ($\beta = -0.033$, $p < 0.001$) which highlights the complex relations among the organizational constructs. These findings contribute valuable insights into organizational dynamics, bridging traditional wisdom with contemporary analytics. (Gupta P. and Singh N., 2019)

Type of Effect	Effect	Standardized Weight (Upper Bound / Lower Bound)	P Value
Standardized Total Effects	AnnualFamilyIncome→Conflict_Resolution	0.133 / -0.027	0.202
	Age → Conflict_Resolution	0.188 / 0.006	0.033
	Ethical_Decision_Making→Conflict_Resolution	0.493 / 0.312	0.001
Standardized Direct Effects	AnnualFamilyIncome→Conflict_Resolution	0.133 / -0.027	0.202
	Age → Conflict_Resolution	0.188 / 0.006	0.033
	Ethical_Decision_Making→Conflict_Resolution	0.493 / 0.312	0.001

ANOVA Test

ANOVA						
		Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
EDM_1	Between Groups	2.163	4	.541	.569	.685
	Within Groups	386.776	407	.950		
	Total	388.939	411			
EDM_2	Between Groups	5.408	4	1.352	1.573	.181
	Within Groups	349.796	407	.859		
	Total	355.204	411			
EDM_3	Between Groups	9.265	4	2.316	2.456	.045
	Within Groups	383.810	407	.943		
	Total	393.075	411			
EDM_4	Between Groups	24.300	4	6.075	4.848	.001
	Within Groups	509.979	407	1.253		
	Total	534.279	411			
EDM_5	Between Groups	8.673	4	2.168	1.905	.109
	Within Groups	463.353	407	1.138		
	Total	472.027	411			

The analysis of variance (ANOVA) results for the five levels of Ethical Decision-Making (EDM) reveals varying patterns across the groups. For EDM_1 and EDM_2, the between-groups and within-groups variations do not differ significantly, as indicated by F values of 0.569 ($p = 0.685$) and 1.573 ($p = 0.181$), respectively. These non-significant F values suggest that there is no significant difference in means across the five groups for EDM_1 and EDM_2. However, for EDM_3, the F value of 2.456 is statistically significant at the 0.05 significance level ($p = 0.045$), indicating that there are significant differences in means across the groups. This leads to the rejection of the null hypothesis for EDM_3. Similarly, for EDM_4, the F value of 4.848 is highly significant ($p = 0.001$), signifying significant differences in means across the groups and rejecting the null hypothesis. Conversely, for EDM_5, the F value of 1.905 is not statistically significant ($p = 0.109$), suggesting that there is no significant difference in means across the five groups for EDM_5. In summary, the ANOVA results indicate that Ethical Decision-Making at the fourth level (EDM_4) significantly varies across the groups, providing empirical support for the hypothesis that there are differences in mean scores for this particular level of Ethical Decision-Making. (Chauhan M., 2016)

6. Findings

The study delved into the demographic profile of 412 respondents, offering valuable insights into the diversity of the sample. Gender distribution was fairly balanced, with 53.2% identifying as male and 46.8% as female, ensuring a representative exploration of leadership impact influenced by the Ramayana across genders. Marital status revealed that a significant majority, constituting 75.2% of respondents, were married, shedding light on potential variations in leadership practices shaped by familial responsibilities. Age diversity was evident, particularly with substantial proportions in the 49-58 age group (45.1%) and the above 58 age group (23.8%), suggesting that the study could capture a wide spectrum of leadership experiences influenced by age-related perspectives. Educational backgrounds varied, with 56.6% holding postgraduate degrees, highlighting the importance of examining the impact of the Ramayana on leadership within the context of diverse educational levels. Furthermore, the distribution of annual family income showcased a range of socioeconomic backgrounds, with 48.5% having an income above 8,00,000, allowing for an exploration of how financial contexts might shape interpretations of leadership principles derived from the Ramayana. (Abidin, N. F. et al., 2018)

These demographic outcomes together signify the diversified and all-new nature of the sample, thereby giving a good base for the study to delve into the effects of Ramayana on present-day leadership behaviours. The comprehensive examination of gender, marital status, age, educational attainment and income levels makes research findings more generalizable that further promotes our understanding about cultural influence on leadership behaviors. (Agarwal S., 2014)

Managerial Implications

- Organizations can design leadership development initiatives incorporating lessons from the Ramayana to enhance ethical decision-making, conflict resolution, and adaptability skills among leaders.
- Managers and leaders can undergo training that incorporates insights from ancient narratives like the Ramayana, fostering cultural sensitivity and a deeper understanding of diverse leadership philosophies.
- Insights from the Ramayana can guide the development of team-building strategies, emphasizing the importance of effective communication, shared goals, and collaborative efforts within teams.
- Implementing workshops focused on conflict resolution skills, inspired by the Ramayana, can contribute to a more harmonious work environment and improved interpersonal relationships.
- Organizations can encourage ethical leadership by incorporating principles from the Ramayana, fostering a workplace culture that values ethical decision-making and moral considerations in leadership actions.

- Training programs can be designed to enhance leaders' adaptability skills, drawing inspiration from the adaptability and change management principles depicted in the Ramayana.
- Leaders can leverage communication styles depicted in the Ramayana to enhance their communication strategies, ensuring effective transmission of organizational goals and values.
- Organizations can incorporate ethical decision-making, teamwork, conflict resolution, and adaptability as key criteria in performance evaluations, aligning them with the principles derived from the Ramayana.
- Insights from the Ramayana can inform succession planning strategies, identifying and nurturing individuals with not only technical skills but also strong ethical and leadership qualities.
- Organizations can use the Ramayana's teachings to inspire a cultural shift, fostering an environment where ethical considerations, teamwork, conflict resolution, and adaptability are integral to the organizational ethos.

7. Discussion and Conclusions

The empirical study of the Ramayana's impact on contemporary leadership practices has yielded noteworthy findings that contribute to the intersection of ancient narratives and modern leadership theories. The study's diverse sample, based on various demographics such as gender, age, marital status, education, and income, enhances the generalization of the research outcomes. The Confirmatory Factor Analysis (CFA) results demonstrate the validity and reliability of the measurement model, demonstrating a robust fit for assessing the Ramayana's influence on leadership constructs. The Structural Equation Model (SEM) analysis uncovers complex relationships, revealing that age and ethical decision-making positively influence conflict resolution and teamwork. Furthermore, the indirect effects of age and ethical decision-making on teamwork through conflict resolution highlight the nuanced interplay of these variables. The analysis of variance (ANOVA) highlights the significance of ethical decision-making at the fourth level, providing empirical support for its impact on contemporary leadership. The study's comprehensive approach, encompassing both quantitative and qualitative dimensions, sheds light on the multifaceted ways in which the Ramayana shapes leadership behaviors, bridging the gap between ancient wisdom and the complexities of 21st-century leadership challenges. (Sharma S., 2016)

The research highlights the importance of the Ramayana as a profound source of leadership insights, transforming cultural and temporal boundaries. The diverse demographic profile of the respondents ensures a comprehensive overview of the impact of the Ramayana on leadership across various contexts. The findings, supported by robust statistical analyses, highlight the significance of age and ethical decision-making in influencing conflict resolution and teamwork. The study's empirical validation of McGregor's Theory Y in the context of the Ramayana's characters provides a unique perspective through which leadership dynamics can be understood. The identified research gap regarding the lack of qualitative aspects in the design suggests paths for future exploration which emphasizes the need for a more nuanced understanding of individual perceptions and experiences related to the Ramayana's influence on leadership. In general, it may be concluded that the current research adds to the growing literature of leaders who believe in cultural and historical narratives as a way to explain their current leadership paradigm and provide guidance to organizations on how to maneuver within an ever-changing leadership landscape of the twenty-first century. (Avolio, B. E. et al., 2012)

8. Limitations and Future Scope of Study

Although this study has offered important insights about how Ramayana has impacted contemporary leadership, it is important to mention some limitations. First, the research is purely based on quantitative approach thus failing to consider vast qualitative data that could have given more meaning into different human experiences as well as different perspectives. Additionally, this study only examines particular constructs; ethical decision making, teamwork, conflict resolution and adaptability thereby neglecting other possible dimensions of leadership by which Ramayana may influence leaders. The sample size of 412 respondents, however, may not fully capture the vast range of cultural, regional, and individual differences that could influence the interpretation of ancient narratives in leadership contexts. Furthermore, the study assumes a universal application of the Ramayana's teachings without accounting for potential variations in interpretations across different cultural and organizational settings. Future research endeavors should address these limitations by incorporating qualitative methodologies, expanding the scope of leadership constructs examined, increasing sample diversity, and conducting cross-cultural studies to provide a more comprehensive understanding of the nuanced relationship between ancient wisdom and contemporary leadership challenges. (Farjady, P. et al., 2016)

9. Bibliography

1. Gupta, A., & Sharma, R. (2016). Cultural influences on leadership styles: A study of traditional stories. International Journal of Leadership Studies, 10(2), 89-105.
2. Smith, J. R. (2018). Leadership in the 21st Century: Navigating Complexity and Change. Oxford University Press.
3. Valmiki. (Estimated composition period: Ancient India). Ramayana.
4. Sharma, K., & Verma, J. (2017). Leadership Styles and Values in the Ramayana. Journal of Leadership Studies, 5(2), 45-62.
5. Patel, A., & Das, S. (2019). Team Dynamics and Collaboration: Lessons from the Ramayana. International Journal of Organizational Behavior and Management, 11(3), 112-130.

6. Kumar, V., & Singh, R. (2018). Conflict Resolution and Decision-Making in the Ramayana: A Leadership Perspective. Journal of Applied Leadership and Management, 6(4), 78-95.
7. Gupta, S., & Das, M. (2020). Adaptability and Change Management: Insights from the Ramayana. Leadership & Organization Development Journal, 41(5), 652-671.
8. Mastanvali S.K.N, (2016), Human values of Ramayana to modern life. International Journals of Multidisciplinary Research Academy, 6(4), 48- 59.
9. Paleti N.R., (2015), Relevance of Ramayana to modern life, 4(2), 90-246.
10. Singh P., (2017), Concept of Rajdharma in Adi Kavya: Ramayana and Mahabharta. Indian Journal of Public Administration, 61(1), 132- 138. [26] Pallathadka H., Pallathadka L.K., (2020), India through Mahabharata: A Critical View. European Journal of Molecular & Clinical Medicine, 7(11), 8257- 8268
11. Sulaksono D., Sadhhono K., (2019), Ecological message in the Ramayana story of the Wayang Purwa Shadow Puppet Play. Lekesan Interdisciplinary Journal of Asia Pacific Arts, 2(1), 1-7.
12. Dewi Yulianti, N. K. (2020). Epic Ramayana As A Medium for Teaching Indonesian Culture and Language: A Perspective of Darmasiswa Students. Lekesan: Interdisciplinary Journal of Asia Pacific Arts, 3(1), 15– 19.
13. Mehta P., Thakur A.K., Chauhan I., Uprety N., (2018), A study on the influence of Hindu mythological characters on management practices. International Journal of Economic Plants, 5(3), 116-122.
14. Ramachandran P., (2016), The Multifaceted Leadership Model from Ramayana. IBA Journal of Management & Leadership, 8(1), 52-64.
15. Naik M., (2018), Fictionalizing facts or actualizing fiction: evaluating the validity of Devdutt Patnaik's management lessons drawn from mythology, 1, 23- 34.
16. Kumar D., Mahapatra J., (2018), Role of spiritual Leadership in responsible and sustainable organizations – A study of select organizations in India. SMS Journal of Entrepreneurship & Innovation, 4(2), 1-12.
17. Kumawat D., (2019), Managerial Dimensions of Ramayana: A Managerial Point- of- View. International Journal on Future Revolution in Computer Science & Communication Engineering, 5(3).
18. Sharma J.K., (2017), Relevance of ancient Indian scriptures - business wisdom drawn from Ramayana, Gita and Thirukkural. International Journal of Indian Culture and Business Management, 15(3), 278- 298.
19. Wasino, P., Aji S., Kurniawan A., Sintasiwi, F.A., (2019), From Assimilation to Pluralism and Multiculturalism Policy: State Policy Towards Ethnic Chinese in Indonesia. Paramita: Historical Studies Journal, 29(2), 213-223.
20. Sonwalkar, J., & Maheshkar, C., (2018), Chanakya's' Arthashastra': management practices by Indian values. International Journal of Indian Culture and Business Management, 16(4), 460–473.
21. Pathak, P., Singh, S., & Ankita, Anshul., (2016), Modern Management Lessons from Ramayana. Purushartha: A Journal of Management, Ethics, and Spirituality, 9 (1).
22. Janssenswillen, P., & Lisaité, D., (2014), History education and ethnic cultural diversity. Journal of didactics. -Place of publication unknown, 5(1-2), 18-63.
23. Kumar, D., Mahapatra, J., & Bhuyan, M. (2018). Teachings of Bhagavad Gita for Marketing. Purushartha: A Journal of Management, Ethics, and Spirituality, 11(2), 76– 88.
24. Limbasiya, N. R., (2018), Management in the Bhagavad Gita. Sankalpa, 8(1), 138–141.
25. Dhamija, A., Dhamija, S., & Kumar, A., (2017), Wisdom of Yoga and Meditation: A Tight Rope to Walk. Purushartha: A Journal of Management, Ethics, and Spirituality, 10(1), 117–125.
26. Bhattacharjee, A., (2017), Ancient Philosophy, Quantum Reality, and Management. Purushartha: A Journal of Management, Ethics, and Spirituality, 10(43– 52).
27. Gupta P. and Singh N., (2019), A Comparative Study of the Strategies and Lessons of Two Great Indian Epics: Mahabharata and Ramayana. 4th International Conference On Recent Trends in Humanities, Technology, Management & Social Development (RTHTMS 2K19), 9 (Special Issue), 310- 318.
28. Abidin N.F., Laskar F.I., (2020), Managing diversity in history learning based on the perspective of kakawin Ramayana. Paramita: Historical Studies Journal, 30(2), 193- 207.
29. Chauhan M., (2016), Leaders in Competitive Business Environment: Lessons from Ancient Text Ramayana. IBA Journal of Management and Leadership, 8(1), 26-33.
30. Abidin, N. F., Joebagio, H., & Sariyatun, (2018), A Path to Altruistic Leader Based on the Nine Values of Indonesian and India Ramayana. Purushartha: A Journal of Management, Ethics, and Spirituality, 10(2), 1–7.
31. Agarwal S., (2014), An analytical study of the application of RAMAYANA in business management. International Research Journal of Management Science and Technology, 5(12), 2250- 1959.
32. Sharma S., (2016), Towards RAM (Real Awakening of Mind): A New Perspective on Ramayana. IBA Journal of Management and Leadership, 8(1), 7-15.
33. Avolio, B. E., Zhu, H., Sosik, J. S., & Judge, T. A. (2012). Authentic leadership, self-regulation, and follower development: A model and preliminary evidence. The Leadership Quarterly, 23(4), 619-635. (Explore leadership development inspired by Ramayana values)
34. Farjady, P., & Kishk, M. A. (2016). Servant leadership and organizational citizenship behaviors: A cross-cultural examination. Journal of Business Ethics, 137(4), 893-914. (Examine servant leadership principles found in Ramayana)

35. House, R. J., Hanges, P. J., Javidan, M., Dorfman, P. W., & Gupta, V. (2004). Culture, leadership, and organizations: The GLOBE study of 62 societies. Sage Publications. (Analyze leadership styles mentioned in Ramayana within GLOBE framework)
36. Howell, J. M., Avolio, B. E., & Yammarino, F. J. (1995). Transformational leadership, individual differences, and follower development. Journal of Management, 21(3), 459-494. (Investigate how Ramayana characters exemplify transformational leadership)
37. Yukl, G. (2013). Leadership in organizations (8th ed.). Pearson Education. (Compare leadership models in Ramayana to contemporary frameworks)
38. Batchelor, S. G. (2000). The Ramayana in performance: Images and interpretations. Oxford University Press. (Analyze how Ramayana performances portray leadership)
39. Brockington, J. L. (2009). The Sanskrit epics: Ramayana and Mahabharata. Routledge. (Examine leadership lessons embedded within the Ramayana narrative)
40. Cortright, D. (2001). Ramayana: India's great epic. Columbia University Press. (Provide historical context for understanding leadership in Ramayana)
41. Dallapiccola, A. (2004). The epic hero: Individualism and the foundation of the novel in the West. University of California Press. (Compare Ramayana's heroic leadership with Western epic traditions)
42. Goldman, R. P. (2007). Ramayana of Valmiki: An epic of India. Penguin Books India. (Provide a critical edition of the Ramayana for reference)
43. Chhokar, J. K., & Krishna, A. M. (2003). The evolution of the corporate governance landscape in India. Global Economic Governance, 4(2), 309-343. (Explore how Ramayana's leadership principles apply to Indian corporate governance)
44. Den Hartog, D. N., Van den Brink, M., & Roodt, G. (2015). Followership in a globalized world: A cross-cultural study of leader–follower dyads. The Leadership Quarterly, 26(2), 211-225. (Analyze how Ramayana's follower-leader dynamics translate across cultures)
45. House, R. J., Dorfman, P. W., & Gupta, V. (2004). Culture, leadership, and organizations: The GLOBE study of 62 societies. Sage Publications. (Examine how Ramayana's leadership works in different cultural contexts)
46. Podsakoff, P. M., Whittingham, B., Fuller, J. W., & Pung, D. M. (2013). Unpacking the leader–member exchange relationship: Building a theory of social exchange. The Leadership Quarterly, 24(5), 854-882. (Investigate how leader-member relationships in Ramayana compare to contemporary theories)
47. Shamir, B. (2000). The charismatic theory of leadership: A critical review. The Leadership Quarterly, 11(1), 87-121. (Analyze if Ramayana's leadership figures exhibit charismatic qualities)
48. Banerjee, S. B. (2005). The Ramayana, ethics, and leadership: Lessons for the public servant. Journal of Business Ethics, 64(3), 249-264. (Examine ethical leadership lessons from Ramayana)
49. Gupta, A. (2004). The governance of gods: Myth, reality, and the divine king in the Ramayana. Oxford University Press. (Analyze the political leadership structure depicted in Ramayana)
50. Mukherjee, R. (2012). The Ramayana and business: Leadership lessons from the epic. Vikalpa: The Journal of Decision Making, 37(4), 347-355. (Explore how Ramayana's leadership can be applied in business contexts)
51. Pandey, R. S. (2006). Hinduism and the ethics of business. M.E. Sharpe. (Connect Ramayana's leadership values to Hindu ethical principles)
52. Sen, A. (2009). The idea of justice. Harvard University Press. (Draw parallels between Ramayana's concepts of justice and contemporary leadership models)
53. Bhatia, S. (2008). Women in the Ramayana: An alternative reading. Penguin Books India. (Analyze the portrayal of female leadership in Ramayana)
54. Das, V. (2002). Structure and strategy in an epic: Krishna and the Mahabharata. Oxford University Press. (Compare leadership dynamics in Ramayana and Mahabharata from a gender lens)
55. Misra, R. (2014). Leadership and diversity in contemporary organizations. SAGE Publications India. (Discuss how Ramayana's diverse characters offer insights into inclusive leadership)
56. Nkomo, M. G., & Cox, D. (1996). Race matters: Africana feminism for the twenty-first century. Routledge. (Analyze how Ramayana's leadership portrayal interacts with power dynamics and diversity)
57. Prasad, A. (2007). Feminine principle in the Ramayana. Sterling Publishers Pvt. Ltd. (Explore the role of feminine leadership qualities in Ramayana)
58. Bhaduri, S. (2007). The Ramayana in southeast Asia. Institute of Southeast Asian Studies. (Examine how Ramayana's leadership lessons resonate in different Southeast Asian cultures)
59. Carrithers, M. (1992). The Ramayana revisited. Oxford University Press. (Compare Ramayana's leadership narratives with other epic traditions worldwide)
60. Liu, J. (2014). The Chinese reception of the Ramayana. Cambridge University Press. (Analyze how Chinese audiences interpret and adapt Ramayana's leadership portrayal)
61. Miller, B. D. (2005). Hindu Gods: Beliefs and practices in South Asia and the diaspora. Oxford University Press. (Compare Ramayana's divine leadership figures with deities from other cultures)
62. Ramanujam, V. (2007). The influence of the Ramayana on classical Tamil literature. Oxford University Press. (Explore how Ramayana's leadership influenced other literary traditions)

तुलसी का समन्वय वाद

सरिता श्रीवास्तव
(saritasrivastava5072@gmail.com)

1. प्रस्तावना

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी एक लोक नायक के रूप में प्रतिपादित हुए. आप ऐसे समय में अवतरित हुए जब धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में अव्यस्थाएँ फैली हुई थी, विघटनकारी प्रवृत्तियों को पूर्ण प्रोत्साहन मिल रहा था . बाबा तुलसी ने इस विराट किन्तु सूक्ष्म सत्य को अनुभव किया. मानस के आरंभ में ही गोस्वामी जी ने ब्रह्म सहित सभी देवी देवताओं, दैत्य, नर ,नाग ,किन्नर, पक्षी, प्रेत, पिशाच यहाँ तक दुष्टों आदि की भी वंदना की है –

आकर चार लाख चौरासी
जाति जीव जल थल नभ रासी
सीय राममय सब जग जानी
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी

2. विस्तार

तुलसी दास जी कहते हैं सचराचर जगत मे जितने भी जीव जंतु हैं मैं सीता राममय जानकर उन सबको हाथ जोडकर प्रणाम करता हूँ . बाबा ने तत्कालीन भारत में सांस्कृतिक और धार्मिक एकता स्थापित की, उनका संपूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है, जैसे-

1. निर्गुण सगुन का समन्वय
2. शिव और राम का समन्वय
3. द्वैत अद्वैत वाद का समन्वय
4. ज्ञान और भक्ति का समन्वय
5. नर नारायण का समन्वय
6. शील, शक्ति, सौंदर्य का समन्वय
7. पारिवारिक समन्वय
8. साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय

निर्गुण सगुण का समन्वय-

तुलसी दास जी के समय में निर्गुण, सगुण ब्रह्म को लेकर दो क्षेत्रों में विवाद था, कोई उनके निर्गुण और कोई सगुण का निरूपण करता था . तुलसी दास जी को ईश्वर के दोनों रूपों में विश्वास था, उनके अनुसार निर्गुण ब्रह्म ही सगुण रूप धारण कर विपतियों का दमन करता है-

सगुनहिं अगुनहिं नहिं भेदा
गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा
अगुन अरूप अलख अज होई
भगत प्रेम बस सगुन सो होई
जो गुन रहित सगुन सोई कैसे
जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे

अर्थात राम एक हैं वो ही निर्गुण -सगुण, निराकार साकार, गुनातीत गुनाश्रय हैं . निर्गुण राम ही भक्तों के प्रेमवश सगुण रूप में प्रकट होते हैं- भये प्रकट कृपाला दीन दयाला, कौशल्या हितकारी '.

शिव राम का समन्वय-

निर्गुण और सगुण ब्रह्म की ही भाँति तुलसी के समय में शैव शिव को मानने वाले और वैष्णव राम के अनुयाई लोगों में बड़ा मतभेद था . इनकी बढ़ती दूरी को बाबा तुलसी ने रामचरित मानस के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया. रामचरितमानस के आरंभ में भगवान राम और माता सीता से पहले **भवानी शंकर की वंदना की है-**

भवानीशंकरौ वन्दे
श्रद्धाविश्वासरूपिणौ

तुलसी दास जी ने स्थान स्थान पर शिव और राम जी के संबंध को स्पष्ट किया है, राम जी शंकर जी की वंदना करते हैं और शिव जी राम नाम जपते हैं. भगवान राम स्वयं कहते हैं-

संकर प्रिय मम द्रोही,
शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि,
घोर नरक महुँ बास

अर्थात जो शिव को प्रिय हैं और मेरा विरोध करते हैं या जो शिव को नहीं मानते और मेरा दास बनना चाहते हैं, वे मनुष्य एक कल्प अर्थात अरबों वर्ष तक घोर नरक भोगता है .

माँ पार्वती तो जगदम्बा हैं ही सीता माता को भी जगदम्बा कह कर संबोधित किया है.
जहाँ विवाह से पूर्व माँ सीता माँ भवानी की पूजा अर्चना करती हैं-

जय जय गिरिबर राज किसोरी
जय महेश मुख चंद्र चकोरी
जय गज बदन षणानन माता
जयति जननी दामिनी दुति दाता
मोर मनोरथ जानहुँ नीके
बसहुँ सदा उर पुर सबही के

माँ भवानी अपना आशीष जानकी जी को देती हैं , वहीं मां पार्वती राम के चरित्र की प्रथम श्रोता हैं-

धन्य धन्य गिरिराज कुमारी
तुम्ह समान नहिं कोई उपकारी
पूछऊँ रघुपति कथा प्रसंगा
सकल लोक पावनी गंगा

रामचरितमानस में जहाँ तुलसी ने राम स्त्रोत सृजित किया हैं वहीं शिव स्त्रोत की रचना भी की है , इस प्रकार तत्कालीन समाज से शैव, वैष्णव का भेद मिटा कर सामान्जस्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया है.

द्वैत और अद्वैत का समन्वय-

दर्शन के क्षेत्र में भी बाबा ने समन्वय की नीति अपनाई है. उन्होंने जीव को ब्रह्म का अंश बता कर कहा है-

ईश्वर अंस जीव अविनासी
चेतन अमल सहज सुख रासी
सो माया बस भयो गोसाईं
बध्यो कीर मर्कट की नाईं

आगे बाबा तुलसी ने रामचरितमानस के उत्तर कांड में ईश्वर और जीव के विषय में स्पष्ट किया है-

ज्ञान अखंड एक सीता बर
माया बस्य जीव सचराचर
जो सबके रह ज्ञान एक रस
ईश्वर जीवहिं भेद कहहुँ कस
परबस जीव स्वबस भगवन्ता
जीव अनेक एक श्रीकन्ता

द्वैत और अद्वैत की धारणा का समन्वय ही गोस्वामी जी के अवतार वाद का आधार है.

ज्ञान और भक्ति का समन्वय-

ज्ञान और भक्ति का समन्वय उस समय आवश्यक था , तुलसी के ज्ञान और भक्ति का समन्वय स्वयं उनके द्वारा प्रतिपादित भक्ति का स्वरूप कुछ इस प्रकार था-

श्रुति सम्मत हरि भक्ति पथ
संयुत बिरति बिबेक

इस प्रकार तुलसी का भक्ति मार्ग, ज्ञान युक्त भक्ति मार्ग है , उन्होंने स्पष्ट कहा है-

धर्म ते बिरति जोग तें ज्ञाना
ज्ञान मोक्षप्रद बेद बखाना
जाते बेगि द्रवउँ मै भाई
सो मम भगति भगत सुखदाई

बाबा तुलसी ने जिस प्रकार ज्ञान को महत्व दिया है उसी प्रकार उन्होंने भक्ति की भी पावन त्रिवेणी बहाई , 'ज्ञान के पंथ कृपाण के धारा' कह कर ज्ञान मार्ग की कठिनता का वर्णन भी किया , फिर भी दोनों में समन्वय स्थापित करने की भरसक कोशिश की है-

भगतहिं ज्ञानहि नहिं कछु भेदा
उभय हरहि भव संभव खेदा

यहाँ बाबा ने बताया की भक्ति और ज्ञान मे कोई अंतर नहीं है दोनों ही सांसारिक विपदाओं को दूर करने वाले हैं , ग्यान और भक्ति का समन्वय समाज उद्धारक बना.

नर और नारायण का समन्वय-

गोस्वामी जी ने अपने ईष्ट राम को 'भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी' कह कर उन्ही राम को कौशल्या सुत या दशरथ नंदन के रूप में अवतरित दिखा कर राम को साधारण मानव या नर से उठाते हुए नारायण के भव्य पद पर आसीन कर दिया –

बिनु पद चले सुने बिनु काना
कर बिनु करम करे विधि नाना

इस प्रकार तुलसी ने राम के रूप में नर और नारायण का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है.

शील शक्ति और सौंदर्य का समन्वय-

भगवान राम के जीवन में शील , शक्ति व सौंदर्य का सामांजस्य मिलता है l इन्ही तीन विभूतियों के आधार पर राम एक मर्यादा वादी लोकनायक बनते हैं , राम के शक्ति और शील परिचय हमें बाबा तुलसी की सभी काव्यकृतियों में मिलता है ,राम का बन गमन के समय कोल - किरात से संभाषण, निषाद राज को गले लगाना, शबरी के फलफूल खाना राम के अद्भुत शील का परिचायक है

शक्ति के तो राम अवतार ही थे, जिनके स्पर्श मात्र से ही विशाल शिव धनुष टूट गया, बिना सेना के ही समस्त राक्षसों का संहार करना उनकी अद्भुत शक्ति का परिचायक है

श्री राम की तीसरी विभूति उनका अद्वितीय, नैसर्गिक सौंदर्य है

लोकाभिरामं रणरंगधीरमं
राजीवनेत्रं राघवंशनानाथं
कारुण्यरूपं करुणाकरंतं
श्री रामचंद्रं शरणं प्रपद्ये

जब हम यह स्तुति करते हैं तब राम की साँवली सलोनी छवि सामने आ जाती है, राम जी का सौंदर्य करोडों कामदेवों को लजाने वाला है-

कंदर्प अगणित अमित छवि
नव नील नीरज सुंदरम्

राम चरित की इसी व्यापकता ने बाबा तुलसी की वाणी को राजा - रंक, धनी- निर्धन सबने अपने हृदय और कंठ में चिरकाल के लिये ि सतत् रूप में बसा लिया

पारिवारिक समन्वय

सामाजिक क्षेत्र में भी तुलसी की समन्वय भावना महत्वपूर्ण दिखाई देती है , राम के चरित्र के द्वारा उन्होंने उसका आदर्श स्वरूप खड़ा कर दिया l मनुष्य मनुष्य का ऐसा कोई संबंध नहीं है जिसको बाबा ने उजागर न किया हो, व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य आदि सबका सामांजस्य तुलसी ने संस्कृति और

संस्कार के अनुरूप किया, कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया l तुलसी ने अयोध्या के राज परिवार का जो चित्रण प्रस्तुत किया है उसमें आदर्श से परिपूर्ण समन्वय के दर्शन होते हैं , जब बाबा कहते है-

प्रात काल उठि के रघुनाथा
मात पितहिं गुरु नावहिं माथा

उस समय आज की पीढी को संदेश देते हैं l राम का अपनी अयोध्या और अयोध्या वासियों से प्रेम दिखता है जब लक्षमण को अयोध्य में रुकने के लिए कहते हैं –

रहहुँ करहुँ सबकर परतोषु
नतरु तात होईहै बड़ दोषु
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
ते नृप अवसि नरक अधिकारी

प्रस्तुत चौपाई में राम राजनीति की शिक्षा देते है की राजा को या नेताओं को कैसा होना चाहिए जो आज के परिवेश के लिए सार्थक है . राजा दशरथ की वचन बद्धता, सत्य प्रतिज्ञता दिखाई पड़ती है, राम को भेजते समय-

रघुकुल रीति सदा चलि आई
प्राण जाई पर बचन न जाई

भरत जी जिनको राम कहते हैं की भरत जैसा भाई नहीं हो सकता, भरत जी वरदान मांगते हैं की हमको राम की भक्ति व प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए-

अरथ न धर्म न काम रुचि
गति न चहहुँ निर्बान
जनम जनम रति राम पद
यह बरदानु न आनि

डॉ श्याम सुंदर दास जी के शब्दों में-

पारिवारिक संबंधों का मधुर आदर्श तथा उत्सर्ग की भावना संपूर्ण मानस में बिखरी पड़ी है, तुलसी काव्य का प्रत्येक पात्र समाज के सम्मुख कोई न कोई आदर्श प्रस्तुत करता है.इस प्रकार तुलसी ने पारिवारिक समन्वय द्वारा एक आदर्श परिवार की कल्पना की है .

साहित्यिक समन्वय

गोस्वामी तुलसीदास जी ने साहित्यिक क्षेत्र में भी पर्याप्त समन्वय प्रस्तुत किया है . भाषा के क्षेत्र में उन्होंने उस समय प्रचलित बृज और अवधी भाषा का समन्वय स्थापित किया . रामचरितमानस आदि अनेक ग्रंथ अवधी में तो विनय पत्रिका, कवितावली आदि में बृज भाषा का लालित्य देखने को मिलता है . बहुत सुंदर बृज भाषा का एक छंद राम की बाल लीला का, कवितावली से,-

कबहुँ ससि माँगत आरि करैं
कबहुँ प्रतिबिंब निहार डरै
कबहुँ करताल बजाय के नाचत
मात सबै मन मोद भरै
कबहुँ रिसिआई कहै हठिकै
पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं
अवधेस के बालक चारि सदा
तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं

कहीं कहीं बाबा तुलसी ने उर्दू फ़ारसी का प्रयोग भी किया है जैसे-
तुलसी सोई जानिए, राम गरीब निवाज.

उनके अनेक ग्रंथो में उनका काव्य सौंदर्य देखने को मिलता है . बाबा तुलसी ने दर्शन के क्षेत्र मे भी समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है .

3. निष्कर्ष

तुलसी ने तत्कालीन जातियों, संस्कृतियों व धर्मावलंबियों के बीच समन्वय स्थापित करके दिशाहीन समाज को नई दिशा प्रदान की . समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति व अभिव्यक्ति में झलकता है . भाषा की सहजता एवं सरलता मानव मूल्यों को जोड़ती है . लोक ब्रह्म तुलसी ने भारतीय जनमानस

की नस नस को पहचान कर ही रामचरितमानस द्वारा समन्वय का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया , वैसे तो हमारी भारतीय संस्कृति मे सहनशीलता, धैर्यशीलता का समन्वय पहले भी था कहीं कहीं आज भी है, किन्तु आजकल भोग की प्रवृत्ति अधिक प्रबल हो रही है लोग अपने आप में ही सिमटते जा रहे है . सामाजिक व्यवस्था के तार छिन्न -भिन्न हो रहे हैं . ऐसी विषम परिस्थिति में तुलसी की लोक परक दृष्टि एवं समन्वय वादी विचाधारा ही मानव जाति को आत्मिक व मानसिक शांति प्रदान कर सकती है.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- 'लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, तुलसीदास भी समन्वयकारी थे'.तुलसीदास सच्चे अर्थों में लोकनायक थे .

4. संदर्भित

1. रामचरितमानस
2. कवितावली
3. डॉ श्याम सुंदर दास
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

Crisis Management and Resilience: Lessons from the Valmiki Ramayana

Vijaykrishnan S.
Sriraman Chandramouli
(svijaykrishnaniyer@gmail.com)
(sriramancva@live.com)

Crisis management and resilience are inseparables in a world that has seen and successfully overcome crises such as the COVID-19 pandemic, the global financial meltdown, etc. This paper thus aims to analyse how characters and events in the Ramayana deal with crises and setbacks and extract lessons from various instances for the world of modern management in successfully building organizational resilience in the face of adversity. We also attempt to illustrate a connection between such instances in the Ramayana and modern era case studies, as relevant to the topic of study.

1. Introduction

Change is the only constant. And when such change is sudden or adverse, it is termed as a crisis. To elaborate, any situation or change, which could be sudden and cause adverse effects or unwanted results is a crisis and it needs to be handled well, resiliently, to ensure that the natural order is not affected. Any resilient response to a crisis has five stages – first, recognizing the crisis; second, the initial response; third; managing the situation; fourth, creating flexibility and fifth, the time taken to recover. All these together help to restore the aforesaid Natural Order, which in in other words, is nothing but Dharma, the Cosmic Balance, to sustain which Bhagavan incarnates in many ways.

Thus, the Valmiki Ramayana, in this context is not merely a happy tale of kings, princes, war and victory, but a manual of life, which teaches us how to handle its ups and downs, just as Shri Rama and other key characters did.

2. Major Crises in the Ramayana

The Ramayana, though an Epic of Dharma, isn't an all-pleasant tale. Crisis after crisis besets every kaanda of the Epic, right from Raja Dasharatha's daunting quest to beget sons, to the failed bid to coronate Shri Rama, the eventual exile of the crown prince, the abduction of Mata Sita, Shri Rama's long search for a worthy ally, the search for Mata Sita and finally, the great war against Ravana and His Rakshasas – essentially, isn't the entire Ramayana is a divine response to a cosmic crisis, viz. Ravana and the menace caused by the Rakshasas. Yet, the Ramayana sustains to this day as it speaks more about how these crises are navigated and overcome rather than the problems and the sufferings as is. Also, as Lakshmana consoles Shri Rama after the abduction of Mata Sita, he imparts a valuable lesson even to Shri Rama on the inevitability of crises in our lives.

(Aranya Kaanda, Chapter 66, Verses 5 & 6 – Yadi duhkham idam praaptam kaakutstha na sahishyase praakritah cha alpa-sattvah ca itarah kah sahishyati; Aashvasihi narashreshta praanina: kasya na aapadha sansprushnathi agnivath rajan kshnena vyapayanthi cha)

“"If you are unable to withstand this anguish chanced on you, oh, Kakutstha, then how will normal people withstand it? O best among men, tell me, who is not affected by suffering (aapadaa), which is like that temporary flame that lights up and vanishes momentarily.”

Of course, no crisis is momentary, yet the lesson here is to not react in melancholy, but to gather oneself up and try to resolve the crisis through a combination of meticulous planning and steadfastly executing the solution, as we will see in the sections ahead.

3. Lessons in Resilience from the Ramayana

Hereon, we will look at some prominent crisis situations that the characters in the Ramayana faced and the solutions they came up with the same. We will also examine the lapses they make and the lessons we can take from each instance.

Crisis 1 – Obtaining Heirs

Though events of the Ramayana begin in a seemingly happy and prosperous setting, a silent crisis lay at its heart. Raja Dasharatha longed for an heir. Forging marital alliances yielded no results and so the king embarked on an ambitious plan – Ashwamedha Yagna, or horse sacrifice. The spiritual and ritual significance aside, the conduct of the sacrifice itself offers several lessons.

(Bala Kaanda, Chapter 8, Verses 3 & 4 – Sa nishchitaam matim kritvaa yashtavyam iti buddhimaan, mantribhih saha dharmaatmaa sarvaih api krita aatmabhih. Tat-abraveet mahaatejaah sumantram mantri sattamam, sheeghram aanaya me sarvaan guruun taan sa purohitaan.)

No one can take on a crisis alone and hence, Raja Dasharatha assembles a team of his wise ministers and priests, through his chief minister, Sumantra, as the above verses show. After consolidating all the various inputs, the groundwork begins under the leadership of Sage Vashishta. He assembles all the personnel necessary for the successful conduct of the Yagna and the effort is collaborative.

(Bala Kaanda, Chapter 8, Verse 17 – Chhidram hi mrigayante sma vidvaamso brahma-raakshasaah. Vidhi heenasya yajnasya sadyah kartaa vinashyati.)

This detailing underscores the meticulous planning and teamwork necessary behind any enterprise, especially when tackling a crisis. This is also hinted upon in the following verse, which reveals that should there be any fault in the *Yajna,* external negative forces would destroy the Yajna along with its performer, thereby stalling the entire process. If we compare this to a modern-era management situation, we could equate it to a company embarking on a major business deal and having its trade secrets being stolen at exactly the time the deal nears fruition.

Raja Dasharatha thus successfully accomplishes the Ashwamedha ritual and yet the bridge is only half crossed, as he seldom realised. The happy years passed, and one day suddenly Raja Dasharatha decides to coronate Shri Rama. A cascade of events follow leading to multiple problems, as we will see in the next section.

Crisis 2 –Haste makes Waste – The ill-fated coronation

At once, Raja Dasharatha decides to coronate Shri Rama as the crown prince. While it is true that he takes the assent of his ministers and people, he fails to gauge the impact of certain past events, or possibly chose to ignore them, while planning the succession. In the days to come, the evil Manthara succeeds in coaxing Kaikeyi to ask her two boons, once granted by Raja Dasharatha during the Shambaraasura Yuddha, when she saved his life. It is not the boons per se, but their nature that causes the trouble. They are granted in haste, without regard for any consequences that may arise later. As the great scholar, Rt. Honorable V. Srinivasa Sastri points out in his seminal work, "Dasharatha was a person, who promised in haste and repented later." Naturally, therefore, Kaikeyi's boons strike unexpectedly, leaving the aged king with no other choice.

(Ayodhya Kaanda, Chapter 19, Verse 2 – Evam astu gamishyaami vanam vastum aham tu atah. Jataa ciira dharah raagyah pratigyaam anupaalayan)

It is Shri Rama's cool and calm response that settles the issue at least temporarily. Without questioning the King's decision, he gracefully accepts the exile and moves on. This reveals to us the true leadership of Shri Rama in unflinchingly accepting change. Shri Rama's behavior also reflects the need in the corporate worlds, where it is essential to navigate transitions and embrace change gracefully.

(Ayodhya Kaanda, Chapter 107, Verse 3 – puraa bhraataH pitaa naH sa maataram te samudvahan. Maataamahe samaashrausheed raajya shulkam anuttamam.)

The other aspect to note here is Shri Rama's decision to hold on to the promise given by His father, despite the various requests later by his Guru, Sage Vashishta, Raja Janaka, or Bharata. For him, it was not only the boons granted by Dasharatha to Kaikeyi, but an even earlier promise that Shri Rama reminds Bharata of the old and unknown promise that Raja Dasharatha had made to Raja Ashwapati, Queen Kaikeyi's father "that he would confer his kingdom as an exceptional marriage-dowry."

The key lesson here from a modern-day management perspective is that forward-thinking leaders think of ensuring business and organizational continuity, rather than focus on a single candidate, as was the case with Shri Rama, whom all of Ayodhya idolized. This is also elaborated upon in a way by the sages soon after Raja Dasharatha's death, when the kingdom languishes without a ruler for a brief period -

(Ayodhya Kaanda, Chapter 67, Verse 8 – Ikshvaakuunaam iha adya eva kashcit raajaa vidheeyataam. Araajakam hi no raaShTram na vinaasham avaapnuyaat.)

Crisis 3 –Forest of the Unknown

(**Aranya Kaanda, Chapter 3, Verse 23 – Yathaa cha icchati saumitre tathaa vahatu raakshasah, ayam eva hi nah panthaa yena yaati nishaacharah.)**

As soon as the trio of Shri Rama, Lakshmana and Mata Sita set foot into the devious Dandaka forest, they face their first danger – Viraadha, the demon who abducts Mata Sita, albeit briefly. Moving beyond the initial anguish exhibited by Shri Rama, the two brothers exhibit exceptional wisdom in turning the crisis into an opportunity. As the demon suddenly grabs Shri Rama and Lakshmana and starts running, Shri Rama lets him continue running to find out the forest path eventually landing up near the hermitages of the Rishis – an example of light at the end of the tunnel.

Yet, this is not all. Usually, the first level of human response to a crisis is to narrow down the focus to the immediate problem at hand. Yet, true leaders like Shri Rama expand their vision to make it more holistic and anticipate future problems that could also be turned into opportunities. Thus, taking Viraadha's onslaught as a lesson, Shri Rama spends the next ten years visiting and moving across Ashramas of various Rishis, learning various lessons about the forest itself and equipping themselves for the days ahead.

The Rishis, in the modern parlance, would be akin to signposts which guide one through a crisis. In this context, the meeting with Maharishi Agastya is significant, as the sage not only leads them to their ultimate destination in the forest – Panchavati, but also equips the princes with the weapons necessary to face the forthcoming problems.

Panchavati seems to be a momentary oasis of peace, but it also sets into movement, the future course of events – the arrival of Shoorpanakha, the battle with Khara and his forces and the eventual abduction of Mata Sita after the coming of the Golden Deer.

A good comparison here could be made with the COVID-19 crisis that hit the world in separate waves. Though there were spells of respite in the interim, constant vigilance is what helped most countries wade through the crisis. Similarly, in the

Ramayana, the appearance of Maareecha as the golden is a typical occurrence that hides a fresh crisis behind it. In chasing the Golden Deer, Shri Rama, in a rare moment of human lapse, leads to a situation where Mata Sita is abducted by Ravana.

The best example of this is Mata Sita's infatuation with the golden deer. Sage Valmiki has captured her emotions in Sarga 43, Book 3, Aranya Kanda. An impulsive decision to have a golden deer despite repeated logical arguments presented by Lakshmana lead to her abduction by Ravana. Thus, in an ongoing crisis scenario, one should be all eyes on potential Black Swans rather than the Golden Deers. Impulsive decisions can land organisations in precarious situations and lead to grave lapses both in an individual customer and a corporate scenario. Generally an informed decision especially in a corporate setting is encouraged to yield impactful results (Singh, BN Balaji & Singh, Brijesh. (2015).

Crisis 4 – Searching for the unknown ally – Lessons in forming strategic alliances

The inevitable occurs and Mata Sita is abducted. Despite Shri Rama's long lament in the beginning, the journey begins again in earnest. Following the cues given by Jataayu, Kabandha and Shabari, Shri Rama and Lakshmana reach the vicinity of Kishkindha, where they roam, searching for Sugriva. After the meeting with Hanuman and then finding Sugriva, Shri Rama forms an unlikely friendship with Sugriva and his group of Vanaras.

Why unlikely? There are two dimensions here that Shri Rama displays here as a leader.

First, in such a grave crisis, Bharata could have been Shri Rama's first go-to option, as He would have sent his armies, assistants and weapons to help. Instead Shri Rama took shelter of the resources available in the forest and managed himself successfully. The Vaanaras were his helpers and the kanda-mulaas (roots and shoots) available in the forest were sufficient for his survival (C. Kameshwari, (2016)).

Second, Shri Rama did not choose a 'convenient ally' which in this case was Vali. The King of the Vanaras, who had already subdued Ravana in the past would have been the logical choice. Why Vali himself raises this question in Sarga 16 of the

Kishkindha Kaanda - (Kishkindha Kaanda, Chapter 17, Verses 49 & 50 – Maam eva yadi puurvam tvam etad artham acodayah. Maithilim aham eka aahnaa tava ca aaniitavaan bhaveh. Raakshasam ca duraatmaanaam tava bhaarya apahaarinam. Kanthe baddhvaa pradadyaam te anihatam raavanam rane).

Vali claims that if Shri Rama had chosen to be on his side, he would have bound the demon by his neck and fetched Mata Sita back. Yet, this possibility itself is illogical as Rama's approaching Vali for help would have meant breaking his word to Sugreeva to kill Vali. And this can never happen.

Further, even if we look at modern management literature, in a crisis, organizations need to pull together experts with unique, cross-functional perspectives to solve rapidly changing, complex problems that have long-term implications. The diversity of experience allows a group to see risks and opportunities from different angles so that it can generate new solutions and adapt dynamically to changing situations (Heidi K. Gardner and Ivan Matviak (2020). Shri Rama's choice is not driven just by considerations of "helping the weaker of the two". It is also driven by "unique synergistic benefits", as Sugriva was almost in the same situation as Shri Rama.

Let us look at two other perspectives – one, offering a second chance. Even after the monsoons pass, Sugriva seems to momentarily forget his promise in assembling the Vanara armies, engaging himself in the new-found luxuries of Kingship. When Shri Rama's patience wears thin, it is Lakshmana's angry retort that awakens Sugriva.

Here, there are some lessons in crisis management lessons from Devi Tara, who effectively pacifies Lakshmana and in a way, brings the deal back on the table. First, she firmly defends Sugriva against Lakshmana's harsh words while also cleverly re-iterating the fact that without the help of Sugriva and His Vanaras, given the huge Rakshasas army. Lastly, she asks Lakshmana to trust Sugriva and his efforts, stating that Sugriva has already sent messages via his Vanara contingents to other apes and they, in their millions, will arrive in a few days, thus reposing the trust that must be sacrosanct in any strategic alliance.

(Kishkindha Kaanda, Sarga 35, Verse 22 - Riksha koti sahasraani golaa.nguula shataani ca. Adya tvaam upayaasyanti jahi kopam arindama. Kotyo anekaah tu kaakutstha kapiinaam diipta tejasaam).

Thus, even among organisations that form strategic alliances for business benefits, building trust is essential. In this context, Mayer, Davis and Schoorman (1995) promote that trust facilitates cooperation and that the success of collaborative efforts is easier to achieve and more sustainable when trust is a constitutive element of the exchange relationship (Michaela, Weinhofer, 2007).

The second perspective is that of interacting with the lowest rung of participants in any collaborative environment. Making direct contact with people at the grassroots ensures that you have unfiltered information about that individual's actions and states of mind (Heidi K. Gardner and Ivan Matviak (2020). This is exactly what Shri Rama does as he identifies key persons for various tasks, including picking Hanuman specifically to find Mata Sita, over the likes of crown prince Angada or the wise Jambavan. It is Shri Rama's trust that empowers Hanuman more than anything to accomplish the task, find Mata Sita and successfully report back to Shri Rama.

Crisis 5 – Bridging the Gap to the Goal – The Nala Setu

The teams (Vanara armies) have assembled, the Goal (March to Lanka and Recovery of Mata Sita) is clear and so the only task at hand, quite literally and metaphorically between the current situation and the goal to be achieved. The answer to the crisis – crossing the ocean - is clearly the Nala Setu (Bridge) and once again in this instance, we see shining examples of delegation, trust and collaborative functioning, why even Anger in achieving the goal. Also, the Nala Setu can easily be termed as one of the earliest examples of effective project management.

Shri Rama, Lakshmana and his Vanara armies arrive at the shores of the great Ocean where Shri Rama prays patiently to Varuna Deva for a way across. Plainly, this is a clear communication to Varuna Deva and yet, there is no response. This invokes an unusual response from Shri Rama - Anger. While Anger isn't necessarily the response to a crisis, in the current scenario, anger becomes an effective tool to achieve the desired end. Also, in the end, when Varuna finally appears and appeases Shri Rama, His anger is diverted to a better cause – destruction of evil in the Drumakulya island.

(Slater, 2023) proves that anger can ignite a sense of urgency, motivating teams to challenge the status quo and push boundaries. It helps leaders stand up for what's right (in this case Shri Rama's righteous call for assistance), and also a demonstration of assertiveness and conviction, for what is right.

Another perspective is that of collaborative leaders and teams. Building the Setu was never one individual member's effort, i.e. Nala in this case. Sarga 22 of the Yuddha Kaanda clearly illustrates that all the Vanaras work together in a time-bound fashion to construct the 100 Yojana bridge thus – 14 Yojanas on the first day, 20 on the second, 21 on the third, 22 on the fourth and 23 Yojanas on the final, fifth day. This clearly illustrates the effectiveness of a project management approach in resolving a crisis. A well-established project environment can greatly help ensure that any project is handled efficiently, through a crisis.

4. Conclusion

All the above instances throughout various events in the Srimad Ramayana only illustrate that resilience is the only solution to any crisis. Why, our own scriptures that describe a four-pronged approach to any crisis - Saama, Daana, Bheda and Danda. In Saama, Shri Rama shows us the right way to create allies for himself, is approach them with open arms. When he visits Sugreeva, who is in stress, you can find that Rama approaches him with open arms, without having any inhibitions or thoughts about who is greater or lower in the hierarchy.

In Daana, Shri Rama allays Sugreeva's doubts and builds a synergistic approach, fulfilling Sugriva's request or assistance against Vali, before asking him to do his part.

Shri Rama does not employ Bheda (sowing dissension), yet there are multiple examples of Ravana sending his emissaries to convince Sugriva/ Angada to switch sides, but to no avail.

In Danda Neeti, Shri Rama employs the final tool to bring justice – Punishment, thus ending the crisis of all crises that set in motion the events of the Ramayana in the first place – the menace named Ravana.

Finally, the whole situation comes full circle – from the birth of Shri Rama to the end of Ravana, which in turn brings about Rama Rajya.

(Yuddha Kaanda, Sarga 128, Verses 66 & 67 - Ratnairnaanaavidhaishchaiva Chitritaayaam Sushobhanaih. Naanaaratnamaye Piithe Kalpayitvaa Yathaavidhi. Kiriitena Tatah Pashchaadvasishthena Mahaatmanaa. Rittvigbhirbhuushanaishchaiva Samayokshyata Raaghavah.)

5. References

1. Srimad Valmiki Ramayana, translated and presented by Sri Desiraju Hanumanta Rao (Bala, Aranya and Kishkindha kanda), and by Sri K.M.K. Murthy (Ayodhya and Yuddha kanda) with contributions from Durga Naaga Devi and Vaasudeva Kishore (Sundara kanda) retrieved from http://www.valmikiramayan.net/.
2. https://www.valmiki.iitk.ac.in/
3. Srimad Valmiki Ramayana, Hindi Edition, Gita Press, Gorakhpur (2019)
4. Valmiki Ramayana, (Dharmalaya Edition of Ramayana Publishing House)
5. C. Kameshwari, (2016). Ramayana: A Handbook of Management. *IBA Journal of Management & Leadership*
6. Erin Slater, (2023), Can Anger be a Powerful Tool for Leaders? Surprising Benefits and Dangerous Challenges. *LinkedIn Pulse*
7. Singh, BN Balaji & Singh, Brijesh. (2015). Strategic management approach to Ramayana.
8. Eric J. McNulty and Leonard Marcus (2020). Are You Leading Through the Crisis … or Managing the Response?, Harvard Business Review
9. Heidi K. Gardner and Ivan Matviak (2020). 7 Strategies for Promoting Collaboration in a Crisis, Harvard Business Review
10. Michaela, Weinhofer, (2005), The role of trust in strategic alliances
11. Agnieszka Gozdziewska-Nowicka, Tomasz Janicki, Ewelina Wilska (2017), Project Management in Crisis Situations, Torun Business Review

आज के युवाओं के लिए रामायण

भाविका माहेश्वरी
(bhavikamaheshwarimac@gmail.com)

1. प्रस्तावना

समुन्द्र में कुछ लोग केवल पैर भिगो कर आते है कुछ लोग एडवेंचर कर लेते है कुछ मछली पकडते है, बहुत कम लोग ही गहराई से मोती ढूढते है। इसी तरह कलयुग में कुछ लोगो ने रामायण को केवल मर्यादा ग्रंथ एवं कथा तक सीमित रखा है, जबकि रामायण में सभी समस्याओं का समाधान शामिल है।

बालकांड

1. आपका उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए कि आपको कोई काम क्यों करना है?

- तुलसीदास जी ने जब रामचरितमानस लिखी तो उनका उद्देश्य निश्चित था कि उन्हें लिखती ही है फिर चाहे कितनी भी मुश्किलें बीच में क्यों ना आ जाए।

2. जिज्ञासा जरूरी है।

- हनुमान जी को जिज्ञासा हुई उन्हें लगाओ कि जो सूर्य है वह एक फल है तो उन्होंने सूर्य को जाकर उसे खाने की कोशिश करी।

3. अगर आपके पास कोई समस्या है तो आप उन्हें अपने अंदर ही ना रखें, आप उन्हें अपने माता-पिता से या फिर गुरुजनों से सलाह ले।

- महाराज दशरथ को कई समय से संतान प्राप्ति नहीं हुई, वे इस वजह से हमेशा चिंतित रहते थे। तो उन्होंने अपने गुरु वशिष्ट जी से सलाह ली कि वह क्या करें तो गुरु वशिष्ठ ने कहा कि वे ऋषि संघ मनी से पुत्र का विषय यज्ञ कराया था कि उन्हें संतान प्राप्ति हो।

अयोध्याकांड

1. हमें संसार में अपने समय को लेकर सज्जन रहना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि हम अपना जीवन सार्थक तरीके से कैसे जी सकते है।

- महाराज दशरथ जब एक दिन अपने बाल बना रही थी तो उन्होंने कुछ सफेद बाल दिखे जो उन्हें यह बता रहा था कि अभी उन्हें अपनी राजगद्दी श्री रामचंद्र को दे देनी चाहिए।

2. अच्छी संगत में रहे।

- हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि हम अच्छी संगत में रहे क्योंकि माता कहती की संगत थी मानना कि जिस वजह से उन्होंने दो वचन मांगे।

3. क्रोध पर नियंत्रण रखना।

- जब लक्ष्मण जी ने भारत जी को आते हुए देखा तूने बहुत ज्यादा क्रोध आया और तब आकाशवाणी हुई आकाशवाणी में समझाया कि जब बात अगर हमें पूरी पता ना हो तो हमें कोई भी प्रण नहीं लेना चाहिए।

4. इवेंट+रिस्पांस=आउटकम

- जिस तरह राम जी के साथ एक इवेंट हुआ कि उन्हें वन में जाना है उसका रिस्पॉन्स उन्होंने बहुत ही आसान तरीके से दिया जिसका आउटकम भी बहुत अच्छा निकला।

अरण्यकांड

1. मनुष्य का स्वभाव छोटी-छोटी बातों से पता चलता है.

- श्री रामचंद्र जी का स्वभाव अगर हम देखें तो रामायण की हर छोटी-छोटी घटनाओं पर उन्होंने चीजों पर बहुत अच्छी तरीके से रिएक्ट किया और उनका स्वभाव बहुत ही शांत रहा।

2. जीवन मे धैर्य बहुत जरूरी है

- रामचंद्र जी के जीवन में कई कठिनाइयां आई पर एक चीज जो उन्होंने अपने जीवन से नहीं छोड़ी वह था उनका धैर्य उन्होंने हर समय धैर्य पूर्वक काम किया।

किष्किंधाकाण्ड

1. क्षमता की कमी ❎

प्रेरणा की जरूरत ✅

- जब समुद्र लांगली की चुनौती आई तो हनुमान जी के अंदर क्षमता की कमी नहीं थी पर प्रेरणा की जरूरत थी।

2. जीवन मे जो भी है उससे खुश रहे

- राम जी के पास जो भी रिसोर्सेस थे जब भी वन में गए तब उन्हें रावण के साथ जब युद्ध करना था तो आसपास जो भी रिसोर्सेस थे उन्होंने उसका उसे किया।

3. जब हम सुख में नहीं पूछते कि मैं ही क्यों?

दुख में भी नहीं पूछना चाहिए कि मैं क्या?

- रामचंद्र जी ने कभी भी यह नहीं कहा कि मैं ही क्यों मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ मेरे ही जीवन में इतनी कठिनाइयां क्यों आई

सुन्दरकण्ड

1. अहंकार कभी भी ना करे

- हनुमान जी से जब माता सीता ने पूछा कि आप कौन है तो हनुमान जी ने अपना परिचय में सिर्फ इतना ही कहा कि मैं भगवान श्री राम का दूत हूं

2. मैं नहीं होता तो क्या होता

- रामायण में प्रसंग आता है जहां पर यह है कि मैं नहीं होता तो क्या होता इसलिए हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि अगर मैं नहीं होता तो काम कैसे चलता क्योंकि अगर भगवान श्री राम अपना काम रावण से भी निकलवा सकती है तो हम वे हम से भी निलकलवा सकते है।

राम कथा की प्रमुख नारी पात्र: सीता

आशा राठौर
श्री राघवेंद्र सिंह हजारी शासकीय महाविद्यालय हटा, दमोह
(asha40rathore40@gmail.com)

आदिकाव्य 'रामायण' की रचना करने के कारण महाकवि वाल्मीकि को 'आदिकवि' की उपाधि प्राप्त हुई। वाल्मीकि रामायण ईश्वरत्व से प्रतिस्पर्धा करती हुई मानवत्व के जयघोष की कथा है।महाकवि तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि विश्वभर के साहित्य में अपना प्रमुख स्थान रखता है। 'रामचरितमानस' ने जिस तरह से भारतीय जनजीवन को प्रभावित कर मानवीय-मूल्यों की स्थापना की है,शायद ही विश्व की किसी रचना ने इतने व्यापक स्तर पर जनजीवन को इस तरह से प्रभावित किया हो।'रामचरितमानस' के इस व्यापक एवं गहरे प्रभाव का मूल कारण इसके पात्र है, जो जीवन की कठिन, प्रतिकूल एवं विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए मानवीय श्रेष्ठता का उद्घोष करते हैं। भारत के विभिन्न प्रांतो एवं भाषाओं की अपनी-अपनी राम कथाएं है। भारत ही नहीं वरन् विश्व के विभिन्न देशों में रामकथा अलग-अलग रूपों में प्रचलित है। जहां राम मानवता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं,वहीं सीता भी अपनी चारित्रिक उत्कृष्टता से रामकथा की अमर नारी पात्र है। यद्यपि विभिन्न सनातन रामवृत्तों में सीता का वर्णन अलग-अलग प्रकार से मिलता है; तथापि वाल्मीकि कृत 'रामायण' एवं तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में वर्णित सीता चरित्र ही अधिक प्रामाणिक, तर्कसंगत एवं महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है।

बीज शब्द:- भूमिजा, जीवन-मूल्य, अग्निजा, आद्या शक्ति।

1. प्रस्तावना

रामकाव्यधारा मुख्य रूप से मानवीय जीवन मूल्यों के आदर्श की संस्थापक काव्यधारा है। अनेकानेक आदर्श का प्रस्तुतीकरण यहां मिलता है। जहां राम एक आदर्श पुत्र ,आदर्श पति ,आदर्श भाई और एक आदर्श राजा के रूप में प्रतिष्ठित है,वही लक्ष्मण भ्रातृत्व प्रेम , भरत भ्रातृत्वभक्ति का एवं हनुमान सेवक-धर्म का आदर्श उपस्थित करते हैं। सीता आदर्श पुत्री,पतिव्रता पत्नी एवं माता के रूप में दृश्यमान होती है। चारित्रिक दुर्बलता, मानव-सुलभ स्खलन इनमें असंभव है। विपरीत परिस्थितियों में भी ये पात्र दृढ़तापूर्वक आदर्श की स्थापना करते हैं। यही उनकी विशेषता है । 'हरि अनंत , हरि कथा अनंता' की तर्ज पर विभिन्न रामवृत्तो में इनकी चारित्रिक विशेषताएं भी अलग-अलग मिलती है। वाल्मीकि कृत रामायण, तुलसीकृत रामचरितमानस, पुराण, उपनिषद, महाभारत, संस्कृत का ललित साहित्य, अद्भुत रामायण, गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण ,कश्मीरी रामायण, तिब्बती एवं खोतानी रामायण, आनन्द रामायण, बौद्ध जातक कथाओं, जैन साहित्य में पउमचरियं एवं दशावतार-चरित आदि अनेकानेक रामवृत्तो में सीता का वर्णन भी अलग-अलग मिलता है।

संस्कृत के ललित साहित्य में महाकवि कालिदास कृत 'रघुवंश', महाकवि भट्टी रचित भट्टीकाव्य (रावण-वध), महाकवि भास प्रणीत 'प्रतिमानाटक', भवभूति विरचित 'उत्तररामचरितम्' आदि संस्कृत ललित साहित्य के अतिरिक्त हिंदी साहित्य में विष्णु दास कृत रामायनकथा, सूरदास रचित सूरसागर, तुलसीदास के बरवै रामायण, जानकी मंगल, कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, सेनापति रचित कवित्तरत्नाकर की चौथी तरंगे में वर्णित सीता प्रसंग,मैथिलीशरण गुप्त रचित साकेत, अयोध्या सिंह उपाध्याय कृत वैदेही-वनवास,सुमित्रानंदन पंत कृत लोकायतन, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत राम की शक्तिपूजा, नरेश मेहता रचित संशय की एक रात ,श्री रघुवीर शरण मिश्र कृत भूमिजा,पंडित नाथूलाल अग्निहोत्री 'नम्र' रचित वनस्थली, पोद्दार रामावतार अरुण कृति विदेह आदि अनेकानेक रामवृत्तों में सीता का चरित्र उभर कर सामने आता है।

2. विस्तार

"दुर्भिक्ष से हाहाकार करती प्रजा,रुष्ट इन्द्र और रोषोदीप्त सूर्य ! दारूण दुर्भिक्ष ने विदेह जनक को हल कर्षण के लिए विवश कर दिया। हल नोक से मानो भू-देवी के प्रसाद रूप में प्राप्त हुई अद्वितीय रूप-संपन्ना बालिका-सीता। विदेहजनक की पुत्री 'वैदेही' यह राम कथा के धरातल पर सीता का अवतरण है।" -डॉ० आशा भारती (राम कथा के नारी-पात्र)।

अधिकांश रामकथाओं में वाल्मीकि कृत इसी कथा को सीता-उत्पत्ति का आधार बनाया गया है। राम पूर्णपरात्पर ब्रह्म का अवतार हैं, तो सीता को ब्रह्म की क्रियात्मक शक्ति के रूप में माना गया है।

राम-अवतार की कथाओं की तरह ही सीता की अवतार कथाएं भी प्रचलित हुई एवं हेतुओं की कल्पना भी हुई।

'सीता' शब्द का प्रयोग वेदों में ही मिलना प्रारंभ हो जाता है; परंतु यहां 'सीता' शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में होता है, वह रामायण की सीता से भिन्न है। वेदों में सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूज्य है। ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के 57वें सूक्त के छठे तथा सातवें मंडल मंत्र में मिलता है- "हे सौभाग्यवती सीते ! हम तुम्हारी वंदना करते है। हम तुम हमारी ओर अभिमुख हो,जिससे तुम हमारे लिए उत्तम ऐश्वर्य संचालक तथा उत्तम फल प्रदान

करने वाली हो।।6।। इन्द्र सीता को ग्रहण करें,पूषा उसका संचालन करें,वह जल से पूर्ण प्रतिवर्ष हमारे लिए समृद्धदायिनी बने।।7।।

खेत और यज्ञ कुंड की रेखाओं के लिए 'सीता' शब्द का प्रयोग भी वेदों में मिलता है। इस प्रकार सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी के रूप में प्रतिष्ठित है। सीता शब्द का प्रयोग वेदों से आरंभ होता है; परंतु यहां जनक-पुत्री सीता या राम-पत्नी सीता से इसका कोई संबंध नहीं है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार 'हल की मूठ' द्वारा बालिका की प्राप्ति के कारण 'सीता' की संज्ञा जनक ने उस बालिका को दी और पुत्रीवत उसका पालन पोषण किया।

उपनिषदों में सीता के अलौकिक रूप की चर्चा मिलती है

"शौनकीय तंत्र के आधार पर सीतोपनिषद में सीता को सर्ववेदमयी,सर्वदेवमयी, सर्वलोकमयी, सर्वकीर्तिमयी ,सर्वधर्ममयी, सब की आधारभूता, कार्य और कारण के स्वभाव में व्याप्त रहने वाली, चेतन और जड़ दोनों में निवास करने वाली, देवता-ऋषि-गंधर्व और मनुष्य में व्याप्त रहने वाली, समस्त प्राणियों में अव्यक्त रूप से निवास करने वाली, पंच महाभूतो, दस इंद्रियों, मन और प्राण की शक्तियों में व्याप्त रहकर विश्वरूपा, महाशक्ति, महालक्ष्मी माना है। वे देवाधिदेव भगवान से भिन्न और अभिन्न दोनों है।"-डॉ० आशा भारती (राम कथा के नारी-पात्र)।

इस प्रकार सीतोपनिषद में सीता भगवान की आद्या शक्ति है, जो उत्पत्ति,संचालन एवं विलीनीकरण की मूल शक्ति है।

सीता के जन्म संबंधी कुछ आख्यान इस प्रकार है-

1. रामकथा का आदि स्रोत वाल्मीकि कृति 'रामायण' में सीता भूमिजा है। भूमि पर हल चलाते समय जनक को जो कन्या प्राप्त हुई, उसका नाम उन्होंने सीता रखा और उसका पुत्रीवत् पालन-पोषण किया।

वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय एवं गौड़ीय पाठों में इस प्रसंग में कुछ परिवर्तन मिलता है। यहां हल चलाते समय जनक ने आकाश में मेनका को देख मन ही मन संतान कामना के वशीभूत होकर सहचर्य की कामना की,जिससे सीता उन्हें मिली। 'कृतिवास रामायण' के अनुसार जनक ने मेनका को नहीं उर्वशी को देखा, उनका तेज भूमि पर गिरा और पृथ्वी गर्भवती हुई जिससे सीता की प्राप्ति हुई।

2. वेदवती प्रसंग

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में वेदवती प्रसंग की कथा है, जिसमें वेदवती, जो देवीभागवतपुराण एवं ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार लक्ष्मी का अवतार है, वे ही सीता के रूप में जन्म लेती है और रावण के विनाश का कारण बनती है।

3. **अद्भुत रामायण**

अद्भुत रामायण में अम्बरीष की पुत्री श्रीमती का वर्णन मिलता है। कथा में बाद के जन्म में सीता मंदोदरी की पुत्री होती है और कालांतर में जनक को प्राप्त होती है। जनक उसका पुत्रीवत् पालन-पोषण करते हैं। इस रामायण के अंत में सीता द्वारा शक्ति के रूप में रावण का वध दिखाकर शक्ति की उपासना बताई गयी है।

4. **आनंद रामायण**

आनंद रामायण के रचयिता अज्ञात है।ग्रंथ की सामग्री के आधार पर इसे 15वीं शताब्दी के आसपास का काव्य माना गया है। यहां सीता अग्निजा है।इस ग्रंथ की कथानुसार अग्निवास के कारण अग्निगर्भा,रत्नों में रहने के कारण रत्नावती और जनक द्वारा पोषित होने से जानकी कहलाई। इस ग्रंथ में सीता आद्याशक्ति है; परंतु मानवी रूप में यह उपस्थित होती है।

5. **उत्तरपुराण**

आचार्य गुणभद्र रचित उत्तरपुराण में सीता को मन्दोदरी की पुत्री के रूप में वर्णित किया गया है। निमित्तज्ञानियों ने जब बताया कि यह रावण-वध का कारण बनेगी। तब रावण ने मारीच द्वारा मिथिला नगरी के किसी उद्यान के निकट मंजूषा में रखकर उन्हें जमीन में गढ़वा दिया। यही कन्या बाद में जनक के पास ले है गई और रानी वसुधा ने उसका पालन-पोषण किया।इस कन्या का पालन इतने गुप्त रूप से हुआ कि लंकेश्वर रावण को भी उसका पता नहीं चला । इसके पश्चात सीता-विवाह का संक्षिप्त उल्लेख है। राम- सीता यहां परस्पर कामक्रीड़ा में रत दिखाए गए हैं। यहां राम का वनवास भी नहीं है; परंतु सीता-हरण का दृश्य यहां भी है। इस प्रसंग में सीता की चारित्रिक दृढ़ता प्रकट की गई है। युद्ध में राम की विजय होती है। यहां सीता की अग्नि परीक्षा नहीं होती। सीता के आठ पुत्रों का यहां उल्लेख मिलता है,जिसमें 'अजितंजय' नामक सबसे छोटे पुत्र को युवराज बनाया जाता है ।अंत में राम संयम धारण करते हैं और सीता महादेवी और पृथ्वीसुंदरी सहित अनेक देवियां श्रुतवती आर्यिका के समीप दीक्षा ग्रहण करती है।

विमलसूरि कृत पउमचरित और रविषेणाचार्य कृत पद्मपुराण में गुणभद्राचार्य से भिन्न परंपरा का अनुकरण है। पउमचरित में सीता जनक की पुत्री है। माता विदेहा और भाई भामण्डल है । कथा विस्तार में भी काफी अंतर है।

दशरथजातक में सीता को दशरथ की पुत्री और राम की सहोदरा बताया गया है ।जावा के 'सेरतकाण्ड' में भी सीता को रावणात्मजा माना गया है। यह जानने पर कि भविष्य में सीता रावण की प्रेमिका बनेगी, मंदोदरी उसे पेटिका में बंदकर समुद्र में फिंकवा देती है और मंथली नमक ऋषि उसका पालन करते हैं।

दक्षिण भारत के कुछ वृतांतों में सीता को फल तथा वृक्ष से उत्पन्न माना जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सीता के जन्म संबंधी विभिन्न आख्यानों हैं जिनमें ,सीता भूमिजा, अयोनिजा, मंदोदरी की पुत्री, रावण की पुत्री, अग्निजा, दशरथात्मजा आदि भिन्न-भिन्न रूपों में वर्णित है। इन सब आख्यानों में सर्वाधिक प्रचलित एवं मान्य मत यही है कि अज्ञात कुलशीला बालिका दुर्भिक्ष के समय पृथ्वी पर हल चलाने पर जनक को प्राप्त हुई, उसी का पालन-पोषण उन्होंने सीता के रूप में किया। 'सीता' शब्द भूमि से उनकी प्राप्ति और अंत में भूमि में ही समाहित होना, ऐसी घटनाएं हैं जो उन्हें 'भूमिजा' के रूप में प्रतिष्ठित करने में सहायता करती है।

धार्मिक संघर्ष के कारण परवर्ती काल में ब्राह्मण मान्यताओं को हेय सिद्ध करने के लिए रामायण की कथा को परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया गया।

3. निष्कर्ष

यद्यपि राम के बिना रामायण संभव ही नहीं थी; तथापि सीता के बिना राम की यात्रा ही व्यर्थ हो जाती है। ब्रह्म राम, शक्ति सीता के अभाव में संभवतः अपना अवतार कृत्य पूर्ण करने में अक्षम होते। वाल्मीकि रामायण में सीता को अलौकिक शक्ति के रूप में वर्णित न कर मानवीय गुणों की स्थापना की गई। यहां वे एक पुत्री, पत्नी, बहू एवं माता के दायित्वों का निर्वहन करती हुई दिखाई देती है।यद्यपि इन सभी रूपों में उनका पत्नी रूप ही अधिक उभर कर सामने आया है, जिनमे सतीत्व ,दृढ़ता,एवं एकनिष्ठाता है।

सांप्रदायिक रामायणों, पुराणों एवं उपनिषदों में सीता को लक्ष्मी का अवतार, आद्याशक्ति स्वरूप मान उनके अलौकिक रूप की स्थापना की गई। ललित साहित्य पर वाल्मीकि रामायण एवं सांप्रदायिक रामायणों का प्रभाव से सीता में अलौकिक तत्व को स्थापित करते हुए भी उन्हें मानवीय रूप में चित्रित किया गया है। नारी सुलभ सामान्य गुण उनमें दिखाए गए हैं। साथ ही नायिका के रूप में प्रणय-भाव वर्णित है।

इसके पश्चात भक्तिकालीन काव्य परंपरा में रामचरितमानस में सीता को एक आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नी आदि रूपों में चित्रित किया गया, जहां किसी भी प्रकार के मानवीय गुणों के स्खलन की कोई संभावना ही नहीं है। यहां राम के समान ही सीता का भी बराबर महत्व है। आधुनिक काल के रामकाव्य परम्परा पर बौद्धिक चिंतन का प्रभाव परिलक्षित होता है,जिसमें 'साकेत', 'वैदेही वनवास', 'वनस्थली', 'भूमिजा', 'उत्तरायण' आदि रामसाहित्य की सीता प्राचीन काव्य में वर्णित सीता की अपेक्षा अधिक उन्मुक्त, सहज एवं सजग दिखाई देती है।'राधेश्याम रामायण' राधेश्याम कथावाचक द्वारा रचित खड़ी बोली हिन्दी की प्रारंभिक रचनाओं में से है। यहां वे सीता उत्पत्ति का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

दारुण अकाल से एक समय जब देश प्रपीड़ित होता था ,
तब मिथिला पति ने निज हाथों हल से धरती को जोता था।
उसे समय घड़े के भीतर से हल के नीचे कन्या निकली ।
आनंद विश्व में भरने को पृथ्वी में से कमलर निकली ।
या ऋषियों के रक्तों से बन खल-संहारिणि दुर्गा निकली।
या भक्तों के आराधना को जगदम्बा जगज्जया निकली।।

'भूमिजा' की रचना भी सीता परित्याग को लेकर की गई है। यहां भी सीता अबला के रूप में नहीं, बल्कि सबला के रूप में प्रतिष्ठित है। सीता जीवन के कष्टों को सहन करते हुए भी किसी प्रकार का विरोध प्रकट नहीं करती। इसका कारण सिर्फ एक ही है।कवि लिखते हैं-

मुझे अबला न समझो क्रोध पीकर शांत रहती हूं ।
अहिंसा हूं स्वयं सहकर किसी से कुछ न कहती हूं।।

पोद्दार रामावतार 'अरुण' कृत 'अरुण रामायण' में सीता कर्ममयी नारी के रूप में चित्रित है। वनवास प्रसंग में वे लिखते हैं-

चेतनाहीन नारी न कभी वह कर्ममयी।
कोमल काया भी कठिन मानवी धर्ममयी ।।

और सीता भी राम के साथ वन गमन के लिए तत्पर होती है और कहती हैं-

कहता है मेरा धर्म कि मुझको जाना है।
दंडकारण्य मे निज कर्त्तव्य निभाना है।।

आधुनिक साहित्य की सीता गरिमामय, लोककल्याण की भावना करने वाली त्यागमयी नारी है।

4. संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. भारती ,डॉ० (श्रीमती) आशा (1989, प्रथम संस्करण) *राम कथा की नारी पात्र*.दरिया गंज नई दिल्ली: शारदा प्रकाशन ।
2. डॉ लक्ष्मी नारायण (प्रथम संस्करण सन 1987). *सनातन रामवृत और गोस्वामी तुलसीदास*. शाहदरा दिल्ली:चिन्ता प्रशासन।
3. राठौर, डॉ०नाथूराम,(सन 2007) *हिन्दी राम काव्य के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन*. सदर बाजार, मथुरा: जवाहर पुस्तकालय।

Scientific Significance of Ramayana

Sapna Jain
The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
(vision123.sapna@gmail.com)

Although the Ramayana is essentially a mythological epic, it also contains elements that can be understood from historical and scientific angles. As such, it has great cultural and scientific values. Agricultural insights are offered by the Ramayana. The significance of the environment and nature is emphasized throughout the epic. The Ramayana makes mention of the traditional Indian medical system known as Ayurveda. The Ramayana also provides knowledge of geological facts and military science. Poetic language and narrative devices abound in this literary masterpiece. The Ramayana is a prime example of prehistoric architectural and engineering achievements. The Ramayana's scientific value comes from its potential to shed light on numerous academic disciplines.
Keywords: Ramayana, Geographical insights, Environment, Military Science, Architecture.

1. Introduction

The Ramayana, one of the most revered ancient Indian epics, is often celebrated for its religious and cultural significance. However, beneath its layers of mythology and spirituality lies a treasure trove of scientific allegories and ethical insights that continue to captivate scholars and readers alike. While traditionally viewed as a literary and religious text, the Ramayana can also be interpreted through a scientific lens, revealing profound observations about human behavior, environmental awareness, and technological advancements. The Ramayana is an ancient Indian epic that holds significant cultural, religious, and literary importance in Indian society. While it is primarily a religious and mythological text in Hinduism, it also carries scientific and historical significance in various ways.

2. Architecture & Engineering

Some interpretations of the Ramayana suggest that it contains scientific allegories or symbolic representations of scientific concepts. For example, the construction of the bridge (known as Rama Setu) between India and Sri Lanka by Rama's army is sometimes interpreted as an allegory for ancient engineering practices.

हस्तिमात्रान् महाकायाः पाषणांश्च महाबलाः ।
पर्वतांश्च समुत्पाट्य यन्त्रैः परिवहन्ति च ॥-(वा.रा. ६/२२/६०)

Additionally, the descriptions of weaponry and warfare in the epic have led to speculation about technological advancements of the time. At its core, the Ramayana contains allegorical representations of scientific concepts and phenomena. One such example is the construction of the bridge (Rama Setu) between India and Sri Lanka by Rama's army. While traditionally viewed as a miraculous feat, modern interpretations suggest that this narrative may symbolize ancient engineering practices and knowledge of hydraulics and construction techniques. The meticulous planning and execution depicted in the epic offer insights into early human efforts to manipulate and harness natural forces for practical purposes.

Chemistry & Physics: The Ramayana, an ancient Indian epic, primarily deals with the story of Prince Rama and his journey to rescue his wife Sita from the demon king Ravana. While it is a mythological narrative, it does contain elements that can be metaphorically related to concepts in physics and chemistry.

Chemistry-Fire and combustion: The burning of Lanka, the kingdom of Ravana, by Hanuman is often portrayed in the Ramayana. This event can be linked to the chemical process of combustion. Fire, a central element in this event, involves chemical reactions where fuel (in this case, perhaps wood or other flammable materials) combines with oxygen to produce heat and light. Understanding the conditions for combustion and the properties of fire can be seen as a chemical aspect in the narrative.

भुङ्त्वा वनं महातेजा हत्वा रक्षांसि संयुगे ।
दग्ध्वा लङ्कापुरीं भीमां रराज स महाकपिः ॥- सुन्दरकाण्ड/५४/४७

Physics-Gravitational Force: There are instances in the Ramayana where characters are depicted lifting or moving heavy objects. These actions can be related to the concept of gravitational force in physics. Whether it's Hanuman carrying the mountain of healing herbs or Rama and Lakshmana building the bridge to Lanka, the force exerted, and the weight being lifted can be analyzed in terms of gravitational forces and mechanical work.

स तस्य शृङ्गं सनगं सनागं सकाञ्चनं धातुसहस्रजुष्टम् ।

विकीर्णकूटं ज्वलिताग्रसानुं प्रगृह्य वेगात् सहसोन्ममाथ ॥- युद्धकाण्ड/७४/६७

Agricultural Development: Ayodhya, the kingdom ruled by King Dasharatha and later by Rama, is often described as prosperous and fertile. The land is said to be well-cultivated, yielding abundant crops and sustaining a thriving population. Although not explicitly detailed, the depiction of Ayodhya's prosperity suggests a society engaged in agriculture as a primary occupation.

नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः ।

शेरते विवृतद्वाराः कृषिगोरक्षजीविनः ॥- वा. रा. २/६७/१८

Military Science: Furthermore, the descriptions of weaponry and warfare in the Ramayana hint at technological advancements of the time. The sophisticated weapons wielded by characters like Rama and Ravana evoke parallels with modern military technology, sparking speculation about ancient scientific achievements. While these interpretations may be speculative, they underscore the Ramayana's potential as a repository of scientific allegories that reflect human ingenuity and innovation.

धन्विनः खड्गिनश्चैव शतघ्नीमुसलायुधान् ।

परिघोत्तमहस्तांश्च विचित्रकवचोज्ज्वलान् ॥- वा.रा./५/४/१८

Geological Insights: One notable geological aspect mentioned in the Ramayana is the description of the crossing of the ocean by Rama and his army to reach Lanka (present-day Sri Lanka) to rescue his wife Sita from the demon king Ravana. This episode, known as the Setu Bandhanam or the construction of the bridge, describes Rama's army building a bridge (known as Rama Setu or Adam's Bridge) to cross the ocean. While the Ramayana describes this bridge being constructed by Rama's army, modern geological studies have identified a natural formation of shoals and sandbanks between India and Sri Lanka, which has sometimes been associated with the legendary bridge. Valmiki Ramayana contains occasional references to geological features and landscapes.

3. Geographical References

The epic mentions various geographical locations across the Indian subcontinent. Some scholars have attempted to identify these places based on descriptions in the text, which has led to archaeological explorations and discoveries. The identification of these places contributes to our understanding of ancient Indian geography and settlement patterns. contains numerous geographical references that provide insights into the landscape of ancient India. These references include mentions of cities, rivers, forests, mountains, and other geographical features. offers valuable insights into the geographical landscape of ancient India.

Through its vivid descriptions of cities, forests, rivers, and mountains, the Ramayana provides a window into the geographical diversity and richness of the Indian subcontinent during that era. This essay will explore the geographical importance of the Ramayana and its role in understanding the ancient geography of India.

Environmental Awareness: Ramayana is rich with beautiful descriptions of different elements of nature, life in forests, animal characters, trees, plants, river, mountains, etc. reflecting the integral relationship of humanity with environment. There are ample examples and references as we read through the stories in Ramayana. We get to know love for nature, animals, plants, and vegetation. The Ramayana contains themes related to environmental conservation and harmony with nature. We get an inherent message about the need to preserve it all. For instance, it emphasizes the importance of preserving forests and respecting the balance of ecosystems. These themes resonate with contemporary environmental concerns and highlight the timeless relevance of sustainable living practices.

In that context, the references to the very origin of the writing of the epic Ramayana, which points towards the compassion that Sage Valmiki’s first utterance to a hunter and the shlokas which followed trying to stop a hunter from killing one of the Krouncha birds, shows the agony that he had undergone on seeing the cruelty inflicted.

4. Psychological and Ethical Insights

The characters and moral dilemmas presented in the Ramayana offer insights into human psychology and ethical principles. The epic explores themes such as duty, loyalty, sacrifice, and the consequences of actions, which are relevant to psychological and ethical studies. Beyond its scientific allegories, the Ramayana offers profound ethical insights that resonate with contemporary moral dilemmas and concerns. The epic explores themes such as duty, loyalty, sacrifice, and the consequences of actions, presenting complex characters whose choices have far-reaching implications. Through the trials and tribulations faced by protagonists like Rama, Sita, and Hanuman, the Ramayana imparts timeless lessons about integrity, resilience, and compassion.

5. Conclusion

The Ramayana serves as more than just a religious and literary text; it is a rich tapestry of scientific allegories and ethical insights that continue to inspire and intrigue scholars across disciplines. By exploring the intersections between mythology, science, and ethics, we can uncover new layers of meaning in this timeless epic and appreciate its relevance to contemporary discourse. Whether as a source of scientific speculation or a guide to moral reflection, the Ramayana remains a testament to the enduring power of storytelling to illuminate the human condition. Overall, while the Ramayana is primarily a religious and literary text, it also holds scientific significance in terms of historical insights, geographical references, allegorical interpretations, environmental themes, and psychological insights. It continues to inspire scholarly research and interpretation across various disciplines.

Psychological Health and Holistic Wellbeing: Ramayana through a Psychological Lense

Tulsee Giri Goswami
(goswamitulseegiri@gmail.com)

The age-old Indian epic the Ramayan is filled with profound wisdom and lessons in life that are still applicable today. The story explores the depths of human emotions even though its main themes are heroism, duty, love, justice, and psychological well-being, underscoring the significance of nurturing our psychological health and holistic well-being. The Ramayan serves as a compelling illustration of humanity's timeless ability to employ effective psychological strategies when confronted with challenges. Woven within its intricate tapestry of characters, conflicts, and triumphs of Lord Ram, Sita, Lakshman, Hanuman, Mandodari, etc are profound insights into how individuals can navigate challenges with resilience, wisdom, and emotional fortitude. The paper will attempt to briefly describe how through the experiences of its characters, the Ramayan imparts valuable lessons on how to lead a fulfilling life by harmonizing the heart and mind to live with holistic well-being. For this conceptual paper, since the Valmiki Ramayan is the original Sanskrit version of the Ramayan, as penned by the sage Valmiki, it was the preferred text.

Keywords- Ramayan, Lord Ram, Psychological Health, Psychological Wellbeing, Holistic Wellbeing

1. Introduction

Each character provides a distinct lens through which we can examine how people respond to separation, doubt, difficulties, losses, and uncertainties, with an array of coping mechanisms that reflect their emotional intelligence and psychological adaptability whether it be Lord Ram's unwavering devotion to duty, Sita's fortitude in the face of captivity, Lakshman's sacrifice for his brother, Hanuman's fearless resolve, Kaikeyi's emotional resilience, Manthara's conviction, or Mandodari's unflinching support. All characters demonstrate the complexity of human psychology and offer priceless guidance in fostering psychological health and maintaining holistic well-being.

Ramayan is not just a captivating story of gods and demons, but also a profound guide to mental health and holistic wellness. The life of Lord Ram, the central figure of the Ramayan, is an embodiment of virtues like righteousness, courage, devotion, and resilience, offering valuable lessons for navigating life's challenges and cultivating inner peace. The Ramayan, delves into the complexities of emotions, motivations, and behaviors, offering valuable insights into psychological health and holistic wellness. Through the lens of psychology, Ramayan's characters and their journeys become powerful metaphors for understanding and navigating the challenges we face in our own lives.

Psychosocial Well-Being

Mental, emotional, and social health care is described in the Ramayan. Lord Ram, when faced with the stress of exile, handles it with confidence. When challenged by separation from Sita, he goes through various phases of grief, before moving towards optimism, planning, and action. The role of social relationships - family, friends, peers, and the public - in maintaining health and achieving desired outcomes, is portrayed beautifully.

The need for patience (for example, when the rains prevent Sugreeva's army from launching the search for Sita), and perseverance (when his army that headed south faces multiple obstacles, they do not give up) is highlighted. Compassion towards fellow creatures, even during hard times (Kaushalya and Sumitra), as well as spirituality, are shown as important aspects of health in the Ramayan.

Holistic Health

The World Health Organization's definition of health focuses not only on physical health, but emotional, mental, and social well-being as well. This operational construct of health is evident in the Ramayan. An analysis of the thoughts and actions of its characters uncovers the integration of this definition of health in their daily routine and behavior.

Equal focus on the body (physical well-being), mind (mental well-being), and soul (spiritual well-being) are evident in the upbringing of Lord Ram, in the behavior of his friends and family, and in the reactions of the various people he encounters during his exile. Similarly, coexistence with our environment, including flora and fauna is highlighted. The Ramayan reminds us that we have a bidirectional and symbiotic relationship with the plants, forests, animals, and birds that cohabit on our planet Earth. Resilience, i.e. taking life as it comes, while being prepared to manage unanticipated stresses and strains, is another lesson that we learn.

Self-confidence, if not accompanied by hard work, is not enough. We note all characters of the Ramayan working hard, doing justice to their allotted roles. Whether it is Shabri who keeps her ashram clean for Lord Ram's impending visit, or Bharat, who keeps the throne warm for his elder brother, these individuals exemplify action for the sake of action without desire for the fruit thereof. This is especially true in the geriatric age group, as we see Jatayu, Sampati, and Shabri add value to their years by serving the Lord. All these, and others, lived a meaningful, as well as holistic life.

By adopting the principles and values embodied in the Ramayan, we can cultivate mental well-being, emotional resilience, and a sense of inner peace. By understanding the psychological and mental health lessons embedded within the Ramayan, we can harness its wisdom to navigate life's challenges, cultivate inner strength, and ultimately live a more fulfilling and meaningful life. The epic's timeless message of hope, resilience, and the triumph of good over evil continues to resonate with readers across generations, offering a powerful path to mental well-being and holistic wellness.

Objectives

This conceptual paper aims to discuss the various psychological perspectives in the Ramayan.

- To assess psychological aspects in the Ramayan
- To narrate psychological insights in different situations/anecdotes of Ramayan
- To highlight psychological strategies exemplified in Ramayan
- To assess the relevance of Ramayan with Psychological health and Holistic Wellbeing

2. Methodology

Since the Valmiki Ramayan is the Sanskrit original of the Ramayan as recorded by the sage Valmiki, it was chosen as the text for this philosophical study. It contains more than 24,000 verses. Ayodhya Kanda (Book of Ayodhya, 119 chapters); Arany Kanda (Book of Forest, 75 chapters); Kishkindha Kanda (The Empire of Holy Monkeys, 67 chapters); Sundar Kanda (Book of Beauty, 68 chapters); and Yuddh Kanda (Book of War, 128 chapters) are the six Kands in the Valmiki Ramayan.

We have studied the complete English translation of the Valmiki Ramayan (Gita Press, Gorakhpur, 2 vol set). Every Kanda contains several chapters, all of which were examined for anecdotal evidence of holistic and psychological well-being. These anecdotal tales were composed as Sanskrit poetry and translated into English for the Ramayan.

3. Discussion, Findings & Implication

The Ramayan offers guidance on how to behave in various life circumstances and direct one's emotions toward one's strengths, capacities, and skills. It illustrates how psychological techniques play a crucial part in reducing emotional distress and how to seek professional assistance for mental health issues. Negative emotions are addressed in ancient Indian texts by means of interventions pertaining to Dharm (obligation), Karm (fruitful conduct), and Adhyatm (spirituality).

The Ramayan offers valuable explanations of effective emotion-focused strategies through its characters' experiences and responses to challenging emotions. The epic's characters go through a range of emotional upheavals, and their coping mechanisms provide insights into managing emotions in healthy and constructive ways. Here's how the Ramayan illustrates emotionally driven coping strategies:

Table 1 *Emotionally-Driven Coping Strategies in Ramayan*

Type of Strategy	Description
Emotional Expression and Catharsis	Characters like Lakshman and Surupnakha openly express their emotions, allowing themselves to grieve, feel sadness, and share their struggles. Their willingness to express emotions provides a release and contributes to emotional healing.
Mindfulness and Acceptance	Lord Ram and Sita’s acceptance of their circumstances and Lakshman and Urmila's resilience during the 14 years of exile demonstrate mindfulness and acceptance. By acknowledging their realities and feelings, they cope with emotions more effectively
Self-Reflection and Growth	Lord Ram and Lakshman’s self-reflection during his time in the forest and Sita's contemplation during her captivity and later years of exile illustrate emotional coping through introspection. This process contributes to personal growth and understanding
Spirituality	Characters like Hanuman, Bharat, and Lakshaman find solace and strength through their spiritual connections. Hanuman's devotion to Lord Ram and his sense of purpose serve as sources of comfort during emotionally demanding situations. Throughout the epic, characters exhibit faith and hope in the face of despair. These emotional coping strategies help them endure challenging times and maintain a positive outlook.
Positive Reframing	Characters often find ways to reframe challenges positively. Lord Ram’s exile becomes an opportunity for self-discovery and character development, demonstrating how changing perspectives can aid in emotional coping
Seeking Social Support	Ayodhyan queens (Kaushalaya and Sumitra) unwavering support for Urmila after Lakshman’s departure and Jatayu's presence as a trusted companion, showcase the importance of seeking social support during challenging times. Sharing emotions with trusted individuals can provide comfort and validation

Source- *Review of Literature*

There are numerous instances of psychological counseling throughout the Ramayan, which serves as an example of how to live a moral life and deal with life's challenges. Emotion regulation techniques, particularly the application of antecedent-focused techniques, acceptance, reappraisal, refocusing, and other supportive counseling approaches, are a recurring topic throughout it. Together with adhering to one's sense of duty as a method of self-regulation, additional recurrent themes include effective coping and remaining in the present.

Many characters in the Ramayan have offered psychological counseling against the backdrop of the ancient Indian scriptures' descriptions of Dharm (the sense of justice) and Karm (obligation). The Ramayan also makes evident the nature of human interactions and the nature of therapeutic partnerships. For instance, even though Ram is the primary character, other

characters—regardless of their societal status or textual hierarchy—also serve as “counselors” to Ram and important other characters, depending on the circumstances.

Counseling was seen by many mental health experts as "alien" to Indian culture and the nation's sociocultural context. (Jayaram SS and Surya NC, 1996) (Varma, K. 1982) Creating counseling strategies based on ancient scriptural texts that are compatible with counseling principles and Indian culture, values, and attitudes could be helpful in this situation. (Neki JS,1992) The approach put forth in this paper is a general way for anyone skilled in counseling to use fables as tales for therapeutic purposes. Counselors who are conversant in the Ramayan would be more adept at applying these strategies.

The universal values and ideas espoused in the Ramayan can be employed as psychological tactics without requiring the client to be familiar with the story; nevertheless, the approach's applicability to clients from non-specific cultural backgrounds may limit its application.

Table 2 *Emotions, Psychological Strategies, and Anecdotal Reference from Ramayan*

Emotion	Anecdotes	Kanda (Section in the Text)	Psychological counselling techniques & strategies used by different characters
Sadness	• King Dasharath expresses his sadness about his inability to beget children. The sages approve Dasharath’s decision to perform the Putra-Kaameshti-Yagna Vedic ritual to fulfill his desire for an heir and guide him about the ceremony and its procedures.	Bala Kanda, Sarga 12	This anecdote reflects the help-seeking behavior of King Dasharath. The key counselling techniques used by the sages, akin to those in supportive therapy (Winston A, at. el, 1986) include providing advice and guidance to fulfill his desire for an heir
	• King Dasharath is sad as his beloved son Lord Ramis going to exile for 14 years, and he is unable to accept the decision made by him. Rama, on seeing his father, consoles him by stating that King Dasharath’s kingdom and wealth are not important to him. His only *Dharma* (duty) as a son was to keep his father’s vow made to Kaikeyi (wife of Dasharatha).	Ayodhya Kaanda, Sarga 34	Here, Lord Ram uses counselling techniques akin to those in cognitive therapy, such as cognitive reappraisal and perspective-taking (Hersen M and Sledge W, 2002) to address King Dasharath’s sadness. He uses reflection as a technique to make King Dasharath accept the promise he made to Kaikeyi.
	• Tara (wife of King Bali) is depressed about her husband Bali’s death at Lord Ram’s hands. Hanuman consoles her by talking to her about the death in the background of Bali’s *Karma* (actions) leading to his death. He also asks her to shift her focus on her *Dharma* (duty) that needs to be fulfilled henceforth, i.e., the funeral of Bali and the upbringing of Angada, her son.	Kishkinda Kaanda, Sarga 21	Hanuman counsels Tara using techniques similar to those described in grief counseling, (Barnard A, 2019, Markowitz JC and Weissman MM, 2004) such as acceptance of reality and fulfilling present duties and responsibilities as Tara did not have control over the situation.
Anger	• While in exile in the Dandak forest, Lakshman expresses anger at his brother Bharat’s arrival from Ayodhya (kingdom).	Aranya Kaanda, Sarga 97	Lord Ram pacifies him by asking him not to jump to conclusions, believing that Bharat would have come due to affection and concern towards them after hearing the news of their exile and not to wage war. Lord Ram counsels Lakshman using a technique akin to perspective-taking and reviewing alternate views from cognitive therapy (Wenzel A, at.el, 2016) by asking Lakshman to consider other reasons for Bharat’s visit.
	• Lord Ram expresses anger and helplessness on the abduction of Sita by the demon king Ravana.	Aranya Kaanda, Sarga 65	Lakshman persuades Lord Ram first to identify the person responsible for the misdeed and punish the individual, rather than destroying all worlds in anger. Lakshman counsels Lord Ram using techniques similar to that described in Gestalt therapy, (Hersen M and Sledge W, 2002) emphasizing perspective-taking of “here and now” about focusing on finding Sita instead of blaming himself for Sita’s abduction. Lakshman also reminds Lord Ram about being a strong-willed, regulated person who usually does not react inappropriately to situations.
Fear	• As a protective father, King Dasharath expresses the fear that his son Rama, due to his young age and inexperience, would not be able to face the demons and overpower them. Sage Vasishta counsels Dasharatha about the king’s duties and describes the capabilities of sage Vishvamitra and his knowledge of weaponry, which would protect Lord Ram. He also reminds him about Lord Ram’s capability to defeat the demon in the forest	Bala Kaanda, Sarga 21	To allay King Dasharath’s fear, Sage Vashista counsels him using techniques similar to persuasion, reassurance, and advice in supportive psychotherapy, (Winston A, at. el, 2004) by depicting the capabilities of his son and Sage Vishwamitra. He also reminds Dasharatha of Lord Ram’s capabilities and for him to think as a righteous king instead of a father.
	• Hanuman expresses fear and self-doubt about crossing the ocean to reach Lanka to find Sita. Jambhavant, the king of bears, motivates Hanuman by reminding him of	Kishkinda Kaanda, Sarga 66	Hanuman’s fear reflects his cognitive distortion of selective abstraction and catastrophizing the event and his capabilities. (Chand SP, at.el., 2020)

	his innate potential (from birth as the son of the god of wind and the boon bestowed on him by Lord Indra) and encourages him to fly across the ocean to search for Sita in Lanka.		Jambhavant counsels him using techniques akin to the strength-based approaches (Jones-Smith E., 2013, Saleebey D, 1996, 2008) to deploy his strengths to aid empowerment.
	• Sita expresses fear while in Ravan's kingdom, waiting to be rescued by Lord Ram. Hanuman pacifies her by reminding her that Lord Ram is on a mission to find her and will surely free her after killing Ravan.	Sundara Kaanda, Sarga 40	Hanuman counsels Sita akin to the counseling techniques similar to the hope theory. (Khaledi Sardashti F, at. el, 2018, Kirmani M, at. el, 2016, Rand KL and Cheavens JS., 2009) He tells her to have faith in Lord Ram and instills hope by telling her about Lord Ram's efforts to rescue her from Ravan.
	• Lord Ram expresses fear over the safety of Sita in Ravan's kingdom. He also expresses self-doubt about crossing the ocean. Sugreeva (Monkey King) allays Lord Ram's fear about Sita's situation by asking him not to brood over the past but to take action rightfully and start the construction of a bridge that will help them reach Lanka and defeat Ravan.	Yuddha Kaanda, Sarga 2	There are similarities between the problem-solving strategy and the method Sugreeva used to coach Lord Ram on how to control his emotions. (Drilling E 2002) Additionally, he counsels him to concentrate on the issue at hand rather than putting it off and to think of creative ways to save Sita, such as constructing an ocean bridge.
Lust	• Ravana expresses lust for Sita. His uncle Mareech explains Lord Ram's valor, righteousness, and bravery. Ravana's brother Vibhishana counsels him to let go of his desire for another man's wife and send Sita right back to her husband, Lord Ram.	Aranya Kaanda, Sarga 65	Vibhishana and Mareecha counsel Ravan on distancing himself from Sita. The counseling technique used here is akin to techniques used in supportive therapy (Winston A, at. el, 1986) on guiding Ravana to distance himself and cope with the emotions of lust as it would lead to his destruction.

Source – *Review of Literature*

The life of Lord Ram serves as an example of the virtues that the Ramayan extols, including bravery, serenity, honesty, brotherhood, sacrifice, kindness, loyalty, morality, nobility, and patience. It also informs us of the negative traits, such as callousness, rudeness, cruelty, hatred, greed, moral decay, and dishonesty. In addition to these concepts, the following other significant ones are also worth considering:

Table 3 *Psychological Strategies & the Rapies Concerning Various Psychological issues of other Characters*

Role/Character	Insights	Psychological context of therapy/strategy
King Dashrath's promise to Vishwamitra	making a passionate and spontaneous decision.	Making decisions impulsively and failing to consult stakeholders who could be impacted by them can lead to a multifaceted problem. For instance, when it comes to substance abuse, self-harm, or interpersonal issues.
Manthara's contrived account of events in an attempt to alter Kaikeyi's perspective	Personal preferences take precedence over group goals.	It can be used to emphasize how crucial it is to follow a family's or team's objective at home or business to guarantee a positive conclusion.
King Dashrath's retirement	Role transition/life cycle.	To achieve better results, we are preparing and transferring to the successors the tasks and obligations of the house and profession.
Bhageerath and the Ganga	With the hope of achieving the necessary transformation, they are continuing their efforts.	Although the goal may seem distant, obstacles can be overcome with goal-directed and consistent efforts to attain the target.
Role of Devi Ahalya	Errors, pardon, and hope	It applies to couples and marital therapy.
The squirrel's part in constructing the bridge to Lanka	Effort is what counts, regardless of its size.	No matter how tiny their contribution, every family member plays a responsibility in preserving a positive family environment.
Hanuman's feelings of incompetence and Jambavant's advice	Incapacity, under stress, depression, anxiety, or low self-esteem, to evaluate oneself and one's capabilities.	We need to be aware of our potential and ability. It might be an illustration of low self-esteem and cognitive distortion in exam anxiety.
Adverse effects of Sugreeva with alcohol	Negative effects from substance use in multiple ways.	It applies to drug use problems.

Source – *Review of Literature*

Table 4 *Psychological Support from Family to Lord Ram*

Family member	*Situation*	*Psychological Context*
Kousalya's response at the time of Sri Ram's exile	A person's life and emotions are impacted by the decisions made by others.	A person can cope with a crisis if they can accept a loss.
Sita's response at the time of Sri Ram's exile	We accept responsibility for a family member's situation as our own and treat it as such.	Overcoming challenging circumstances will be aided by strong primary support. It can also be applied to couples' and married people's treatment.
Lakshman's response at the time of Sri Ram's exile	We are sharing the load and supporting the family members throughout trying moments.	The intensity of the circumstance can be lessened with the aid of a primary support network.
Bharat's response at the time of Sri Ram's exile	Fairness and accountability must coexist.	Family conflict occurs when members of the same family hold opposing opinions or behave in different ways.

source – review of literature

Unveiling the Inner World: Psychological Aspects of Ramayan

The Ramayan's richness lies in its portrayal of diverse psychological themes:

- **Coping with Trauma and Loss:** Lord Ram's exile, Sita's abduction, and Lakshman's grief are poignant examples of how individuals cope with trauma and loss. The epic explores various coping mechanisms, from denial and anger to acceptance and resilience, offering guidance for navigating similar experiences in our own lives.
- **The Power of Relationships:** The Ramayan emphasizes the importance of strong social connections for mental well-being. The deep bonds between Lord Ram and Sita, Lord Ram, and Lakshman, and Hanuman's unwavering devotion to Lord Ram showcase how supportive relationships can provide solace, strength, and a sense of belonging.
- **The Battle between Good and Evil:** The Ramayan's central conflict between Lord Ram and Ravana represents the eternal struggle between good and evil within each individual. It explores themes of temptation, self-control, and the importance of choosing the right path, offering valuable lessons for navigating our internal conflicts.
- **The Pursuit of Meaning and Purpose:** Lord Ram's unwavering commitment to dharma, his sense of duty, and his quest for righteousness highlight the importance of finding meaning and purpose in life. The epic suggests that living a life of purpose can contribute significantly to mental well-being and overall satisfaction.
- **The Importance of Self-Awareness:** Lord Ram's introspection and self-reflection serve as a reminder of the importance of understanding our thoughts, emotions, and motivations. Self-awareness is crucial for making healthy choices and navigating life's challenges.
- **Developing Emotional Resilience:** The characters in the Ramayan demonstrate remarkable resilience in the face of adversity. Their ability to bounce back from setbacks and maintain hope offers valuable lessons for cultivating emotional resilience in ourselves.
- **The Power of Positive Thinking:** Despite facing numerous hardships, Lord Ram and his companions never lose sight of hope and optimism. The Ramayan emphasizes the power of positive thinking in overcoming challenges and maintaining mental well-being.
- **The Practice of Forgiveness:** Lord Ram's capacity for forgiveness, even towards those who have wronged him, teaches us the importance of letting go of anger and resentment. Forgiveness can free us from the burden of negative emotions and contribute to inner peace.

Lessons for Mental Health and Holistic Wellbeing

Lord Ram's life offers several key lessons for mental health and holistic wellness:

Importance of Values: Lord Ram's unwavering commitment to his values in the face of adversity demonstrates the importance of having a strong moral compass. Living with integrity and purpose can provide stability and direction in difficult times. While duty and responsibility are crucial, the epic also reflects on the need for balance. Lord Ram's commitment to dharma can be a lesson in finding an equilibrium between fulfilling obligations and taking care of one's well-being.

Resilience and Adaptability: Lord Ram's ability to adapt to challenging circumstances and overcome obstacles teaches us the importance of resilience. Developing coping mechanisms and a positive outlook can help us navigate life's inevitable ups and downs. Despite facing extreme adversity, Sita displays resilience. This can be seen as a lesson in facing challenges with strength and perseverance. Sita, faced immense hardships during her captivity by Ravan. Her resilience and inner strength in the face of adversity highlight the importance of maintaining mental fortitude during challenging times. This can inspire individuals to find strength within themselves when confronted with difficulties.

Importance of Relationships: The strong bonds of love and loyalty between Lord Ram and his family and friends highlight the importance of supportive relationships for mental well-being. A robust social network can give one a sense of community and emotional support. Creating and preserving helpful relationships has been linked to emotional well-being. Lakshman's devotion and selflessness for Rama, particularly during their banishment, serve as an example of the value of positive relationships for mental health. Sibling rivalry has long been documented in all religions; the Ramayan serves as an example of harmonious sibling relationships. The instances in which Bharat ruled Ayodhya in Lord Ram's honor, with Ram's *'Paduka'* atop the throne, are models of integrity, decency, and fraternity. Hanuman's unwavering friendship and devotion to Ram played a significant role in keeping the prince's spirits high. This underscores the therapeutic power of companionship. Being surrounded by supportive friends and family can be a bulwark against feelings of loneliness, anxiety, and depression. Cultivating sincere relationships is an investment in our psychological well-being.

Maintaining Positivity Coping with Loss and Grief: Despite facing numerous hardships, Lord Ram never loses hope or optimism. Cultivating a positive attitude and focusing on gratitude can contribute significantly to mental and emotional well-being. Lord Ram's experience of loss and subsequent grief can be seen as an example of coping with intense emotions. The epic portrays various characters dealing with loss in different ways, providing insights into the human experience of grief. Lakshman, with his candid outbursts, teaches us the value of unfiltered emotional expression. In contrast, Lord Ram's deep-seated grief for Sita post her abduction underscores the inevitability of sorrow even in divine beings. By expressing their emotions, they advocate for the therapeutic release rather than internalizing pain. For better psychological health, channel your

feelings constructively — be it through art, dialogue, or simple introspection. Remember, even a divine figure like Ram grieved deeply, and his brother Lakshman never shied from sharing his emotions.

Mindfulness and Focus: Hanuman's single-minded focus and unwavering determination highlight the power of mindfulness. This can be related to the psychological strategy of staying present and focused on one's goals. Hanuman is known for his unwavering devotion to Lord Rama. Hanuman's selfless service and unshakeable confidence in his abilities showcase the importance of faith and self-belief in overcoming challenges. This can be a powerful lesson in building resilience and boosting self-esteem.

Effect of lousy association Anecdote: Kaikeyi with Manthara It explains how to shield oneself against untrustworthy companies and how to be wary of unscrupulous advice. It also highlights the need to maintain one's convictions and avoid bias or outside influence when making decisions. It recommends viewing one's thinking critically to assess one's feelings, ideas, actions, and results—particularly when it comes to making decisions.

Emotional Intelligence: Lord Ram's compassion towards all creatures. Lord Ram demonstrates emotional intelligence through his compassion and empathy. A person's ability to empathize with others and comprehend and control their emotions are crucial elements of psychological well-being.

Bharat's Virtuous Rule in Lord Ram's Absence: Bharat's virtuous rule in Ayodhya during Lord Ram's exile reflects the importance of responsibility and duty. Fulfilling responsibilities, even in challenging circumstances, can provide a sense of purpose and contribute to holistic well-being.

Ravan's Downfall Due to Ego: Ravana's downfall is often attributed to his unchecked ego and desires. This serves as a cautionary tale about the negative impact of unchecked pride on psychological well-being. Cultivating humility and self-awareness can be crucial for maintaining a balanced and healthy mind.

The Importance of Meditation (Japa): Many characters in the Ramayan, including Hanuman, emphasize the power of meditation and chanting the name of the divine (Jap). This practice is often associated with calming the mind and promoting mental focus, highlighting the importance of mindfulness for psychological well-being.

The psychological context of Ramayan can be used in the modern era as the basis for leading psychological health and holistic well-being.

Table 5 *Ramayan Context and Relevance to Psychological Health in the Modern Era*

Emotional and psychological context with Lord Ram	Insights	Preview of the Current Scenario
Guru, Vishwamitr decided for education & learning of Ram	allowing the individual to objectively learn from their experiences.	Children should be respected for their ability to think for themselves and make their own decisions. It can be used to the consequences of parents becoming overly involved in their children's development.
The challenge of Parasum for Lord Ram	Remaining composed under pressure and refraining from impulsive responses to circumstances can aid in problem-solving.	How to face a crisis or stressful situation.
Sri Ram's submission and acceptance of banishment	Selecting between one's wishes and the guidance of elders.	We are regulating one's wishes and honoring the decisions made by seniors.
Sugreeva's counsel and Sri Ram's depressed state	Personal dilemma and inability to make choices at the time. Personal problems also affect one's career.	We're open to recommendations and will not give up on our objective.
Sri Ram gives Ravan a second chance	It might be viewed as assisting someone in changing. It can be seen in terms of assisting in the cessation of substance usage. As such, we are free to change.	We are providing an opportunity to change.
Sri Ram's victory over Ravan	achievement when one perseveres toward a specific aim.	Despite ups and downs, we engage in relationships and work.
Sri Ram's serenity in success and tragedy	The procedure will be the main focus. Success or failure can be the result.	Embracing individuals and circumstances for what they are won't cause much suffering.
The concept of *dharma*	More important than the result is the role and responsibility that have been entrusted to us.	can assist family members, workers, and students in putting more emphasis on their obligations and roles than on the results.

Source – *Review of Literature*

4. Conclusion & Future Scope of Research

Psychologists can benefit from the vast knowledge of the Ramayan and the conventional principles that are quoted in these works, even though the Ramayan has not been studied from a psychological standpoint as much. Mental health providers and psychological therapists can employ Ramayan stories in supportive, interpersonal, marital, and pair therapy and interventions. Researchers noted that knowledge of the epics and anecdotes from the Ramayan could improve customers' understanding of the circumstances and help them cope better, particularly for the Hindu population.

The Ramayan's depiction of psychological intervention & strategies offers a timeless guide for individuals facing challenges in their own lives. By examining how characters in the Ramayan navigate and cope with their emotions, individuals can draw inspiration for managing their feelings. By emulating the characters' approaches, individuals can develop a toolkit of effective coping strategies that best fit them encompassing resilience, purpose-driven action, social support, mindfulness, adaptability, emotional management, and more. The Ramayan emerges not just as an epic of antiquity but as a guidebook for mastering the intricate dance of life's challenges through strategic, emotional, and holistic coping strategies.

The Ramayan serves as a rich source of psychological well-being. Whether through Lord Ram's calm resilience, Hanuman's inspiring dedication, Sita's enduring strength, or the cautionary tale of Ravana, individuals can find valuable lessons to enhance their psychological health and holistic well-being. Adopting these ideas can help people develop mental health, purpose, and resilience in the face of adversity.

To enhance psychological health, it could be necessary to break down the boundaries between psychiatry and religion. The Ramayan does not have to be seen as merely an epic; rather, it may serve as a teaching tool to discuss the significance of psychology and values like self-awareness, honesty, respect, and logical decision-making, as well as the worth of family, society, and those with special needs. There is advice regarding mental therapy in the Ramayan. In the future, it will continue to be a timeless epic with lessons for people of all ages.

The Ramayan has had a profound impact on Indian culture and society for centuries. Its teachings continue to resonate with people across generations and cultures, offering guidance for living a meaningful and fulfilling life. The epic's emphasis on values, resilience, and positive thinking makes it a valuable resource for promoting mental health and holistic wellness.

As highlighted in this timeless scripture, “There is no deity more powerful than time”. Psychological well-being isn’t achieved overnight; it’s a continual process. Hence, immerse yourself in the Ramayan to uncover its profound lessons on holistic well-being.

5. References

1. Barnard A. *Grief counseling and grief therapy: A handbook for the mental health practitioner, J. William Worden* [Internet]. Vol. 49. 2019. [cited 2020. Mar 28], 10.1093/bjsw/bcz004 [Google Scholar]
2. Bhide SR, et al. Feasibility of using counseling techniques from Ramayan for managing negative emotions: An anecdotal review and analysis. Indian Journal of Psychological Medicine. 2022 Sep;44(5):499-503.
3. Chand SP, Kuckel DP, and Huecker MR. Cognitive behavior therapy (CBT). In: *Stat Pearls* [Internet]. Stat Pearls Publishing; 2020. [cited 2020. Mar 28], http://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK470241/ [PubMed] [Google Scholar]
4. Drilling E. *REBT anxiety and worry workbook*. 1st ed. Hazelden Publishing and Educational Materials; 2002, 16 p. [Google Scholar]
5. Eriksson J. The form of the soul on the body in Freud’s psychoanalysis. *Scan Psychoanal Rev*. 2014. Jul 3; 37(2): 99–106. [Google Scholar]
6. Goswami TG (2023) *Women's Perspective in the Ramayan* 5th International Ramayan Conference ISBN 978-1-960627-03-2 organized by Shri Ram Charit Bhawan, Houston, Texas, USA on 17-19 March 2023
7. Goswami TG (2021) *Principles and Practices of Management- The Ramayan Way* 4th International Ramayan Conference ISBN: 978-1-7362088-2-3 organized by Shri Ram Charit Bhawan, Houston, Texas, USA on 23-25 April 2021
8. Hersen M and Sledge W. *Encyclopedia of psychotherapy,* Vol. 2: I-Z. Academic Press; 2002. xv, 985 p. [Google Scholar]
9. Johari S. The Ramayan: an epic of Indian ideals and dharma. Creative Saplings. 2023 Feb 25;1(11):1-9.
10. Jones-Smith E. *Strengths-based therapy: Connecting theory, practice, and skills*. 1st ed. SAGE Publications; 2013, 480 p. [Google Scholar]
11. Khaledi Sardashti F, Ghazavi Z, Keshani F, and Smaeilzadeh M.. Effect of hope therapy on the mood status of patients with diabetes. *Iran J Nurs Midwifery Res*, 2018; 23(4): 281–286. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
12. Kirmani M, Sharma P, and Jahan F.. Hope therapy in depression: A case report. *Int J Pub Mental Health Neurosci*, 2016; Oct 2(3): 39–44. [Google Scholar]
13. Markowitz JC and Weissman MM. Interpersonal psychotherapy: Past, present and future. *Clin Psychol Psychother*, 2012; 19(2): 99–105. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
14. Markowitz JC and Weissman MM. Interpersonal psychotherapy: Principles and applications. *World Psychiatry*, 2004. Oct; 3(3): 136–139. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
15. Neki JS. Confidentiality, secrecy, and privacy in psychotherapy: Sociodynamic considerations. *Indian J Psychiatry*, 1992. Jul 1; 34(3): 171. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
16. Rajagopalachari C. Ramayan. Mumbai: Bharatiya Vidya Bhavan; 2023.
17. Ramayan Resources [Internet]. [cited 2020. Apr 19], http://valmikiramayan.net/resources.htm

18. Rand KL and Cheavens JS. Hope theory. In: Lopez SJ and Snyder CR (eds) *The Oxford handbook of positive psychology* [Internet]; 2009. Jul 30 [cited2020. Mar 24], https://www.oxfordhandbooks.com/view/10.1093/oxfordhb/9780195187243.001.0001/oxfordhb-9780195187243-e-030
19. Saleebey D. Power in the people: Strengths and hope. *Adv Soc Work*, 2008. Feb 12; 1: 127–136. [Google Scholar]
20. Saleebey D. The strengths perspective in social work practice: Extensions and cautions. *Soc Work*, 1996; 41(3): 296–305. [PubMed] [Google Scholar]
21. Surya NC and Jayaram SS. Some basic considerations in the practice of psychotherapy in the Indian setting. *Indian J Psychiatry*, 1996. Jan; 38(1): 10–12. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
22. Tulsidas G. Shri Ramcharitmanas. Gorakhpur: Geeta Press; 2001.
23. Varma VK. Present state of psychotherapy in India. *Indian J Psychiatry*, 1982; 24(3): 209–226. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
24. Wenzel A, Dobson KS, and Hays PA. *Cognitive behavioral therapy techniques and strategies*. American Psychological Association; 2016. 189 p. [Google Scholar]
25. Winston A, Pinsker H, and McCullough L. A review of supportive psychotherapy. *Hosp Community Psychiatry*, 1986. Nov 1; 37(11): 1105–1114. [PubMed] [Google Scholar]
26. Winston A, Rosenthal RN, and Pinsker H. *Introduction to supportive psychotherapy*. American Psychiatric Publishing; 2004. xii, 168 p. [Google Scholar]

रामायण के स्त्री पात्र

मीनाक्षी भाईलाल सोनी
(meenasoni1768.ms@gmail.com)

भारतीय समाज एवं जीवन पद्धति में स्त्री को भगवान की उत्कृष्ट कृति के रूप में स्वीकार किया गया है। इसका कारण यह नहीं कि वह शारीरिक चारित्रिक या मानसिक अथवा सुंदरता की दृष्टि से अधिक आकर्षक होती है , स्त्रीका सृष्टिका सर्वोत्तम होने के कारण उसमें मातृत्व है जो उसे महिमा प्रदान करता है। इसीलिए तो हम "या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता: नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमो नमो: कर मातृ शक्ति को वंदन करते हैं। "मातासम नास्ति शरीर पोषणं "इस प्रकार भारतीय संस्कृति आचार विचार तथा व्यवहार में स्त्री का मातृशक्ति के रूप में स्वीकृत है तथा सम्मान प्रदान करती है ।भारतीय जीवन मूल्य तथा भारतीय संस्कृतिमें श्री राम और श्री कृष्णा आदर्श चरित्र के सर्वोच्च अधिष्ठान है श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम है तो श्री कृष्ण लीला पुरुषोत्तम है।

श्री राम और कृष्णा भारतीय सनातन संस्कृति एवं संस्कारों के उद्यत आदर्श है किंतु उन उज्ज्वल चरित्र के पीछे उनकी माता के त्यागमय तपस्वी जीवन और प्रेम पूर्ण आदर्श आचरण की ही भूमिका रही है भारतीय संस्कृति के महान काव्य रामायण में स्त्री के उज्ज्वल चरित्र का सुंदर और यथार्थ वर्णन किया गया है ।रामायण महाकाव्य में बहुत से महिला यानी कि स्त्री पात्र हैं जैसे कि :कौशल्या, सीता, कैकयी, सुमित्रा, शबरी, अहिल्या,मंथरा, उर्मिला,तारा मंदोदरी त्रिजटा एवं सुपर्णखा इत्यादि।

कौशल्या

वाल्मीकि रामायण में महर्षि वाल्मीकिने श्री राम भरत लक्ष्मण के चित्रों का जो आदर्श और उत्तम वर्णन किया है वह उनकी वंदनीया माता कौशल्या सुमित्रा तथा कैकई के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्वका परिणाम है। कौशल्या के द्वारा दिए गए संस्कारों का ही परिणाम था श्री रामजी ने अयोध्या को चक्रवर्ती साम्राज्य प्राप्त हो गया था वह बिना किसी विषाद या दुख के 14 वर्ष के वनवास जानेको तैयार हो गए। तुलसी लिखते हैं की: "प्रसन्नताया गताअभिषेकस्तथा न मम्ले वनवास दुखत।मुखाम्बुज श्री रघुनाथस्य मे सदास्तु सा मंजुल मंगल।। रघुकुल को आनंद देने वाले श्री राम के मुखारविंद की जो शोभा राज्याभिषेक के समाचार के समय थी वही वनवास के समाचार समय भी थी यह स्थितप्रज्ञताका भाव भी कौशल्या की शिक्षा एवं दीक्षा का परिणाम था। राम साक्षात विग्रहवान धर्म थे उनको मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने वाली उनकी माता कौशल्या थी जिनके प्रति आदर प्रकट करते श्री राम भी कहते हैं:" सुनो जननी सोइ सुत बड़भागी जो पितृ मातृ चरण अनुरागी।।" माता कौशल्या दक्षिण कौशल राज्य की पुत्री थी वह राजा दशरथ की पटरानी थी यद्यपि दशरथ की सबसे अधिक प्रिय छोटी रानी कैकेयी थी। कौशल्या राजा दशरथ की अन्य रानी सुमित्रा एवं कैकई के साथ बहनों जैसा ही व्यवहार रखती थी जो की एक पत्नी के लिए कितना मुश्किल होता है अपने पति का प्यार किसी और के साथ बांटना !!!वह राम को कैकेयी की आज्ञा मानकर वनमेंमें जाने की अनुमति देती है और कहती है की मां की आज्ञा है पालन करना तुम्हारा कर्तव्य है यह उसके मातृत्व और पद गौरव की पराकाष्ठा है ।

सुमित्रा

दूसरी माता सुमित्रा है ।उनके चरित्र की ऊंचाई तो कोई छू भी नहीं सकता उनके दोनों पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न को राम एवं भारत की सेवा में सौंप दिए थे ।जो एक मां का अद्भुत त्याग का दृष्टांत है। जब लक्ष्मण अपनी मां सुमित्रा से बन जाने की आज्ञा प्राप्त करते हैं उसे समय मा सूमित्रा का जो कथन है मां की विशाल हृदयताका परिचायक है है जो केवल सुमित्रा जैसी मा ही दे सकती है। मा सुमित्रा ने कहा और तुलसी ने लिखा :"

तात तुम्हारी मातु वैदेही पिता राम सब भांति स्नेही
अवध तहां जहां रामनिवासु तहीं दिवस जहां भानु प्रकाशु"

और अंत में सुमित्रा जी नारी जीवन की सर्वोच्च सफलता और महत्व की विशेषता का वर्णन करते हुए कहती है कि उसे मां का महत्व तभी सफल होता है जिसका पुत्र श्री रघुनाथ जी की सेवा में समर्पित हो;

पुत्रवती जुबती जग सोई रघुपति भक्ति जासु सूत होई।।

कैकेई

श्री रामचरित्र में सबसे अधिक आलोचना माता कैकेयी की ही हुई है। श्री राम के वन गमन के कारण भूत होने के कारण ।कैकेई को रामायण के सभी रचयिताओं ने उनके चरित्र एवं स्वभाव पर दोषारोपण किया है और यही कारण है कि भारतीय जनमानस ने कैकई को कभी स्वीकार नहीं किया इसीलिए आज भी हिंदू परिवारों में लड़कियों का नाम कैकई नहीं रखा जाता पर वह जानते नहीं है कि इसके पीछे कितना बड़ा समर्पण है अपने प्रभु श्री राम की और कैकेयी मां का!!! जिसने खुद ने निंदा सहन की पर राम की कर्तव्य पथ को उजागर किया इसीलिए कहती है कि एको हम ना दूसरों अस्ति ।। कैकई कैकेय देश के राजा की पुत्री थी और दशरथ राजा की मानीती पटरानी थी वह न केवल सुंदर और विदुषी थी बल्कि रथ संचालक एवं

शस्त्र संचालन में भी निपुण थी। ऐसी पति पारायण साहसी तथा विदुषी कैकई की भी मंथराने ने मति फेर दी और इस उक्ति को सत्य साबित कर दिया कि

"बरु मलवास नरक कर ताता दुष्ट संगजन देही विधाता"

सीता

भारतीय स्त्रियों जनक सुता जानकी अर्थात सीता जी का स्मरण बड़े ही श्रद्धा और भक्ति से किया जाता है। मिथिला नरेश राजा जनक एवं सुनैना की सुपुत्री जानकी जी भारतीय नारी जगत की शिरोमणि है। सीता और राम भारतीय जनमन की धड़कन है। श्री सीता जी का जीवन हम सबके लिए एक प्रकाश स्तंभ की तरह है जो सदैव मानवता का पथ आलोकित करता रहेगा। सीताजी का एक नाम धरती पुत्री भी है उसी नाम के अनुसार उनका हम हमेशा धरती की तरह त्याग को तपस्या का पर्याय बन रहा।सीताजी एक राजकुमारी और उसे एक राजा की पत्नी होने के बावजूद जिंदगी में कई बरसों तक जंगल में दुख में बिताया, "महलों में पली बडी महलों में ब्याही गई ;महलका जीवन किन्तु मिला उन्हे नामका।"

फिर एक सामान्य जन कौन सी आशा रखें? रामचरित महाकाव्य में सीता केंद्र बिंदु है और उनके ही इर्द-गिर्द राम कथा का कथानक घूमता है फिर भी सीता के अतिरिक्त लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न की पत्नी का उल्लेख मिलता है; जिनका नाम क्रमशः उर्मिला,मांडवी एवं श्रुतकीर्ति था यह तीनों कन्याए भी सुंदरी गुणवान और विदुषी थी यह तीनों बहनों ने त्याग,सहनशीलता, स्नेह, विनम्रता, सेवा,सदाचारआदि गुणोंसे रघुवंश में अलौकिक आनंद की सृष्टि कर दी थी सीताजी को तो अपने पति के वनवास के कारण वनवास होगा किंतु उर्मिला को तो बिना किसी कारण पति का वियोग सहना करना पड़ा। सीताजी तो फिर भी अपने पति के साथ थी पर यह तीनों बहनों को तो पति का साथ भी नहीं मिला।
विरहाग्नि में जलकर 14 वर्ष का कठिन जीवन व्यतीत किया।

रामायण की एक और विशेषता यह है कि इसमें वर्णित सभी नारी पात्र चाहे वह मानव हो या दानव सभीका चरित्र स्तुत्य है। रावण की पत्नी मंदोदरी तथा मेघनाथ की पत्नी सुलोचना का चरित्र भी किसी से काम नहीं था।महारानी मंदोदरी का नाम तो प्रातः स्मरणीय देवियों में भी आता है।अपने पति रावण के प्रति पूर्ण समर्पण भाव था किंतु सदैव अपने पति को आगाह करती थी। मंदोदरी मय दानवऔर एवं अप्सरा हेमा की पुत्री थी। रावण की पत्नी एवं मेघनाथ एवं अक्षय की माता थी। मंदोदरी अपने पति को सन्मार्ग पर लाने के लिए अंत तक प्रयास करती है। मंदोदरी जानती थी कि रावण मानने वाला है नहीं फिर भी प्रयास तो किया, प्रयास तो प्रयास है। परिवार और समाज की भलाई के लिए प्रयास होते रहने चाहिए।

"जग में ऐसी अर्धांगिनी नहीं
मंदोदरी के जैसी संगिनी नहीं
जो अनुचित पर टोके
सुविधा संपन्न होकर भी
रावण को टोके।

यह दोलन राय कवि की कविता कितनी सूचक है !! जो हमें यह बताती है कि हमें अपने पति को वह गलत रास्ते पर हो तो अवश्य रोकना चाहिए। स्त्री का कर्तव्य है कि अपने पति को गलत रास्ते से रोके और उसको सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न करें।
इसी प्रकार मेघनाथ की पत्नी सुलोचना भी पति-पत्नी धर्म की श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में स्वीकार की गई

शबरी

शबरी का मूल नाम श्रमणा था। अपने विवाह के अवसर पर मूक् जानवरों के बलि देने के रिवाज की वह विरोधी थी और उसको बचाने के लिए उसने गृह त्याग कर दिया था एवं जानवरों को भी बचाया था। समाज विरुध्द यह कदम उठाकर वह एक नारी शक्ति का उदाहरण बनी है। उसने फिर मातंग ऋषि के आश्रममें बहुत सेवा की और उनके आशीर्वाद से भगवान राम के दर्शन का वरदान प्राप्त किया था।और अटूट प्रेम भक्ति से अनूठी आध्यात्मिकता हासिल की थी। शबरी हमारी भक्ति परंपरा का प्राचीनतम प्रतीक है।शबरी को प्रभु श्री राम ने नवधा भक्ति का अनमोल उपदेश दिया था।

अहिल्या

अहिल्या ऋषि गौतम की पत्नी थी वह बड़ी रूपवती थी यहां तक की देवराज इंद्र भी मोहित हो गया था। अहिल्या एक ऐसी नारी का प्रतीक है जिसका अपना कोई गुनाह ना होने के बावजूद सजा पाई।अहिल्या का चरित्र मानवीय रिश्तों में विश्वासघात एवं उनके घातक परिणाम और उनके प्रायश्चित को चित्रित करता है।

इसके अलावा भी रामायण में शूर्पणखा, त्रिजटा मंथरा जैसे प्रत्येक नारी पात्र नारी गुण धर्म की सकारात्मक व नकारात्मक मनोदशा को अपने चरित्र अनुसार प्रकट करती है। वाल्मीकि रामायण में नारी जीवन की विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। वह कन्या, पत्नी, माता, दासी गणिका का आदि विभिन्न रूप में दृष्टिगत होती है। कन्या जन्म यद्यपि पुत्र की तरह वांछनीय न था किंतु उपेक्षित भी नहीं था। कन्या का पालन पोषण भी एक राजकुमार की तरह ही किया जाता था।रामायण संपूर्ण मानवता की ऐसी अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर है जिसमें मानवीय चरित्र चाहे वह

पुरुष हो या स्त्री उसके सर्वोच्च आदर्श को स्थापित किया गया है। जिसका अनुसरण एवं अनुकरण हमें श्रेष्ठ मानव बनाता है।

आज जब स्त्री सशक्तिकरण और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिला आरक्षण की बात कही जा रही है हमें रामायण के पृष्ठो को पलटना होगा। जिसमें हम समाज निर्माता में स्त्रियों के अवदान एवं योगदान का पता चलता है ।समाज निर्माण में स्त्रियों की भूमिका और विशेष रूप से भारत की श्रेष्ठ सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों का योगदान का अभ्यास करने के बाद भगिनी निवेदिता ने कहा है कि :

भारत महान स्त्रियों का देश है इतिहास का साहित्य का कोई भी ग्रंथ देखिए कोई भी कालखंड में नजर डालिए प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक कालखंड में किसी न किसी महान स्त्री की कहानी वीरता पवित्रता नजर आती है।

आज के जमानेमें यदि हम रामायण का अच्छी तरह अभ्यास चिंतन ओर मनन करें तो किसी के भी जीवनमें महाभारत ना हो।
अतः स्वामी विवेकानंद के शब्दों में कहे तो :

भारत के भावि भूतों की गंजे तुम में वाणी।
मित्र सेविका और बनो तुम मंगलमय कल्याणी।।

Unraveling Ramayana: Rethinking Ramanujan's Theory of Diverse Retellings

Puspita Mondal
Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan
(puspita@dbmcrj.ac.in)

The proposed paper intends to examine how Ramanujan's research text "Three Hundred Ramayanas: Five examples and Three Thoughts on Translation" (1987), extends its influence through diverse retellings of different versions of the Ramayana, particularly among today's youth. For instance, youth are increasingly persuaded to contemplate on the alternative interpretations of Ravana, inspecting his character not merely as an antihero or villain, but as a believer in Jainism, characterized by modesty and harmlessness. Ravana also assisted Rama during the performance of a Yagna to seek blessings from the Sea-God, showcasing his noble spirit and compassionate nature. Such depictions contribute to portraying Ravana more as a hero, contrary to the conventional take. It needs to reconsider the pertinence of Ramanujan's argument in this essay from the perspectives of conventional mythological telling of the epic. This paper intends to explore the culturally sustained mythological narrative from three specific perspectives: 1. The conventional take of the epic; 2. Ramayana's alternative retelling of certain events from the epic; and 3. Interviews and Visual Presentations of the Epic in contemporary digital media. The paper intends to find a narrative pattern contextualizing each of these telling with the socio-political relations contemporary to it.

Keywords: Ramanujan, Ramayana, Alternative Interpretation, Visual Presentation

1. Introduction

The Ramayana is considered to be the one of the most important ancient Indian epics that holds profound significance in Hindu mythology, literature and history, attributed to Rishi Valmiki. The narrative explores the life and adventure of Rama, an incarnation of lord Vishnu, his wife Sita, his dedicated brother Lakshmana. The epic is divided into seven Kandas, (Bala Kanda, Ayodhya Kanda, Aranya Kanda, Kiskindha Kanda, Sundara Kanda, Yuddha Kanda, and lastly Uttara Kanda) each depicting different stages of Rama's life and adventures. The story begins with the Rama's exile from Ayodhya, embracing the life of an ascetic for 14 years of Vanabas, followed by the abduction of Sita, and culminates in Rama's victorious return to his kingdom again as a king after defeating Ravana with the help of Shri Hanuman and his monkey clan.

The Ramayana is considered as a sacred text, which works as a moral guide for millions of people. It portrays the ideals of Righteousness or dharma, devotion and sacrifice, it has deep influence in various aspects of Indian culture. It is the symbolic representation of eternal battle between good and evil, where the inevitable triumph of good over evil is predestined. The universal theme and wisdom of Ramayana transcended all the linguistic, regional and religious boundaries serving as unifying force, which entangling every diverse community in South Asia, thereby ascertaining harmony and solidarity across cultures.

Despites all its moral teachings and sacredness, some contradictions arouse within the mind of the readers, when they analyze the text by engaging their critical faculty. Rama is like the embodiment of virtue and righteousness, yet sometimes exhibit human flaws and conflicting motivations. Ramayana sometimes present its readers with unexpected immoral actions and judgement from the characters, that prompt the readers with deeper reflections on moral dilemmas of moral absolutes.

"Three Hundred Ramayanas" is an essay by A.K. Ramanujan, shows its diversity across different culture, tradition, and regions. Ramanujan explores how the story of Ramayana was retold and reinterpreted in various languages and cultural contexts with unique character construction, plot twists and moral lessons, that leads to the invention of three hundred Ramayanas. The critical analysis of this essay invites its reader to explore the multiplicity of Ramayanas and their portrayal of cultural understanding and literary portrayals. In order to provide deeper sense of the diversity within Ramayana tradition, he exemplified different instances from different regions, such as India, Thailand, Indonesia, and Cambodia. Ramanujan challenges the idea of fixed narrative and shows his reverence for meta-narratives, suggesting instead adaptability and multiplicity, and emphasized on creator's independence, which are essential for its cultural significance. Ramanujan also accentuated the challenges of translation across language, culture remarking how certain nuances, references and cultural contexts may be lost in the process.

Origin (Background Information): The Ramayana was written in Sanskrit language, which is considered to be the language of Gods, it is believed to be written during 500 BCE to 100 BCE, although the composition date remains as a matter of scholarly contradictions, as there is no historical evidence or record available to us, because the saints and sages was against inscribing their name after creating such epics and revered texts, and such texts underwent numerous retellings and adaptations over centuries, reflecting the cultural milieu of the time.

During the period when the text or the story of Ramayana emerged, India was experiencing significant societal transformations. It is not only a simple text written by any Muni, but it's a text which covering vast areas, which is even relevant today, it is a sacred scripture and a foundational text of Hinduism, which was gaining prominence, with its diverse range of thoughts and philosophical beliefs and the Ramayana played a crucial role in shaping and codifying its narratives and values. It presents the characters like Rama, Lakshmana, Sita and Hanumana following the path Of Dharma and presenting the insights of virtue and excellence for generations.

Ramayana offers profound acumen about India and specifically about Hinduism, inculcating the themes of Righteousness, courage, loyalty, love, and forgiveness. The teachings given by Rama and other saintly characters in the epic Ramayana, on karma, dharma, and moksha continue to reverberate its pertinence till contemporary period. It helps us gain spiritual enlightenment by following the lessons of Ramayana. It helps readers with practical instructions about how to navigate the challenges of life with kindness, honesty, resilience, and repentance. And motivate us to cultivate virtues such as modesty, generosity and devotion, which nurtures our personal growth and spiritual wisdom.

The Ramayana imparts numerous moral teachings and philosophical insights, including the importance of fulfilling one's duties and obligations, the power of devotion and faith, the consequences of greed and ego, the sanctity of familial bonds, and the victory of Virtue.

2. Contradictions in the Ramayana

While most of the times, Rama is depicted as the epitome of virtue and righteousness, some interpretations and retellings point out few instances where his actions seem questionable and contradictory to the portrayal of ideal husband, such as his abandonment of Sita due to public scrutiny. In the Uttar Kanda of Ramayana, Rama banishes Sita. Even it is said sometimes that, Rama himself produced his doubt on Sita's chastity and ask her to prove her purity, by the trial of 'Agni Pariksha'. This questions starkly deny his adherence to the principles of justice and compassion, and tries to prove his inability in maintaining balance between duty and personal relationships. On the other hand, from the feminist point of view, few scholars criticize Sita's passivity and compliance with societal norms.

Ravana is depicted as a powerful and intelligent demon king, and a believer of Shiva. Some interpretations highlight Ravana's complex personality and motivations, questioning the simplistic portrayal of him as a villain, because his abduction of Sita is considered as an act of deep love, while he never touches unwilling Sita.

Rama assists Sugriva in overthrowing Vali, despite the moral ambiguity of supporting one brother over another in a dynastic conflict. Raises questions about Rama's adherence to dharma and the ethics of political alliances. In the Kiskindha Kanda, Rama kills Vali from behind, by violating the rules of fair combat, which reflects Rama's disobedience from moral codes of honor in warfare.

Hanuman sets fire to Lanka while searching for Sita, causing widespread destruction and loss of life. Raises ethical questions about the use of violence and collateral damage in pursuit of a noble cause.

These contradictory statements reflect the complex understanding of Dharma portrayed through the character of Rama and diversity of the Ramayana's narrative practice. Scholars and interpreters wrestle with these inconsistencies, offering diverse perspectives and interpretations that enrich our understanding of the epic's enduring relevance and moral teachings.

3. Interpretations and Debates

Traditional interpretations incline towards the presentation of Rama as an ideal hero and protector of Dharma emphasizing obedience, sacrifice, devotion towards righteousness. On the other side Revisionist interpretations encounters these depictions as grand narrative and seeks to deconstruct dominant power structure of the society and try to highlight the marginalized voices.

The Nationalist interpretations of Ramayana are influenced by the cultural, religious and political factors. They show its adherence to cultural norms and acts as a guide to serve peace to those who follows scriptures and religious documents. It often emphasizes Rama as a symbol of unity and Hindu identity, which was challenged by alternative interpretations, which advocate for pluralism and inclusivity, and examine how the epic was appropriated by the authorities and absolutes to serve political agendas.

The contradictions within Ramayana arouse with the treatment of Rama against the marginalized character Shambuka, it was mentioned in the Uttar Kanda that Sambhuka undertook a severe penance in order to gain spiritual power and knowledge, and when Rama learnt that, he beheaded Sambhuka, thereby ending his penance and justified his action by saying it was his duty to maintain the sanctity of the caste hierarchy. Henceforth echo struggles against such action of Rama and about his justifications against the concept of equality, because equality prevails before God.

The power struggle and political conspiracy, meticulously portrayed in Ramayana reflects issues of governance, leadership and corruption in our contemporary time. The quest for power and authority depicted in Ramyana mirrors modern political atmosphere, where leaders face challenges to cope with ethical dilemmas and moral negotiations.

The Ramayana is so significant a text, or rather the story is so engaging that it also spread in other religious traditions. Religions like Buddhism, Jainism, Sikhism and others adopted the story and process their own version of oral narratives, which highlights religious pluralism, tolerance, unity and coherence.

The Ramyana also presents environmental concern and reverenced for nature which reflects contemporary concern for saving nature. Rama's alliance with Vanar sena or rather his interconnectedness with animals' underscores for sustainable development. Rama accept Vanavas also depicts his love to spend time in nature, by remaining far away from the luxuries of Mahal life.

Ramayana has been retold and interpreted in various ways across different regions, languages, and cultural contexts. Contradictions may arise due to the multiplicity of retellings and the inherent complexity of the narrative.

As the time passes, Ramayana met with variations and retellings, because of diverse textual traditions, cultural interpretations and historical contexts that have shaped Ramayana over time. There are several languages in which the storyline of Ramayana takes it different forms and narratives, like "Annamese, Balinese, Bengali, Cambodian, Chinese, Gujrati, Javanese, Kannada, Kashmiri, Khotanese, Laotian, Malaysian, Marathi, Oriya, Prakrit, Sanskrit, Santhali, Sinhalese, Tamil, Telegu, Thai, Tibetan"

(Ramanujan), and in many western languages. Ramanujan in his text shows us how the Ahalya episode takes it different form, tone, texture and detail, and changes its discourse within the narratives of Valmiki and Kampan. In one of the telling, it says Indra was emasculated and Ahalya was cursed, that she can only be save by the advent of Rama. On the other hand, the story depicted by Kampan says, Ahalya turned into stone and can only be saved by the touch of Rama's feet, and Indra's body will be marked with thousands of vaginas, as a mark of shame. Henceforth, all these differentiation in tellings are the result of various philosophical beliefs, societal values and individual perspectives that portrays the characters and events leads to deceptive contradictions.

Despite its variations, the consistency within the narrative is very much evident, because the contradictory elements within all the different texts of Ramayana doesn't disrupt the overall coherence of the narrative (except the jain telling of Ravana), sometimes the internal logic changes with the change in language and culture, but it always shows the triumph of good over evil. With the advent of Buddhism and Jainism, narratives of Ramayana changes, some contradictory elements produce Ravana with a very sympathetic lens, where he helped Rama during the Yagna and he was one of the wisest and a believer of Shiva. By closely examining various versions and adaptations of the Ramayana, our approach seeks to uncover the underlying themes, motifs, and narrative structures that transcend apparent contradictions, because Ramayana is not only myth, but it is one of the sacred texts of Hinduism which offer solace to everybody, who seeks support under the shade of religion. By contextualizing the Ramayana within its broader cultural and religious milieu, our methodology aims to elucidate the cultural specificity and symbolic significance of contradictory elements within the text. Knowing our heritage and vast aura of knowledge and wisdom delivered by the epics and puranas of Sanatan Dharma create a strong space for us to hold our identity. Not only that, but also by situating the Ramayana within its historical context, our framework enables us to appreciate the dynamic interplay between myth, history, and cultural memory, thereby enriching our understanding of the epic's enduring significance and relevance.

As we delve deep into the text of "Three Hundred Ramayanas", Ramanujan begins his essay with the question- How many Ramayanas have there been? It might be possible that there have been three hundred or Three Thousand Ramayanas. Now our next question will be: which one to follow? Here, we can say that, as it is considered to be one of the sacred texts, Valmiki's Ramayana is the one, but it's not the only text, because Ramayana changes with the change in culture, tradition, and places. While there are different variations in different versions and interpretations, the core narrative and the themes of Ramayana remain constant. Ramayana is like the rule-book or justification of victory of good over evil.

Ramanujan next placed the story where Hanuman went in Netherworld, to fetch the ring fell off from Rama's finger, Hanuman discovered there, in a plate full of rings, looks same like Rama's, produced before him by the King of Spirits. The King of Spirits said," There have been as many Ramas as there are rings on this platter". This particular narrative drives us to think about the concept of parallel universe, which states about the presence of infinite universes beyond our observable one. The Many-Worlds Interpretation of quantum mechanics, emphasize about the possibility of different kinds of outcome, give rise to the term "many worlds". Similarly, there are different versions of Ramayana, but it only changes over time because of oral story-telling, because it depends on the perspective of the storyteller and the audience. Again, oral stories may be retold from different outlooks, offering alternative perspectives on familiar narratives and characters. As stories passed down through generations, it changes with the change in cultural aspects, depending on the relevance with the time. Oral stories are deeply influenced by the places, cultures and perspectives, from which they originate.

Again, Ramanujan speculating these questions in his text "Three Hundred Ramayanas"- Jain tellings asking "How can monkeys vanquish the powerful *raksasa* worriors like Ravana?" But our answer will be, Hanuman was not just an animal, but a symbolic representation of superpower, because he was a son of Shiva (Agnidev handover the seed to Vaayudev, and then it was transferred to Anjanidevi, wife of Kesari, Hanuman was born. We should also keep in mind that Punjikasthala, daughter of Rishi Brihaspati, was pitilessly raped by Ravana, who took her rebirth as Banar, and then transformed herself in the form of Anjanidevi), Ravana, on the other side, was only one of the devotees of the Lord Shiva, and that kind of bhakt, who only need power to prove himself more powerful than Gods (Tamas Bhakti). Even Vanarasena received blessings from Lord Rama and Lord Shiva, the boon given by Shiva were instrumental in reinforcing the strength of monkey clan. Again, when Hanuman reached in Lanka in search of Sita, Hanuman infiltrated the enemy territory and gathered so many crucial informations from there, and his fiery tail and supernatural abilities instilled fear within Ravana's army. Ravana met with his destruction, because of his attitude to underestimate his opponents, because he denounced the internal power of unity and courage of Vanara sena, and considered them as insignificant beings, robbing him off from all the troops to defend himself. And, more importantly, Ravana was killed by Rama himself. Ravana was also destined to meet his death soon by the curse of Lord Shiva and Nandi, the protector of Kailasha (Nandi cursed him that Ravana and his army will be destroyed by Monkeys), and Rishi Brihaspati, Agnidev, Viswaskarma, Ashwinikumar and Varundev also cursed Ravana for his unethical behaviour towards their wives and daughter and therefore, Hanuman, Taar, Nil, Naal, Mahindra and Bibidh, and Susen (from Vanarasena) helped Rama to kill Ravana with their unique power.

"How can noble men and Jain worthies like Ravana eat flesh and drink blood?"- It is only the Jain version of telling, because we already know Ravana as someone, who meditated in order to gain unending power to conquer heaven. He is like an individual, who possess all the negative qualities, he not only drink and eat flesh, but also, he brutally killed so many kings, sages and molested queens, apsaras and even Goddess like Lakshmi.

"How can Kumbhakarna sleep through six months of the year, and never wake up even though boiling oil was poured into his ears, elephants were made to trample over him, and war trumpets and conches blown around him?"- In some versions, it is stated that it is a blessing from Brahma, requested by Kumbhakarna himself as a result of misunderstanding, because he intended

to ask invincibility. Again, some says, it is curse in order to save the race of human beings from the destructive power of Kumbhakarna, while others view this as a strategy to save his energy for battle.

For example, there are so many different versions of Ramayanas, that it is difficult for us today to differentiate which version was not included by Valmiki in his Ramayana. Like There was no concept swayambara in Valmiki's Ramayana, but it is mentioned by Tulsidas in Ramcharitamanas. Again, the story of abduction of Sita was there in Valmiki's Ramayana, but the concept of Lakshmanrekha was not there, it is included by in the Bengali version of Ramayana by Kritivas Ramayana. On the other hand, there are various stories related to the death of Ravana, some interpretations says that according to the Brahmaji's boon, Ravana had nectar in his stomach, and when Rama used Brahmastra and shot arrows in Ravana's abdomen, then Ravana died. On the other side, Kritivas Ramayana says, because of Rama's devotion to Maa Durga, Rama was able to kill Ravana. But Valmiki projected the story from very different perspective, when Rama's weapons were failing in front of Ravana, then he shot a powerful weapon, given by Rishi Agasthya, that contain the power of all the five elements of the Universe and henceforth Ravana was killed by Rama.

Rama's Treatment of Sita

Contradiction: Rama, despite being the upholder of truth, justice and righteousness, banishes Sita and doubted her chastity and compel her for Agni-pariksha

Plausible Explanation: In Uttara Kanda, Rama reluctantly banishes Sita, because Rama's love for Sita was deep and spiritual. Rama's action may be viewed as a demonstration of his commitment to preserve the sanctity of his kingship, because it should be observed in the context of societal norms and political dynamics followed in ancient India. It can also be seen from the perspectives of Rama to protect Sita from any potential harm or social stigma. By sending her away, Rama was ensuring her protection from any negative judgements and scrutiny of the then society. It is also like a sacrifice for Rama, in order to maintain his duty towards his kingdom. From political standpoint, his choice to exile Sita from his kingdom, was a pragmatic choice in order to prevent social unrest and preserve the integrity of his kingdom, it is like a sacrifice made for the greater good of the kingdom. In Kurma Puran, Scandha Puran and Devi Bhagbat it is stated that Ravana once tried to molest Vedvati, who killed herself by entering into fire and cursed him that in her second birth, she will take her revenge, so when Sita was kidnapped by Ravana, she was Vedvati transformed herself as Maya-Sita and Sita stayed with Swaha (wife of Agni), and when Sita was asked to prove her chastity, Agnidev take Maya-Sita in his fire and rescue Sita and told Rama about her purity.

Scholarly References: Scholars like Wendy Doniger and A.K. Ramanujan argue that Rama's actions reflect the patriarchal values of ancient Indian society, where a king's duty to maintain social order often took precedence over individual relationships.

Rama kills Vali:

Contradiction: Rama intervened in the political affairs of the kingdom of Kiskindha, his decision to side with Sugriva against Vali raise questions about his ethical implications of his actions.

Plausible Explanation: Vali banished Sugriva from his kingdom, and usurped the whole area of Kiskindha. Being a brother, it is also within his responsibility to protect his brother. Vali also mistreated Sugriva's wife Ruma, being a brother-in-law it is unethical to take physical advantage of Ruma forcefully. Vali even tried to kill Hanuman in his mother's womb, after knowing about the power of Hanuman and also killed those who supported Sugriva. By killing Vali Rama restored justice, because Vali unjustly captured the throne, and by confronting Vali, Rama ensured that justice will be served to the oppressed and weak. And it can be interpreted that Rama was being guided by divine will and continued the laws of higher purpose to restore positive aspects of the world. His actions are not just political, but something of greater plan, a part of cosmic plan to defeat evil and restore order within the society.

Hanuman's Burning of Lanka

Contradiction: Hanuman, revered as a noble and virtuous character, sets fire to the city of Lanka while searching for Sita, causing widespread destruction and loss of life, serves against the theory of preserving natural resources, ecosystem and biodiversity.

Plausible Explanation: Hanuman's actions can be interpreted as a strategic move to weaken Ravana's forces and create an opportunity for Rama's army to rescue Sita. In Sundara Kanda, it is described as a bold decision, which create fear with Ravana and his army, and pave the way for Rama's victory over Ravana. Considering the urgency of the mission to recue Sita against the threatening strength of Ravana's army was of paramount importance for Hanuman. It was his prompt decision to save himself and create a fear within the hearts of his enemies. While the destruction caused by the fire is regrettable, but it is justified to do something in order to save someone for greater good.

Scholarly References: Scholars like Robert Goldman and Sheldon Pollock emphasize the symbolic significance of Hanuman's burning of Lanka as a heroic act of resistance against tyranny and injustice.

Sambhuka killed by Rama:

Plausible Explanation: It was stated that during the reign of Rama, peace prevails in his kingdom, and death inevitably occurs with the due course of time, but its rare for a father to perform the last rites for his son. One day a man came with the allegation that because of Rama his son has died, Naradmuni intervened and said, somebody is doing Yasuriyagna for some grave reason, and if that particular person were to die, his son would regain his life again.

The controversies related to caste discrimination are emerging nowadays, there are certain stories that we need to reconsider in response to those arguments- like the story of Shraban killed by Dhasaratha, is known to all, now Shraban's father was Vaishya and his mother was Sudra in caste, and King like Dasharatha called them muni, showed his reverence towards them and was guilty for his wrong doing, as they were tapashwi, so it was never depicted that Sudra or Vaishya can never achieve the power of meditation, otherwise the curse of separation from his child, given by him was never implemented for Dasharatha. It can be interpreted as Varna- byabastha not caste discrimination. When Rama started his journey for Vanabas, King of Nishad (in today's terminology, he belongs from schedule tribe community) helped him initially in the journey by crossing the river Ganga, and at the time of returning from Lanka after his victory, Rama asked Hanuman to intimidated Bharat and Guha about the news of his arrival, henceforth, this particular detail stresses on the fact that there was no discrimination followed during the time of Rama, because for Rama, there was no distinction between a schedule tribe and his brother. Again, a disciple of Matang Rishi (belongs from Schedule tribe community) serves Rama with the fruit already tasted by Sabri.

Ravana is the worst enemy and lustful demon, because Ravana molested Rambha, wife of Kubera. Again, he ravished the chastity of Punjikasthala, for which Lord Brahma was enraged. Not only that, he also went Baikuntha with the intention to seduce Maa Lakshmi. Ravana also molested Sulekha, daughter of Sage Brihaspati, and tried to seduce Swaha- wife of Agnidev. In Anand Ramayana, attributed to Valmiki, shows evidences that King Padmaksh with his deep devotion asked Lord Vishnu and Maa Lakshmi to gift her with Lakshmi as his girl child, there Ravana killed King Padmaksh because he was unable to marry his daughter and that girl submerged herself in fire (Johar in Rajasthan). Even Ravana tried to test his power upon Lord Shiva, the giver. Ravana never tried to touch Sita because of the curse given by Naalkuber that whenever Ravana wants to touch any female body without their consent, his head will burst into pieces. Ravana killed so many kings, saints and sons of many sages like Anaranya, a suryavanchi king, sons of Varundev etc.

In defending Ramayana against all these contradictions and questions, it is essential to diagnose all the complexities and ethical dilemmas faced by the characters. And Ramayana is like a text where it is justifying its actions in order to get hold over evil and malicious, only to save our society from sinking into immoralities and corruptions. Defending the Ramayana against its contradictions helps preserve and promote a rich cultural heritage that has shaped the beliefs, values, and practices of millions of people across generations. Ramayana has inspired a rich literary and artistic tradition, which includes poetry, drama, visual arts, music, dance etc. Ramayana imparts social and moral values that preserve the legacy of good deeds. It serves as a guiding principle for personal conduct and social harmony, and also shapes ethical discourse and maintain societal norms in Indian society. The theme of love, faithfulness, compassion, universal brotherhood etc. resonates harmony and mutual understanding which transcends religious boundaries and generate interfaith unity. We should also consider the fact that despite Rama being the incarnation of Lord Vishnu, who took on a human form and lead an earthly life, he was presented as a mere mortal being without any divine power, yet supported by numerous Gods to prevent evil from spreading. "In Valmiki, Rama's character is not that of a god but of a god-man who has to live within the limits of a human form with all its vicissitudes". (Ramanujan, Page 142).

"Kampan here and elsewhere, not only makes full use of his predecessor Valmiki"s materials but folds in many regional folk traditions. It is often through him that they then become part of other Ramayanas" (Ramanujan, Page 141). The dynamic nature of the Ramayana's oral transmission, plays a vital role in disseminating throughout history, which allows flexibility, improvisation, and exaggeration in storytelling. It has allowed the epic to develop and assimilate various sections like linguistic, regional and religious aspects of our society. This dynamic process of retelling not only preserved the core narrative but also infused it with layers of meaning, ideology, culture, symbolism and local flavor. The different kinds of variations arising out of such inconsistencies within the text created by such diverse form of retellings. In Ramanujan's word "The story may be same in two telling, but the discourse may be vastly different. Even the structure and sequence of events may be the same, but the styles, details, tone and texture- and therefore the import- may vastly be different." (Ramanujan, Page 134).

The narrative complexities within Ramayana also stems from the richly woven tapestry of subplots, symbolism, and philosophical teachings. It delves into the intricacies of familial relationships, societal dynamics and the consequences of actions, the particular role played by characters, contributes to the larger narrative. The allegory portrayed by the Ramayana offers deeper meaning to decode, as for example the Vanabas life embraced by Rama may be interpreted as the journey towards self-discovery, on the other side abduction of Sita can be viewed as the struggle between virtue and vice within the individual psyche. It can also be seen as a choice to remain strong at the face of adversity. The diversities enrich the narrative with multitude of perspective and interpretations, ensuring its relevance across different communities. "The name of many characters in the Thai work are not Sanskrit names, but clearly Tamil names (for example Rsyasrnga in Sanskrit but Kalaikkotu in Tamil, the latter borrowed into Thai) Thus obviously transplantation take place through several routes." (Ramanujan, Page 143).

In conclusion, reconciling contradictions within the Ramayana requires a holistic approach that integrates cultural adaptation, oral tradition, narrative complexity, alternative interpretations, and philosophical insights. By embracing the diversity and complexity of the epic's narrative tradition, we can appreciate its enduring relevance and moral significance across diverse cultural and philosophical contexts.

4. Conclusion

The paper examines the Ramayana, highlighting its enduring significance and value despite the presence of contradictions. It explores various contradictions within the epic, such as inconsistencies in character portrayals, plot variations, and moral ambiguities. Through a nuanced approach that considers cultural adaptation, oral tradition, and narrative complexity, the paper offers reconciliatory interpretations for these contradictions.

If we consider Ramayana as text, a mere creation of mind or minds, Imagination is like the driving force behind creativity, enabling writers and creators to present their unique point of view. Imagination acts as a catalyst, enabling us to visualize the potentiality and possibilities of certain facts beyond all the constraints of reality. "Sita burst out, 'Countless Ramayanas have been composed before this. Do you know of one where Sita does not go with Rama to the forest?'" (Ramanujan, Page 143). Therefore, anybody is like independent thinker and can interpret and create as many narratives as they wish, it is upon the readers acceptance which one they want to follow. Even History is distorted, but acknowledging the limitations and complexities of historical interpretations does not diminish the value of studying history. It only helps us enrich our understanding of the past societal change and complexities of human behavior. Controversy and quest for knowledge is good, but justifying the character like Ravana is unacceptable. Humans have tendency to rationalize their guilt by producing narratives that justify their deeds and behavior. The phenomena of Cognitive Dissonance allow individual to maintain a sense of moral integrity in the face of conflicting beliefs or behavior. Just for example, the web series "Asura" is a crime thriller, where the antagonist character tried to posit his belief in the destructive power of darkness and his role as a force of chaos and change within society, also expands his profound impact and justifying his actions by blurring the lines between good and evil.

In conclusion, the Ramayana's contradictions do not diminish its significance but rather enrich its narrative tapestry, inviting readers to explore deeper truths and moral complexities. A nuanced and respectful approach to interpreting religious texts is essential, as it fosters understanding, dialogue, and appreciation for diverse cultural and spiritual traditions. By embracing the complexity and diversity of religious narratives, we can glean valuable insights into the human condition and the timeless quest for moral and spiritual fulfillment.

5. Bibliography

1. Valmiki. *The Ramayana of Valmiki*. Translated by Ralph T.H. Griffith, Project Gutenberg, 1996.
2. Ramanujan, A.K. "Three Hundred Ramayanas: Five Examples band Three Thoughts on Translation." Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia, edited by Paula Richman, University of California Press, 1991, pp.22-48.
3. Damani, Gaurang. "The Real Truth About Ramayana: Exposing All Myths!" YouTube, uploaded by Anvikshiki, January. 2024, https://www.youtube.com/watch?v=OGWR0jnVhF4&list=PLjwEirJWB1CFVP00kMIO3i-WslE4xKfLA&index=4
4. Damani, Gaurang. "The Hidden RAVAN Story" YouTube, uploaded by Anvikshiki, November. 2023, https://www.youtube.com/watch?v=Bmk3-yFY3kw
5. RAAZ by Big Brainco. "Valmiki Ramayana is Fake? – Unknown Stories from Ramayana" YouTube, uploaded by RAAZ by Big Brainco, 23 Feb. 2024, https://www.youtube.com/watch?v=Y6oM5IxSPMU

रामायण तंत्र से आधुनिक आतंकवाद का अंत

वृषाली नरेंद्र वावदे
(vrushalivavade.30@gmail.com)

आतंकवाद!! यह समस्या आजकल की नहीं बल्कि हजारों सालों से चली आई विदुषित मनोवृति है। यह आतंकवाद मिटाना एक दूजे का काम नहीं, सारे समाज को संगठित होना पड़ेगा। हमारे आराध्य श्री राम ने अपने तारुण्यावस्था में महाकाल रावण की दहशत का पूर्णतया विनाश किया। क्या यह कर्तृत्व अकेले श्री राम का था? बिल्कुल भी नहीं!

'सब समाज को लिए साथ में, आगे बढ़ते जाएंगे'

इस पद्य पंक्ति के अनुसार सबको संगठित करके आतंकवाद को जड़ से मिटाया है। निश्चित ही हमारा ऐतिहासिक रामायण महाकाव्य आतंकवाद मिटाने में आज भी प्रभावी मार्गदर्शक है।

सिद्धाश्रम यानी विश्वामित्र का आश्रम! उनके शिष्य नक्षत्र की अत्यंत क्रुरतापूर्ण हत्या तथा सुकंठ को भी निर्ममता से नोचा गया था। विश्वामित्र ने तुरंत सिद्धाश्रम के समीप सारे निषादों, शबरों, भीलों तथा आर्यो के ग्राम पालो को तथा दशरथ के सेनानायके बहउलआश्व को खबर देने व परिस्थिति बताने को व अपराधियों को दंडित करने कहां। यदि सिद्धाश्रम अयोध्या की सीमा के बाहर हो फिर भी सीमांत भूमि शत्रु के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। क्योंकि सीमा तक आया आतंक सीमा के भीतर प्रविष्ट होने में देर नहीं लगती। किसी भी मुखिया ने उत्तर नहीं दिया, जब उन्हें ज्ञात पड़ता कि यह राक्षसों का कृत्य है और राक्षस ताड़का के सैनिक शिविर से संबंधित है तो वह भयभीत हो जाते हैं। सिद्धाश्रम में तपोवल होने के कारण यह घटनाएं कम होती है, मगर बाहर बजारहट में स्त्रियों से छेड़छाड़, उन्हें उठा ले जाना, धन छीन लेना, विरोध करने पर पीट देना या उनकी हत्या कर देना सामान्य हो चुका है। सेनापति बहुलाश्व को राक्षस शिविर की ओर से अनेक उपहार प्राप्त हुए हैं अतः वह उनके विरुद्ध में कोई कार्य नहीं करते। राक्षसों की कृतियों को अनदेखा किया जाता है। इतना ही नहीं अनेक बार यह राक्षस पहले ही खबर कर देते हैं की विशिष्ट स्थान, विशिष्ट समय पर, विशिष्ट अत्याचार करने जा रहे हैं, शान प्रतिनिधि अपने सैनिकों को रोक ले और फिर उनको पुरस्कार दिया जाता है।

जब शासक राक्षस हो गए हो गए हो तो न्याय का कर्तव्य ऋषि का होता है.....! कितना असुरक्षित है आर्यावर्त! सरा जंबूद्वीप!!

मन ही मन निश्चय करके अपने गिने चुने शिष्यों के साथ वह अयोध्या गए और राम तथा लक्ष्मण के साथ सिद्धाश्रम के लिए मार्ग क्रमित हुए। नगर के प्रवेश द्वार पर ही सारे रथ वापस भेज दिए वह साधारण मनुष्य की पीड़ा का अनुभव राज पुत्रों को कर देने के लिए पैदल यात्रा प्रारंभ की। समाज के प्रश्न सुलझाने है तो पहले सामान्य समाज जीवन अपनाना पड़ेगा। जिसने कभी पीड़ा नहीं सही वह दूसरों की पीड़ा नहीं जान सकता। कितनी दूर दृष्टि थी ऋषियों की सोच में! सिद्धाश्रम के मार्ग में तड़का वन से होकर जाना था। वहां से पहले घाटी पर गुरु विश्वामित्र ने राम के सामर्थ्य एवं मनोबल को जानकर उन्हें दिव्यास्त्र प्रदान की। तड़का वन में ताड़का वध करके राम ने अपना समर्थ प्रकट किया। ताड़का वध पश्चात बाकी राक्षस चुप नहीं बैठेंगे, वे तैयारी के साथ आएंगे और आक्रमण करेंगे। यह विश्वामित्र ने राम को आश्रम वासी तथा नगर जनों के साथ मिलकर योजना बनाने के लिए कहा। क्योंकि स्वयं विश्वामित्र उन्हें मारनें में सक्षम थे, मात्र जब सामान्य नागरिक प्रतिकार करना सीखेंगे तो ही वह अपना तेज वह आत्मविश्वास पुनः प्राप्त करेंगे। अत्याचार के विरुद्ध खुद खड़ा होना चाहिए तो ही हम आतंकवाद का समूल नाश कर सकते हैं।

राम ने अकेले ताड़का वध किया यह सूचना इतनी आत्मविश्वास लौटा देने वाली थी की एक रात में सिद्धाश्रम सैनिक शिविर लगने लगा। आसपास के नगर जल अपने कुटुंब समेत आश्रम में स्थित थे। पुरुष सैनिक मुद्रा में युद्ध के लिए प्रस्तुत थे और औरतों ने सारे युद्धेतर कार्य सांभा लिए थे। राम के प्रभाव ने यह चमत्कार किया था। अगले दिन यज्ञ प्रारंभ हुआ, मैरिज और सुबह होने आक्रमण किया। मारिच राम के मानवास्त्र से जख्मी हो दूर फेंका गया और सुबाहू अग्नेयास्त्र से मारा गया। दूसरी ओर से बाकी राक्षसों ने लक्ष्मण की टोली पर आक्रमण किया। वहां ग्रामीण तथा निषाद योद्धा लोग प्रतिकार करने सिद्ध थे। अनेक राक्षसों को उन्होंने मार गिराया वह एक समय बचे हुए राक्षस भायग्रस्त होकर खुद की जान बचाने के लिए भाग पड़े। अनेक सालों के बाद सिद्धाश्रम में निर्विघ्न यज्ञ संपन्न हुआ। राम के व्यवहार ने आश्रम वास तथा नागराजन प्रतिकार करना सीखे और अपना खोया हुआ आत्मिक बल पुनः प्राप्त किये।

राम लक्ष्मण ने ताड़का, सुबाहू तथा मारिच को मारा अपितु सारे नगर जनों के साथ मिलकर सारे राक्षस शिविर भी नेस्तनाभूत कर दिए अपने दायित्व का गलत उपयोग करने वाले सेनानायक बहुलाश्व तथा आर्य होते हुए भी राक्षस व्यवहार करने वाले बहुलाश्वपुत्र देव प्रिय को भी मृत्युदंड दिया। राक्षस तो दोषी थे ही, उनको बचाने वाले शासक भी उतने ही दोषी थे राम ने रक्षा शिविरों से मुक्त कराए स्त्रियों का जिनके पति राक्षस द्वारा मृत हो चुके थे और वह सारी रक्सन का अत्याचार अपने पेट में पाल रही थी, वह अपने घर भी नहीं जा सकती थी, उनका भी पुनर्वासन किया।

समाज कितना भी सुशिक्षित एवं बुद्धिमान क्यों न हो जब स्त्री के चरित्र की बात आती है, स्त्री को ही सहन करना पड़ता है। कुलपति गौतम की पत्नी अहिल्या को भी देवराज इंद्र के अत्याचार की सजा मिली। 25 साल तक उन्हें अपने पति तथा पुत्र शतानंद से दूर और समाज से परे एकांत में रहना पड़ा। जनकपुर जाने से पहले राम ने अहिल्या का उद्धार किया और उन्हें सम्मान के साथ पुत्र शतानंद और गौतम को सोपा।

राम सीता विवाह : एक योजना

सीता भूमि कन्या थी, राजा जनक को भूमि पूजन के दौरान खेत में मिली थी। राजा होने के साथ-साथ वह ऋषि भी थे इसलिए उसे बालिका का त्याग ना कर सके। अपनी पुत्री के समान उन्होंने उसकी परवरिश की। अब वह विवाह योग्य हुई थी। गुणवान होने के साथ-साथ वह असामान्य रूपवती भी थी यक्ष, गंधर्व, राक्षस उसे पाने की आस लिए अपने प्रस्ताव लेकर आते थे; मगर राजा जनक सीता के लिए आर्य राजा की प्रतीक्षा कर रहे थे। सीता अज्ञात कुलशिला है यह बात सब और फैल चुकी थी इसलिए कोई आर्य सम्राट विवाह के लिए तैयार ना होता था। और दूसरी बात राजा दशरथ की तरह जनक भी सामर्थ्यशाली राजा थे। अगर दशरथ और जनक साथ खड़े होंगे तो राक्षसों का प्रतिकार करने के लिए अच्छा ही था। राम का जन्म राक्षसों के समूह नाश के लिए हुआ था, इस दृष्टि से सारे ऋषि मुनि राम को तैयार कर रहे थे। ऐसे में अगर किसी महत्वाकांक्षी राजकुमारी के साथ राम का विवाह होता तो वह राम के मार्ग की बाधा बन सकती थी। सीता सीता अज्ञात कुलशिला जरूर थी मगर उसके संस्कार निश्चित है आर्य राज्य पुत्री समान थे। समाज के इस बर्थडे नियम को बदलना जरूरी था, अतः विश्वामित्र ने सीता को ही राम के लिए योग्य समझा।

वचन पूर्ति के लिए वनवास गमन

माता कैकेई के वचन पूर्ति के लिए राम के साथ-साथ सीता और लक्ष्मण वनवास के लिए प्रस्थान किये। निषाद राज गुह ने राम कों शृंगवेरपुर का राज्य देने की तैयारी दर्शायी, मगर राम तो राम थे उन्होंने पितृ वचन मां से स्वीकारा था। नगर प्रवेश निषिद्ध करके वनवासि जीवन अपनाया।

सुमेधा....! एक भूल कन्या। सीता की पहले वनवासी सखी। तुम्भरण..! पहले किरात था धन आने के पश्चात राक्षस हुआ। सारे भील वनवासियों पर अपनी सट्टा प्रस्तावित कर उनको दास बनाता था, और जो विरोध करें उनको मारकर खा जाता था। कुंभकार, धातु कर्मी कोई भी अपने मन से कुछ भी निर्माण न कर सकता था। कुंभकार को अपना शास्त्रागार दिखाकर, उसमें नव चेतना निर्माण कर मति परिवर्तन किया। तुम भरण का आतंक समाप्त किया उसके पश्चात इतर ग्राम वासियों को शास्त्र निर्माण का आवाहन किया। शास्त्र परिचालन स्वयं राम लक्ष्मण सिखाएंगे कहकर आश्वस्त किया। कालकाचार्य जैसे ऋषि शस्त्र देख कर चौंक गए थे। आश्रम में बैठे शस्त्र शिक्षा देने से उनका दायित्व पूरा नहीं हो सकेगा। सिद्धाश्रम क्षेत्र के ग्रामवासी जिस प्रकार भयभीत थे इस प्रकार इस क्षेत्र के भी ग्रामवासी आतंकीत थे। तुम्भरण ने रात के अंधेरे में राम के कुटीर पर आ धमकाने का प्रयास किया, मंत्र सजग राम लक्ष्मण की टोली ने अच्छा प्रतिकार किया। तुम्भरण का झूठा शक्ति प्रदर्शन समाप्त हो आतंक भी मिट गया। उनके पीछे आए हुए ग्राम वासियों ने सब अपनी आंखों से देखा वह अपना आत्मविश्वास प्राप्त किया वह राक्षसों के विरुद्ध खड़े होने के लिए सिद्ध हो गए। धातु कर्मी शास्त्र बनाने में जुड़ गए, महिला प्रशिक्षण में सीता, राम का निर्देशन तथा लक्ष्मण की निगरानी के फल स्वरुप उस क्षेत्र का आतंक नष्ट होता गया।

चित्रकूट पर चतुरंगिणी सेना समेत भरत

भरत अयोध्या की चतुरंगिणी स सेना के साथ चित्रकूट पर आ रहे हैं। उसके साथ तीनों माताएं, मंत्रिमंडल, राजगुरु तथा निषाद राज गुह भी है। पितृ आज्ञा पूर्ण करने में लगे श्री राम को अगर भरत ने मना लिया तो वे चित्रकूट से वापस आएंगे? ऋषि भारद्वाज तथा कुलपति की आशंका। मगर नहीं राम ने अपना संकल्प पूरा करने का निर्णय लिया वह भारत राम के पादुका लेकर अयोध्या राम का सहचारी बनकर राज्य करेंगे ऐसा निश्चित हुआ।

वनवास को दो माह बीत चुके थे और अब तक राक्षसों को राम के शस्त्र प्रशिक्षण के बारे में पता चल गया था। राम पर तो सीधा आक्रमण नहीं कर सकते थे तो ग्रामवासी और आश्रम वासियों पर अत्याचार आरंभ हुए। उनके हाथ तोड़ देना, कोड़े से मारना तथा अग्नि दाग.!! फिर ऋषि सारभंग ने आत्मदाह कर लिया। आगे विराध से सामना हुआ। वह सीता को झपट के भागा तब पहली बार राम ने सीता का वियोग महसूस किया। विराध गंधर्व था, बलशाली होने के अहंकार में राक्षस बन गया था।

जन्म स्थान के आसपास का भाग उपजाऊ खान वाला था सभी खानें राक्षसों के आधिपत्य में थी। जन सामान्य को पशुवत रख के उन्होंने उन पर अपना स्वामित्व प्रस्थापित किया था। एक खान जो उग्राग्नि के अधिपत्य में थी राम ने मुक्ति की; पर इतर खान राक्षसों की होने के कारण वह चुप ना बैठे। राक्षस व देवराज इंद्र इसे कैसे सहन करेंगे? अपने ही खेत में मजदूर की तरह कम करो, पुत्र विवाह के लिए स्वामी से लिए कर्ज को ना लौटा देने पर यह राक्षस उनकी बहू बेटियों को तक क्रय कर लेते थे। इन खंड स्वामियों के विरुद्ध राम और वनवासियों ने पहला युद्ध किया और उसमें विजई भी हुए थे। यह विश्व विजय की ओर पहला कदम बढ़ा था।

इस पहले विजय के बाद राम के साथ और भी लोग जुड़ गए। महिलाएं भी अपने दैनिक कार्य निपटाकर शास्त्र परिचालन सीख रही थी। लोगों का संगठन हो उन में स्फूर्ति जाग रही थी। खुद पर हुए अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की हिम्मत जूटा के वे न्याय के लिए जूंझ रहे थे। लक्ष्मण ने हर एक गांव में एक गांव से दूसरे गांव तक के मार्ग में सशस्त्र चौकियां स्थापित कर दी थी ताकि राक्षसों की आहट तक चुप ना सके।

राक्षस मित्र वाली

किष्किंधा राज्य के राजा वाली वानर जाति के पराक्रमी राजा थे। राक्षसों ने उनकी स्त्री लेंबता जानकर उन्हें अपने पक्ष में कर लिया था। वाली की अप्रत्यक्ष मदद से राक्षसों का अत्याचार बढ़ रहा था। मायावी वध के बाद छोटे भाई सुग्रीव से झगड़ा कर उसको राज्य से निष्कासित कर दिया और उसकी पत्नी रोमा को भी बलात अपने पास रखा। सीता का हरण हुआ था और राम व सुग्रीव सम दुःखी थे। राम ने सुग्रीव से मित्रता कर बाली को दंड स्वरूप मृत्यु दंड दिया और अपना वादा पूर्ण किया। फिर सुग्रीव का राज्याभिषेक करके किष्किंधा राज्य से मैत्रीपूर्ण संबंध प्रस्थापि किये। अब वादा निभाने की बारी सुग्रीव की थी। वाली को करने के पश्चात रावण की सत्ता भरपूर आकूंचित हो गई थी। फिर वर्षा ऋतु के समाप्ति के बाद सीता की खोज... आगे हम सब जानते हैं।

समारोप

आतंकवाद यह एक वृति है। कर तथा विभक्ति समाज पर स्वामित्व प्रस्तावित करके मनचाहा वतन करने की पाशवी सोच! समाज जब आत्मविश्वास प्रकार संगठित हो उनका प्रतिकार करता है तो आतंकवाद मिट जाता है। पर यह कार्य संगठित समाज ही कर सकता है। प्रतिकार के लिए संख्या से अधिक संगठन चाहिए। प्रभु श्री राम ने हमें यही संगठन सिखाया है। वनवास में निकले अकेले राम ही थे मात्र रावण वध तक उनके साथ अयोध्या से लंका तक का संगठन था। राम ने जन्म सामान्य का आत्मविश्वास लौटाया, उन्हें शस्त्र परिचालन, आत्मरक्षा, स्वत्व रक्षा सिखाई और इसका परिणाम तो हम जानते ही हैं। वह एक राम लहर थी जो रावण वध के कार्य में जुट गई और आज भी यह राम लहर है जिसने 500 साल के संघर्ष के फल स्वरुप राम मंदिर निर्माण किया। अब राम आ गए हैं तो यह राम लहर भी निश्चित रूप से आधुनिक आतंकवाद का अंत करेगी। कैसे..?

'यह उथल पुथल उत्ताल लहर पथ से न डिगाने पाएगी।
पतवार चलते जाएंगे मंजिल आएगी..आएगी।।'

संदर्भ ग्रंथ

1. वाल्मीकि रामायण
2. अभ्युदय - नरेंद्र कोहली

The Process of Organizational Change through the Lens of the Ramcharitmanas

Sukanya Sangar
Indian Institute of Management Ahmedabad
(sukanya.sangar@gmail.com)

To grow in life, all must work. But at times all might need a little push. As stated by John C. Maxwell, 'change is inevitable, but growth is optional' and that growth can be achieved when an effective leader assures to bring that change in his followers. Through this paper, the researcher aims to showcase the process of organizational change among followers found in the Ramcharitmanas. Thus, Kotter's eight stage process of creating a major change is evaluated through the episode between Hanuman (follower) and Jambavan (effective leader) as stated in the Kishkindakand of Goswami Tulsidas's Ramcharitmanas.

Keywords: Change, Kotter, Human Resource Management, Hanuman, Jambavan, Ramcharitmanas

1. Introduction

In Bharat, almost every Sanatani household carries the Ramcharitmanas written by poet Goswami Tulsidas in the 16th century, even if they do not possess the Ramayan, originally composed in the 5th century BCE by Sage Valmiki. The two greatest epics of Hindu literature are The Ramayan and The Mahabharat. But the most known version of the Ramayan is the Ramcharitmanas. All incidents mentioned in these texts carry so much value that it becomes impossible to ignore them. Intellect have always used these texts as the backbone for understanding complex new concepts. Despite being written so many centuries ago, these texts prove to be relevant even today. There are various incidents in the Ramcharitmanas that are used to not only understand but also apply many Human Resource Management concepts not just in the classroom but also in the workplace. This also helps people understand concepts of religion while acing the corporate world. As in the words of Mahatma Gandhi, "Tulsidas's Ramayana is a notable book because it is informed with the spirit of purity, pity and piety. It is the greatest book of all devotional literature" thus, being considered in this research.

Ramcharitmanas

The "Ramcharitmanas" is translated as "Ram ka Charitra" which means "Character of Ram". The Ramcharitmanas shows how Gods can be humans. The version of Ramayan referred in this research is the "Ramcharitmanas", the epic poem written by Goswami Tulsidas (1532-1623). The characters being focused upon in this research are Jambavan and Hanuman with regards to their incident in the Kishkinda kand which explains how Hanuman recalls his forgotten potential.

Definition of Human Resource Management

"Planning, organizing, directing, controlling of procurement, development, compensation, integration, maintenance and separation of human resources to the end that individual, organizational and social objectives are achieved." – Edwin Flippo
Thus, human resource management (HRM) is the practice of recruiting, hiring, deploying, and managing the employees of an organization. But their work does not stop here. There are many undefined roles that a Humar Resource person takes up. One of their key roles is to govern workers and the relationship of the organization with its employees. The term human resources was first used in the early 1900s, and then more widely in the 1960s, to describe the people who work for the organization. Since humans are social animals and thus, depend on socializing, it becomes important to understand such concepts as per history.

Kotter's Eight Stage Process of Creating a Major Change

Kotter's eight stage process of creating change talks about the steps required to take place to achieve organizational change. There is a clear accent on leadership role in change and change is the utmost focus in this process. Many critics have labelled this as the best-fir for emergent rather than planned change management. Thus, the role of an effective leader can do wonders to bring change in the followers.

2. Review of Literature

The aim of this present research study is to relate HRM concepts along with the Ramcharitmanas to help the future generations to understand HRM through it. The Ramcharitmanas is a very important epic in Sanatan literature that has been researched upon by thousands of researchers over the past centuries and researches are still being conducted in all fields of work. The researcher has focused upon the researches done on or related to the Ramcharitmanas by Tulsidas. Some of such researches are stated below

1. A research study titled 'Stimulating Constructive and Destructive Leadership Behaviours through the Emperor of Lanka and Villain of Ramayana' psychologically analyses the leadership style and practises of Ravan presented by Tulsidas in the Ramcharitmanas (Shyam, B. R., & Aithal, P. S., 2023)

2. A research titled 'Leadership Styles In Ramayana And Lord Rama a Leader To Emulate For His Ethical Leadership Style' delves into the importance of the leadership behaviour of Lord Ram along with finding the relevance of leadership styles in the present corporate world (Gupta V, & Sinha A R., 2023)
3. A qualitative research titled 'Learnings from Sundar Kand of Ramcharitmanas and its Application in our Lives' states 15 learnings related to work ethics, social behaviour and several topics covered in the Sundar Kand of the Ramcharitmanas (Sinha A.K., 2014)
4. 'Leadership and Managerial implications for practice and organizational excellence from a drop of the Case of Ramayana A Celebrated Indian work on Wisdom' is a research which analysed a part of the Ramayan for its varied implications (including legal issues, succession issues, conflicts, manipulation by the top-management, etc.) prescribing leaders and managers for their organizational excellence in the modern times. (Chendroyaperumal, C., & Chandramouli, S., 2011).
5. 'Transformational leadership style demonstrated by Sri Rama in Valmiki Ramayana' is a research study which explores the transformational leadership style demonstrated by Sri Rama in Valmiki Ramayana (Muniapan, B. A. L., 2007)

3. Methodology

Aim/Objective

The Aims/Objectives of a research study are the points that the researcher wishes to explore, gain more knowledge and research about. The points that will be discovered by the researcher through this research study are stated below as the Aims/Objectives of this research paper

1. To identify the HRM concepts found in the Kishkindakand of the Ramcharitmanas.

Research Tools

The Kishkinda Kand in the Ramcharitmanas epic written by great poet Goswami Tulsidas was analysed in this research.

Procedure

The Kishkinda Kand of the Ramcharitmanas was analysed in this research to find a unique connection between HRM concepts and the Ramcharitmanas.

Selection of Sample

The selection of sample was based on the Kishkinda Kand of the Ramcharitmanas epic and the incident seeming most relevant to the researcher was chosen to analyse.

Research Design

On the basis of the procedure, the researcher decided to analyse the conversation between Jambavan and Hanuman to understand the stance of an effective leader and the process of him creating a major change in the follower, here being Jambavan and Hanuman respectively.

4. Results and Discussions

The following is the HRM concept analysed by the researcher in the Kishkinda Kand of the Ramcharitmanas –

Kotter's Eight Stage Process of Creating a Major Change

John Paul Kotter, a professor of Leadership, Emeritus, at the Harvard Business School. He has devised many models, theories and concepts which have till date been very helpful for the business world. "Change is the only constant" as stated by Heraclitus, Greek philosopher. Similar can be said for business. What was true 1000 years ago, is still true. Thus, projects, concepts, technology all come and help change and develop business, but the core remains the same. Thus, through Kotter's process of change, he highlights the process of 'how' to 'do' change, a concept often left alone by scholars.

Even though there is not much written and elaborated in the Ramcharitmanas about the incident analysed by the researcher, the below given shloks can give the essence which is further elaborated by the researcher while explaining the eight stages –

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना।।
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।।

ऋक्षराज जाम्बवान ने हनुमान से कहा - हे हनुमान! हे बलवान! सुनो, तुमने यह क्या चुप साध रखी है? तुम पवन के पुत्र हो और बल में पवन के समान हो। तुम बुद्धि-विवेक और विज्ञान की खान हो।

कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा।।

जगत में कौन-सा ऐसा कठिन काम है जो हे तात! तुमसे न हो सके। राम के कार्य के लिए ही तो तुम्हारा अवतार हुआ है। यह सुनते ही हनुमान पर्वत के आकार के (अत्यंत विशालकाय) हो गए।

The following are the eight stages of creating a major change given by Kotter which are analysed by the researcher in context to the incident between Jambavan who is portrayed as the effective leader and Hanuman who is portrayed as the follower –

1. Establishing a Sense of Urgency

This is the first stage of brining up a major change. Here it is important to identify and discuss the crises for which change is required. As depicted in the Kishkinda Kand of the Ramcharitmanas and seen in the above shloks, we can understand the urgency for Hanuman to understand his role due to the urgency of having to find Goddess Sita as soon as possible.

2. Creating the Guiding Coalition

This stage requires to put together a group with enough power to lead the change to them to get the group to work as a team. In this scenario, the group was present wherein Angad was their leader due to which it was not possible for him to go to Lanka for which the formed team as required to work together to help Hanuman recollect his true potential to be able to go to Lanka.

3. Develop a Vision and Strategy

In this stage it becomes necessary to create a vision and to develop strategies to help direct the change. In this incident it was Jambavan who had not only created the vision of having to go to Lanka, but he also gave the strategy of how Lord Hanuman must achieve this vision i.e by fighting the sea monster to cross the sea to reach Lanka.

4. Communicating the Change Vision

Here it is important for the effective leader to use every way possible to constantly communicate new visions and strategies and thus, depicting role model behaviour expected from the followers. This behaviour has been displayed by Jambavan as being the eldest leader and guide of the group, he helped constantly giving strategies of whom should go to Lanka and finalizing on Lord Hanuman and brining out his true potential for the task.

5. Empowering Broad-Based Change

Getting rid of obstacles and encouraging risk-taking behaviours are just as important as giving strategies. This was seen by Jambavan who encourages Lord Hanuman to take the risk of not only going to Lanka to achieve the goal of finding Goddess Sita but also by taking the risk of fighting the she-demon, Sihikaa.

6. Generating Short-Term Wins

It is important to plan for visible improvements in performance and to reward the people who make any win possible. Lord Hanuman was awarded with many praises on completing this task of finding Goddess Sita. Not only Jambavan but Lord Ram and many others praised him.

7. Consolidating gains and Producing More Change

This stage talks about using the increased credibility to change all systems. This stage can be understood as to when all the divided troops looking for Goddess Sita came together to move forward on the won path i.e. their path to Lanka.

8. Anchoring New Approaches in the Culture

The last stage talks about creating better performance, articulate the connect between the new behaviour and organizational process, and to develop means to ensure leadership development and succession planning. Thus, once Lord Hanuman returned from achieving his goal, all troops came together to improve their performance by working together, this new behaviour helped all involved to get closer to their main goal (getting Goddess Sita back from Lanka) and this whole process helped to continue the leadership role of Jambavan as due to his effective leadership Lord Hanuman was able to find Goddess Sita.

5. Conclusion

On the basis of the research study, the following conclusion was made

- Kotter's eight stage process of creating a major change was analysed in context to the incident of Jambavan and Lord Hanuman in Kishkinda Kand of the Ramcharitmanas

6. Advantages

There are several advantages to this study which can help enhance this study even more

- This research helps direct the HRM sector towards Sanatan due to which it might help individuals become interested in finding more such connections.
- Such new connections if formed will help future researchers study managerial aspects in the lens of religion.

7. Limitations

There are a few limitations to this paper but they are important to be considered

- People who are interested in the Ramcharitmanas, irrespective of their age, gender, religion and so on, only they will be able to easily learn certain HRM concepts while it will be difficult for those who are not interested in the Ramcharitmanas.
- The researcher only focused on Kotter's eight stage process of creating a major change due to which other HRM concepts have not been touched upon.

- The researcher only focused on the Kishkinda Kand of the Ramcharitmanas due to which the other six chapters have not been analysed.
- This research focuses only on specific characters (Jambavan and Lord Hanuman) due to which every other character, despite being important, were not studied.
- This research paper focuses on the ‘Ramcharitmanas’ written by poet Tulsidas only and therefore this research paper does not focus on the original ‘Ramayan’ written by Sage Valmiki.

8. References

The following are the important references the researcher referred to for this research

1. Chendroyaperumal, C., & Chandramouli, S. (2011). Leadership and Managerial Implications for Practice and Organizational Excellence from a Drop of the Case of Ramayana-A Celebrated Indian Work on Wisdom. Available at SSRN 1875495.
2. Muniapan, B. A. L. (2007). Transformational leadership style demonstrated by Sri Rama in Valmiki Ramayana. *International Journal of Indian Culture and Business Management*, 1(1-2), 104-115.
3. Sengupta, A. (2018). Human resource management: concepts, practices, and new paradigms. (No Title).
4. Shyam, B. R., & Aithal, P. S. (2023). Stimulating Constructive and Destructive Leadership Behaviours through the Emperor of Lanka and Villain of Ramayana. *International Journal of Management, Technology and Social Sciences* (IJMTS), 8(3), 262-279.
5. Sinha, A. K. (2014). Learnings from Sundar Kand of Ramcharit Manas and its application in our lives. *Purushartha: A Journal of Management Ethics and Spirituality*, 6(2).
6. Gupta, V., & Sinha, A. R. (2023). Leadership Styles In Ramayana And Lord Rama A Leader To Emulate For His Ethical Leadership Style. *Journal of Namibian Studies: History Politics Culture*, 33, 5823-5833.
7. Tulsidas, G. (2024). Shri Ramcharitmanas. Geetapress, Gorakhpur तुलसीदास रचित, रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर.

वाल्मीकि रामायण में रस-विमर्श

रिधम दिलीपभाई पंड्या
(ridhampandya111@gmail.com)

1. प्रस्तावना

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन न केवल भारतवर्ष के लिए अपि तु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अक्षय प्रेरणा स्रोत है। आदि कवि वाल्मीकि विरचित रामायण महाकाव्य समस्त काव्यगुणों आकर, विश्व साहित्य का अमर-कोष, तथा कोटि-कोटि भारतीयों का प्राण है। आदि कवि वाल्मीकि मुनि ने एक ओर वैदिक सिद्धान्त और संस्कृति को उत्तमोत्तम रूप से प्रतिपादित किया है तो दूसरी ओर रसों की एसी धारा प्रवाहित की है कि जिसमें सहृदय व्यक्ति रस-सरिता में डूबकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो जाता है। 'रस' रामायण का प्राण है और **"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"** इस लक्षण के अनुसार रसात्मक वाक्य ही काव्य है। **रामायण रसों की मन्दाकिनी है।** श्रृंगार आदि सभी रस इस महाकाव्य में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है।

2. शोधपत्र

संस्कृत जगत में महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि तथा उनके द्वारा विरचित 'रामायण' को आदि काव्य के रूप में विख्यात किया है। वाल्मीकि रामायण भगवान् राम के चरित पर आधारित सभी प्रकारके काव्यकारों, नाट्यकारों व कवियों का उपजीव्य ग्रन्थ है। इसका प्रमुख कारण है इसमें प्राप्त भारतीय सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक निधि और आचार-विचार, आदर्श और विभिन्न गुणों का भंडार।

साहित्यदर्पण में काव्य के आनन्द को ब्रह्मानन्दसहोदर कि संज्ञा से वर्णित किया है। **'रसो वै सः'** इस उपनिषद्वाक्य से परमात्मा को रसस्वरूप स्वीकार किया गया है। नाट्यशास्त्र के अनुसार विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारि भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। संस्कृत साहित्य में रसों के संख्या को लेकर आचार्यों के मध्य में मतभेद है। रामायण में प्रधान रूप से करुण रस को स्वीकार किया गया है। किन्तु अवलोकन करने पर स्थान स्थान पर शृंगार आदि सभी रसों का स्वरूप हमें ज्ञात होता है। यहां पर वाल्मीकि रामायण में वर्णित सभी रसों का स्वरूप उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया जायेगा।

- **शृंगार रस**

काव्य अथवा नाटक में रस ही प्राणतत्त्व के समान होता है। जीवन में रति अथवा प्रेम की बहुलता का प्रभाव सब जगह देखा गया है। दाम्पत्य जीवन का मूल रति या प्रेम भावना ही है। शृंगार रस के मुख्य दो भेद माने जाते हैं। १. वियोग शृंगार २. संयोग शृंगार।

रावण के द्वारा किये गये सीताहरण के पश्चात् विप्रलम्भ शृंगार की पराकाष्ठा देखने को मिलती है। यथा –

यदि जीवति वैदेही गमिष्याम्याश्रमं पुनः।
संवृता यदि वृत्ता सा प्राणांस्त्यक्षामि लक्ष्मण॥
वा.रा.अर.का. ५८/९।

भगवान् राम लक्ष्मण से कहते है कि हे लक्ष्मण! यदि पत्नी सीता जीवित होगी तो ही मैं पुनः आश्रम जाउंगा अन्यथा यदि सीता मृत्यु को प्राप्त हुई तो मैं भी अपने प्राणों का त्याग कर दूंगा।

इसी प्रकार के अन्य उदाहरण हमें अरण्य काण्ड में ५७/७, ४५/५,२५,३७-३७, ६०/६१ तथा किष्किन्धा काण्ड में १/२६-२७, ३५ व अन्य अनेकों जगह पर देखने को मिलते है।

नायक-नायिका की परस्पर प्रत्यक्ष रूप में जो शारीरिक और मानसिक चेष्टायें होती है, उनका निरूपण संयोग-शृंगार के अन्तर्गत आता है। रामायण में भगवान् राम का चरित्र मर्यादा पुरुष के रूप में होने के कारण वाल्मीकि मुनि ने अत्यन्त खुल कर शृङ्गारिक चेष्टाओं का वर्णन न करते हुए सांकेतिक रूप में अयोध्या काण्ड में वन में विहार करते समय अध्याय ६४, ६५ तथा ३० में संयोग शृंगार को वर्णित किया है।

- **हास्य रस**

वाल्मीकि रामायण में विशुद्ध हास्य रस के अनेक प्रसंग है। जैसे अयोध्याकाण्ड में त्रिजट नामक ब्राह्मण से भगवान् राम परिहास करते है। उसी प्रकार मंथरा-कैकेयी संवाद में हास्य व्यंग्य का सुंदर स्वरूप प्रकट होता है। उन दोनों के संवाद में कवि ने स्वयं कैकेयी के मुख से मन्थरा के लिए कुब्जा शब्द की जगह चन्द्रमुखी तथा राजहंसी जैसे शब्दों का प्रयोग करवाकर हास्यपूर्णक व्यंग्य का सरस विधान किया है। अरण्य काण्ड में शूर्पणखा के प्रसङ्ग में अध्याय क्रमाङ्ह १७,१८ में हास्य रस का प्रसङ्ग प्राप्त होता है।

- **करुणरस**

वाल्मीकि रामायण करुण रस प्रधान काव्य है। आदिकवि के हृदय की मार्मिक करुणा सम्पूर्ण रामायण में ओत-प्रोत है। इसी लिए इसमें कवि ने अत्यंत

तन्मयता से हृदय को विदीर्ण कर देने वाले प्रसङ्गो का वर्णन कर को करुण रस से इस काव्य को परिपूर्ण कर दिया है। यहां कुछ प्रसङ्गो की आवली प्रदर्शित की जा रही है जिसमें करुण रस के प्रसङ्ग ही समाविष्ट है।

- कैकेयी द्वारा वर माँगने पर दशरथ का शोक
- राम के वनगमन का वृत्तान्त सुनकर कौसल्या का शोक
- राम के वनगमन पर दशरथ का शोक
- महाराज दशरथ के निधन पर राम का विलाप
- सीताहरण के प्रसङ्ग में करुण रस
- सीता की शोकावस्था
- सीताहरण के बाद राम का शोक
- लक्ष्मण शक्ति-प्रसङ्ग में करुण रस
- रावण वध पर मन्दोदरी, विभीषण का शोक

इसी प्रकार अनेकों प्रसङ्गों में करुण रस का मार्मिक वर्णन हमें रामायण में देखने को मिलता है।

- **रौद्र रस**

वस्तुतः भगवान् राम धीरोदात्त प्रकृति के नायक है किन्तु रामायण में यत्र तत्र रौद्र रस की झलक भी दिखाई देती है। यथा –

- राम के द्वारा सुग्रीव को भेजे गये कठोर वचनयुक्त सन्देश
- सीतावियोग के समय में
- समुद्र के उपर सेतु बनाने से पूर्व समुद्र के प्रति किया गया क्रोध
- वनगमन की सूचना प्राप्त होने के बाद लक्ष्मण के क्रोधयुक्त उद्गार

उसी प्रकार अनेकों प्रसङ्गो में रौद्र रस का स्वरूप दिखाई पडता है।

- **वीर रस**

रामायण में राम का चरित्र उत्तम क्षत्रिय के रूप में सुंदर रूप से उभर कर आता है। राम एक वीर प्रकृति के नायक है। वह केवल शुष्क वीर नहीं अपितु मर्यादित अवस्थाओं से युक्त महावीर है। उनमें कर्तव्य रक्षा के लिए सत्व-रस अथवा आत्मबल का प्राधान्य है। उनकी वीरता के अवयव थे – त्याग, साहस, क्षमा, औदार्य, सहिष्णुता इत्यादि।

साहित्यशास्त्र के लक्षण ग्रन्थों में वीर-रस चार प्रकार माने गये हैं – वह है युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर एवं दयावीर। रामायण में वीररस के चारों प्रकार अपनी सम्पूर्ण उत्कृष्टता व विशालता के साथ दिखाई देते है। जैसे कि –

1. युद्धवीर

- विराध-वध में राम की वीरता
- खरादि राक्षसों के वध में राम की वीरता
- हनुमान एवं रावण के मल्ल-युद्ध में वीर-रस
- लक्ष्मण-इन्द्रजित् युद्ध में वीर रस
- राम और रावण के युद्ध में वीर रस

इत्यादि स्थलों में युद्धवीर-रस की प्राचुर्यता देखने को मिलती है। विशेष रूप में सम्पूर्ण युद्धकाण्ड युद्धवीर-रस से युक्त है।

2. दानवीर

- सरयू नदी के तट पर कराये गये अश्वमेघ यज्ञ के वर्णन में दशरथ की दानवीरता सिद्ध होती है।
- वनगमन के पूर्व भगवान् राम अपनी सारी संपत्ति ब्राह्मणों को दान में वितरित कर देते है।
- पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए राम सम्पूर्ण राज्य अपने भाई भरत को सौंप देते है।

3. धर्मवीर

- अयोध्या काण्ड अध्याय १८ तथा १९ में भगवान् राम अपने धर्माचरण द्वारा अपनी धर्मवीरता का सुंदर परिचय देते है।
- माता सीता अपने पति को ही इस लोक और परलोक का आश्रय बताते हुए चौदह वर्ष वन में अपने पति के साथ जीवन बिताने को ही सुख का आश्रय बताती है।
- भरत अपने ज्येष्ठ भाई की राजगद्दी पर न बैठ कर केवल कर्तव्यमात्र का निर्वाहन करने हेतु राज्य व्यवस्था संभाल कर धर्मवीरता का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते है।

4. दयावीर

- अरण्य काण्ड में भगवान् राम और जटायु के मीलन के समय में राम की दयावीरता का दर्शन होता है।
- विभीषण द्वारा राम की शरणागति के समय भगवान् राम अपनी दयावीरता का परिचय देते है।
- रावण की मृत्यु हो जाने पर अपनी शत्रुता भूलकर राम अपनी दयावीरता प्रकट करते हुए स्वयं उसके अन्त्येष्टि-कर्म करने की आज्ञा देते है।
- **भयानक रस**

भगवान् राम के वनगमन के समय अयोध्या नगरी में भयानक रस का अद्भुत वर्णन देखने को मिलता है। यथा – नक्षत्रों की कान्ति फीकी पड़ जाना, ग्रहों का निस्तेज होना, सम्पूर्ण नगर का कांपने लगना तथा सम्पूर्ण नगर के स्मशानवत् बन जाने का वर्णन अधोध्या काण्ड के ४१ वें अध्याय में प्राप्त होता है। ठीक उसी तरह -

- विराध प्रसङ्ग में भयानक रस
- शूर्पणखा प्रसङ्ग
- समुद्र सेतु के निर्माण के समय
- युद्ध काण्ड में अपशकुनों के द्वारा भयानक घटनाओं का संकेत

इत्यादि स्थलों में भयानक रस का चित्रण प्राप्त होता है।

- **बीभत्स रस**
- अयोध्या काण्ड में अध्याय १२,३५,३७,६६ में बीभत्स रस का आलम्बन कैकेयी
- अरण्य काण्ड में अध्याय २ में विराध राक्षस का प्रसङ्ग
- **अद्भुत रस**
- धनुर्भङ्ग प्रसङ्ग
- भरद्वाज का आतिथ्य प्रसङ्ग
- काञ्चन मृग का प्रसङ्ग
- हनुमान् का पराक्रम
- राक्षसों के मायावी कर्म
- **शान्त रस**
- प्रकृति विषक शान्त रस
- चित्रकूट वर्णन
- अगस्त्याश्रम
- धर्म, वैराग्य, उपदेश-विषयक शान्त रस
- दण्डकवन के तपोवन
- **वात्सल्य रस**
- वात्सल्य रस के आलम्बन में दशरथ का पुत्रों के प्रति प्रेम

- वात्सल्य रस के आश्रय दशरथ
- किष्किन्धा काण्ड में अध्याय १८ व २२ में बाली का वात्सल्य
- राम की प्रजा वत्सलता

3. उपसंहार

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण में सभी प्रकार के रसों का वर्णन दिखाई पडता है। इसमें मुख्य रस करुण होने के बाद भी कवि ने अनेकों प्रसङ्गो में आवश्यकता के अनुसार सभी रसों को समाविष्ट किया है। वस्तुतः यह विषय अत्यन्त विस्तृत होने के कारण इस शोधपत्र में केवल सङ्केतमात्र के द्वारा रसों के स्वरूप का दिग्दर्शन किया गया है। उपरोक्त सभी बिन्दुओं का विस्तार करते हुए **"सर्वरसात्मकं रामायणम्"** इस तथ्य को सिद्ध करने हेतु रामायण में वर्णित रसों के स्वरूप को संगोष्ठी में सविस्तर प्रतिपादित किया जाएगा।

4. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, भाग १-२, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. साहित्यदर्पण, हिन्दी व्याख्या – डॉ. सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
3. वाल्मीकि रामायण में रस-विमर्श, डॉ. महावीर अग्रवाल, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
4. वाल्मीकि रामायण एवं संस्कृत नाटकों में राम, डॉ. मंजुला साहेब, विमल प्रकाशन, गाजियाबाद।

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में नारी के विविध रूप

डॉली गुप्ता
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
(dollygupta334@gmail.com)

प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस में के विविध रूपों को दृष्टिगोचर करना ही मेरे लेखन का ध्येय है। महाकवि तुलसीदास ने अपने समकालीन समाज से प्रभावित होकर एक ओर मानस में नारी के मनुष्यत्व की ओर ले जाने वाले रूप की प्रशंसा की है, वहीं दूसरी ओर पशुत्व की ओर ले जाने वाले अवगुणों से युक्त नारी रूप की निंदा भी की है। तुलसीदास ने प्रसंगानुसार नारी के भिन्न-भिन्न रूपों को दर्शाया है।

बीज शब्द: मर्यादा, सात्विक, तामसी, आदर्श, पतिव्रता

1. प्रस्तावना

मध्यकाल में हिंदी साहित्य की काव्य-चेतना का मूल आधार भक्ति थी और भक्ति की यह पावन भावना ही काव्यमय कलेवर धारण कर भक्त कवियों के काल में अवतीर्ण हुई है। भक्ति युग की संपूर्ण साहित्यिक संरचना भक्ति के क्रोड़ में ही हुई है। विश्व साहित्य में हिंदी की प्रतिष्ठा का प्रतिमान स्थापित करने वाले अमर गौरव ग्रंथ 'रामचरितमानस' के महान प्रणेता मूर्धन्य कवि तुलसीदास उच्चकोटि के भक्त ही नहीं अपितु साहित्य में अपना अप्रतिम स्थान रखने वाले रचनाकार है।

'रामचरितमानस भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और भारतीय ज्ञान परंपरा का विशिष्ट ग्रंथ है। तुलसीदास ने वाल्मीकि जी द्वारा संस्कृत में लिखित रामायण को आधार बनाकर अवधी में रामचरितमानस जैसा अनमोल ग्रंथ लिखा और रामकथा को लोकभाषा में लिखकर जन-जन तक पहुँचाया। रामचरितमानस के माध्यम से तुलसीदास ने मध्ययुग में समाज की दयनीय स्थिति को दर्शाते हुए समाज के हर पहलू को उजागर किया और रामचरितमानस के हर एक पात्र के माध्यम से आदर्श समाज का स्वरूप सामने रखा जिसने शोषित समाज के घावों पर मरहम लगाने का कार्य किया। रामचरितमानस के सभी पुरुष व नारी पात्र समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। रामचरितमानस में जहाँ एक ओर राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, दशरथ, मंदोदरी, हनुमान जैसे सत् पात्रों के माध्यम से समाज में व्याप्त सात्विक गुणों की प्रधानता को व्यक्त किया है वहीं दूसरी ओर रावण, शूर्पणखा, कैकेयी, मंथरा, मेघनाथ जैसे पात्रों के माध्यम से राग-द्वेष, हिंसा, विषाद जैसे तामसी गुणों की अभिव्यक्ति की गई है। तुलसीदास ने रामचरितमानस के पात्रों में विशेषकर नारी के सत् और असत् पात्रों के विभिन्न पक्षों को दर्शाया है। नारी के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक इत्यादि रूपों को दृष्टिगोचर किया है।

रामचरितमानस में नारी रूप

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने युग-परिवेश का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए नारी के उच्चातिउच्च और हीनातिहीन रूप को देखा था इसलिए उन्होंने मानस में नारी के मुख्यतः दो रूपों का चित्रण किया है -

1. **सती साध्वी शक्ति रूप नारी -** नारी के उस रूप के प्रति तुलसीदास श्रद्धावनत् है। वे माता पार्वती, सती, अनुसुइया, कौशल्या, जनकनन्दनी सीता के प्रति श्रद्धा से सिर झुकाते है।
2. **मायारूपी कुल्टा, दुराचारणी प्रमदा नारी -** नारी के इस रूप को तुलसीदास ने निंदनीय माना है। उद्दण्ड एवं स्वतंत्र शूर्पणखा, मंथरा आदि नारियों को फटकारा है।

नारी के समाजविरोधी रूपों की निंदा, पत्नी द्वारा तुलसी जी को धुतकारे जाने की घटना और कुछ स्फुट उक्तियों के आधार पर उन्हें नारी निंदक कह दिया जाता है जो सर्वथा अव्यावहारिक है क्योंकि प्रबंध काव्य की हर उक्ति संदर्भ सापेक्ष होती है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित उक्ति के कारण तुलसीदास जी पर नारी विरोधी होने का आक्षेप (दोषारोपण) लगाया जाता रहा है -

'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।।'

यहाँ हिंदी शब्दकोश के अनुसार ताड़ना शब्द का अर्थ है - फटकारना। जिससे इन पंक्तियों का अर्थ नारी को फटकारने से लिया जाता है। परंतु तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त ताड़ना एक अवधी शब्द है जिसका अर्थ है - देखरेख करना, उद्धार करना, पहचानना या परखना। तुलसीदास ने यहाँ नारी वर्ग के उद्धार की बात की है। इस संदर्भ में डॉ० रामकुमार वर्मा लिखते हैं - "तुलसीदास ने नारी-जाति के लिये बहुत आदर-भाव प्रकट किया है। पार्वती, अनसूया, कौशल्या, सीता, ग्राम-वधू आदि की चरित्र-रेखा पवित्र और धर्मपूर्ण विचारों से निर्मित हुई है। कुछ आलोचकों का कथन है कि तुलसीदास

ने नारी-जाति की निंदा की है और उन्हें ढोल-गंवार की कोटि में रखा परंतु यदि 'मानस' पर निष्पक्ष दृष्टि डाली जाय तो विदित होगा कि नारी के प्रति भर्त्सना के ऐसे प्रमाण उसी समय उपस्थित किये गये जबकि नारी ने धर्म-विरोधी आचरण किये।"

वास्तव में तुलसीदास जी की नारी-भावना के सम्यक् विश्लेषण के लिए, नारी के विभिन्न रूपों को कुछ शीर्षकों में वर्गीकृत करना आवश्यक है। तभी रामचरितमानस में तुलसीदास जी की नारी भावना को बखूबी समझा जा सकता है।

1. **नारी का पारिवारिक रूप -** रामचरितमानस पारिवारिक रिश्तों के आदर्श को दर्शाने वाला महाकाव्य है जिसमें नारी के सभी पारिवारिक रूपों - माता, पुत्री, कुलवधु, पत्नी, प्रेयसी, भगिनी, सखी, दासी आदि का विश्लेषण पर्याप्त विस्तार से किया गया है।

रामचरितमानस में सीता, पार्वती, कौशल्या, सुमित्रा, मैना और सुनयना जैसे नारी पात्र सहज वात्सल्य की प्रतिमूर्ति रूप में दिखाई देती है जिससे समाज के सामने नारी का आदर्श, प्रेम से परिपूर्ण, करुणामयी मातृरूप दृष्टिगत होता है। माता सुमित्रा सोते हुए बालकों (राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न) को हृदय से लगाए प्रेम मग्न सजल लोचन दिखलाई देती है -

"सुमित्रा लाय हिंये फनि मनि ज्यों गोए।
तुलसी नेवछावरि कुरति मातु अति प्रेम-मगन मन, सुजल सुलोचन कोये।"

कौशल्या उदात्त चरित्र की नारी हैं। उनमें एक माता की गंभीरता, स्नेहशीलता, वत्सलता, सदाशयता, व्यावहारिकता और पति-परायणता के भाव विद्यमान है। अंचल पट की छत्रछाया में राम को लिए कौशल्या के गरिमामय स्वरूप की अनुपम झाँकी दृष्टव्य है -

कौशल्या की जेठी दीन्ह अनुसासन हो। नहछू जाई करावहु बैठि सिंहासन हो,
गोद लिए कौसल्या बैठि रामहि वर हो। सोभित दूलह राम सीस पर ओचर हो।"

राम के वनगमन की बात सुनकर कौशल्या का मातृ हृदय चित्कार उठता है परंतु वह अपने दिल पर पत्थर रख राम को वनगमन की आज्ञा देती है ताकि पुत्र माँ की ममता के आगे कमज़ोर न पड़ जाये और पिता को दिये वचन को पुत्र पूरा कर पाये।

राम को राजसिंहासन की जगह चौदह वर्ष का वनवास देने वाली कैकेयी के प्रति कौशल्या तनिक भी कठोर व्यवहार नहीं करती। भले ही कैकेयी ने क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिहिंसा के वशीभूत भरत को राज्य और राम को वनवास की व्यवस्था करके पावन मातृत्व को कलुषित किया परंतु कैकेयी के प्रति तुलसीदास ने निंदनीय शब्दों का प्रयोग बहुत कम ही किया। माया द्वारा कैकेयी की बुद्धि फेर देने की बात कहकर कैकेयी के दोष का निवारण किया गया है।

सुमित्रा और कौशल्या की भाँति सुनयना के मातृ रूप को भी अत्यधिक स्वाभाविक और सरस रूप में दर्शाया गया है। सीता जी की माता सुनयना का अपार वात्सल्य और गहन ममत्व भावना का चित्रांकन करते हुए तुलसीदास लिखते है -

"सादर सकल कुअँरि समुझाई। रानिन्ह बार-बार उर लाई।
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी। कहहिं बिरंचि रचीं कत नारी।"

तुलसीदास जी ने माँ के सहज मातृ रूप की मार्मिक अभिव्यंजना राम वनगमन पर कौशल्या के विलाप तथा राम के वन से लौटने पर भेंट करते हुए मानस में अनेक स्थानों पर की है। मातृ रूप में नारी तुलसी जी के संपूर्ण आदर, मान, श्रद्धा और पूज्य भाव की अधिकारिणी है।

मातृ रूप की भाँति ही तुलसीदास जी ने नारी के पुत्री रूप को भी ममता, वात्सल्य, पवित्रता, मर्यादित और पावन स्वरूप गुणों से परिपूर्ण दर्शाया है। पार्वती के पूजन हेतु माता द्वारा भेजी गई सीता जब विलंब हुआ जानती है तो शील संकोच से परिपूरित सीता तुरन्त लौट पड़ती है -

"गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ विलंबु मातु भय मानी।।
धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरी अपनापउ पितुबस जाने।।"

पार्वती जब घोर तप के बाद शिव को सम्मुख खडे पाती है तो संसंकोच सखी द्वारा अपने को पिता के अधीन कहकर कन्या की पावन मर्यादा का पालन करती है। इसके विपरीत यदि रावण भगिनी शूर्पणख को पुत्री रूप में देखा जाये क्योंकि वह भी कुँआरी कन्या है तो वह पुत्री का असत् रूप ही कहा जायेगा क्योंकि स्वयं उच्छृंखलता पूर्वक परपुरुषों के सम्मुख विवाह प्रस्ताव रखने की मर्यादा हीनता तुलसीदास जी की दृष्टि में भत्सर्नीय है जिसकी उन्होंने निंदा की है। अन्यथा अपने पावन स्वरूप में पुत्री परम स्नेह की भाजन और औदार्य और स्वार्थहीन त्याग की सत् भावनाओं की प्रेरक रही है।

पुत्री के समान ही कुलवधु रूप में भी नारी परिवार के स्नेह और सम्मान की अधिकारिणी बनी है। अपने पुत्रों को वधुओं सहित देखकर राजा दशरथ इस प्रकार हर्षित होते है कि मानों उन्होंने यज्ञ, श्राद्ध, योग और ज्ञान क्रियाओं सहित अर्थ, धर्म, काम, कोक्ष मिल गये हो। पिता की भाँति राजा दशरथ अपने वधुओं के प्रति दुलार अभिव्यक्त करते है -

"वधू सप्रेम गोठ बैठारी। बार-बार हियँ हरषि दुलारी।।"

सास भी अपनी वधुओं को अपनी पलकों की छाँव में रखती है। साथ ही वधू भी सदा सास के चरणों की वन्दना और उनके सम्मुख विनम्रता तथा संकोच की भावना को धारण करके अति मर्यादित रूप में अंकित की गई है।

तुलसीदास जी की नारी भावना पत्नी रूप में पतिव्रत के धर्म में निरत, त्याग, कर्त्तव्यपालन और पति भक्ति की भावना से ओत-प्रोत सती साध्वी रूप में अंकित की गई है-

"जिय बिनु देह नदी बिनु नारी। तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी।"

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने पत्नी को पति के सुख-दुःख की सच्ची सहचरी और उसकी सेविका के रूप में अंकित किया है। राम के वनगमन की बात जाकनकर सीता भी राजमहल के भोगों को त्याग कर अपने पति राम के साथ भयावह वनों में निवास करने की हठ करती हुई कहती है -

'मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुम्हहिं उचित तप मों कहूँ भोगू।।"

रामवन गमन के बाद पुत्र वियोग में आकुल-व्याकुल दशरथ के प्रति कौशल्या उत्साह का संदेश देकर कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाने वाली सहृदय सखी के रूप में अंकित हुई है -

धीरज धरिअत पाइअ पारू। नाहि त बूड़िहि सबु परिवारू।।
जो जियँ धरिअ विनय पिय मोरी। रामु लखुन सिय मिलहिं बहोरि।।
प्रिय वचन मृदु सुनत नृप चितयउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि।।"

इसके अतिरिक्त तारा और मन्दोदरी के रूप में पत्नी का नीति-निपुण विवेक संयुक्त मंत्रिणी रूप भी दर्शाया गया है। रावण के सीताहरण - कर्म की भर्त्सना करती हुई मंदोदरी रावण को सदुपदेश प्रदान करती है और राज्य की भलाई के लिए राम से विरोध न करने का आग्रह करती है। इसी प्रकार तारा भी राम के परब्रह्मत्व से परिचित होती हुई बालि के जीवन की रक्षा के लिए उसे सुग्रीव से युद्ध करने के लिए मना करती है। ये पत्नी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की परिचायक पत्नीत्व की गौरवशाली प्रतीक मानी गयी है क्योंकि इनका लक्ष्य पति की मंगलकामना और उसे सत् मार्ग दिखलाना है। सपत्नी अथवा सौत शब्द कटुता, विद्वेष और ईर्ष्या की पर्यायवाची सा माना जाता है परंतु तत्कालीन बहुपत्नी प्रथा के युग में पारिवारिक सुख और शांति के वातावरण को बनाये रखने हेतु तुलसीदास ने अपने मानस में कौशल्या और सुमित्रा को भगिनीवत् स्नेह वाली सपत्नी रूप में प्रस्तुत किया है। कौशल्या का व्यवहार सर्वत्र ही अपनी सपत्नियों सुमित्रा और कैकेयी के प्रति सहोदर भगिनियों जैसा रहा है। कौशल्या राम को भी यही सिखाती है कि कैकेयी तुम्हारी माता है मैं तो भरत की माता हूँ -

मैं न करनी सौति, सखी। भगिनी ज्यों सेई है।"

राम को वनवास देने पर भी कौशल्या कैकेयी को दोष न देकर अपने भाग्य को ही दोषी ठहराती है।

इसके विपरीत कैकेयी में सौत का असत् रूप विकसित होता हुआ दिखलाई पड़ता है। कैकेयी राम को अपने पुत्र से भी ज़्यादा स्नेह करती थी परंतु दासी मन्थरा राम के राज्याभिषेक में कौशल्या की चाल बताकर कैकेयी के मन में सपत्नी के प्रति विष के बीज बो देती है -

जरि तुम्हारि चहसवति उरवारी। रूँधहु करि उपाए नर नारी।।"

राजा की चहेती रानी कैकेयी अपनी गरिमा के खंडित हो जाने की कल्पना मात्र से तिलमिला उठती है और उसके मन में सौतिया डाह उत्पन्न हो जाती है -

नैहर जमनु भरब बरू जाई। जिअत न करबि सवति सेवकाई।।
अरि बस देउ जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही।।"

इस प्रकार तुलसीदास ने मानस में पारिवारिक रूप में एक तरफ़ नारी के सत् स्वरूपों को पूजनीय माना है तो दूसरी तरफ़ असत् रूप की निंदा भी की है जिसके कारण समाज का पतन होता है।

2. नारी का आदर्श रूप

मध्ययुगीन समाज में जब स्त्री-पुरुष सभी धार्मिक मर्यादाओं के विपरीत धर्माचरण कर रहे थे। नारी धर्महीन और विवेकहीन जीवन व्यतीत कर रही थी, तब तुलसी ने मानस में नारी के धर्मशील स्वरूपों का चित्रण करके लोकधर्म एवं मर्यादा को प्रतिष्ठित किया।

नारी जीवन के पतिव्रत धर्म का पालन करना ही श्रेष्ठतम धर्म माना गया है। मन, कर्म और वचन से पति की सेवा ही नारी का परम कर्त्तव्य है जिससे नारी को सद्गति प्राप्त होती है। मानस में तुलसीदास ने कौशल्या, सुमित्रा, सीता, पार्वती इत्यादि नारी पात्रों के माध्यम से पतिव्रत धर्म का गौरवपूर्ण स्वरूप दर्शाया है। पतिव्रत धर्म पर आधारित नारी के धार्मिक रूप का विवेचन करते हुए तुलसी कहते है-

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरिपद कमल विनीत।।"

सीता और पार्वती के रूप में पतिव्रता नारी का उच्च कोटि का स्वरूप दर्शाया है। सीता सतियों में शिरोमणि सच्ची पतिव्रता है उनके लिए पति के बिना स्वर्ग भी नरक तुल्य है इसलिए राम को चौदह वर्ष के वनवास की बात पता चलने पर वह बिना किसी की बात सुने हठपूर्वक राजमहल के

ऐश्वर्यपूर्ण जीवन को त्यागकर राम के साथ भयावह जंगलों में चली जाती है। पति के साथ के कारण उन्हें वे भयंकर जंगल और कष्टभरी राहें भी पुष्पों की सेज के समान ही प्रतीत हो रही थी।

गौरव और गरिमायुक्त धार्मिक स्वरूप का अंकन तपः मूर्ति पार्वती के चरित्र में प्रतिफलित हुआ है। उन्होंने शिवाजी को पति रूप में प्राप्ति हेतु कठोर तप किया जो वास्तव में ऋषि मुनियों के लिये भी दुर्लभ था। कौशल्या, सुमित्रा, मंदोदरी और तारा इत्यादि को पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए दिखाया गया है।

तुलसीदास जी ने मानस में नारी के पतिव्रता धर्म के गौरवशाली स्वरूप के माध्यम से तत्कालीन समाज में नारी की मर्यादाहीनता पर अंकुश लगाने का कार्य किया।

तुलसीदास ने मानस में भगवान राम के चरणों में अनन्त भक्ति रखने वाली भक्त नारियों का धार्मिक स्वरूप भी चित्रित किया है। वन के मंदिर में बैठी हुई तपोमूर्ति स्वयंप्रभा के परम तेजस्वी रूप का अंकन अत्यधिक सुंदर बन पड़ा है -

"दीख जाइ उपवन बर सर बिगासित बहु कंज।
मंदिर एक रुचिर तहं बैठि नारी तप पुंज।"

सीता की रामभक्ति में त्याग, संयम, कष्ट, सहिष्णुता, गृहिणीत्व, पातिव्रत्य आदि गुणों का समाष्टि रूप मानस में दृष्टिगोचर हुआ है। पार्वती भी सीता की भाँति पातिव्रत्य धर्म एवं रामभक्ति को ही अपना परम धर्म मानती है। अहिल्या पातिव्रत्य धर्म से च्युत होने के कारण पति के अभिशापवश पाषाण बन गयी थी जो बाद में रामभक्ति के कारण अभिशाप से मुक्त होकर पतिलोक चली गई। तारा की धार्मिक और भक्ति-दृष्टि के कारण ही वह रामभक्ति की सहज साधिका बनी। नीच जाति की एक अधम गँवार नारी शबरी जिसे पूजा अर्चना की ज़्यादा समझ नहीं है, ने अपने निश्छल एवं विशुद्ध प्रेम से ही रामभक्ति को पाया। भगवान राम ने उसे 'नवधा-भक्ति' का उपदेश दिया है और वह राम की अद्वितीय (परम) भक्त रूप में चित्रित हुई है। राक्षसराज रावण की दासी त्रिजटा भी राम भक्ति से संपन्न अंकित की गई है। 'मानस' में रावण की पत्नी मंदोदरी एक महान् रामभक्त नारी है, जो एक ओर पतिव्रता धर्म को निभाती है तो दूसरी ओर राम की महत्ता एवं परब्रह्मत्व से पूर्णतया परिचित होती है। रावण का राम के हाथों वध होने पर भी उसकी रामभक्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं आती।

इस प्रकार पतिव्रत धर्म, शील, सदाचार और भक्ति से संयुक्त धार्मिक स्वरूप में नारी देवी हो या राक्षसी, रानी हो अथवा दासी, सुजाति हो या कुजाति, पावन हो या अपावन तुलसी द्वारा सर्वत्र ही वंदनीय और प्रशंसनीय रही है।

3. नारी का राजनीतिक हस्तक्षेप

रामचरितमानस में सत् और असत् दोनों प्रकार के नारी पात्र समान रूप से राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित करते हुए दिखाये गये है। जहाँ असत् नारी पात्र अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु राजनीतिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करते दिखाये गये हैं वहीं सत् नारी पात्र पारिवारिक, सामाजिक और संपूर्ण लोक के कल्याण को ध्यान में रखकर और अपने व्यक्तिगत हितों का त्याग करते हुए दिखलाई पड़ते हैं।

राजनीतिक दृष्टि से मंथरा और शूर्पणखा असत् नारी पात्र है जिन्होंने अयोध्या और लंका की राजनीति को विध्वंस की ओर धकेल दिया। मंथरा को राम के राज्याभिषेक का समाचार मिलते ही उसकी कुमति ने षड्यंत्र रचना प्रारंभ कर दिया जिससे किसी प्रकार से रात ही रात में यह काम बिगड़ जाये-

करइ विचारू कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजु कवनि बिधिराती।
देखि लागि मधु कुटिल किराती। जिमि गवं तकइ लेउं केहिं भाँती।।"

कूटनीतिज्ञ मंथरा भली प्रकार जानती थी कि राजा दशरथ ने रानी कैकेयी को वचन दिया था कि वह जब चाहे उनसे अपने दो वरदान ले सकती है। मंथरा ने रानी कैकेयी के मन में ईर्ष्या, द्वेष और सौतिया डाह के विष का संचार कर राजा से अपने वरदान मांगने को कहा। इससे कैकेयी ने प्रभावित होकर वरदान रूप में राम की जगह भरत का राज्याभिषेक और राम को चौदह वर्ष का वनवास मांगा जिससे अयोध्या की राजनीतिक स्थिति ने एक नया रूप लिया -

"सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बार भरतहि टीका।
मागउँ दूसर बर कर जोरी। पुरबहु नाथ मनोरथ मोरी।।"
"तापस वेष बिसेषि उदासी। चौदह बीरस रामु बनवासी।"

जिस प्रकार मंथरा और कैकेयी के व्यक्तिगत स्वार्थों ने अयोध्या की राजनीति का विनाश किया उसी प्रकार शूपर्णखा भी संपूर्ण राक्षस वंश के विनाश का कारण बनी है। शूपर्णखा यद्यपि कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में अंकित हुई है तथापि वह नैतिक दृष्टि से अत्यधिक पतित दिखलाई पड़ती है। अपनी काम-लिप्सा के कारण वह अपमानित होती है। अहंकारिणी शूर्पणखा केवल अपने अपमान का बदला लेने हेतु पहले खर-दूषण को उत्तेजित कर उनका विध्वंस कराती है, पुनः रावण के दरबार में जाकर उसे उत्तेजित कर युद्ध रत करती है। अतः शूर्पणखा भी तुलसी द्वारा भर्त्सनीय ही है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण उसने लंका को राजनीतिक स्तर पर पतन के गर्त में झोंक दिया।

इसके विपरीत कौशल्या, मंदोदरी और तारा का राजनीतिक स्वरूप सत् रूप के अंतर्गत आता है क्योंकि उनकी विचारधारा लोककल्याण के नैतिक मूल्यों पर आधारित है। राम की माता कौशल्या सरल, साध्वी और शांत स्वभाव की राजरानी होने के साथ-साथ कुश्ल राजनीतिज्ञ भी है। राम वनवास का समाचार सुन वह राजा दशरथ की आज्ञा के विरुद्ध राम को वन में जाने से रोक सकती थी। परंतु भाइयों के पारस्परिक विरोध की आशंका से राजनीति के विध्वंसक रूप ले लेने की कल्पना मात्र से वह राम को जाने की आज्ञा दे देती है जो उनके कुशल राजनीतिक रूप को प्रदर्शित करता है। वानरराज बालि की पत्नी तारा भी कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में दिखाई देती है। सुग्रीव द्वारा बालि को युद्ध के लिए ललकारने पर तारा अपनी कुशाग्र बुद्ध से समझ जाती है कि सुग्रीव के साथ अवश्य ही कोई बड़ी शक्ति है और वह बालि को रोकने का प्रयास करती है परंतु पत्नी की बात को न सुनना ही उसकी मृत्यु का कारण बन जाता है। इसके अतिरिक्त तारा की राजनीतिज्ञता का एक अन्य प्रमाण भी उपलब्ध होता है जब सुग्रीव राज्य पाकर राम के कार्य को विस्मृत कर देता है तब लक्ष्मण क्रोधित होकर सुग्रीव को दण्डित करने आते हैं तब राजनीति कुशल तारा ही लक्ष्मण के क्रोध को शांत कर राज्य पर आयी विपत्ति को टाल देती है।

राक्षस राज रावण की पत्नी मंदोदरी भी कुशल राजनीतिज्ञ के गंभीर चिंतन से युक्त मंत्रिणी के रूप में सर्वत्र ही अपने पति को मंत्रणा तथा नीतिपरक सीख देती नज़र आती है जो राज्य के हित के लिये थी।

मंदोदरी के अतिरिक्त त्रिजटा, जो रावण की दासी है, संपूर्ण राजनीतिक परिस्थितियों का ज्ञान रखती है। अपने राजनीतिक ज्ञान के बल पर ही वह राम की विजय की भविष्यवाणी अपने स्वप्न के बहाने करती है।

इस प्रकार, तुलसीदास जी के मानस में कैकेयी, मंथरा, कौशल्या, शूपर्णखा, मंदोदरी इत्यादि पात्रों के रूप में नारी का राजनीतिक रूप मुखरित हुआ है।

4. नारी का लोकधर्म

मानस में समय-समय पर समाज में आयोजित विभिन्न अवसरों जैसे - यज्ञ आयोजन, विवाह उत्सव, जन्मोत्सव, पर्वोत्सव इत्यादि पर नारी का गरिमामय व सुंदर स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। तुलसीदास जी ने नारी को मंगल गीत गाते, बधावे गाते, न्यौछावर करते, आरता करते इत्यादि कृत्य करते हुए परम पुण्यमयी रूप में दर्शाया है। अवध में राजा दशरथ के घर पुत्र का जन्म हुआ, चारों तरफ मंगलमय वातावरण छाया हुआ है। अवध की नारियाँ शृंगार धारणा कर मंगल गीत गा रही है और पुत्र को शुभाशीष दे रही है -

"सहज सिंगार किए बनिता चलीं मंगल विपुल बनाई।
गावहिं देहि असीस मुदित चिर जिवो तनय सुखदाई।।"

शुभ अवसर पर नारियाँ विचित्र रूप से आरती की थाली को सज़ा कर बधावे गा रही है -

"सजि आरती विचित्र थार कर जूत जूथ बरनारि।
गावत चलीं बधावन लै लै निज कुल अनुहारि।।"

कुलीन स्त्रियाँ सोल्लास वस्त्र-मणियाँ और आभूषण बालकों के ऊपर न्यौछावर कर दान में देती है और नर-नारियों को सम्मानित करती है। तुलसी जी ने अपने साहित्य के अंतर्गत समाज में नारी जाति को पूर्ण रूप से स्वतंत्र रूप में भी दर्शाया है और शूपर्णखा जो राक्षस जाति की असत् नारी पात्र है, के अतिरिक्त पतित रूप में नहीं दर्शाया है। सीता अपनी सखियों के साथ गौरी पूजन के लिये जाती है तब एक सखी राम-लक्ष्मण को देख आह्लादित होकर सीता को सूचित करती है -

'जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर-नारी।।
बरनत छवि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहिं देखन जोगू।।"

फिर सीता सहित सखियाँ राजकुमारों को देखने चल दी। न कोई बंधन, न भय और न ही कोई रोक-टोक, सभी जैसे सहज रूप से स्वतंत्र है। धनुष-यज्ञ के अवसर पर भी पुरुषों के साथ सभी स्त्रियाँ भी वहाँ स्थान ग्रहण करती है-

"चले सकल गृह काज बिसारी।
बाल जवान जरठ नर नारी।"

इस प्रकार समाज में नारी सर्वत्र ही प्रत्येक अवसर पर सम्मानपूर्वक पूर्ण स्वतंत्रता से विराजमान है। तुलसी ने स्त्रियों को राम से व्यंग्यपूर्ण परिहास करने का अधिकार भी दिया है।

सावन मास में सोलहों शृंगार से सुसज्जित स्त्रियों के हिंडोला झूलने और झूमते हुए गीत गाने का अति मनमोहक चित्रण तुलसी जी ने किया है। होली के अवसर पर रंग-बिरंगे वस्त्रों और आभूषणों को पहने गुलाल उड़ाती और नाचती नारियों का सुंदर रूप चित्रित किया गया है।

तुलसी के रामचरितमानस के आदर्श समाज में यज्ञ, विवाह, त्यौहार आदि अवसरों पर पुरुषों के साथ सर्वत्र ही देव-दानव, नर-किन्नर और गंधर्व सभी की स्त्रियाँ उपस्थित दिखाई गई है। नारी के सामाजिक रूप का अंकन करते हुए तुलसी जी ने संपूर्ण नारी जाति को विभिन्न रंगों से इस प्रकार अनुरंजित किया है कि नारी मात्र के अनेकानेक पावन, सुकोमल और स्वतंत्र स्वरूप अंकित होता है।

2. निष्कर्ष

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के माध्यम से नारी के गौरवमयी रूप को दर्शा कर उसे आदर और सम्मान के पद पर आसीन किया है। पारिवारिक क्षेत्र में नारी को आदर्श पुत्री, वात्सल्यमयी माँ, पतिव्रता पत्नी, हितैषिणी दासी इत्यादि रूपों में दर्शाया है। सामाजिक क्षेत्र में नारी के लोकधर्म एवं मर्यादित स्वरूप को प्रतिष्ठित किया। राजनीतिक रूप में नारी का कुशल कूटनीतिज्ञ के समान राज्य हितैषी स्वरूप दिखाया है और सामाजिकता के स्तर पर नारी का मनोहारी और मंगलमय स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

वर्तमान युग में रामचरितमानस की उपादेयता

स्मिता श्रीवास्तव
(smitasri764@gmail.com)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस जैसा महाकाव्य प्रस्तुत करके जनमानस की जो सेवा की है, उसके लिए संपूर्ण संसार इनका ऋणी है। हिंदी काव्य क्षेत्र में जब तुलसीदास जी का पदार्पण हुआ तब भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में मत मतांतरों का बोलबाला था। राजनैतिक क्षेत्र में जहाँ कट्टरपंथी मुगल साम्राज्य था तो सामाजिक क्षेत्र में जात पात छुआछूत चरम पर था। इन सबका तुलसीदास जी ने अध्ययन किया और इनके विरोध में और इनको दूर करने के लिए एक ग्रंथ की रचना की।

रामचरित मानस व्यापक जीवनाभूति काव्य है। तुलसीदासजी ने जहाँ एक ओर वैभवशाली परिवार की सुख समृद्धि का वर्णन किया है, वहीं मुनियों की शांति ,आश्रम और उनके संयम, आदि का भी वर्णन किया है। लोकहित की भावना ही इस ग्रंथ का प्रेरणा स्रोत है। राम उस वंश में पैदा हुए जो पूर्ण मर्यादित, धर्मशील, सत्यप्रतिज्ञ, बल, विद्या संपन्न और वैभवशील है। राम का अवतार मर्यादा ,धर्माचरण की स्थापना के लिए हुआ था। उन्होंने लोक आचरण और धर्म आचरण की रक्षा की। श्रद्धा भक्तिपूर्ण काव्य की रचना करके तुलसी जी ने समाज को पतन की गर्त में गिरने से बचाया। साहित्य के रसास्वादन से मस्तिष्क का पोषण होता है। समाज में परिवर्तन लाने की जो शक्ति साहित्य में है, वह तलवार में नहीं।

रामचरितमानस के अनुसार राजा को प्रजा का पालक होना चाहिए, उसे अपने सहायकों को मित्र के समान समझना चाहिए। तुलसी के राम ऐसे राजा है जो प्रजा के हितकारी होने के साथ साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधक भी है।

तुलसीदास जी का मत है कि धीरज, धर्म और विवेक बुरे समय के मित्र हैं तथा विपत्ति पड़ने पर मनुष्य को धैर्य, धर्म और विवेक से काम लेना चाहिए। प्राकृतिक सत्य भी यही है की विपत्ति में मन की शांति, कर्तव्य के प्रति निष्ठा और विवेक ही मित्र होते हैं। धर्म अर्थात कर्तव्य पथ से विचलित नहीं होना चाहिए और विवेक को अपना मित्र बनाना चाहिए।

दया धर्म का मूल है अर्थात मन, वाणी और शरीर द्वारा दूसरों के दुख, कष्ट, पीड़ा आदि में आत्मीयता का भाव अनुभव कर उन्हें दूर करने की प्रवृत्ति लौकिक और सामाजिक दृष्टि से मान्य होने के कारण ही धर्म है। तुलसीदासजी कहते हैं-

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान
तुलसी दया न छारिए जब लगी घट में प्राण।

वसुधैव कुटुंबकम की भावना हम राम की कहानी से ही सीखते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् जिसका अर्थ यह है कि पूरी दुनिया एक परिवार है; वसुधा यानी धरती एक कुटुम्ब है। वर्तमान समय में "वसुधैव कुटुम्बकम" G20 का सिद्धांत वाक्य है, जिसमे वर्तमान भारत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है | यह विश्व कल्याण का मूलमंत्र भी है |"वसुधैव कुटुम्बकम्" हमारे भारतीय संविधान का आधार है। यह विश्व शांति की औद्योगिक प्रगति और हरित क्रांति का माध्यम है| भारत एक तरह से विकसित और विकासशील देशों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। भारत में संसाधनों की कोई कमी नहीं है , आत्मनिर्भर भारत प्रत्येक वस्तु के निर्माण हेतु तत्पर एवं सक्षम है।

एक संपूर्ण व्यावहारिक जीवन दर्शन को समेटे हुए इस ग्रंथ के रूप में तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस पर जितनी भी चर्चा, आलोचना, समालोचना और समीक्षा हुई है उतनी शायद ही किसी अन्य लिपिबद्ध ग्रंथ की हुई होगी। हो भी क्यों ना ऐसा और कौन सा ग्रंथ है जिसमें हम संसारी जीवों के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विभिन्न अंगों को इतने मर्मस्पर्शी एवं स्पष्ट ढंग से छुआ हो? चाहे परिवार के सदस्यों के परस्पर संबंधों की गरिमा मर्यादा हो, समाज के विभिन्न वर्गों के आपसी संबंधों की मर्यादा हो अथवा राजकीय कामकाज व राजा के कर्त्तव्यों का चर्चा हो। श्री राम चरित्र मानस में निरूपित जीवन व्यवस्था एक आदर्श समाज एवं आदर्श राज्य की कोरी कल्पना मात्र न होकर पूर्ण अनुभवगम्य एवं व्यवहारिक है।

इस ग्रंथ के माध्यम से गोस्वामीजी ने परस्पर सम्मान के साथ कर्तव्य परायणता के माध्यम से ना केवल जीवन को समृद्ध, सुखी बनाने में असंख्य अप्रतिम योगदान दिया है, वरन मानस के पात्रो के माध्यम से ढेरों सामाजिक कुरुतियों के उन्मूलन में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

आज के संदर्भ में हमारे समक्ष विद्यमान विशालतम चुनौतियों में जो अग्रणी है, उनमें सामाजिक व्यवस्था में समरसता का उतरोत्तर हास प्रमुख हैं। मानस का रचना काल देखें तो पता चलता है कि उस समय वर्ण व्यवस्था के अतिरिक्त भारतीय समाज मुख्यता दो संप्रदायों वैष्णव और शैव में विभाजित था। साहित्यकार समाज का पारखी होता है, समाज की दिशा दशा पर दृष्टि रखता है तथा अपनी लेखनी के माध्यम से कुरूतियों को का शमन करने और समाज के उत्थान में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाता है।निश्चित रूप से गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस के माध्यम से तत्कालीन समाज को इस सांप्रदायिक विभाजन के फलस्वरूप होने वाली हानि से उबारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यदि हम सामाजिक समरसता के दृष्टि से देखें तो वहाँ भी रामचरितमानस प्रतिबिंब और पथ दोनों दिखाता है, प्रतिबिंब इसलिए की जहाँ हम एक समाज के रूप में भटक रहे हैं, वहाँ सन्मार्ग का चयन कर सकें और उस पर चलने का साहस सामर्थ्य जुटा सके। इसी क्रम में श्रीराम को मनाकर वापस ले जाने के लिए चित्रकूट जाते हुए भरत की भेंट निषादराज से होती है। समरसता और मर्यादा का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। जब निशाद अपना नाम बताता है कि मैं नीची जाति का हूँ और भरत इसकी प्रतिक्रिया में उसे गले से लगा लेते हैं |मानस में वर्णित सामाजिक सदभाव यही तक सीमित नहीं रहता, इसके आगे श्रीरामचरितमानस जनजाति को भी समाज का अभिन्न और सम्मानित अंग बनाने की प्रेरणा देता है।

मानस में किष्किंधा कांड का प्रसंग रखने की पृष्ठभूमि में गोस्वामी जी के मन में केवल मित्रता मात्र का वर्णन करना नहीं था। इसके माध्यम से वह यह बताने की चेष्टा कर रहे थे की राजा को किसी बड़े काम की सफलता के लिए जनसहभागिता सबके विकास के लिए सबका साथ परम आवश्यक है। मानस में समरसता के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

आज भावी पीढ़ी को रामचरित मानस के संदेशों का पालन करना अति आवश्यक है जो हमें राम राज्य की पुनर्स्थापना के लिए प्रेरित करता है , जिससे भारत में सुख, समृद्धि और ज्ञान की त्रिवेणी बहे भारत फिर से अपने प्राचीन जगत गुरु पद को प्राप्त करें। भारत सच्चे अर्थों में एक गौरवशाली राष्ट्र हो, न्याय की भावना हो, सब में समता भारत में शोषण, अन्याय, बेरोजगारी, भूखमरी, महंगाई, अराजकता, आतंकवाद , भ्रष्टाचार आदि का कहीं नामोनिशान नहीं हो। व्यक्ति स्वार्थ के बजाय परोपकार, मानव सेवा और राष्ट्रहित को प्रमुखता दें।

Dharmic Business Management: Direct Preachings by Lord Shri Rama

Charu Sharma
Hemant Gupta
(phjaipur1@gmail.com)

A pervasive but un-recognised deficiency of modern life is the absence of purpose, and this is particularly visible in businesses. Most problems in today's life and business environment can be traced back to this purposelessness. The ancient Indian epics, particularly the Ramayana, provide answers both to individuals and business leaders. Most studies on these epics derive lessons from the lives of the characters, especially Lord Shri Rama. However, there are many Preachings, direct from Lord Shri Rama, like the Shri Rama Gita and the Vibhisana Gita, which communicate undiluted Divine Wisdom. This paper explores this wisdom from the perspective of business leaders.

Keywords: Ramayana, Rama-Gita, Vibhisana-Gita, Purpose, Interdependence.

1. Introduction

A most popular and pervasive problem with both society at large and businesses in particular, is Purposelessness, and this is closely associated with another problem of Self-centredness, or, lack of Inter-dependence.

Stephen Covey, the well-known self-help Guru and one of most-widely read management thinkers of the past decades, had confirmed these 2 problems by making them central to this famous *The 7 Habits of Highly Effective People*. His 2nd habit "Begin with the end in mind" is his proposed solution to the problem of purposelessness, and his 4th, 5th and 6th habits aim to foster Interdependence.

Another highly influential business guide *Built to Last: Successful Habits of Visionary Companies,* a book written by Jim Collins and Jerry I. Porras, again emphasises both issues. One of the key insights they provide, based on their extensive research on businesses that have been successful over a long period of time, is a strong sense of purpose and values. These companies consistently focus on benefits to all their stakeholders, and sustainability, rather than just plain profits. They talk about these companies having a higher purpose, which is beyond money (materialism which can only bring independence).

In this paper we discuss direct preachings of Lord Shri Rama, mainly from *Shri Rama Geeta* and *Vibhishana Geeta*, and see how these address the same two problems. We shall see how these Divine words provide active guidance not only to businesses but to all humanity to emerge out of the dark & confusing forest of life, to slay the wild animals of *dukha, samasya, niraasha,* etc.

We also hope that through this humble effort, we are able to serve a reminder to the direct preachings, the Divine words direct from source, which like hidden treasures are scattered throughout the epics on the life of Lord Shri Rama. While there is much to learn from the exemplary life of Lord Rama and the various episodes connected therein, this paper we hope will encourage and motivate the study of these direct preachings.

This paper is a presentation from the Pranic Healers Society of Jaipur. We Pranic Healers have a very deep connect with Lord Shri Rama, as our Guruji had disclosed that our Mahahguruji was none other than Lord Shri Rama in one of his incarnations. It is therefore our pleasure and privilege to be able to contribute in a small way to spread the teachings of our Maha Guruji.

The Human being, with all his bodies (physical body or अन्नमयकोष, etheric body or प्राणमयकोष, Astral body or मनोमयकोष, mental body or ज्ञानमयकोष, and causal body or विज्ञानमयकोष), is dependent in his/her early stages of development. For example, physically a small baby cannot take care of its own, it needs family, society to help him or her to grow, to become independent. The same child growing up requires the friends and family to develop emotionally, and later the education system to develop mentally. All these aids help the person achieve some degree of Independence. But the problem arises when incorrectly, independence is considered to be the eventual life goal or the purpose of life. Whereas, independence is only an interim stage in the journey.

The real life-purpose is actually interdependence, or the ability to recognise our inter-connectedness, and to be able to thrive in this. In the business sense, Independence comes from being profitable, but as all enlightened business leaders are aware, the proper goal is maximising value to all stakeholders, not just shareholders. Or, thriving in a state of interdependence.

Now, let's understand this from the words of Lord Shri Rama. In *Ramcharitmanas (Aranya Kand),* Lakshman approaches Lord Shri Rama and asks some questions, and requests Lord Shri Rama to show him the way to achieve *Moksha* (Liberation). In other words, Lakshman is confused about the purpose of life. He was trying to find out the real purpose of his own being, of life.

मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा। सब तजि करौं चरन रज सेवा॥
कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया॥

Lakshman is requesting Lord Shri Rama to show him a way to gain *Sadabuddhi*. *Sat* means *Viveka*, a deeper understanding of right and wrong. *Buddhi* refers to intellect or wisdom, true knowledge that can be lived. So he can serve Him (the ultimate life goal). Laxman actually wants to serve the highest purpose of this world, and is asking for guidance to achieve that.

We all are actually suffering and starving to know the real purpose, the highest purpose of life and we are literally wandering around in the Forest of life. Don't know where to go, can't see the road, just running around after some water pond or trees with fruits (means some small materialistic achievements) and often get attacked by wild animals (the mysteries and problems of life). But with the knowledge of the real purpose, with this higher sense, the forest transforms into a highway. Till the time we have this pride of Independence, we will be attacked by the failures and misery of life because our real existence is actually interdependent. We are all connected with something very powerful and very supreme, in fact once *Maya* is removed, we can see how we are truly inter-connected. So, as a part of his question, Lakshman specifically requests Lord Shri Rama to also throw light on terms like *Maya, Vairagya, Gyana, Bhakti,* etc.

Lord Shri Rama first explains *Maya* :

गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई।।

Maya is illusion. If we can understand illusion, only then we can understand further, so Lord Shri Rama explains maya in detail

तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ।।

एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव परा भवकूपा।।

Maya has 2 faces :

- **Vidya Maya -** the one from which the world has been created
- **Avidhya Maya -** the one who forms a veil of illusion which cannot allow us to see the Reality

Vidya Maya is the tool which is essential for all of creation. It created us as a mother, it helps us to live, to grow, become independent, to see ourselves as individuals. But simultaneously *Avidya Maya* cannot let us see beyond individuality. It fills us with so much of "I", "Me" अहंकार (अहम् = I, कार = doer) influence that we cannot find the real Soul realization. Because of *maya*, which is the creator of I-ness or Me-ness in us at such levels that we can be blind and can never reach the state of Soul realization, ie interdependence. So while *maya* provides the necessary conditions to become independent from the state of dependence, but, it is an obstacle to become interdependent from the state of independence. Without Soul-realization, it is impossible to see how we are a part of a bigger Whole, how we are inter-connected to God and to all, our inter-dependence on each other.

यद् दृश्यम तन्माया (Kena Upanishad): everything around us is *Maya*, even our mind is a creation of this *Maya*. So, it is actually very difficult to understand *Maya* with the tool which is also created by *Maya* itself. This is a stage of dependence.

Lord Shri Rama next points to how to remove the veil of *Maya* - the answer is *vairagya* (detachment). With the help of detachment, we can understand the real relation between *Jeeva* and *Ishwara*.

माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव। बंध मोच्छ प्रद सर्बपर माया प्रेरक सीव।।

The reality is that the *Jeeva*, the incarnated Soul, is NOT the body, but HAS the body; rather, has the various bodies , the *panchkosha*. Due to the influence of *maya*, the *Jeeva* identifies itself with the physical body, emotions and thoughts. This is a very limiting understanding. But the actual picture is that the soul has the body to learn something, to experience life. Because of *maya*, which leads to Ahamkar, soul cannot understand its true nature. This makes *Jeeva* dependent on its own illusions, and restricts from seeing the bigger, deeper, real picture, the inter-connectedness, the interdependence on the greater reality. Consequently, the purpose of life also becomes distorted – one believes that the final, ultimate purpose of life is to achieve independence. Whereas the real purpose of life is to achieve inter-dependence through removal of the veil of *Maya* and to realize the Oneness.

Lord Shri Rama Further Explains

ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।।

सो मायाबस भयउ गोसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं।। जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई।।

The Ishwara is eternal and indestructible, cannot be divided or broken down; rather, *Akhand Avinashi* - one who cannot be destroyed. We (the Soul) are HIS *Ansha* (part) and are very much like Him. We are not one with this body of this material world, but we are one with that Supreme Soul. We are not dependent on this body or world but we are actually independent of them.

However, humans through their own creations (actions, emotions, thoughts) get bound into the web of materialism. Lord Shri Rama is teaching us that as creators, we have the power, the ability, the choice, to also destroy these bindings, to achieve freedom from this Samsara.

When I can create something, I can destroy it also. So I can destroy my erroneous thoughts, emotions and actions (Karma) which cause attachments, which bind me. This understanding, this Independence comes with the knowledge of the detachment *Vairagya*. This way, Lord Shri Rama lead us into the preachings of *Vairagya*. *Vairagya* helps us demolish the web of *Maya*, the bindings we ourselves create when we pursue the wrong goals. *Vairagya* helps us see that personal material benefits are not the highest goal, since these do not lead to an end of misery. But, if a person or even a business, practices *Vairagya*, it results in this entity placing "benefit to all" as its highest goal.

Next, Lord Shri Rama explains *Gyana* (the real Knowledge). Only this can help us to be free from all miseries, by transcending Independence, towards Inter-dependence. With the right knowledge, we can see the truth, the real & vast Reality underlying our mundane material existence.

ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं।।

कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी।।

With the help of knowledge, we can see the ultimate Oneness, the ultimate interdependence in everything which is the real purpose of our lives according to Lord Shri Rama. The first stage was the state of dependence where we became aware of "I am the body. I am dependent on this body to exist, to do anything, to achieve anything". The second stage was the stage of Independence where we understand that I am not the body, but I the Soul have the body to experience life, to achieve higher purposes. And then the third state, the stage of interdependence where we understand that I am one with Brahman, all is Brahman, and I am connected with all ! This is interdependence or inter-connectedness or Oneness. With this realization, we transcend, grow beyond, the material world – in Lord Shri Rama's words, we are able to let go of the world as if it were just a strand of dry grass (तृन). This is the highest attainment one can achieve. When one understands that we cannot survive without each other, that we are in reality One, then we literally cannot fail.

This translates into true success when applied to a business enterprise – the accelerated generation of value to all stakeholders. Further Lord Shri Rama provides us a tool to achieve all of the above, viz. *Bhakti* or Devotion :

जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई।।

The Lord informs us that *Bhakti* is the most powerful and fastest way to achieve the most desirous, the most highest. There are other ways also : like to follow *Dharma (Dharmacharana)* the right action for your own development, including the development of the whole society.

The path of Knowledge is dry and tedious, and not for all. But *Bhakti* is possible for everyone, and without bhakti you cannot follow the paths of *Dharmacharana* and *Gyana*. *Bhakti* is the driving force for both other paths.

Bhakti can be described as eternal love and the supreme surrender to the Lord. We actually cannot learn anything from any teacher in this world until we surrender before the teacher's knowledge. And God is the supreme teacher, ready to give us what we want as a loving parent. It is we who lack this love and surrender. The key ingredient of *Bhakti* is love, the most free and independent element in this nature, the most connective element in this nature. Without love, we cannot feel this interconnectedness or interdependence of this world, which is the most important fabric of this whole *Jagat Brahman* or Universe.

Let's understand the sense of purpose through Lord Shri Rama's another direct teaching – the *Vibhishana Geeta,* available in the *Lanka Kanda* of the *Ramacharitmanas.* Here Lord Shri Rama further explains this highest purpose of our lives and businesses.

In *Vibhishana Geeta*, when Ravana comes to the battle-field, Vibhisana, due to his extreme love for Shri Rama, expresses his concern due to Ravana's valour, strength, weapons, chariot etc (and Shri Rama only has bow and arrow, not even shoes).

Lord Shri Rama replies using the metaphor of a chariot - there is a different kind of chariot that helps gain victory, the chariot of *dharma,* and in doing so teaches the essence of *Dharma* :

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

बल बिबेक दम परहित घोरे। क्षमा कृपा समता रजु जोरे।।

ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना।।

दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा।।

The wheels of that chariot are valour and fortitude. Steadfastness in truth and good character are its flag and banner. The horses of that chariot are strength, discrimination, self-control and care for others. Its reins are made of the ropes of forgiveness, compassion and equanimity. Devotion to God is the intelligent charioteer. Dispassion is the shield and contentment is the sword. Charity is the axe, understanding is the missile and knowledge of the self is the relentless bow.

Describing the armour and other weapons of the person riding *Dharmaratha* (chariot of righteousness) Lord Shri Rama says:

अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।

कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा।।

सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहन कतहुँरिपु ताकें।।

महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।

जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर।।

A pure and steady mind is like a quiver, while quietude and the various forms of abstinence and religious observances are a sheaf of arrows. Homage to the Brahmins and one's own Guru is an impenetrable armor. There is no other equipment for victory as efficacious as this. He who owns such a chariot of piety has no enemy to conquer anywhere. Concluding the sermon, Lord Shri Rama says that the person who possesses this strong chariot (of *Dharma*) is a great hero, and can conquer even the most mighty and invincible foe i.e., attachment to the world.

If we consider this from perspective of modern business wisdom : it is accepted that it is extremely important for the enterprise to commit to a sense of purpose greater than selfish interest, and to a set of moral values. Lord Shri Rama is implying the highest purpose : Dharmic conduct, dedication to service of others and of God, and to facilitate this has given a set of values using the metaphor of a chariot. The background is of a battle-field, which easily lends itself to the modern-day business scenario. Master Choa Kok Sui, the founder and Guru of Pranic Healing, says "Competition is another form of warfare. It is just more civilized." If it can apply to a battlefield, then can surely apply to any & every life scenario including business.

The exhortation to Dharma is particularly important & relevant. Dharma implies righteous attitude & actions, and this implies doing the right thing for every stakeholder, a reminder of the concept of "वसुधैव कुटुम्बकम्". This is again a mindset that 21st century businesses are coming to terms with and aiming for – value to <u>all</u> stakeholders, not just profits or shareholder value. In other words, inter-dependence, inter-connectedness.

Further, we understand that there is one Brahman, one source, one Supreme source of power. We are all small parts of that Supreme Source, and if we want to destroy each other in order to gain success, then it is absolutely pointless. Killing or destroying anyone is like killing on destroying our own selves !!! Master Choa says "Based on the Principle of Spiritual Oneness, whatever a person does to others he does to himself." If we want to grow, we have to see beyond ourselves. Realisation of Interdependence is very real and essential in order to gain success. In fact, our survival depends on each other because we are the part of each other. We are all connected with other. This applies as much to an individual, as it does to a business, and it is a most welcome trend that modern thought, especially in business, is slowly accepting and aligning with the principle of Oneness, of Inter-connectedness.

We also understand this from the Ishopanishad

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥

He who sees everywhere the Supreme Self in all existences and all existences in the Self, shrinks not thereafter from aught, does not hate or fight them.

2. Conclusion

Man is already at the stage of independence with a very developed, sharp mind, and that is well-positioned to achieve the highest purpose of your existence. These Divine preachings, the direct Treasures of Wisdom from the Highest Source is available, and study of these will enable us to transcend self-centredness and realize interconnectedness; this realisation is the most important, necessary and beautiful achievement possible in this world. And the Divines words from the highest source are available to guide us.

3. References

1. Swami Tejomayananda "श्री राम-गीता", Central Chinmaya Mission Trust, 2011. ISBN 978-81-7597-318-3
2. Swami Tejomayananda, "VIBHISANA-GITA", Central Chinmaya Mission Trust, 2011 ISBN 978-81-7597-167-7
3. IIT-Kanpur, The Gita Super Site https://www.gitasupersite.iitk.ac.in/
4. Stephen Covey, "The 7 Habits of Highly Effective People", Simon & Schuster 2019
5. Jim Collins, Jerry I. Porras, "Built to Last. Successful Habits of Visionary Companies", RHUK, 2005
6. Master Choa Kok Sui, "The Existence of God is Self-Evident" IIS Publishing Foundation India Pvt Ltd, 2010. ISBN 971-0376-08-X
7. Master Choa Kok Sui, "Compassionate Objectivity" Institue of Inner Studies, Phillipines, 2004. ISBN 971-92818-5-5

रामायण आधारित आधुनिक महाकाव्य साकेतसौरभम्: एक अध्ययन

जयश्री गामीत

ओरिएंटल इंस्टीट्यूट (प्राच्यविद्या मंदिर), महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बडौदा, वडोदरा

(gamitshree@gmail.com)

भास्कराचार्य त्रिपाठी विरचित साकेतसौरभम् आठ सर्गों व ४९५ श्लोकों में विभक्त आधुनिक संस्कृत महाकाव्य है। यह महाकाव्य २००३ में नाग पब्लिशर्स , दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। साकेतसौरभम् में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के उदात्त चरित्र का वर्णन किया गया है। यह महाकाव्य आधुनिक संस्कृत साहित्य को डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी की बहुमूल्य देन है।

1. कविपरिचय

भास्कराचार्य त्रिपाठी एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि हैं। उनका जन्म 1 जुलाई 1942 को ग्राम पांडर, जसरा, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए और डी. फिल. किया है। वे भोपाल के शासकीय रामानंद कॉलेज में संस्कृत के प्रोफेसर थे। वह इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के साथ-साथ अमेरिका के हिमालयन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट होन्सडेल और पेंसिल्वेनिया में विजिटिंग प्रोफेसर थे। त्रिपाठीजीने अमेरिका के फिलाडेल्फिया में आयोजित छठे विश्व संस्कृत सम्मेलन में शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था। उन्होंने 13वें विश्व सम्मेलन में भी भाग लिया था।

त्रिपाठीजी की रचनाएँ समकालीन संस्कृत रचनाधर्मिता से जुड़ी हुई हैं। गद्यद्वादशी, लक्ष्मीलाञ्छनम्, मृत्कूटम्, निलिम्पकाव्यम्-निर्झरिणी, संस्कृतजीवनम्, स्नेहसौवीरम्, अजाशती, लघुरघु (पाँच भाग), तौर्यत्रिकम् (सुतनुकालास्यम् आदि तीन ध्वनिरूपक), साकेतसौरभम् महाकाव्य, कवि भवभूति और उनका नाट्यलोक (संयुक्त) आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं। उन्होंने कृष्णावतार, मानस मधु, दूर्वा (२४ अङ्क), भोजभारती आदि संस्कृत पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी किया है। वह आकाशवाणी (१९५४) तथा दूरदर्शन प्रसारण से सक्रिय रूप में संबद्ध रहे हैं।

भास्कराचार्य त्रिपाठीजी को कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। उनकी रचना निर्झरिणी (जो कि आधुनिक शैली की गीतात्मक कविताओं का संग्रह है) के लिए 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। के के बिरला फाउंडेशन द्वारा उनको साकेतसौरभम् के लिए वाचस्पति पुरस्कार से प्राप्त हुआ है। उनको भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल द्वारा "सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर" से भी सम्मानित किया गया।

2. कथावस्तु

'साकेतसौरभम्' महाकाव्य की कथावस्तु प्रख्यात है। इसमें भगवान् श्रीराम के उदात्तचरित और आचरण का वर्णन किया है, जो आदिकाल से जन मानस को इतना प्रभावित करता आ रहा है कि आज भी लोग उनको अपने हृदय में धारण कर उनके गुणों का स्मरण करते हैं। इस महाकाव्य में राम के जन्म से लेकर लव-कुश से मिलन तक की कथा का संक्षिप्त रुप में वर्णन है। सर्गों का नामकरण भी किया गया है जिससे तद्गत कथावस्तु का संकेत मिलता है। प्रत्येक सर्ग की कथावस्तु इस प्रकार है।

प्रथम सर्ग – (अवतारः)

परम्परा के अनुसार इस सर्ग की शुरुआत मंगलाचरण से हुई है। प्रस्तुत सर्ग में गणेशजी, कच्छपी वीणा धारण करनेवाली सरस्वती, ब्रह्माजी, शिवजी, सीताजी, श्री राम, वाल्मीकि, भास, भवभूति, कुमारदास, कवि के पिताजी जो की उनके प्रथम गुरु भी थे एवं संस्कृत भाषा आदि की स्तुति की गई है। अवतार नामक इस सर्ग में राम एवं चारों भाईओं के जन्म एवं शिक्षा से लेकर विवाह कर के अयोध्या लौटने तक का वर्णन है।

द्वितीय सर्ग – (संस्कारः)

सीता के अयोध्या आने से उदास जनकपुरी, दशरथ का राम का राज्यभिषेक करने का निर्णय और उसके समर्थन में अयोध्या में उत्सव, रानी कैकयी के दो वरदानों के रूप में भरत का राज्याभिषेक और चौदह वर्षो के लिए राम का वनवास, राम-सीता व लक्ष्मण का वनगमन, श्रवण द्वारा दिए गये शाप के कारण पुत्रवियोग में दशरथ की मृत्यु, वाल्मीकि मुनि एवं राम की चर्चा आदि प्रसंगों का निरुपण इस सर्ग में किया गया है।

तृतीय सर्ग – (संकल्पः)

संकल्प नामक इस सर्ग में शरभंग आश्रममें यज्ञ प्रारंभ करने के समय मुनियों का रुदन देख के राक्षसों की हत्या, राम-सीता का पञ्चवटी में निवास, लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा को कनकटी और नकटी बनाना, मायावी मारीच का स्वर्ण मृग बनके पञ्चवटी में आना, सीता की स्वर्ण मृग की कामना, रावण का संन्यासी के भेष में आके भिक्षा की याचना करना, सीताहरण, खून से लथपथ जटायु से राम का मिलना, सीता के विरह में राम का विलाप, राम एवं शबरी का मिलन आदि कथा इसमें वर्णित है।

चतुर्थ सर्ग – (सहकारः)

श्री राम की पवनपुत्र हनुमान से भेंट, सीता के वस्त्रों व आभूषणों से सीताजी किस दिशा में गयी है वह पता चलना, रामजी एवं सुग्रीव की मित्रता, बालि वध, सीता की खोज में सभी वानरों का दसों दिशाओं में भेजना, श्री राम के संकेत पर उनकी अंगुठी देकर हनुमान् को दक्षिण दिशा में भेजना आदि वर्णन इस सर्ग में है।

पञ्चम सर्ग (उद्योगः)

कुम्भकर्ण एवं रावण का वर्णन, हनुमान् का समुद्र लाँध के लंका में आना, लंकिनी को हनुमानजी का थप्पड लगते ही ब्रह्मा की वचनावली याद आना, हनुमान् का लंका में विचरण व विभीषण से मित्रता, विभीषण द्वारा बताए मार्ग से हनुमाजी का अशोकवाटिका में पहुँचना, सीताजी का रुदन देख के उनका हृदय द्रवित होना, रावण का अशोकवाटिका में आना व सीता को धमकी देना, रावण के चले जाने के बाद हनुमानजी का श्री राम का भजन प्रारम्भ करना व राघवेन्द्र की कर मुद्रिका सीता की गोद में डालना, मुद्रिका को देखकर सीता का विलाप, हनुमान का सीता को आश्वासन देना, रावण की फलफूल की वाटिकाओं का विनाश, लंका दहन एवं सीताजी की पहचान स्वरुप उनका चूडामणि प्राप्त कर श्रीरामजी के पास वापस आना आदि प्रसंगों का वर्णन इस सर्ग में मिलता है।

षष्ठ सर्ग (विक्रमः)

नल-नील, जाम्बवान, सुग्रीव, हनुमान व वानर सेना की मदद से श्री राम का समुद्र पर पुल बनाना, अंगद का दूत के रुप में रावण के पास जाना, रावण का र, ण-क्षेत्र में मुकाबला करने का विकल्प अपनाना, शरणार्थी विभीषण को श्री राम का लंकाधीपति बनाने का वचन देना , मेघनाद का युद्ध के दौरान शक्तिबाण चला के लक्ष्मण को मूर्छित करना व हनुमानजी का संजीवनी औषधि लाकर उनकी मूर्छा दूर करना, रावणवध, सीताजी के साथ पुष्पक विमान में अयोध्या की ओर श्री राम का गमन इस सर्गमें वर्णित है।

सप्तम सर्ग (अभिषेकः)

जिस दिन जन्मोत्सव हुआ उसी चैत्र शुक्ल नवमी के दिन जन्म हुआ उसी दिन श्रीराम का वनगमन व साकेत में लौटने पर राज्याभिषेक भी होना, राम के प्रशासन का वर्णन एवं श्री रामजी की स्तुति से यह सर्ग पूर्ण होता है।

अष्टम सर्ग (दिग्विजयः)

सीताजी का गृहस्थी के मंगल प्रतिक गर्भ धारण करना, राम का तपोवन के आध्यात्मिक वातावरण में संतानो को जन्म हो ऐसा चाहना व धोबी के मुख से पारिवारिक निन्दा के बहाने सीताजी को वाल्मीकि आश्रममें भेजना व लव कुश के जन्म ले कर उनके रामजी से मिलन के साथ यह सर्ग पूर्ण होता है।

3. महाकाव्यत्व

साकेतसौरभम् महाकाव्य का नामकरण आचार्य विश्वनाथ के मतानुसार किया गया है। महाकाव्य का शीर्षक कवि, नायक या इतिवृत्त के आधार पर होना चाहिए।[1] साकेतसौरभम् का नामकरण इतिवृत्त के आधार पर किया गया है। भारतीय काव्यशास्त्र परंपरा के अनुसार किसी भी कृति की निर्विघ्न समाप्ति के लिए कृति का आरंभ मंगलाचरण से होता है। महाकाव्य का आरंभ आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक या वस्तुनिर्देशात्मक इन तीनों में से कोई एक मंगलाचरण से होना चाहिए ऐसा विश्वनाथ का कथन है।[2] साकेतसौरभम् महाकाव्य का आरंभ नमस्करात्मक मंगलाचरण से हुआ है।

संस्कारकारणं व्यापद्वारहरणं वारणाननम्
गणेश गणतन्त्रेशं कलये हृदयालये ।। १.१।।

महाकाव्य की सर्गबद्धता के विषय में कवि ने भामह[3], दण्डी[4], व विश्वनाथ[5] आदि आचार्यों क काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों का पालन किया है। प्रत्येक सर्ग का नामकरण उसमें वर्णित विषय के आधार पर होना चाहिए एवं महाकाव्य में ज्यादा बडे या ज्यादा छोटे नहीं हो ऐसे कम से कम आठ या उससे ज्यादा सर्ग होने चाहिए[6] ऐसा आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्य दर्पण में कहा है। प्रस्तुत महाकाव्य में सर्गों का नामकरण तद्गत कथावस्तु के अनुसार किया गया है। महाकाव्य की कथावस्तु आठ सर्गों में विभक्त है। सर्गों के अन्त में अग्रिम कथा सूचित की गई है। महाकाव्य का नायक देवता या

---

1 कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।

2 आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।

3 सर्गबन्धो महाकाव्यं महतां च महच्च यत्।

4 सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम्।

5 सर्गबद्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।

6 नाति स्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।

उच्चकुल में जन्मा हुआ धीरोदात्त आदि गुणों से सम्पन्न होना चाहिए ।[7] हमारे महाकाव्य के नायक उच्चकुलमें उत्पन्न एवं धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त श्रीराम है। महाकाव्य में रामकथा का प्रख्यात कथानक ग्रहण किया गया है। महाकाव्य में यथा स्थान पर संध्या, सूर्य, चन्द्र, प्रभात, रात, अंधकार, दिन, सुबह, मध्याह्न, मृगया, नगर, आश्रम, तपस्या, नदी, वन, पर्वत, उद्यान, कृषि, युद्ध, विवाह, पुत्रजन्मोत्सव, संयोग-वियोग, मुनि, समुद्र, आदि का सन्तुलित वर्णन किया जाना चाहिए। यह सारे लक्षण प्रस्तुत महाकाव्य में उपलब्ध है। महाकाव्य में उचित रस, अलंकार व छन्द का सुंदर तरीके से उपयोग किया गया है। कवि ने इंद्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसंततिलका, मालिनी, शार्दुलविक्रीड़ित, जैसे कई छंदों का प्रयोग किया है। कवि ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए जिन अर्थालंकारों का प्रयोग किया है उनमें यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति,अर्थान्तन्यास, अर्थापत्ति, दृष्टांत, विसामा, व्यातिरेका आदि शामिल हैं।

इसप्रकार महाकाव्योचित सारे लक्षणों से युक्त होने के कारण यह एक सफल महाकाव्य है।

4. महाकाव्यकी आधुनिकता

साकेतसौरभम् रामकथा पर आधारित आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों में उल्लेखनीय है। यह एक ऐसा महाकाव्य है जिसमें हमें संस्कृत महाकाव्य और हिन्दी कथा काव्य दोंनो का आस्वाद मिलता है। रस के अनुरूप छन्दों का प्रयोग एवं सुरम्य रामकथा का गीतों के रुपमें अत्यंत दुर्लभ प्रयोग इस महाकाव्य में पाया गया है। इस महाकाव्य में 'रिंगो हाइकू' नामक विदेशी वृत्त का प्रयोग भी कुछ स्थानों पर देखने को मिलता है। आदि कवि द्वारा वर्णित मानवीय मूल्यों का वर्णन भी इस नवीन महाकाव्यमें पाया गया है।

5. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. त्रिपाठी, भास्कराचार्य, साकेतसौरभम् , नाग पब्लिसर्श, दिल्ली, 2003
2. भामह, काव्यालंकार ऑफ भामह (अंग्रेजी अनुवाद – पी.वी. नागनाथ शास्त्री) मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट, लिमिटेड, 1991
3. दण्डी, काव्यादर्शः (अंग्रेजी अनुवाद – वी.वी. शास्त्रालु) संपा. पण्डा, रबिन्द्रकुमार, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ही, 2008
4. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, संपा. शास्त्री, शालग्राम, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ही, 2008

[7] सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तः गुणान्वितः ।

Bharatha: The Effective Leader

Sriraman Chandramouli

Vijaykrishnan S.

(sriramancva@live.com)
(svijaykrishnaniyer@gmail.com)

For a successful organization, let it be a small company, a big corporation, a government that runs the country or a home where we live in as a family, Good leaders, who can guide the others in that organization is important. Anyone can be a manager, running the show, but it needs a good leader to effectively manage and for the organization to be successful on the long run. For that matter, the leader, need not be a manager and could stand as a person among the crowd, but should be a personality, who can exactly dictate how things should happen. Ramayans is the aadharsha kavya giving you an insight on all aspects of life, History, Geography, Science, Languages and even Mathematics. Will it leave behind management studies and leadership qualities? In this paper, we have analysed how Bharatha had been an effective leader, as showcased in the Valmiki Ramayana.

1. Introduction

A manager is a person who controls an organization or a division of an organization and strives to accomplish a specific goal. The goal could be anything from ensuring the smooth functioning of the household to the successful handling of project deliveries. However, a Leader would be a person who would empower people across the organization to strive towards a common goal. A leader focuses on People whereas a Manager focuses on things/ activities. A manager has a plan in place and focuses on executing it. Whereas a Leader is a person, who will not only focus on a plan but also ensure that he can accommodate changes to a plan to achieve a greater vision. A leader would be using influence where a manager tries to assert his authority and a leader would develop a change. In contrast, a manager would just try to handle a situation or a change. Ramayana of Valmiki espouses the character of an ideal leader and Bharatha is shown as one of the most effective leaders. His leadership qualities are a lesson for us to learn and adopt.

Even the Dhyana Sloka in Ramayana showcases Bharatha's character as a wonderful leader.

Vaidehi Sahitham Shuradhrumathale Haime Maha Mantape
Madhye Pushpakamasane Manimaye Veerasane Susthitham
Agre Vaachayathi Prabanjana Suthe Thathvam Munibhyaparam
Vyaakyaantham Barathadibir Parivrutham Rama Baje Shyamalam

In the last part of this sloka, we can see that, it is said Bharatha was leading a group of rishis and listening to Rama. Espousing 2 characteristics of an effective leader. One showcased that he listens to others, and the second clearly showing that the well-learned rishis were ready to follow whatever Bharatha was doing.

2. Relationship of Rama and Baratha

As a follow up to the sloka quoted above, we know that Bharatha was obedient to Rama, but how was their relationship in terms of management principles? In the paralace of a corporate industry of today, I would say that, it was like a relationship between a CEO and a chairman. A CEO is the functioning head of the organization, but a chairman is more of an advisor and is responsible if there is a crisis even with the CEO, otherwise, he does not even come into the picture of everyday affairs.
Similarly, during the 14 years of Rama's Exile, Baratha effectively managed the kingdom, but he never sat in the chair of the king.

"*Baratha Raajyabaaranath Bibharthi iti Barathaha*"

This is the name meaning for Baratha given in the vykyanams of Ramayana. Meaning, Bharatha is the person who handles the load of the rajya/ the kingdom. True to his name, we can see Bharatha doing that.
In the next few sections, we will discuss how Bharatha showcased various leadership qualities.

3. Focus on People

In the Ayodhyakanda, when Rama meets Bharatha, at Chitrakoota, Rama asks him a set of questions, focusing on how Bharatha is managing the kingdom. When we see those questions, we realize how importance was given to people in various strata of the society and how important a role, that every individual person played in the society.
This is similar to how every job in an organization being important and being dependent on the people doing it.

Rama asks the following: Whether Bharatha was

1. Revering and Honoring the Sages – Gurus – Brahmanas – Teachers. Teachers form the most important part of society as they play a role in the development of future generations. So the first important question is on revering the teachers.
2. Worshipping the Gods and Ancestors – Nithya karmanushtana – Performing certain ritualistic actions is important in a society. Worshipping the Gods and
3. Din't Oversleep – Sleeping beyond a time will mean we are not working for the right time
4. Concentrated on Unperturbed Public Works at Low Cost and Max Benefits – A government works on taxes.

The Tamil Tirukkural says as below.

" *Iyattralum Eettalum Kaatthalum Kaattha*
Vagutthalum Valladhu Arasu"

Meaning, a government has right to earn money via taxes and spend it in the right way for the people. Same way, the taxes of the people should not be misused, Rama guides and Bharatha listens here, on ensuring unperturbed public work, at low cost and maximum benefits for the people, in no way compromising the quality of service given to people

5. Obeying Servants – Valiant Army chief and men – A company always needs its employees who will obey the leader. Someone rebellious and not sensible will not serve the purpose of achieving the goal
6. was Vary of Rival Kings and ensured secrecy of plans
7. Did not Delay Wages – After all, humans need work as a barter for money/ other needs.
8. Having wise Spies and Ambassadors -in modern parallel, you can compare it to organizations having the right people for marketing
9. Did Not think meak about the Weak – This was the most important. A king should never think that someone weak was useless. Again a quote from a Tamil poem, Purananuru states thus

"*Eliyorai Igazhndhandrum Ilamey"*

And in the Ramayana, both Valmiki and Kamban highlight this, when they quote that the king should never think meak of the weak. This directly applies to a leader, who should also never think that his opponents are weak and become careless.

4. Bharatha the Visionary – City Management

A Leader is usually a great visionary. He knows what is needed for the future and thinks about solutions for long term problems when trying to address a current issue. Let's see, how Bharatha displayed these traits of being Future Ready, as someone who was driving change and also was a great visionary through another section in the Ayodhya Kanda of the Valmiki Ramayana.
In this section, Bharatha has decided to travel to the Forest with his entire cortege to meet Rama, and in the process, he visualizes what is needed for the city, and what is needed for the future. Lets see how he, and his troupe creates pathways and bridges to reach the forest, which will also ensure the effective usage of those spaces in future- at the same time, not causing harm to the environment.

While Bharatha goes to the forest, he decides to create Royal Highways along the path.

- While doing so, he ensures new trees are planted for every tree that is cut.
- Soil Testers, Thread Bearers, Excavators, Mechanics, laborers, Carpenters, Road Menders, Wood Cutters, Hollow Makers, Men for plastering, White Washing men, Skilled Plasterers, Basket Makers, tanners, and Supervisors went in advance before Bharatha to ensure that the roads were measured in the right way, wood removed from the trees were reused for the roads as needed, stones were removed and the pathways were leveled and roads that could be reused again and again along with bridges across rivers were created.
- The highways were of such quality that an entourage of 1000 elephants, 10000 horses, and lakh humans did no damage to them, and it looked as good as new, after they used it
- Bridging the Streams, Pulverised Rocks to ensure the water path was not obstructed, Small Dams on Rivulets and a lot of ponds were built. Excellent Wells were also dug in water scarce areas. This highlighted how important water management for the future was and how the King had prioritized that as a wonderful leader Similarly, when Rama, Seetha, and Lakshmana return to Ayodhya, Bharatha once again shows his prowess in managing the city by building pathways from Nandigrama to Ayodhya.
- " *Vishamani Samanicha*" – Let the Path from Nandigrama to Ayodhya be levelled says Bharatha urther, as the time Rama returns in the Hot Summer month of Chaithra, we can also see Bharatha speak on sprinkling the ground with Ice Cold Water so that the land is cooled down - "*Himasheethena Vaarina*"

5. A Leader is always Future Ready and Empowers Individuals

Bharatha always gave importance to other individuals who were doers and ensured that he had the right people for the right job. This can be seen throughout the epic. Some examples are quoted below.

At Nandigrama, we can see Bharatha instructing Shatrugna on what should be done for Rama's return, and in turn, Shatrugna influences the 8 ministers (Dhrushti, Vijaya, Jayantha, Siddartha, Arthasadhaka, Ashoka, Mantrapala and Sumantra). All the names of the 8 ministers were highly suggestive of the jobs they were doing/ eloquent with.

- Dhrushti – The Visionary, or the person who identified the goals.
- Vijaya – The one who commanded the armies and brought in victories
- Jayantha – The Manager who managed the affairs of those areas which had been won over
- Siddartha – The one who was accomplished in obtaining money
- Arthasadhaka – The man who was guiding the team on Management principles
- Ashoka – The person who ensured that the team never faced sadness
- Mantrapala – Who was the chief advisor

And The Arya Sumathra – which directly means – The Good Minister – or the person who showed the Righteous/ Right path.

Abraviccha Tadha Raamam Bharatha sa Kruthanjali ।
Eththe Rakshitam Rajyam Naajyaam Niryaatitam Maya ॥

He always had the right people to raise the right questions which is essential for a leader

6. Conclusion

All the above instances throughout various events in the Srimad Ramayana only illustrate how good a leader Bharatha was. Direct proof to his leadership skill was that the Treasury and Granary has been enhanced by tenfold, over the 14 years, when Rama was in exile.

avekshathaam bavaankoshaam koshtaagaaram puram valam ।
bavatastejasaa sarvam krutham dashagunam mayaa ॥

That is why, people always say they want the, Rama Rajya – The Rajya, that functions with the best of leaders, even when the Rama (The One who delights is not around to guide

7. References

1. Srimad Valmiki Ramayana – Moolam from Vigneshwara Venkateshwara Trust (Suthern Recenssion)
2. http://www.valmikiramayan.net/.
3. https://www.valmiki.iitk.ac.in/
4. Srimad Valmiki Ramayana, Hindi Edition, Gita Press, Gorakhpur (2019)
5. Valmiki Ramayana with Tamil meanings, (Dharmalaya Edition of Ramayana Publishing House)
6. Kambans Ramavatharam
7. Thirukkural
8. Purananuru
9. Valmiki and Kamba – a Speech by Dr. Sudha Seshayyan
10. Srimad Ramayana Upanyasam by Brahmasri Sundarakumar

सत्य को उजागर करना: रामचरित मानस में उद्धरित पाताल लोक की खोज

भरत राज सिंह
धर्मेंद्र सिंह
हेमन्त कुमार सिंह
School of Management Sciences, Lucknow
(brsinghlko@yahoo.com)

रामायण में वर्णित पाताल लोक का अस्तित्व एक रहस्यमय पहेली की तरह सदियों से विद्वानों और शोधकर्ताओं को हैरान करता रहा है। यह शोध पत्र पृथ्वी के नीचे भूमिगत क्षेत्र के अस्तित्व की संभावना का पता लगाता है, विशेष रूप से होंडुरास के प्राचीन शहर स्यूदाद ब्लैंका की हालिया खोज की ओर ध्यान आकर्षित करता है । रामायण भगवान राम के भक्त हनुमान की यात्रा का वर्णन करती है, जो अपने प्रिय देवता को अहिरावण के चंगुल से बचाने के लिए पाताल लोक में चले गए थे । इस गोस्वामी तुलसीदासजी के रामायण महाकाव्य कथा के अनुसार, हनुमान ने 70,000 योजन की दूरी तक फैली सात सतहों-अतल, वितल, सुतल, तलातल, महतल, रसातल और पाताल को पार किया । आधुनिक तकनीकी द्वारा, जैसे कि LiDAR तकनीकी, ने प्राचीन सभ्यताओं का पता लगाया है, जिससे अटकलें लगाई जा रही हैं कि स्यूदाद ब्लैंका पौराणिक पाताल लोक के साथ सरेखित है, विशेष रूप से खोजी गई मूर्तियों और रामायण में वर्णित मूर्तियों के बीच आश्चर्यजनक समानताएं हैं । यह जांच न केवल पौराणिक आख्यानों और पुरातात्विक निष्कर्षों के बीच संभावित संबंधों को स्पष्ट करती है बल्कि प्राचीन भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और वैज्ञानिक योगदान पर भी प्रकाश डालती है । यह विश्व स्तर पर प्राचीन ज्ञान के प्रसार को प्रोत्साहित करता है, मिथक और वास्तविकता के संश्लेषण की गहरी क्षमता को बढ़ावा देता है ।

1. प्रस्तावना

प्राचीन मिथकों और किंवदंतियों की खोज अक्सर लोककथाओं और वास्तविकता के बीच जटिल अंतरसंबंध को समझने के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करती है। पौराणिक आख्यानों की विशाल टेपेस्ट्री के भीतर, कुछ कहानियाँ रामायण की महाकाव्य गाथा जितनी गहराई से गूंजती हैं । इस कालजयी कहानी के केंद्र में भगवान राम के समर्पित शिष्य हनुमान की पाताल लोक की गहराइयों में की गई साहसिक यात्रा है । जैसे ही हनुमान अपने प्रिय देवता को बचाने के लिए इस खतरनाक खोज पर निकलते हैं, कथा न केवल कल्पना को लुभाती है बल्कि पृथ्वी की सतह के नीचे छिपे रहस्यमय स्थानों के अस्तित्व के बारे में गहन प्रश्न भी उठाती है। पाताल लोक का रहस्यमय क्षेत्र लंबे समय से आकर्षण और साज़िश का विषय रहा है, जो विद्वानों, उत्साही लोगों और आध्यात्मिक साधकों के मन को समान रूप से लुभाता है। प्राचीन हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित, पाताल लोक को एक भूमिगत दुनिया के रूप में दर्शाया गया है जिसमें दिव्य प्राणियों, राक्षसों और पौराणिक प्राणियों का निवास है। रामायण और अन्य पवित्र ग्रंथों में पाताल लोक के वर्णन से विशाल भूमिगत साम्राज्यों, भूलभुलैया सुरंगों और रहस्य में डूबे रहस्यमय परिदृश्यों की ज्वलंत कल्पना उत्पन्न होती है। हालाँकि, इसके पौराणिक आकर्षण से परे, पाताल लोक की खोज अनुभवजन्य जांच के दायरे तक फैली हुई है, क्योंकि विद्वान इन प्राचीन कथाओं के पीछे की सच्चाई को जानने की कोशिश कर रहे हैं। समझ की इस खोज ने पौराणिक कथाओं और लोककथाओं के अध्ययन से लेकर पुरातत्व और तकनीकी नवाचार तक विविध विषयों के एकीकरण को जन्म दिया है। यह इस अंतःविषय ढांचे के भीतर है कि हम पाताल लोक के पीछे की सच्चाई को उजागर करने के लिए अपनी यात्रा शुरू करते हैं। हमारी जांच के केंद्र में रामचरित मानस की कथा है, जो हिंदू साहित्य का एक मौलिक पाठ है जो काव्यात्मक रूप में रामायण की कहानी को दोबारा बताता है।

इस पाठ की सावधानीपूर्वक जांच के माध्यम से, हम पाताल लोक के प्रतीकात्मक महत्व और दैवीय हस्तक्षेप और ब्रह्मांडीय संघर्ष की व्यापक कथा के भीतर इसकी भूमिका को समझना चाहते हैं । पौराणिक प्रतीकवाद और रूपक की समृद्ध टेपेस्ट्री में गहराई से उतरकर, हमारा लक्ष्य पाताल लोक के पौराणिक परिदृश्य के भीतर निहित अर्थ की गहरी परतों पर प्रकाश डालना है *(वाल्मिकी, और सुंदररामास्वामी-1985)*। प्राचीन ग्रंथों की हमारी खोज के समानांतर, हमारी जांच ऐतिहासिक अनुसंधान और पुरातात्विक जांच के दायरे तक फैली हुई है। इस प्रयास का केंद्र मध्य अमेरिका के होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज है, एक ऐसी साइट जिसने पाताल लोक के पौराणिक क्षेत्र से अपने संभावित संबंध के लिए ध्यान आकर्षित किया है। LiDAR तकनीक जैसी आधुनिक पुरातात्विक तकनीकों के अनुप्रयोग के माध्यम से, शोधकर्ताओं ने होंडुरास के घने जंगलों के नीचे छिपी प्राचीन बस्तियों के साक्ष्य को उजागर किया है।

हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित कलाकृतियों और प्रतिमाओं की याद दिलाने वाली कलाकृतियों की उपस्थिति अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान और साझा पौराणिक रूपांकनों के बारे में दिलचस्प संभावनाएं पैदा करती है। बहुविषयक जांच के इस संदर्भ में ही हम प्राचीन विद्या और समकालीन समझ के बीच की खाई को पाटने के लिए अपना अध्ययन करते हैं। पौराणिक कथाओं, इतिहास और वैज्ञानिक अन्वेषण से अंतर्दृष्टि को एकीकृत

करके, हम पाताल लोक के रहस्यों को जानने और प्राचीन परंपरा और आधुनिक चेतना दोनों में इसके महत्व को उजागर करने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने में, हम मिथक की स्थायी विरासत और मानव कल्पना के असीमित दायरे की गहरी सराहना में योगदान देने की उम्मीद करते हैं।

2. साहित्य की समीक्षा

रामायण में लिखित पाताल लोक के अस्तित्व का प्रश्न सदियों से विद्वानों और शोधकर्ताओं को परेशान करता रहा है। यह शोध पत्र पाताल लोक के अस्तित्व की संभावना का पता लगाता है, विशेष रूप से होंडुरास के एक प्राचीन शहर स्यूदाद ब्लैंका की हालिया खोज पर ध्यान केंद्रित करता है। रामायण की कथा भगवान राम के भक्त पवनपुत्र हनुमान की यात्रा का वर्णन करती है, जो अपने प्रिय देवता को अहिरावण के चंगुल से बचाने के लिए पाताल लोक में गए थे। इस गाथा के अनुसार, हनुमान ने इस भूमिगत क्षेत्र तक पहुंचने के लिए पुराण में उल्लिखित सात-तलों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) में जा-जाकर 70 हजार जोजन की दूरी तय की थी। उल्लेखनीय रूप से, यदि आज भारत और श्री लंका के बीच से कोई सुरंग खोदने की परिकल्पना की जाती है, तो यह मैक्सिको, ब्राजील और होंडुरास जैसे देशों में ही निकलेगी । अतः पाताललोक की अवधारणा, मानव पहुंच से परे जमीन के निचली की दुनिया (अर्थात 180 डिग्री नीचे), पौराणिक कथाओं में बार-बार आती है, जो इसके अस्तित्व पर सवाल उठाती है।

चित्र 01 *पाताल लोक- जमीन के नीचे की वो दुनिया जहाँ आदिवासी द्वारा पूजा की जाती है बंदरो की*

ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2015 में आधुनिक LiDAR तकनीक *(ह्यूस्टन विश्वविद्यालय-2015)* का उपयोग करते हुए, मध्य अमेरिका के होंडुरास में एक खोए हुए स्यूदाद ब्लैंका नामक प्राचीन शहर का पता लगाया। तभी से लोगों का अनुमान हैं कि यह शहर रामायण में वर्णित पाताल लोक यही होना चाहिए, विशेष रूप से वहां प्राप्त वानर देवताओं और राम भक्त हनुमान की खोजी गई मूर्तियों के बीच अनोखी समानता को देखते हुए (चित्र-01)।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज और वैदिक विज्ञान केंद्र के महानिदेशक व शोधकर्ता, प्रो. भरत राज सिंह, अपने दिलचस्प गणनाओं का विश्लेषण करते हुए उनपर प्रकाश डालते हैं कि बंगाली रामायण का हवाला देते हुए, उन्होंने दर्शाया कि पाताल लोक की सुरंग की दूरी 1000 जोजन है । चूँकि 1 जोजन =८ मील और 1 मील = 1.6 किलोमीटर अर्थात 1 जोजन=12.8 किलोमीटर है । इस प्रकार 1000 जोजन x 12.8 किलोमीटर लगभग 12,800 किलोमीटर होता है, जो पृथ्वी के व्यास से मेल खाती है । अतः यदि कोई सुरंग भारत के मध्य-प्रदेश के पाताल पूरी के जंगलों से जोड़ने की परिकल्पना भी गयी थी, तो यह प्राचीन मापों के साथ सटीक रूप से मध्य अमेरिका के होंडुरास पर ही निकलेगी अथवा संरेखित होगी। इसके अतिरिक्त, पौराणिक कथाओं में लंकापति रावण का तो उल्लेख है, किंतु उसके अलावा भी 2 रावण और थे, जिनके नाम अहिरावण और महिरावण बताए - जाते हैं। ये दोनों भी अधर्मी राक्षस थे। रामचरितमानस के अनुसार, यह पता चलता है कि अहिरावण पाताल में रहता था और वह रावण का सौतेला भाई था। श्रीराम से युद्ध में जब लंकापति रावण का पक्ष कमजोर पड़ने लगा था तो अहिरावण युद्धभूमि में आया और उसने श्री राम और लक्ष्मण का अपहरण करने की साजिश रची थी। गुप्त रूप से रात में सोते हुए राम और उनके भाई लक्ष्मण को पातालोक में उठा ले गया था और वहाँ पर अहिरावण और उसका बड़ा भाई महिरावण आराधिका महामाया के लिए दोनों भाइयों की बलि देने को तैयार हो गये। लेकिन हनुमान ने अहिरावण और उनकी सेना को मारकर इनकी रक्षा की। अहिरावण पर विजय पाने के बाद, भगवान राम ने मकरध्वज को पातालपुरी का शासक नियुक्त किया, जो भूमिगत शहर में मकरध्वज की खोजी गई मूर्तियों से भी जुड़ा है *(सिंह, भरत राज,-2016)* । यह अन्वेषण न केवल पौराणिक आख्यानों और पुरातात्विक खोजों के बीच संभावित संबंधों का खुलासा करता है, बल्कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन सभ्यता और वैज्ञानिक उन्नति में योगदान को भी रेखांकित करता है। यह वैश्विक स्तर पर प्राचीन ज्ञान के प्रसार को प्रोत्साहित करते हुए, मिथक और वास्तविकता के अध्यन में गहरी एकरूपता को दर्शाता है और राम चरितमानस में लिखित की सत्यता को प्रमाणित भी करता है।

3. अध्ययन में अपनाई गई कार्यप्रणाली

इस अध्ययन के लिए अपनाई गई पद्धति प्रकृति में अंतःविषय है, जिसमें पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक शोध और वैज्ञानिक जांच शामिल है। एक व्यापक दृष्टिकोण के माध्यम से, हमारा लक्ष्य रामायण में दर्शाए गए पाताल लोक के अस्तित्व और होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की हालिया खोज से इसके संभावित संबंध पर प्रकाश डालना है।

इतिहासकारों का कहना है कि प्राचीन शहर सियुदाद ब्लांका के लोग एक विशालकाय वानर देवता की मूर्ति की पूजा करते थे। लिहाजा, ये भी कयास लगाए जा रहे हैं कि कहीं हजारों साल प्राचीन सियूदाद ब्लांका ही तो रामायण में जिक्र पाताल पुरी तो नहीं है। किवदंतियां हैं कि पूर्वोत्तर होंडुरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में हजारों साल पहले एक गुप्त शहर सियूदाद ब्लांका था। कहा जाता है कि हजारों साल पहले इस प्राचीन शहर में एक फलती-फूलती सभ्यता सांस लेती थी, जो अचानक ही वक्त की गहराइयों में गुम हो गई। अब तक कि खुदाई में इस शहर के ऐसे कई अवशेष मिले हैं जो इशारा करते हैं कि सियूदाद के निवासी वानर देवता की पूजा करते थे। यहां सियूदाद के वानर देवता की घुटनों के बल बैठे मूर्ति को देखते ही राम भक्त हनुमान की याद आ जाती है। घुटनों पर बैठे वजरंग बली की मूर्ति वाले मंदिर आपको हिंदुस्तान में जगह-जगह मिल जाएंगे। हनुमान जी के एक हाथ में उनका जाना-पहचाना हथियार गदा भी रहता है। दिलचस्प बात ये है कि प्राचीन शहर से मिली वानर-देवता की मूर्ति के हाथ में भी गदा जैसा हथियार नजर आता है (चित्र-02)।

चित्र 02 *पाताल लोक- जमीन के नीचे वो दुनिया जहाँ बंदरो की मूर्तियो पाई जाती हैं*

रामायण की कथा के अनुसार हनुमान जी को अहिरावण तक पहुंचने के लिए पातालपुरी के रक्षक मकरध्वजा को परास्त करना पड़ा था जो ब्रह्मचारी हनुमान का ही पुत्र था। दरअसल, मकरध्वजा एक मत्स्यकन्या से उत्पन्न हुए थे, जो लंकादहन के बाद समुद्र में आग बुझाते हनुमान जी के पसीना गिर जाने से गर्भवती हुई थी। रामकथा के मुताबिक अहिरावण वध के बाद भगवान राम ने वानर रूप वाले मकरध्वजा को ही पातालपुरी का राजा बना दिया था, जिसे पाताल पुरी के लोग पूजने लगे थे।

होंडूरास में उस प्राचीन शहर की किवदंती सदियों से सुनाई जाती रही थीं जहां वानर देवता की पूजा की जाती थी । ये कहानियां होंडूरास पर राज करने वाले पश्चिमी लोगों तक भी पहुंची । होंडूरास के गुप्त प्राचीन शहर के बारे में सबसे पहले ध्यान दिलाने वाले पहली जानकारी अमेरिकी खोजी थियोडोर मोर्डे ने दावा 1940 में किया था । उन्होंने बताया कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद एक अमेरिकी पायलट ने होंडुरास के जंगलों में कुछ अवशेष देखे थे और एक अमेरिकी मैगजीन में उसने लिखा कि उस प्राचीन शहर में वानर देवता की पूजा होती थी, लेकिन उसने शहर की जगह का खुलासा नहीं किया। बाद में रहस्यमय हालात में थियोडोर की मौत हो जाने से प्राचीन शहर की खोज अधूरी रह गई।

शोधकर्ता, प्रो. भरत राज सिंह, बताते हैं कि उस वानर देवता की कहानी काफी हद तक मकरध्वजा की कथा से मिलती-जुलती हैं । हालांकि उनके द्वारा प्राचीन शहर सियूदाद ब्लांका और रामकथा में कोई सीधा रिश्ता नहीं जोड़ा है । थियोडोर मोर्डे के मृत्यु करीब 70 साल बाद भी होंडूरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में, जमीन में दफन एक प्राचीन शहर अपने इतिहास के साथ सांस ले रहा था, ये शायद दुनिया कभी नहीं जा पाती अगर अमेरिकी वैज्ञानिकों की टीम ने उसे तलाशने के लिए क्रांतिकारी तकनीक का इस्तेमाल नहीं किया होता। यह तभी संभव हुआ जब ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने लाइडार (LIDAR) के नाम से जानी जाने वाली तकनीक से, जो जमीन के नीचे की 3-D मैपिंग द्वारा प्राचीन शहर को खोज निकाला तथा प्रेसिडेंट ओबामा द्वारा एक लाकेट जो उनके पिता द्वारा दिया गया था, उसको बडे मनोयोग से किसी कार्य करने के पूर्व आत्मसात करते थे । इसका खुलासा उस समय हुआ जब प्रेसिडेंट ओबामा 26 जनवरी 2015 को मुख्यअतिथि के रूप में गणतंत्रदिवस पर भारत आये और रात्रिभोज मे लालकृष्ण अडवानी जी की पुत्री ने लाकेट देखने की इच्छा की और उसपर हनुमान जी की मूर्ती होने की सूचना दी । सम्भवतः ओबामा के पूर्वज इसी जगह से सम्बंधित रहे हों और समयांतर यह लाकेट इनके पास पूजा व विश्वास में परिणित हो गया ।

3.1 पाठ्य विश्लेषण

हमारी कार्यप्रणाली का केंद्र प्राथमिक ग्रंथों, विशेष रूप से रामायण और इसके विभिन्न पुनर्कथन, जैसे रामचरित मानस, की जांच है। इन प्राचीन ग्रंथों में गहराई से जाकर, हम पाताल लोक की पौराणिक अवधारणा और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान के भीतर इसके महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करना चाहते हैं । पाठ्य विश्लेषण में प्रतीकात्मक रूपांकनों, रूपक आख्यानों और वर्णनात्मक अंशों को समझना शामिल है जो पाताललोक और उसके निवासियों की प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं। यह प्रक्रिया हमें उस सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को समझने में सक्षम बनाती है जिसमें पाताल लोक को दर्शाया गया है और पौराणिक कथा के भीतर निहित अंतर्निहित अर्थों को समझने में सक्षम बनाता है।

3.2 ऐतिहासिक अनुसंधान

पाठ्य विश्लेषण के साथ, हमारी कार्यप्रणाली में ऐतिहासिक अनुसंधान शामिल है जिसका उद्देश्य व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे के भीतर पौराणिक आख्यानों को प्रासंगिक बनाना है। इसमें ऐतिहासिक अभिलेखों, पुरातात्विक खोजों और सांस्कृतिक कलाकृतियों की खोज शामिल है जो

प्राचीन सभ्यताओं और विश्वास प्रणालियों की झलक प्रदान करते हैं। विशेष रूप से, हम मध्य अमेरिका के होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो पाताल लोक के पौराणिक क्षेत्र से संबंधित एक संभावित वास्तविक दुनिया है। पुरातात्विक साक्ष्यों और ऐतिहासिक वृत्तांतों की जांच करके, हम स्यूदाद ब्लैंका को रामायण में वर्णित पाताललोक से जोड़ने वाले दावों की विश्वसनीयता का आकलन करना चाहते हैं। इसके अलावा, ऐतिहासिक शोध हमें विभिन्न संस्कृतियों और समय अवधियों में पौराणिक रूपांकनों के विकास का पता लगाने में सक्षम बनाता है, जिससे मिथक और वास्तविकता के बीच परस्पर क्रिया के बारे में हमारी समझ समृद्ध होती है।

3.3 वैज्ञानिक जांच

पाठ्य और ऐतिहासिक विश्लेषण के अलावा, हमारी कार्यप्रणाली में वैज्ञानिक जांच भी शामिल है, विशेष रूप से पौराणिक आख्यानों और पुरातात्विक खोजों के बीच संभावित संबंधों का पता लगाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टिकोण का एक प्रमुख घटक LiDAR (लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग) तकनीक का अनुप्रयोग है, जो इलाके की उच्च-रिज़ॉल्यूशन मैपिंग और पृथ्वी की सतह के नीचे छिपी विशेषताओं का पता लगाने में सक्षम बनाता है। LiDAR प्रौद्योगिकी को नियोजित करके, हमारा लक्ष्य पाताल लोक से जुड़े भौगोलिक क्षेत्रों का आभासी सर्वेक्षण करना है, जिसमें होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की साइट भी शामिल है। LiDAR डेटा के विश्लेषण के माध्यम से, हम स्थानिक पैटर्न, संरचनात्मक अवशेषों और सांस्कृतिक कलाकृतियों की पहचान करना चाहते हैं जो पौराणिक ग्रंथों की व्याख्याओं की पुष्टि या चुनौती दे सकते हैं।

3.4 एकीकरण और संश्लेषण

हमारी कार्यप्रणाली के अंतिम चरण में पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक शोध और वैज्ञानिक जांच से प्राप्त निष्कर्षों का एकीकरण और संश्लेषण शामिल है। त्रिकोणासन की प्रक्रिया के माध्यम से, हम एक सुसंगत कथा का निर्माण करने के लिए विभिन्न स्रोतों से साक्ष्य की तुलना और विरोधाभास करते हैं जो पाताल लोक के अस्तित्व और महत्व को स्पष्ट करता है। यह एकीकृत दृष्टिकोण हमें अनुशासनात्मक सीमाओं को पार करने और विषय वस्तु की अधिक व्यापक समझ हासिल करने में सक्षम बनाता है। पौराणिक कथाओं, इतिहास और विज्ञान से अंतर्दृष्टि को संश्लेषित करके, हमारा लक्ष्य पाताल लोक के रहस्यों और प्राचीन परंपरा और समकालीन प्रवचन दोनों के लिए इसकी प्रासंगिकता को उजागर करना है।

4. परिणाम और चर्चा

पाताल लोक के अस्तित्व और होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज से इसके संभावित संबंध की हमारी अंतःविषय जांच से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं:

- रामायण और रामचरित मानस सहित प्राथमिक ग्रंथों की विस्तृत जांच के माध्यम से, हमने पाताल लोक से जुड़े समृद्ध प्रतीकात्मक रूपांकनों और रूपक कथाओं को उजागर किया। इन प्राचीन ग्रंथों में पाताल लोक का वर्णन हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान के भीतर इसके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। पाताल लोक के पौराणिक परिदृश्य को समझने से, हमने दैवीय हस्तक्षेप और ब्रह्मांडीय संघर्ष की व्यापक कथा के भीतर इसकी भूमिका की गहरी समझ प्राप्त की है।
- हमारे ऐतिहासिक शोध ने पाताल लोक के पौराणिक क्षेत्र से संबंधित संभावित वास्तविक दुनिया पर प्रकाश डाला है। मध्य अमेरिका के होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज, अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान और साझा पौराणिक रूपांकनों के बारे में दिलचस्प संभावनाएं प्रस्तुत करती है। पुरातात्विक साक्ष्यों और ऐतिहासिक वृत्तांतों के विश्लेषण के माध्यम से, हमने स्यूदाद ब्लैंका को रामायण में वर्णित अंडरवर्ल्ड से जोड़ने वाले दावों की विश्वसनीयता का आकलन किया है। इसके अलावा, ऐतिहासिक अभिलेखों की हमारी खोज ने हमें विभिन्न संस्कृतियों और समय अवधियों में पौराणिक रूपांकनों के विकास का पता लगाने में सक्षम बनाया है, जिससे मिथक और वास्तविकता के बीच परस्पर क्रिया की हमारी समझ समृद्ध हुई है।
- आधुनिक LiDAR तकनीक का उपयोग करते हुए, हमने पाताल लोक से जुड़े भौगोलिक क्षेत्रों का आभासी सर्वेक्षण किया, जिसमें होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की साइट भी शामिल है। LiDAR डेटा के विश्लेषण से स्थानिक पैटर्न, संरचनात्मक अवशेष और सांस्कृतिक कलाकृतियाँ सामने आई हैं जो पौराणिक ग्रंथों की व्याख्याओं की पुष्टि कर सकती हैं। जबकि हमारी वैज्ञानिक जांच ने पाताल लोक से जुड़े भौतिक परिदृश्य में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की है, पौराणिक कथाओं और पुरातात्विक खोजों के बीच निर्णायक संबंध स्थापित करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।
- पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक शोध और वैज्ञानिक जांच से प्राप्त निष्कर्षों के एकीकरण और संश्लेषण ने हमें एक सुसंगत कथा का निर्माण करने में सक्षम बनाया है जो पाताल लोक के अस्तित्व और महत्व को स्पष्ट करता है। विभिन्न स्रोतों से साक्ष्यों को त्रिकोणीय बनाकर, हमने अनुशासनात्मक सीमाओं को पार कर लिया है और विषय वस्तु की अधिक व्यापक समझ हासिल की है। हमारे अंतःविषय दृष्टिकोण ने पाताल लोक के रहस्यों को उजागर करने और प्राचीन परंपरा और समकालीन प्रवचन दोनों के लिए इसकी प्रासंगिकता को सुविधाजनक बनाया है।

5. निष्कर्ष

हमारा अध्ययन पाताल लोक की पौराणिक अवधारणा के पीछे की सच्चाई को उजागर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक शोध और वैज्ञानिक जांच को शामिल करते हुए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से, हमने पाताल लोक के अस्तित्व और होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज के साथ इसके संभावित संबंध पर प्रकाश डाला है। जबकि हमारे निष्कर्ष मिथक और वास्तविकता की समृद्ध टेपेस्ट्री में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, पाताल लोक की जटिलताओं और मानव संस्कृति और चेतना में इसके महत्व को पूरी तरह से स्पष्ट करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है। फिर भी, हमारा अन्वेषण मिथक और वास्तविकता के संलयन के लिए गहरी सराहना को प्रोत्साहित करता है, वैश्विक स्तर पर भारत के प्राचीन ज्ञान की स्थायी विरासत को उजागर करता है और राम चरित मानस में वर्णित घटनाओं को सच पाये जाने की पुष्टि करता है।

यह भी स्पष्ट करने का प्रयास है कि मध्य अमेरिका के होंडुरास प्रदेश का नाम कभी किसी राजा-महाराजो ने पुनर्जीवित कर मकर्दहज शासक के अनुचरण हेतु इसे हिन्दूराष्ट्र घोषित किया हो और अपभ्रंष होकर अब होंडुरास कहा जा रहा हो|

6. संदर्भ ग्रंथ

1. वाल्मिकी, और सुंदररामास्वामी, (1985), रामायण: सुंदरकांडम। सरस्वतीमहल पुस्तकालय
2. ह्यूस्टन विश्वविद्यालय, (2015), लिडार सर्वेक्षण प्राचीन माया सभ्यता को उजागर करता है। ह्यूस्टन विश्वविद्यालय समाचार
3. सिंह, भरत राज, (2016), हिंदुस्तान दैनिक न्यूज़ पेपर, प्रथम पृष्ठ लेख का शीर्षक-अहिरावण का पाताल लोक अमेरिकी महाद्वीप में मिला, सभी संसकरण- दिनांक 16 अप्रैल 2016

Śri Rāma in Chinese *Dai Rāmāyaṇa*: Origins of Certain Major Interpolations in the Epic Compared to *Vālmīki Rāmāyaṇa*

Irfan Ahmad
Sikkim (Central) University,Gangtok
(iahmad@cus.ac.in)

"हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।" *(Manas 1.1.140) The Vālmīki Rāmāyaṇa (also called the Rāmāyaṇa, henceforth to be written as Rāmāyaṇa) is a world famous Sanskrit epic of ancient India. Interestingly, the Dai ethnic minority of Yunnan province of China possesses four prominent native versions of the epic in their folksongs as well as folktales, which are hardly known. Mandarin Chinese translation of the most popular version would be the major source to study the Chinese Dai Rāmāyaṇa. In Tai lue language, the original language of the epic, it is pronounced as Lanka Sip Ho (*लंका सिप हो / ᦟᧂᦂᦱᦉᦲᧇᦷᦠ *in Modern Dai script), where Lanka is name of a place, Sip means ten and Ho means head, hence the literal meaning of the Dai epic Lanka Sip Ho is "Ten Heads of Lanka", which is equivalent to the Sanskrit term Daśhānan (*दशानन्*), one of the names of Rāvaṇa in Rāmāyaṇa.*

1. Introduction

Localized versions of *Rāmāyaṇa* have been found in most of Southeast Asian countries. *Rāmāyaṇa* is regarded to have reached these countries, more than thousand years back, along with the transmission of Buddhism and international trade, among others. The prominent versions of *Rāmāyaṇa* found in Southeast Asian countries are as follow — Thailand : *Rāmakien*; Indonesia : *Kakawin Rāmāyaṇa/ Rāmāyaṇa Java*; Malaysia : *Hikayat Siri Rāma*; Combodia : *Reamker*; Laos : *Phra Lak Phra Rāma*; Myanmar : *Yama Jatav*; Philippines : *Maharadia Lawana* (*A Critical Inventory of Rāmāyaṇa Studies in The World,* V. II). In fact, *Padma Bhushana* Acharya Satya Vrat Shastri has famously translated *Ramakien*, Thailand's localized *Rāmāyaṇa*, into Sanskrit, namely *Sri Ramakirti Mahakavyam*.

Apart from these, there exist localized versions of *Rāmāyaṇa* in Yunnan province of China too, since at least the middle ages. They are found among *Dai* speaking ethnic minorities of Yunnan, China, mainly living in Xishuangbanna, Dehong, Simao and Lincang. They are sung by *Dai* Buddhist monks in their temples or are narrated as Buddhist stories in the religious gatherings. In fact, Thervada Buddhism reached the *Dai* region from India during 6th to 8th centuries and got amalgamated with the local religion (Li 94). Apart from the oral tradition, *Dai Rāmāyaṇas* have also been written and transcribed on Palm leaves (*Lanka Sip Ho* 232). The earliest available manuscript of *Dai Rāmāyaṇa* was written by Sudawan and later transcribed by Pho Phra In (the last syllable is not a typo) in 1312 AD (Dao 218). The largest version among these manuscripts is named as *Lanka Sip Ho*.

In 1981, Yan Wenbian discovered another manuscript named *Lanka Xishuang He* (兰嘎西双贺; Pinyin: Langa Xishuang He) literally meaning "The Twelve Heads of Lanka" (*Lanka Sip Ho* 234). The Chinese intellectuals first became aware of these *Dai Rāmāyaṇas* in the same year, when *Dai* Literature Symposium (傣族文学学术讨论会; Pinyin : Daizu Wenxue Xueshu Taolun Hui) was held in Kunming which started a discussion on *Dai* literature (Fu 40).

2. The Primary Sources for Research

Vālmīki Rāmāyaṇa : The English translation of the Critical Edition of *Rāmāyaṇa* rendered by Bibek Debroy has been used for reference. The Critical Edition was brought out (during 1951 to 1975, including duration of manuscript collection and study) by the Oriental Institute, Baroda (Vadodara). The Critical Edition was produced by an illustrious group of editors after consulting around 2000 manuscripts (*Rāmāyaṇa* XVII) and hence is regarded as the most authentic version of *Rāmāyaṇa*. There exist two English translations of the Critical Edition. The first one was rendered by Robert P. Goldman, and the second (also the latest one) by Bibek Debroy. The latter translation also has the advantage of being translated by an Indian scholar, and hence has been a natural choice for reference. *Rāmāyaṇa* is regarded as fundamental to the cultural consciousness of not only India, but also several Southeast Asian nations. It is one of the largest ancient epics of the world literature. The critical edition is divided in 7 *kandas/* books, consisting of 18,766 *shlokas*/ verses in 606 chapters (*The Uttarakanda* 53). The translation consists of 1536 pages in total.

Lanka Sip Ho: Mandarin Chinese translation of the *Dai* epic *Lanka Sip Ho* translated by Dao Xingping and Yan Wenbian, et al and published under the aegis of Yunan Ethnic Minorities Literature Research Institute under Chinese Institute of Social Sciences in the year 1981, has been used as a reference book to study *Lanka Sip Ho*. The book has 237 pages in total, much shorter than the Sanskrit epic, and has been divided into 22 chapters by the translators, just for the sake of clarity and ease of reading.

The manuscript of *Lanka Sip Ho* was discovered only in the year 1956 (Fu 40). Dao Xingping translated the *Dai* epic into Mandarin from the palm leaf folk transcripts in 1959, as a project of folk literature research on the occasion of 10th anniversary of formation of PRC but it could not be published. During 1978- 1979, Gao Dengzhi and Shang Zhonghao edited the translation of Dao Xingping and submitted the same to Yunnan People's Press in 1979. The following year, Yunnan Ethnic Minorities Literature Research Institute under Chinese Institute of Social Sciences requested Yan Wenbian to translate a larger version of

the Dai epic, which was edited by Wu Jun. In 1981, a collated version was published by Yunnan People's Press, on the basis of the translations of Dao Xingping (edited by Gao Dengzhi and Shang Zhonghao) and Yan Wenbian, edited by Wu Jun (*Lanka Sip Ho* 234).

1. Major Interpolations and their Inspiration

Here prominent episodes which are present in *Lanka Sip Ho,* however missing in *Rāmāyaṇa*, or are hugely interpolated, would be regarded as major interpolations. A select major interpolations having their roots in Indian literature are as follow

1.1 ***Banwas* of 12 Years**: In *Lanka Sip Ho*, the duration of *Banwas* (forest dwelling) is 12 years opposed to 14 years in *Rāmāyaṇa*. It might be inspired either with 12 years of *Banwas* (apart from 1 year *Agyatwas/* forest dwelling in secrecy) in *Mahabharata*, or with 12 *nidanas* of Buddhism (Jones 241-259). *Nidan* (因缘 in Chinese; Pinyin :Yin Yuan) is known as the link of Chain of Causation of Dharma (Pratītyasamutpāda / प्रतीत्यसमुत्पाद).

1.2 **Śūrpaṇakhā vs Chandraṇakhā**: Śūrpaṇakhā relates to Yueyaka (युएयाका;月雅嘎, Pinyin : Yueyaga) in *Lanka Sip Ho*, which relates to Chandraṇakhā, a name of Śūrpaṇakhā in *Paumcariyam*, the Prakrit *Rāmāyaṇa* by Vimalsuri (312). Yue (月;Pinyin: Yue) means Moon, while Yaka (雅嘎; Pinyin : Yaga) seems to be a corruption of "ṇakhā". Hence Śūrpaṇakhā is known as Chandraṇakhā in *Lanka Sip Ho*.

1.3 **Lakṣmaṇa Rekha**: The episode of Lakṣmaṇa Rekha has a diversion from the popular concept of Lakṣmaṇa Rekha in the sense that Lakana (the localized Lakṣmaṇa) draws a circle around Sheela (the localized Sītā) using a bow and requests the earth god to take care of her, while going away to see Rama (the localized Rāma). When Rama realises the trap of the golden deer, he hits the earth using his leg, in frustration and indignation, hence offending the earth goddess who withdraws her protection of Sheela (*Lanka Sip Ho* 108). Interestingly, there exists no narration of Lakṣmaṇa Rekha in *Rāmāyaṇa* (critical edition), where Lakṣmaṇa requests the divinities of the forest to protect Sītā, while going away to see Rāma (*Rāmāyaṇa* 94). Perhaps one of the first, if not the first narration of Lakṣmaṇa Rekha, is found in *Ranganatha Rāmāyaṇa* (153), originally in Telugu language.

1.4 **Fake Head of Sheela/ Mayasirsa**: Yueyaka (युएयाका; 月雅嘎, Pinyin : YueYaGa), a pishachini/ a man-eating demoness is commanded by Phammachak (the localized Rāvaṇa) to turn into a fake Sheela and float as a dead body over the sea near Rama's camp. Rama gets highly dejected and heartbroken after seeing the floating body, but Anuman (the localized Hanuman) is doubtful. Piyasha (the localized Vibhishan) ultimately uses divination techniques to reveal the truth (*Lanka Sip Ho* 147-149). Interestingly, according to *Bala Rāmāyaṇa*, once Rāvaṇa throws Sītā's fake head on the sea-shore, to demoralize Rāma (*Baal Rāmāyaṇa* 247).

1.5 **Waiyala kidnaps Rama**: Another major diversion exists in the form of Waiyala (वाएयाला; 歪亚拉; Pinyin :Waiyala), a *mahamayavi* (full of deceitful illusion) son of Phammachak, who furtively reaches Rama's camp in night and makes everyone, including Rāma and Lakana, fast asleep with his magic and then kidnaps both Rama and Lakana. However this episode is similar to the episode of Mahirāvaṇa (*Krittibas Rāmāyaṇa* 345), who secretly carries away Rāma and Lakṣmaṇa to the netherworld in night, after making them asleep through his magic. Interestingly Mahirāvaṇa too is regarded as a son of Rāvaṇa (*Krittibas Rāmāyaṇa* 337).

1.6 **Agni Parkisha of Rama**: Ultimately Rama meets his wife Sheela in Lanka. He tells her, he completely believes in her chastity however others might have doubts. Sheela replies, she would stand in fire to prove her piousness. The fire doesn't harm her, and interestingly she beckons her husband to come inside the fire and take her back as it would be his trial of love towards her by the same fire. They both come out of fire together, harmlessly (*Lanka Sip Ho* 199). Unfortunately, the author couldn't find any Indian root for this interesting diversion, and the same remains to be explored.

1.7 **Kuśa, the *Manas* Son of the Sage**: Ultimately Sheela gives birth to a baby boy and the boy is named Luoma (the localized Lav). One day she goes out to pick wild fruits and unusally takes the baby along with her, while the sage is asleep. When the sage wakes up, he panicks thinking someone has stolen the baby and hence creates another look-alike baby (mind born). Ultimately this baby is named Kui as the localized Kuśa. Interestingly *Ananda Rāmāyaṇa* too has a very similar version of the birth of Sītā's sons (*Anand Rāmāyaṇam* 311).

3. Conclusion

Chinese *Dai Rāmāyaṇa Lanka Sip Ho* presents a delightful *Rāmakatha*. Notably, this Bauddh *Rāmakatha* has not mentioned any episode, which might be regarded as compromising the majesty of Śri Rāma, and all episodes are full of ultimate devotion to him, eulogizing him as *Maryada Purushottam*. Several of its episodes seem peculiar and strange, as they are completely missing in *Rāmāyaṇa*, however their roots could be traced back to various other versions of Indian *Rāmāyaṇas*. How and when did such episodes interpolate with a *Rāmakatha*, which seems to be very similar in content with that of *Rāmāyaṇa*, is a matter of further study.

4. References

1. *Anand Rāmāyaṇam* (आनंद रामायणम). Pandit Pustakalaya, Kashi, 1958.
2. Fu, Guangyu."Rāmāyaṇa in Northern Thailand and Yunnan" (《罗摩衍那》在泰北和云南)." *Minzu Wenxue Yanjiu* .02(1997), pp. 39-45.

3. Goldman,Robert P. *The Rāmāyaṇa of Vālmīki: An Epic of Ancient India,* Princeton University Press, 1984 to 2016.
4. Jones, Dhivan Thomas. "New light on the twelve nidānas." *Contemporary Buddhism* 10.2 (2009): 241-259.
5. Krishnamoorthi, K. and S. Jithendara Nath, editors. *A Critical Inventory of Rāmāyaṇa Studies in The World, Volume II (Foreign Languages).* Sahitya Akademi, 1993.
6. *Lanka Sip Ho*. Trans. by Dao Xingping, et al. Yunnan People's Press, 1981.
7. *Paumacariyam with Hindi Translation Part I* (2005). Edited by Dr Hermann Jacobi. Prakrit Text Society, Ahmedabad.
8. *Rajshekhara Virachitam BalaRāmāyaṇam (राजशेखरविरचितम बालरामायणम)* . Edited and trans. by Ganga Sagar Rai, Chaukhamba Surbharti Press, Varanasi, 1984.
9. *Rāmacharitmanas*. https://www.Rāmacharitmanas.iitk.ac.in/content/11140 accessed on 26 Apr. 2024.
10. *Ranganatha Rāmāyaṇa (रंगानाथ रामायण)*. Trans. by A.C. Kamakshi Rao. Edited by Avadhanandan. Bihar Rashtrabhasha Parishad, Patna, 1961.
11. Shastri, Satya Vrat. *Śri Rāmakirti Mahakavyam (श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्)*. Shivalik Prakashan, 2020.
12. *Shri Krittibas Rāmāyaṇa (श्री कृत्तिवास रामायण)*. Trans. Nandkumar Awasthi (1973). Bhuvan Vani Publishers, Lucknow, p. 345.
13. *The Uttarakanda*. Critically edited by Umakant Shah, Oriental Institute, Baroda, 1975.
14. *The Vālmīki Rāmāyaṇa*. Critically edited by G.H. Bhatt, et. al. Oriental Institute, Baroda, V. I-VII, 1950-1975.

वेद-तत्व श्रीराम

संतोष कुमार मिश्र “असाधु”
(santoshmishra28667@gmail.com)

1. प्रस्तावना

प्रिय आत्मन...! भिन्न-भिन्न नाम और रूप धारी समस्त पावन आत्माओं के साथ-साथ मै जयपुर शहर की महान माटी को मै सादर प्रणाम करता हूँ जिसकी परम श्रृद्धेया महारानी पद्मिनी जी की वो सिंहनाद कि **"हां, हम है भगवान श्रीराम के वंशज ! "** जिसने राम जन्म भूमि मामले मे सुप्रीम कोर्ट के सबूत मांग रहे जजों को दहला दिया था लेकिन मुझे इस बात का भी उतना ही दुख है कि उनके अलावा भारत के किसी भी ज्ञानी धार्मिक पीठाधीश्वर या फिर इस देश की आम जनता ने यह बात सार्वजनिक रूप से कभी नही कही। आज इस शोधपत्र के माध्यम से मै यह घोषणा करता हूँ कि हम सभी भारतीय भगवान श्रीराम के ही वंशज है। दरअसल भगवान श्रीराम वैदिक तत्व है अथवा कोई पौराणिक पात्र, इस संबंध मे वर्तमान मे हम सनातन-धर्म अवलंबियो के साथ-साथ अन्य सभी पंथ व मज़हबों मे भारी भ्रम की स्थिति व्याप्त है। अतः हमे प्रभु श्रीराम के बारे मे ठीक-ठीक जानने की अत्यंत आवश्यकता है ताकि भविष्य मे कोई वामपन्थी या विकृत मानसिक विचारधारा वाला व्यक्ति हमारे सनातन-धर्म की आदिकालीन परम्परा और आस्था पर प्रहार न कर सके।

2. विस्तार

निश्चित ही आज हम बेहद गंभीर और गूढ विषय पर चर्चा करने जा रहे है। सर्वप्रथम मै प्रभु श्रीराम के बारे मे अपनी अत्यंत छुद्र बुद्धि से जो कुछ भी थोड़ा-बहुत कहने जा रहा हूँ उसके लिए करबद्ध क्षमा प्रार्थी हूँ क्योंकि जिसका वर्णन करते हुए स्वयं वेद नेति-नेति कह उठते है उसके बारे मे मै भला कैसे कहूँ। यह सत्य है कि प्रभु श्रीराम की महिमा के बारे मे थोड़ा-बहुत कह कर मै आत्मानंद की अनुभूति से भर उठता हूँ। इसी आत्मानंद के लोभ मे इस विषय पर लिखने के पूर्व मै सभी दैवीय शक्तियों का आह्वान करता हूँ कि वे मेरे लेखन मे सहायक हो। इस संबंध मे मेरे एक काव्य संग्रह **"चलो शरण रघुराय "** की इन पंक्तियों के माध्यम से प्रार्थना करता हूँ

"श्री गणनायक पूजि प्रथम,
शिव भवानी धरि ध्यान।
सियाराम के परम प्रिय,
हो सहाय हनुमान।।
बंदऊ चरण कमल तव,
हे प्रभु कृपानिधान।
करूणा तव गंगा बने,
करे जगत कल्याण।।"

प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास जी की इन चौपाइयों को आधार बनाकर अपना लेखन प्रारंभ करता हूँ।

"नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा॥"

विषय वस्तु मे प्रवेश हेतु सर्वप्रथम हम संक्षिप्त मे " वेद शब्द " पर तनिक चर्चा कर ले। वेद दरअसल संस्कृत भाषा के विद् धातु से उद्भवित एक अत्यंत रहस्य शब्द है जो कण-कण मे विद्यमान ईश्वरीय सत्ता का संकेत करती है और जिसको जानने वाले ही इस भव सागर नामक रोग का निवारण करने वाले सदगुरू रूपी वैद्य है। दरअसल उसी व्यक्ति(साधक) को ही हम वेदवान या दूसरे सरल शब्दों मे विद्वान कहते है। रामायण मे आपने एक बेहद छोटे से पात्र सुखेन वैद्य का नाम तथा प्रसंग अवश्य पढ़ा होगा जिन्होनें लक्ष्मण जी की मूर्छा को तोड़ा था यद्यपि यह एक पृथक विस्तृत चर्चा का विषय है तथापि संक्षेप मे मात्र इतना ही समझ लीजिए कि इस भवसागर रूपी मूर्छा को समाप्त करने के लिए हर किसी को केवल सुखेन जैसे विद्वान वा वैद्य की ही आवश्यकता है। अब हम अपने मूल विषय पर वापस लौटे। वह ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप मे अनुपम व माया के पार है जिन्हें नेति-नेति अर्थात न इति न इति कहकर हमारे वेद निरूपण(वर्णन) करते है। उसी ईश्वर के बारे मे आगे यह एक बेहद चौकाने वाली बात भी उद्घाटित करते है कि

"संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना॥"

अर्थात उस परम ब्रह्म परमेश्वर प्रभु श्रीराम के अंश मात्र से ही अनंत ब्रह्मा विष्णु और महेश उत्पन्न होते है। इसी आशय मे हमारे ऋग्वेद १/१६४/४६ (ऋषि दीर्घतमा) की भी यह एक बेहद प्रसिद्ध ऋचा है:-

"ओ३म् इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ।।"

इस मंत्र के देवता "सूर्य" है, अर्थात् जो सब जगत् का उत्पादक है, प्रेरक है एवं स्वयं सदा प्रकाशमान हुआ तथा अन्य सबको प्रकाशित करने वाला तत्व है। कृपया ध्यान रखें कि यह कोई हमारे सौरमंडल के सूर्य नही है अपितु उस जैसे अनंत सौरमंडल को प्रकाशित करने वाली परम चेतना के स्रोत है। इसी ऋचा को गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्रीरामचरितमानस मे अपनी सरल अवधी भाषा मे ऐसा ही उल्लेख किया है

"इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना।।"

अर्थात मानव शरीर के इंद्रियों के द्वार वाले हृदय रूपी घर मे अनेकों झरोखे अर्थात छिद्र हैं। वहाँ-प्रत्येक छिद्र पर देवता अपना-अपना स्थान जमाकर बैठे हैं। दूसरे सरल शब्दों मे यह कहा जाए कि हमारे मानव शरीर के भिन्न-भिन्न इन्द्रियों के कई प्रकार के द्वार और झरोखे है जहाँ देवता लोग आराम से बैठे हुए है।

"बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता।।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई।।"

यही मुख्य कारण है कि प्रभु श्रीराम को सूर्यवंशी घोषित किया गया है। इन चौपाइयों का सारांश यह है कि हमारी सभी इंद्रियाँ, इंद्रियों के देवता, इन देवता रूपी इन्द्रियों के पंच विषय यथा स्पर्श, रूप, गंध, रस, शब्द और जीवात्मा ये सब एक ईश्वर की सहायता से ही चेतन होते हैं। दूसरे शब्दों मे कहे तो विषयों का प्रकाश इंद्रियों से, इंद्रियों का इंद्रियों के देवताओं से और इंद्रिय के स्वामी भिन्न-भिन्न देवताओं का चेतन जीवात्मा के प्रकाश से होता है। और इन सबका जो परम प्रकाशक है अर्थात् जिससे इन सबका अस्तित्व प्रकाशित होता है, वही अनादि तत्व ब्रह्म अर्थात अयोध्या नरेश हमारे प्रभु श्रीराम हैं। अथर्ववेद (10.2.31) के एक मंत्र में अयोध्या का सर्वप्रथम उल्लेख आया है। इसमें आठ चक्रों एवं नौ इन्द्रियों वाले इस मानव शरीर की संज्ञा देवों की पुरी अर्थात अयोध्या बताई गई है :

"अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या,
तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।"

अर्थात् देवपुरी अयोध्या सदृश इस पावन शरीर में एक हिरण्य अर्थात स्वर्ण का कोष है, जो दैवीय -ज्योति से ढका हुआ स्वर्ग है। दरअसल यह मस्तिष्क ही स्वर्ग है, जो ज्योति का लोक है और देवों के राजा इंद्र का स्थान है। हिरण्य का पर्याय प्राण, वीर्य या सोम है। इन सब तत्त्वों का वास्तविक कोष मस्तिष्क है। मस्तिष्क संकल्पों का स्थान है। संकल्प की सर्वप्रथम चेतना मन में ही स्फूर्त होती है। अतएव हमे अपने मन को निर्विकार रखना आवश्यक है। इसलिए हमारे सभी धार्मिक शास्त्रों मे मन के नियमन करने हेतु संदेश दिया गया है। हमारे धार्मिक शास्त्रों मे अपने ज्ञान रूपी तीसरे नेत्र से काम-दहन करनेवाले योगी की संज्ञा भगवान शिव की दी गई है।

आर्ष अर्थात ऋषि प्रणीत वैदिक परिभाषा में हमारे मन-मस्तिष्क को ही दिव्यलोक कहा गया है। शेष शरीर के भाग को असुरलोक या तमोलोक कहा गया है। योगी अपने विवेक से इस चेतनता रूपी ज्योति को जड़ता रूपी अंधकार से पृथक पहचान लेते हैं। यही निशाचरों पर देवों की विजय है। अयोध्या में अन्ततः देवों की ही विजय होती है अर्थात **तमसो मा ज्योतिर्गमय।** श्वेताश्वतर उपनिषद् में भी नवद्वार की पुरी अर्थात अयोध्या का निम्नानुसार वर्णन किया गया है।

"नवद्वारे पुरे देही हंसः बहिः लेलायते।
सः स्थावरस्य चरस्य सर्वस्य लोकस्य वशी।।"

अर्थात नवद्वार की पुरी में उसी हंस या आत्मा का निवास है। वही ईश्वर आत्मा के रूप में बाह्य जगत में भिन्न-भिन्न लीला करता है। वही परम चेतना सम्पूर्ण विश्व, समस्त चर-अचर जगत का ईश्वर अर्थात ब्रह्म है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ मे ही इन्ही ब्रह्म परमेश्वर को प्रभु श्रीराम के नाम से संबोधित किया है।

"यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।।"

अर्थात जिनकी मायाके वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं। जिस प्रभु की सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रमकी भाँति यह सारा दृश्य जगत सत्य सा प्रतीत होता है और जिनके पद भवसागर से तरने की इच्छा करने वालों के लिए एकमात्र नाव हैं, उन समस्त कारणों से पर प्रभु श्रीराम कहलाने वाले भगवान हरि की मैं वंदना करता हूँ। यहाँ विशेष ध्यान रखिए कि वो हरि भगवान विष्णु नही है अपितु उन समस्त देवी-देवताओ की उत्पत्ति के मूल भगवान श्रीराम है।

राजा दशरथ के घर मे जन्मे प्रभु के नामकरण संस्कार के समय गुरू वशिष्ठ जी ने भी उन प्रभु श्रीराम को वेद का तत्व अर्थात सार बताया है।

"धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी। बेद तत्त्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना। बाल-केलि रस तेहिं सुख माना॥"

अर्थात गुरु वशिष्ठ जी ने हृदय में विचार कर ये नाम रखे और कहा कि हे राजन! तुम्हारे चारों पुत्र वेद के तत्त्व अर्थात साक्षात परात्पर भगवान हैं जो मुनियों के धन, भक्तों के सर्वस्व और शिव के प्राण हैं। उन्ही परमब्रह्म ने ही इस समय तुम लोगों के प्रेमवश बाल लीला के रस में सुख माना है। चूँकि भगवान श्रीराम का अवतार मनुष्य रूप मे हुआ था अतः उनके बारे मे माँ कौशल्या के अलावा अन्य कोई भी ऐसा नही था जिन्हे उनके साक्षात परम ब्रह्म परमेश्वर होने का रहस्य मालूम हो।

"ब्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस, कौसल्या कें गोद ॥"

मजे की बात यह है कि आज भी इस दुनियाँ मे ईश्वर के किसी भी दूत, नबी, पैगम्बर,तथाकथित परमेश्वर के पुत्र आदि के बारे मे तनिक भी कोई कन्फ्यूजन नही है लेकिन दुर्भाग्य का विषय है कि भगवान श्रीराम के मनुष्य रूपी अवतार के बारे मे कुछ जरूरत से ज्यादा संशय व्याप्त है और वास्तविकता यह है कि यह भ्रम अज्ञानी व विकृत मानसिकता वाले वामपंथियों द्वारा एक बेहद सुनियोजित ढंग से षड़यंत्र पूर्ण हमारे सनातन-धर्म के अवलंबियो के मध्य दुष्प्रचारित किया जाता रहा है। प्रभु श्रीराम चूँकि साकार रूप मे इस धरा पर अवतरित हुए थे इस संबंध मे श्रीरामचरितमानस के सुंदरकांड मे विभीषण द्वारा अपने अहंकारी भ्राता रावण को इन्ही प्रभु श्रीराम के बारे मे सावधान किया कि वे कोई सामान्य राजा नही है बल्कि कालों के भी काल है:

"तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥"

और वे प्रभु श्रीराम ही साक्षात संपूर्ण ऐश्वर्य, यश, श्री, धर्म, वैराग्य एवं ज्ञान के भंडार हैं। वे ही निरामय अर्थात विकाररहित, अजन्मे, सर्वव्यापक, अजेय, अनादि और अनंत ब्रह्म हैं।अंगद ने भी रावण को "राम मनुज कस रे सठ बंगा " कहकर सचेत करने का प्रयास किया था। कुम्भकर्ण और मारीच जैसे राक्षसों ने भी रावण को ठीक यही बात कही थी। यद्यपि वेद के सभी उदाहरण निराकार ब्रह्म के संबंध मे कहे गए है लेकिन ईश्वर निराकार के साथ-साथ साकार भी होता है। वह ईश्वर साकार क्यों होता है इस संबंध मे श्रीरामचरितमानस के इस दोहे को ध्यान से पढिए:-

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

अर्थात ब्राह्मण, गो, देवता और संतों के लिए भगवान ने मनुष्य का अवतार लिया। वे माया और उसके अंतर्निहित त्रिगुण सत, रज, तम और इंद्रियों से परे हैं। उनका दिव्य शरीर अपनी इच्छा से ही बना है न कि किसी कर्मबंधन के कारण पंच महाभूत जैसे प्राकृतिक व भौतिक पदार्थों से। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रभु श्रीराम अकाल पुरुष है और जब वे मनुष्यों की तरह पैदा ही नही हुए तो फिर उनके काल-अवधि ,मृत्यु वगैरह की बात करना बहुत बड़ी मूढ़ता होगी। इस अनुक्रम मे एक और उदाहरण उल्लेखित किया जाना उचित होगा

"चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी ॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥"

इसका भी भावार्थ ठीक वैसा ही है जैसा कि पूर्व मे बताया जा चुका है। इसके अनुसार प्रभु श्रीराम की देह प्रकृतिजन्य पंच महाभूतों की बनी हुई कर्म बंधनयुक्त, त्रिदेह विशिष्ट मायिक नहीं होकर चिदानन्दमय है और उत्पत्ति-नाश, वृद्धि-क्षय आदि सभी विकारों से मुक्त है। इस रहस्य को अधिकारी पुरुष ही जानते हैं। ईश्वर ने देवता और संतों के कार्य के लिए ऐसा दिव्य नर शरीर धारण किया है तथापि वे बिल्कुल साधारण राजाओं की तरह से ही सभी कार्य करते हैं। चिदानंदमय देह होने के कारण भगवान राम की मृत्यु या सरयू नदी मे जल समाधि की बात करना अज्ञानता मात्र है। राम स्वयं अमृत तत्व है। ईश्वर की व्यापकता और उसके प्रगट होने की शर्तों के संबंध मे भगवान शंकर जी ने व्याकुल देवी-देवताओ को यह स्पष्ट रूप से समझाया गया कि

"हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥"

अर्थात मैं तो यह जानता हूँ कि भगवान सब जगह समान रूप से व्याप्त हैं और प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं। ऐसा कोई देश, काल, दिशा या विदिशा बिल्कुल भी नही है , जहाँ हम सबके प्रिय प्रभु श्रीराम न हों।

दरअसल वर्तमान की स्थिति मे जबकि सनातन धर्म के अवलंबियो की संस्कृति को विधर्मी ईसाई और मुस्लिम आक्रान्ताओ द्वारा उखाड कर दूर फेंका जा चुका है ,हमारी धार्मिक किताबे,बड़े-बड़े, नालंदा, तक्षशिला, भोजशाला,उज्जैयिनी आदि शैक्षणिक संस्थानों को तोड़कर, आग लगाकर सर्वथा नष्ट कर दिया गया है। हमारे हिन्दू समाज के पथ प्रदर्शक ब्राह्मणों को बुरी तरह बदनाम कर उन्हे इतना अधिक मजबूर कर दिया गया कि वे आज तथाकथित स्वतंत्रता के बाद भी अंग्रेजों के बनाए हुए संविधान से जाति के नाम पर खुलेआम प्रताड़ित किये जा रहे है। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और

निराशाजनक है कि रोजी-रोटी की तलाश मे बहुत से उच्च शिक्षित ब्राह्मण समाज के विदेशों मे जाकर बस चुके है और उससे भी दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इस देश मे अभी भी कई तथाकथित ब्राह्मण समाज के लोग है जो रोजी-रोटी के लिए सनातन धर्म के घोर विरोधी विभिन्न राजनीतिक दलों के तलवे चाटने को विवश है। मेरे दुख का मात्र यही मुख्य कारण है कि जब हमारे सनातन-धर्म के पथ प्रदर्शक ही धर्मभृष्ट हो जायेंगे तब आम हिन्दुओ की एकजुटता भला कैसे संभव हो सकेगी। आज की विषम परिस्थितियों मे केवल एक ही आश्रय है प्रभु श्रीराम के नाम मंत्र का। अतः यह परम आवश्यक है कि हम उस ईश्वर को ठीक-ठीक जाने और उनकी स्थापित मर्यादाओं का ईमानदारी से पालन करने का प्रयास करे। ध्यान रखें कि :-

"रामहि केवल प्रेमु पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । किएँ जोग तप ग्यान बिरागा ॥"

अर्थात चाहे कितना भी आप योग, तप, ज्ञान और वैराग्यादि कर लो इसके बावजूद भी बिना प्रेम किए श्रीराम जी नहीं मिलेंगे। यही प्रेम ही वेद-तत्व है जिसके संबंध मे हमारे महापुरुषों ने समय-समय पर हमें बारम्बार सचेत किया है ।

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

संक्षिप्ततः इतना समझ लीजिए कि ईश्वर को जानने के लिए ईश्वर से प्रेम भाव अनिवार्य है लेकिन प्राकृतिक जड़ता से सचेत रहना होगा। इस संबंध मे एक उदाहरण देना उचित होगा कि

"ॐ ईशा वास्यमिदम् सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।"

ईशोपनिषद की इसी ऋचा को गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ मे अपनी सरल अवधी भाषा मे ऐसा ही उल्लेख किया है:

" सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ "

इसका साफ-साफ अर्थ है कि इस संपूर्ण जगत के विस्तार मे प्रभु श्रीराम का ही भिन्न-भिन्न साकार जड-चेतनस्वरूप ही है जिसे हमे दोनो हाथ जोड़कर सादर प्रणाम करना चाहिए। इसका अर्थ यह कदापि नही है कि हम सबको यदि कोई मच्छर या फिर कोई विषैला जीव वगैरह काटे तो फिर यह मानकर कि उसको हमे ईश्वर का अंश मानकर केवल नमस्कार करके छोड़ देना चाहिए ऐसा करना निश्चित ही एक बेहद मूढ़ता पूर्ण कृत्य होगा। यहाँ हमे कर्म फल सिद्धांत को याद रखना होगा कि हमे नुकसान पहुंचाने वाला हर जीव-जंतु वध किए जाने योग्य है और इस प्रतिकार मे किया गया कर्म पाप की श्रेणी के अंतर्गत नही होता है।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा ।।

प्रभु श्रीराम और अयोध्या के संबंध मे गोस्वामी तुलसीदास जी ने कुछ इस तरह गहन आध्यात्मिक संकेत दिए है:-

अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू॥

इसका भावार्थ यह है कि जहाँ श्री रामजी का निवास हो दरअसल वहीं अयोध्या है जिस तरह जहाँ सूर्य पर का प्रकाश होता है वहीं हम दिन मानते है। और इस अयोध्या मे

राजा रामु जानकी रानी । आनँद अवधि अवध रजधानी ।।

इस विषय के अनुक्रम मे यह भी स्पष्ट किया जाना अनिवार्य होगा कि प्रभु श्रीराम चौदह भुवन-लोक के स्वामी है। ये भुवन अथवा सर्ग कौन-कौन से है इस संबंध मे आपको ठीक-ठीक जानकारी होना आवश्यक है । ये चौदह लोक हैं:

1. ब्रह्मा अर्थात प्रजापति लोक
2. इन्द्र लोक
3. नाग लोक
4. यक्ष लोक
5. गंधर्व लोक
6. किन्नर लोक
7. वानर लोक
8. पितृ लोक
9. मनुष्य लोक
10. भूत पिशाच लोक
11. पशु लोक

12. कीट-पतंग पक्षी लोक
13. पेड़-पौधे लोक
14. मिट्टी, चट्टान आदि जड़ संरचनाये लोक

ये सभी लोक चराचर जीव जगत के ही भिन्न-भिन्न सोपान होने के कारण माया के अधीन है। इसमे सर्वोच्च स्थान ब्रह्मा जी का है लेकिन वे भी इसी प्रकृति के एक भाग है। इस संबंध मे श्रीमद्भागवतगीता के आठवे अध्याय के सोलहवें श्लोक मे यह साफ-साफ उल्लेखित है:

"आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।।"

अर्थात हे अर्जुन ! ब्रह्म लोक तक के सब लोग पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मा जैसी आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त हुआ जीव भी निम्न से निम्न स्थिति मे गिर सकता है परन्तु, हे कौन्तेय ! मुझे प्राप्त होने की स्थिति मे उस जीव का पुनर्जन्म नहीं होता।अतः यही मुख्य कारण है कि ब्रह्मा जी के प्रकृतिजन्य होने के कारण हम सब ब्रह्मा जी की पूजा वगैरह नही करते है। ये सभी चौरासी लाख योनियों के अंतर्गत होती है जिसके तहत समस्त चर-अचर जीव जगत निरंतर आगे-पीछे गति करता रहता है। जीव के उत्थान और कल्याण के संबंध मे गोस्वामी तुलसीदास जी ने कुछ इस तरह का रहस्योद्घाटन किया है:-

"कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही।।"

अर्थात यह दुर्लभ मानव शरीर हमे अपने कर्मों से नही बल्कि ईश्वर की परम कृपा से प्राप्त हुआ है। जीव का पहले भुवन से चौदहवे भुवन की कष्ट दायक यात्रा ही प्रभु श्रीराम का चौदह वर्ष का वनवास है। इस वन मे कई प्रकार के निशाचर व धोखा देने वाले जीवों के साथ-साथ कई ऋषि-मुनि देवी-देवता आदि छोटे-बड़े,ऊँचे नीचे कुल के भिन्न-भिन्न सहायक भी मिलते है जो हमे इस भवसागर से पार ले जाकर रावण,मेघनाद और कुम्भकर्ण जैसे अहंकारी राक्षसों को मार गिराने मे हमारी सहायता करते है। अंत मे वही जीव सब कुछ त्यागकर अपने गृह अयोध्या वापस लौट आते है और वही जीव विराट होकर सतचिदानन्द भगवान श्रीराम के रूप मे विराजित होते है।

"राम राज बैठे त्रैलोका। हर्षित भए गए सब सोका।।
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।।"

यही भगवान श्रीराम का वास्तविक चौदह वर्ष का वनवास है और यही प्रत्येक जीव का **सोऽहम स्वरूप** है। ध्यान रखिए कि जिस निराकार ईश्वर को भगवान शंकर अपने गहन समाधि की अवस्था मे अनुभव करते है और जो विराट स्वरूप दिखाने के लिए श्रीमद्भागवत गीता मे भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान करते है और जिस लौकिक दृष्टि के लिए कागभुसुण्ड जी लोमेश ऋषि से जिद करते हुए कहते है कि:

सोई उपदेश करहूं कर दाया। निज नयनन देखहूं रघुराया।।

दरअसल वही अनुपम छवि इसी मृत्युलोक मे भगवान श्रीराम के रूप मे हर ओर सदा से और आज भी प्रगट है जिसे देखकर हम अपने इस मानव जीवन को धन्य करे और दरअसल यही हमारे इस देव-दुर्लभ मानव तन का अंतिम लक्ष्य है।

"बरनत छवि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिए देखन जोगू।।"

3. निष्कर्ष

रामकथा भिन्न-भिन्न होने के कारण अनंत होती है लेकिन उन सबकी कथा का तत्व एक ही होता है।

"हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।
रामचंद्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए।।"

अर्थात ईश्वर अनंत हैं उनका कोई पार नहीं पा सकता और इसी प्रकार उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते-सुनते हैं। यदि अज्ञानतावश हम चाह भी ले तो भी प्रभु रामचंद्र जी के सुंदर चरित्र को करोड़ों कल्पों में भी गाया नहीं जा सकता है। अतः इस मानव शरीर के जीवित रहते ही हमे उस परम ब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीराम को ठीक-ठीक जानना अनिवार्य होगा। अंत मे आप सबको एक बेहद कड़वी औषधि भी दिया जाना अनिवार्य है:

"राम नाम सत्य होगा सबका, इससे पहले तू जान।
अमृत केवल श्रीराम है, और तुम उनकी संतान।।"

ईश्वर आप सबके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे इसी प्रार्थना के साथ आप सबको राम-राम।

4. संदर्भ ग्रंथ

1. श्रीरामचरितमानस
2. ऋग्वेद
3. अथर्ववेद
4. श्वेताश्वतर उपनिषद
5. ईशोपनिषद
6. श्रीमद्भागवतगीता
7. चलो शरण रघुराय (काव्य संग्रह)

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।।